# विज्ञप्ति

इस महीने अर्थात् औगस्ट सन् १८८४ ई॰ पर्यन्त जो पुस्तकें बेचने के लिये तय्यार हैं वह इस सूचीपत्र में लिखी हैं और उनका मोल भी बहुत किफ़ायत से घटाकर नियत हुआ है परन्तु व्यापारियों के लिये और भी सस्ती होंगी जिनको व्यापार की इच्छा हो वह छापेखाने के मुहतमिम अथवा मालिक के नाम ख़त भेजकर क़ीमत का निर्णय करलें ॥

| नामकिताब | नामकिताब | नामकिताब | नामकिताब |
|---|---|---|---|
| संस्कृत भाषा | विराट् पर्व उद्योगपर्व | ४ – विराट पर्व | ३ – बन पर्व |
| टीका सहित | भीष्मपर्व द्रोणपर्व | ५ – उद्योग पर्व | ४ – विराट पर्व |
| याज्ञवल्क्य स्मृति | ३ – तीसरे हिस्सा में | ६ – भीष्म पर्व | ५ – उद्योगपर्व |
| सन्ध्या पद्धति | कर्णपर्व शल्यपर्व | ७ – द्रोण पर्व | ६ – भीष्म पर्व |
| अतार्क | गदापर्व सौप्तिक पर्व | ८ – कर्ण पर्व | ७ – द्रोण पर्व |
| भगवद्गीता टी॰ कृ॰ दे॰ | ऐषिक पर्व विशो- | ९ – शल्य पर्व व गदा | ८ – कर्ण पर्व |
| तथा टीका भा॰ गि॰ | क पर्व स्त्री पर्व शा- | पर्व सौप्तिक पर्व मय | ९ – शल्य पर्व |
| गीतगोविन्द | न्ति पर्व में राजधर्म | ऐषिक व विशोक | १० – गदा पर्व |
| कथा सत्यनारायण | आपद् धर्म मोक्ष- | व स्त्री पर्व | ११ – स्त्री पर्व |
| परमार्थसार | धर्म | १० – शान्ति पर्व राज | १२ – स्वर्गारोहण पर्व |
| पाराशरी सटीक | ४ – चौथे हिस्सा में | धर्म व आपद्धर्म | रामायण रामविलास |
| शीघ्रबोध सटीक | शान्तिपर्व दानधर्म | व मोक्ष धर्म दान | रामायण तुलसीकृ॰ |
| लघुजातक | अश्वमेध आश्रमवा- | धर्म | रामायण सटीक मय |
| षट्पञ्चाशिका | सिक पर्व व मौशल | ११ – अश्वमेध आश्रम | मानसदीपिका को- |
| सामुद्रिक | पर्व महाप्रस्थान | वासिक पर्व व मौ- | ष आदि |
| भाषा इतिहास | पर्व स्वर्गारोहण प | शल पर्व महाप्रस्था | तथा जिल्दबन्धी |
| | र्व हरिवंश पर्व | न स्वर्गारोहण पर्व | तथा मोटे अक्षरों की |
| महाभारत | महाभारत पर्व अले- | १२ – हरिवंश पर्व | मय तसवीर व क्षेपक |
| १ – पहिले हिस्सा में | हदा भी हैं | महाभारत सबलसिं | रामायण तु॰ कृ॰ टी- |
| आदिपर्व सभापर्व | १ – आदिपर्व | ह चौहान कृत | का [illegible] जीकृ॰ |
| बन पर्व | २ – सभा पर्व | १ – आदि पर्व | रामायण तु॰ कृ॰ टीका |
| २ – दूसरे हिस्सा में | ३ – बन पर्व | २ – सभा पर्व | शुकदेवलाल कृ॰ |

श्री गणेशाय नमः

# अमरकोष भाषानुवाद॥



यस्य ज्ञान दया सिन्धो रगाधस्या नघा गुणाः।
सेव्यता मक्षयो धीराः स श्रिये चामृताय च १
समा हृत्यान्य तन्त्राणि। संक्षिप्तैः प्रति संस्कृतैः
सम्पूर्ण मुच्यते वर्गैर्नामलिङ्गानु शासनम् २
~~प्रायशो रूपभेदेन साहचर्याच्च कुत्रचित्~~ ।
स्त्रीपुन्नपुंसकं ज्ञेयं तद्विशेषविधेः क्वचित् ३
भेदाख्यानाय न द्वन्द्वो नैक शेषो न सङ्करः। कृतो
ऽत्र भिन्न लिङ्गानामनुक्तानां क्रमादृते ४ त्रिलि
ङ्ग्यां त्रिष्विति पदं मिथुने तु द्वयोरिति। निषिद्धलि
ङ्ग शेषार्थं त्वन्ताथादि न पूर्वभाक् ५ स्वरव्ययं
स्वर्गनाक त्रिदिव त्रिदशालयाः। सुरलोको द्यो
दिवौ द्वे स्त्रियां क्लीबे त्रिविष्टपम् ६

दोहा॥ दन्ति बदन सकल रदन सिद्धि सदन महराज॥
उमा नंदन मोदक अदन पुरवें सब मम काज॥ १॥
स्वर्ग के नाम॥ स्वः १ स्वर्ग २ नाक ३ त्रिदिव ४ त्रिदशा
लय ५ सुरलोक ६ द्यौः ७ द्यौः ८ त्रिविष्टप ९॥ ६॥

असुरा दैत्य दैतेय दनुजेन्द्रारि दानवाः । शुक्र शिष्या दितिसुताः पूर्व्वदेवास्सुरद्विषः १२
सर्व्वज्ञस्सुगतो बुद्धो धर्म्मराजस्तथागतः । समन्तभद्रो भगवान् मारजिल्लोकजिज्जिनः १३
षडभिज्ञो दशबलोऽद्वयवादी विनायकः । मुनीन्द्रः श्रीघनश्शास्ता मुनिश्शाक्यमुनिस्तु यः १४ स शाक्यसिंहस्सर्व्वार्त्थसिद्धश्शौद्धोदनिश्च सः । गौतमश्चार्कबन्धुश्च मायादेवीसुतश्च सः १५ ब्रह्मात्मभूस्सुरज्येष्ठः परमेष्ठी पितामहः हिरण्यगर्भो लोकेशस्स्वयम्भूश्चतुराननः १६

(दैत्यों के नाम) असुर १ दैत्य २ दनुज ३ इन्द्रारि ४ दानव ५ शुक्रशिष्य ६ दैतेय ७ दितिसुत ८ पूर्व्वदेव ९ सुरद्विट् १० ॥ १२ ॥ (बुद्ध के नाम) सर्व्वज्ञ १ सुगत २ बुद्ध ३ धर्म्मराज ४ तथागत ५ समन्तभद्र ६ भगवान् ७ मारजित् ८ लोकजित् ९ जिन १० ॥ १३ ॥ षडभिज्ञ ११ दशबल १२ अद्वयवादी १३ विनायक १४ मुनीन्द्र १५ श्रीघन १६ शास्ता १७ मुनि १८ (शाक्यसिंह के नाम) शाक्यमुनि १ ॥ १४ ॥ शाक्यसिंह २ सर्व्वार्त्थसिद्ध ३ शौद्धोदनि ४ गौतम ५ अर्कबन्धु ६ मायादेवीसुत ७ ॥ १५ ॥ (ब्रह्मा के नाम) ब्रह्मा १ आत्मभूः २ सुरज्येष्ठ ३ परमेष्ठी ४ पितामह ५ हिरण्यगर्भ ६ लोकेश ७ स्वयम्भूः ८ चतुरानन ९ ॥ १६ ॥

धाताब्जयोनिर्द्रुहिणो विरञ्चिः कमलासनः। स्रष्टा प्रजापतिर्वेधा विधाता विश्वसृड्विधिः २७ विष्णुर्नारायणः कृष्णो वैकुण्ठो विष्टरश्रवाः। दामोदरो हृषीकेशः केशवो माधवः स्वभूः २८ दैत्यारिः पुण्डरीकाक्षो गोविन्दो गरुडध्वजः। पीताम्बरोऽच्युतः शार्ङ्गी विष्वक्सेनो जनार्दनः २९ उपेन्द्र इन्द्रावरजश्चक्रपाणिश्चतुर्भुजः। पद्मनाभो मधुरिपुर्वासुदेवस्त्रिविक्रमः ३० देवकीनन्दनः शौरिः श्रीपतिः पुरुषोत्तमः। वनमाली बलिध्वंसी कंसारातिरधोक्षजः ३१॥

धाता २० अब्जयोनि २१ द्रुहिण २२ विरञ्चि २३ कमलासन २४ स्रष्टा २५ प्रजापति २६ वेधाः २७ विधाता २८ विश्वसृट् २९ विधि ३० ॥ २७ ॥ (विष्णु के नाम) विष्णु १ नारायण २ कृष्ण ३ वैकुण्ठ ४ विष्टरश्रवा ५ दामोदर ६ हृषीकेश ७ केशव ८ माधव ९ स्वभू १० ॥ २८ ॥ दैत्यारि ११ पुण्डरीकाक्ष १२ गोविन्द १३ गरुडध्वज १४ पीताम्बर १५ अच्युत १६ शार्ङ्गी १७ विष्वक्सेन १८ जनार्दन १९ ॥ २९ ॥ उपेन्द्र २० इन्द्रावरज २१ चक्रपाणि २२ चतुर्भुज २३ पद्मनाभ २४ मधुरिपु २५ वासुदेव २६ त्रिविक्रम २७ ॥ ३० ॥ देवकीनन्दन २८ शौरि २९ श्रीपति ३० पुरुषोत्तम ३१ वनमाली ३२ बलिध्वंसी ३३ कंसाराति ३४ अधोक्षज ३५ ॥ ३१ ॥

विश्वम्भरः कैटभजिद्विधुः श्रीवत्सलाञ्छनः।
वसुदेवोस्यजनकस्सएवानकदुन्दुभिः २२
बलभद्रः प्रलम्बघ्नो बलदेवोऽच्युताग्रजः।
रेवतीरमणोरामः कामपालो हलायुधः २३
नीलाम्बरो रौहिणेयस्तालाङ्को मुशली हली।
सङ्कर्षणः सीरपाणिः कालिन्दीभेदनोबलः २४
मदनो मन्मथो मारः प्रद्युम्नो मीनकेतनः।
कन्दर्पो दर्प्पकोऽनङ्गः कामः पञ्चशरस्स्मरः
२५ शम्बरारिर्मनसिजः कुसुमेषुरनन्यजः।
पुष्पधन्वा रतिपतिर्मकरध्वज आत्मभूः २६

विश्वम्भर ३६ कैटभजित् ३७ विधु ३८ श्रीवत्सला-
ञ्छन ३९ पुराण पुरुष ४० यज्ञ पुरुष ४१ नरकान्तक ४२
जलशायी ४३ विश्वरूप ४४ मुकुन्द ४५ मुरमर्द्दन ४६
(वसुदेव के नाम) वसुदेव १ आनकदुन्दुभि २ ॥ २२॥
(बलदेव के नाम) बलभद्र १ प्रलम्बघ्न २ बलदेव ३ अ-
च्युताग्रज ४ रेवती रमण ५ राम ६ कामपाल ७ हलायु-
ध ८ ॥ २३॥ नीलाम्बर ९ रौहिणेय १० तालांक ११
मुशली १२ हली १३ संकर्षण १४ सीरपाणि १५ कालि-
न्दीभेदन १६ बल १७ ॥ २४॥ (काम के नाम) मदन १
मन्मथ २ मार ३ प्रद्युम्न ४ मीनकेतन ५ कन्दर्प्प ६ दर्प्पक ७ अ-
नंग ८ काम ९ पञ्चशर १० स्मर ११ ॥ २५॥ शम्बरारि १२ मनसि-
ज १३ कुसुमेषु १४ अनन्यज १५ पुष्पधन्वा १६ रतिपति १७ म-
करध्वज १८ आत्मभू १९ ॥ २६॥

शम्भुरीशः पशुपतिश्शिवश्शूली महेश्वरः।
ईश्वरश्शर्व ईशानश्शङ्करश्चन्द्रशेखरः ३१
भूतेशः खण्डपरशुर्गिरीशो गिरिशो मृडः।
मृत्युंजयः कृत्तिवासाः पिनाकी प्रमथाधिपः
३२ उग्रः कपर्दी श्रीकण्ठश्शितिकण्ठः कपा-
लभृत्। वामदेवो महादेवो विरूपाक्षस्त्रिलोचनः ३३
कृशानुरेताः सर्वज्ञो धूर्जटिर्नीललोहितः।
हरस्स्मरहरो भर्गस्त्र्यम्बकस्त्रिपुरान्तकः ३४
गङ्गाधरोऽन्धकरिपुः क्रतुध्वंसी वृषध्वजः।
व्योमकेशो भवो भीमस्स्थाणू रुद्र उमापतिः ३५

(महादेव के नाम) शम्भु १ ईश २ पशुपति ३ शिव ४ शूली ५ महेश्वर ६ ईश्वर ७ शर्व ८ ईशान ९ शङ्कर १० चन्द्रशेखर ११ ॥ ३१॥ भूतेश १२ खण्डपरशु १३ गिरीश १४ गिरिश १५ मृड १६ मृत्युंजय १७ कृत्तिवासाः १८ पिनाकी १९ प्रमथाधिप २० ॥ ३२॥ उग्र २१ कपर्दी २२ श्रीकण्ठ २३ शितिकण्ठ २४ कपालभृत् २५ वामदेव २६ महादेव २७ विरूपाक्ष २८ त्रिलोचन २९ ॥ ३३॥ कृशानुरेताः ३० सर्वज्ञ ३१ धूर्जटि ३२ नीललोहित ३३ हर ३४ स्मरहर ३५ भर्ग ३६ त्र्यम्बक ३७ त्रिपुरान्तक ३८ ॥ ३४ ॥ गंगाधर ३९ अन्धकरिपु ४० क्रतुध्वंसी ४१ वृषध्वज ४२ व्योमकेश ४३ भव ४४ भीम ४५ स्थाणु ४६ रुद्र ४७ उमापति ४८ ॥ ३५॥

शम्भुरीशः पशुपतिश्शिवश्शूली महेश्वरः।
ईश्वरश्शर्व्व ईशानश्शङ्करश्चन्द्रशेखरः ३१
भूतेशः खण्डपरशुर्गिरीशोगिरिशोमृडः।
मृत्युंजयः कृत्तिवासाः पिनाकी प्रमथाधिपः
३२ उग्रः कपर्द्दी श्रीकण्ठश्शितिकण्ठः कपा-
लभृत्। वामदेवोमहादेवोविरूपाक्षस्त्रिलोचनः ३३
कृशानुरेतास्सर्व्वज्ञो धूर्ज्जटिर्न्नीललोहितः।
हरस्स्मरहरो भर्गस्त्र्यम्बकस्त्रिपुरान्तकः ३४
गङ्गाधरोऽन्धकरिपुः क्रतुध्वंसी वृषध्वजः।
व्योमकेशो भवो भीमस्स्थाणू रुद्र उमापतिः ३५

(महादेव के नाम) शम्भु १ ईश २ पशुपति ३ शिव ४ शू-
ली ५ महेश्वर ६ ईश्वर ७ शर्व्व ८ ईशान ९ शङ्कर १०
चन्द्रशेखर ११ ॥ ३१॥ भूतेश १२ खण्डपरशु १३ गि-
रीश १४ गिरिश १५ मृड १६ मृत्युंजय १७ कृत्तिवासाः १८
पिनाकी १९ प्रमथाधिप २० ॥ ३२॥ उग्र २१ कपर्द्दी २२
श्रीकण्ठ २३ शितिकण्ठ २४ कपालभृत् २५ वामदेव
२६ महादेव २७ विरूपाक्ष २८ त्रिलोचन २९ ॥ ३३॥
कृशानुरेताः ३० सर्व्वज्ञ ३१ धूर्ज्जटि ३२ नीललोहित ३३
हर ३४ स्मरहर ३५ भर्ग ३६ त्र्यम्बक ३७ त्रिपुरान्तक ३८ ॥
३४ ॥ गंगाधर ३९ अन्धकरिपु ४० क्रतुध्वंसी ४१ वृष-
ध्वज ४२ व्योमकेश ४३ भव ४४ भीम ४५ स्थाणु ४६
रुद्र ४७ उमापति ४८ ॥ ३५॥

कपर्दोऽस्य जटाजूटः पिनाकोऽजगवन्धनुः ।
प्रमथास्स्युः पारिषदा ब्राह्मीत्याद्यास्तु मात-
रः ३६ विभूतिर्भूतिरैश्वर्य्यमणिमादिक-
मष्टधा। उमाकात्यायनी गौरी काली हैमव-
तीश्वरी ३७ शिवा भवानी रुद्राणी शर्व्वा-
णी सर्व्वमङ्गला। अपर्णा पार्व्वती दुर्गा मृ-
डानी चण्डिकाम्बिका ३८ विनायको वि-
घ्नराज द्वैमातुर गणाधिपाः । अप्येक दन्त है-
रम्ब लम्बोदर गजाननाः ३९

(इन की जटा) कपर्द १ (इन का धनु पिनाक १ अजगव २
(इन के पार्षद) प्रमथ १ पारिषद २ (ब्राह्म्यादि शक्तियों के
नाम) ब्राह्मी १ माहेश्वरी २ कौमारी ३ वैष्णवी ४ वाराही
५ इन्द्राणी ६ चामुण्डा ७ ॥ ३६ ॥ (ऐश्वर्य्य के नाम)
विभूति १ भूति २ ऐश्वर्य्य ३ (इस के नाम ८ हैं) अणि-
मा १ महिमा २ गरिमा ३ लघिमा ४ प्राप्ति ५ प्राकाम्य ६
ईशित्व ७ वशित्व ८ (पार्वती के नाम) उमा १ कात्यायनी
२ गौरी ३ काली ४ हैमवती ५ ईश्वरी ६ ॥ ३७ ॥ शिवा ७
भवानी ८ रुद्राणी ९ शर्व्वाणी १० सर्व्वमंगला ११ अप-
र्णा १२ पार्व्वती १३ दुर्गा १४ मृडानी १५ चण्डिका १६ अ-
म्बिका १७ ॥ ३८ ॥ आर्या १८ दाक्षायणी १९ गिरिजा २० मेन
कात्मजा २१ (गणेश के नाम) विनायक १ विघ्नराज २ द्वैमा-
तुर ३ गणाधिप ४ एकदन्त ५ हेरम्ब ६ लंबोदर ७ गजानन ८ ॥ ३९

कार्त्तिकेयो महासेन षरजन्मा षडाननः । पा
र्वती नन्दन स्स्कन्द स्सेनानीरग्निभूर्गुहः ४०
बाहुलेय स्तारकजिद्विशाख शिखिवाह
नः । षाण्मातुर श्शक्तिधरः कुमारः क्रौञ्च
दारणः ४१ इन्द्रो मरुत्वान्मघवा बिडौजाः
पाकशासनः । वृद्धश्रवा श्शुनासीरः पुरुहू
तः पुरन्दरः ४२ जिष्णुर्लेखर्षभ श्शक्र
श्शतमन्युर्दिवस्पतिः । सुत्रामा गोत्रभिद्वज्री
वासवो वृत्रहा वृषा ४३

( षडानन के नाम ) कार्त्तिकेय १ महासेन २ शरज-
न्मा ३ षडानन ४ पार्व्वतीनन्दन ५ स्कन्द ६ सेना-
नी ७ अग्निभू ८ गुह ९ ॥ ४० ॥ बाहुलेय १० तारक
जित ११ विशाख १२ शिखिवाहन १३ षाण्मातुर
१४ शक्तिधर १५ कुमार १६ क्रौञ्चदारण १७ ॥ ४१ ॥
( नन्दीश्वर के नाम ) शृंगी १ भृङ्गी २ रिटि ३ तु-
ण्डी ४ नन्दिक ५ नन्दिकेश्वर ६ ( इन्द्र के नाम )
इन्द्र १ मरुत्वान् २ मघवा ३ बिडौजाः ४ पाकशास
नः ५ वृद्धश्रवाः ६ शुनासीर ७ पुरुहूत ८ पुरन्दर
९ ॥ ४२ ॥ जिष्णु १० लेखर्षभ ११ शक्र १२ शत
मन्यु १३ दिवस्पति १४ सुत्रामा १५ गोत्रभित् १६
वज्री १७ वासव १८ वृत्रहा १९ वृषा २० ॥
४३ ॥ ४३ ॥

वास्तोष्पतिस्सुरपतिर्बलारातिश्शचीपतिः।
जम्भभेदी हरिहयस्स्वाराण्नमुचिसूदनः ४४
संक्रन्दनोदुश्च्यवनस्तुराषाण्मेघवाहनः।
आखण्डलस्सहस्राक्ष ऋभुक्षास्तस्य तु प्रिया ४५
पुलोमजाशचीन्द्राणी नगरी त्वमरावती। हय
उच्चैश्श्रवास्सूतो मातलिर्नन्दनम्वनम् ४६
स्यात्प्रासादो वैजयन्तो जयन्तः पाकशासनिः।
ऐरावतोभ्रमातङ्गैरावणाभ्रमुवल्लभाः ४७
ह्रादिनी वज्रमस्त्री स्यात्कुलिशम्भिदुरम्पविः।
शतकोटिस्स्वरुश्शम्बो दम्भोलिरशनिर्द्वयोः ४८

वास्तोष्पति २१ सुरपति २२ बलाराति २३ शचीपति २४ जम्भभेदी २५ हरिहय २६ स्वाराट २७ नमुचिसूदन २८ ॥४४॥ संक्रन्दन २९ दुश्च्यवन ३० तुराषाट् ३१ मेघवाहन ३२ आखण्डल ३३ सहस्राक्ष ३४ ऋभुक्षाः ३५ ॥४५॥ (इन्द्राणी के नाम) पुलोमजा १ शची २ इन्द्राणी ३ (इन्द्रपुरी का नाम) अमरावती १ (इन्द्र का घोड़ा) उच्चैश्श्रवाः १ (तिसका सारथी) मातलि १ (तिसकी फुलवारी) नन्दन १ ॥४६॥ (तिसका धवरहर) वैजयन्त १ (इन्द्र पुत्र के नाम) जयन्त १ पाकशासनि २ (इन्द्र के हाथी के नाम) ऐरावत १ अभ्रमातंग २ ऐरावण ३ अभ्रमुवल्लभ ४ ॥४७॥ (वज्र के नाम) ह्रादिनी १ वज्र २ कुलिश ३ भिदुर ४ पवि ५ शतकोटि ६ स्वरु ७ शम्ब ८ दम्भोलि ९ अशनि १० ॥४८॥

व्योमयानम्विमानो स्त्री नारदाद्यास्सुरर्षयः।
स्यात्सुधर्म्मा देवसभा पीयूषमन्मृतंसुधा ४९
मन्दाकिनी वियद्गङ्गा स्वर्नदी सुरदीर्घिका।
मेरुस्सुमेरुर्हेमाद्री रत्नसानुस्सुरालयः ५० पञ्चै
ते देवतरवो मन्दारः पारिजातकः। सन्तानःक
ल्पवृक्षश्च पुंसिवा हरिचन्दनम् ५१ सनत्कु-
मारो वैधात्रस्स्वर्व्वैद्यावश्विनीसुतौ। नासत्या
वाश्विनौदस्रावाश्विनेयौचनावुभौ ५२ स्त्रि
यांबहुष्वप्सरसस्स्वर्व्वैश्या उर्व्वशीमुखाः।
हाहाहूहूश्चैवमाद्या गन्धर्व्वास्त्रिदिवौकसाम् ५३

(विमान के नाम) व्योमयान १ विमान २ (सुरर्षियों के नाम) नारदादि १ (देवसभा के नाम) सुधर्म्मा १ देवसभा २ (अमृत के नाम) पीयूष १ अमृत २ सुधा ३ ॥ ४९ ॥ (स्वर्ग गंगा के नाम) मन्दाकिनी १ वियद्गंगा २ स्वर्नदी ३ सुरदीर्घिका ४ (सुमेरु पर्व्वत के नाम) मेरु १ सुमेरु २ हेमाद्रि ३ रत्नसानु ४ सुरालय ५ ॥ ५० ॥ (देववृक्षों के नाम) मन्दार १ पारिजात २ सन्तान १ कल्पवृक्ष १ हरिचन्दन १॥५१ (सनत्कुमार के नाम) सनत्कुमार १ वैधात्र २ (अश्विनीकुमार के नाम) स्वर्व्वैद्य १ अश्विनीसुत २ नासत्य ३ आश्विन ४ दस्र ५ आश्विनेय ६ ॥ ५२ ॥ (अप्सराओं के नाम) अप्सरा १ स्वर्व्वेश्या २ (इनके बहुत नाम हैं) यथा घृताची १ मेनका २ रंभा ३ उर्व्वशी ४ तिलोत्तमा ५ सुकेशी ६ मंजुघोषादि ७ (गंधर्व्वों के नाम) हाहा १ हूहू आदि २ ॥ ५३ ॥

अग्निर्वैश्वानरो वह्नि र्वीतिहोत्रो धनंजयः ।
कृपीटयोनिर्ज्वलनो जातवेदास्तनूनपात् ५४
वर्हिः शुष्मा कृष्णवर्त्मा शोचिः केशउषर्बुधः ।
आश्रयाशो वृहद्भानुः कृशानुः पावकोऽनलः ५५
रोहिताश्वो वायुसखः शिखावानाशुशुक्ष-
णिः । हिरण्यरेता हुतभुग्दहनो हव्यवाहनः ५६
सप्तार्च्चिर्दमुनाः शुक्रश्चित्रभानुर्विभावसुः ।
शुचिरप्पित्तमौर्व्वस्तु वाडवो वडवानलः ५७
वह्नेर्द्वयोर्ज्वालकीलावर्च्चिर्हेतिः शिखा स्त्रियाम् ।
त्रिषु स्फुलिङ्गोऽग्निकणः सन्तापः संज्वरः समौ । ५८

(अग्नि के नाम) अग्नि १ वैश्वानर २ वह्नि ३ वीतिहोत्र ४ धन-
ञ्जय ५ कृपीटयोनि ६ ज्वलन ७ जातवेदाः ८ तनूनपात् ९
॥ ५४ ॥ वर्हिः १० शुष्मा ११ कृष्णवर्त्मा १२ शोचिष्केश १३
उषर्बुध १४ आश्रयाशः १५ वृहद्भानु १६ कृशानु १७ पाव-
क १८ अनल १९ ॥ ५५ ॥ रोहिताश्व २० वायुसख २१ शि-
खावान् २२ आशुशुक्षणि २३ हिरण्यरेताः २४ हुतभुक् २५
दहन २६ हव्यवाहन २७ ॥ ५६ ॥ सप्तार्च्चि २८ दमुनाः २९
शुक्र ३० चित्रभानु ३१ विभावसु ३२ शुचि ३३ अप्पित्त ३४
(वडवानल के नाम) और्व्व १ वाडव २ वडवानल ३ ॥ ५७ ॥
(अग्नि की ज्वाला के नाम) ज्वाल १ कील २ अर्च्चि ३ हेति ४
शिखा ५ (चिनगारी के नाम) स्फुलिङ्ग १ अग्निकण २ (ज्व-
र के नाम) सन्ताप १ संज्वर २ ॥ ५८ ॥

धर्म्मराजः पितृपतिस्समवर्त्ती परेतराट् । कृता-
न्तो यमुनाभ्राता शमनो यमराड्यमः ५९ का-
लो दण्डधरश्श्राद्धदेवो वैवस्वतोऽन्तकः । राक्ष
सः कौणपः क्रव्यात् क्रव्यादोऽस्रप आशरः ६०
रात्रिञ्चरो रात्रिचरः कर्व्वुरो निकषात्मजः ।
यातुधानः पुण्यजनो नैर्ऋतो यातुरक्षसी ६१
प्रचेता वरुणः पाशी यादसाम्पतिरप्पतिः ।
श्वसनस्स्पर्शनो वायुर्मातरिश्वा सदागतिः
६२ पृषदश्वो गन्धवहो गन्धवाहानिलाशुगाः।
समीरमारुतमरुज्जगत्प्राणसमीरणाः ६३

(यम राज के नाम) धर्म्मराज १ पितृपति २ समवर्त्ती ३ परेतराट् ४ कृतान्त ५ यमुनाभ्राता ६ शमन ७ यमराड् ८ यम ९ ॥ ५९ ॥ काल १० दण्डधर ११ श्राद्धदेव १२ वैवस्वत १३ अन्तक १४ (राक्षसों के नाम) राक्षस १ कौणप २ क्रव्यात ३ क्रव्याद ४ अस्रप ५ आशर ६ ॥ ६० ॥ रात्रिञ्चर ७ रात्रिचर ८ कर्व्वुर ९ निकषात्मज १० यातुधान ११ पुण्यजन १२ नैर्ऋत १३ यातु १४ रक्षः १५ ॥ ६१ ॥ (वरुण के नाम) प्रचेताः १ वरुण २ पाशी ३ यादसाम्पति ४ अप्पति ५ (पवन के नाम) श्वसन १ स्पर्शन २ वायु ३ मातरिश्वा ४ सदागति ५ ॥ ६२ ॥ पृषदश्व ६ गन्धवह ७ अनिल ८ आशुग ९ समीर १० मारुत ११ मरुत १२ जगत्प्राण १३ समीरण १४ ॥ ६३ ॥

नभस्वद्वातपवनपवमानप्रभञ्जनाः। प्राणोऽपा
नस्समानश्चोदानव्यानौ च वायवः ६४ शरी
रस्था इमे रंहस्तरसी तु रयस्स्यदः। जवोऽथशी
घ्रं त्वरितं लघु क्षिप्रमरं द्रुतम् ६५ सत्वरं चप
लं तूर्णमविलम्बितमाशु च। सततेनारताश्रा
न्तसन्ततविरतानिशम् ६६ नित्यानवरताज
स्रमप्यथातिशयो भरः। अतिवेलभृशात्यर्था
तिमात्रोद्गाढनिर्भरम् ६७ तीव्रैकान्तनिता
न्तानि गाढबाढदृढानि च। क्लीबे शीघ्राद्यसत्वे
स्यात्त्रिष्वेषां भेद्यगामियत् ६८

नभस्वान् १५ वात १६ पवन १७ पवमान १८ प्रभञ्जन १९ गन्ध
वाह २० (आँधी का नाम) प्रकम्पन १ (वर्षा की आँधी का नाम)
झंझावात १ (हृदय के वायु का नाम) प्राण १ (गुद के वायु का)
नाम) अपान १ (नाभि के वायु का नाम) समान १ (कण्ठ के
वायु का नाम) उदान १ (सर्व्व शरीरस्थ वायु का नाम) व्यान
१ ॥ ६४ ॥ (वेग के नाम) रंहः १ तरः २ रयः ३ स्यदः ४ जव ५ (शी
घ्रता के नाम) शीघ्र १ त्वरित २ लघु ३ क्षिप्र ४ अर ५ द्रुत ६ ॥ ६५ ॥
सत्वर ७ चपल ८ तूर्ण ९ अविलम्बित १० आशु ११ (नित्य के ना-
म) सतत १ अनारत २ अश्रान्त ३ सन्तत ४ अविरत ५ अनिश ६ ॥ ६६
नित्य ७ अनवरत ८ अजस्र ९ (बारम्बार के नाम) अतिशय १ भर २
अतिवेल ३ भृश ४ अत्यर्थ ५ अतिमात्र ६ उद्गाढ ७ निर्भर ८ ॥ ६७ ॥
तीव्र ९ एकान्त १० नितान्त ११ गाढ १२ बाढ १३ दृढ १४ ॥ ६८ ॥

कुवेरस्त्र्यम्बकसखो यक्षराड्गुह्यकेश्वरः। मनुष्यधर्म्मा धनदो राजराजो धनाधिपः ६९ किन्नरेशो वैश्रवणः पौलस्त्यो नरवाहनः। यक्षैकपिङ्गैलविलश्रीदपुण्यजनेश्वराः ७० अस्योद्यानञ्चैत्ररथं पुत्रस्तु नलकूवरः। कैलासस्स्थानमलका पूर्व्विमानं तु पुष्पकम् ७१ स्यात्किन्नरः किम्पुरुषस्तुरङ्गवदनो मयुः। निधिर्न्नाशेवधिर्भेदाः पद्मशङ्खादयो निधेः ७२ इति स्वर्ग्गवर्ग्गः॥

(कुवेर के नाम) कुबेर १ त्र्यम्बकसख २ यक्षराट् ३ गुह्यकेश्वर ४ मनुष्यधर्म्मा ५ धनद ६ राजराज ७ धनाधिप ८ ॥ ६९ ॥ किन्नरेश ९ वैश्रवण १० पौलस्त्य ११ नरवाहन १२ यक्ष १३ एकपिंग १४ ऐलविल १५ श्रीद १६ पुण्यजनेश्वर १७ ॥ ७० ॥ (इन की फुलवारी का नाम) चैत्ररथ १ (इन के पुत्र का नाम) नलकूवर १ (इन के स्थान का नाम) कैलास १ (इन की पुरी का नाम) अलका १ (इन के विमान का नाम) पुष्पक १ ॥ ७१ ॥ (किन्नरों के नाम) किन्नर १ किम्पुरुष २ तुरंगवदन ३ मयु ४ (निधि के नाम) निधि १ शेवधि २ (निधियों के भेद) महापद्म १ पद्म २ शङ्ख ३ मकर ४ कच्छप ५ मुकुन्द ६ कुन्द ७ नील ८ खर्व्व ९ ॥ ७२ ॥ इति स्वर्ग्गवर्ग्गः॥

द्यो दिवौ द्वे स्त्रियामभ्रं व्योम पुष्करमम्बरम्।
नभोऽन्तरिक्षं गगनमनन्तं सुरवर्त्म खम् १
वियद्विष्णुपदं वा तु पुंस्याकाश विहायसी।
इति व्योमवर्गः॥

दिशास्तु ककुभः काष्ठा आशाश्च हरितश्च ताः
प्राच्यवाची प्रतीच्यस्ताः पूर्व्वदक्षिणपश्चिमाः२
उत्तरादिगुदीची स्याद्दिश्यन्तु त्रिषु दिग्भवे। इन्द्रो
वह्निः पितृपतिर्नैर्ऋतो वरुणो मरुत् २

(आकाश के नाम) द्यौः १ दिव २ अभ्र ३ व्योम ४ पुष्कर ५ अम्बर ६ नभः ७ अन्तरिक्ष ८ गगन ९ अनन्त १० सुरवर्त्म ११ ख १२॥ १ ॥ वियत् १३ विष्णुपद १४ आकाश १५ विहायः १६ विहायस् १७ नाक १८ द्युः १९ ॥ इति व्योमवर्गः॥

(दिशाओं के नाम) दिक् १ ककुब् २ काष्ठा ३ आशा ४ हरित ५ (पूर्व्व दिशा का नाम) प्राची १ (दक्षिण दिशा का नाम) अवाची १ (पश्चिम का नाम) प्रतीची १॥ १॥ (उत्तर का नाम) उदीची १ (दिशोत्पन्न वस्तु का नाम) दिश्य १ (दक्षिण दिशोत्पन्न) अवाचीन १ (उत्तरोत्पन्न) उदीचीन १ (पश्चिमोद्भव) प्रतीचीन १ (पूर्व्वभव) प्राचीन १ पूर्व्वादि दिगीश (पू०) इन्द्र (आ०) अग्नि (द०) यमराज (नै०) नैऋत (प०) वरुण (वा०) पवन २ ॥ २ ॥

कुबेर ईशः पतयः पूर्व्वादीनान्दिशां क्रमात्।
ऐरावतः पुण्डरीको वामनः कुमुदोऽञ्जनः ३
पुष्पदन्तः सार्व्वभौमः सुप्रतीकश्च दिग्गजाः।
करिण्योऽभ्रमु कपिला पिङ्गलानुपमाः क्रमात्
त् ४ ताम्रकर्णी शुभ्रदन्ती चाङ्गना चाञ्जनाव-
ती। क्लीवाव्ययं त्वपदिशं दिशोर्मध्ये विदिक्
स्त्रियाम् ५ अभ्यन्तरन्त्वन्तरालं चक्रवालन्तु
मण्डलम्। अभ्रं मेघो वारिवाहः स्तनयित्नुर्ब-
लाहकः ६ धाराधरो जलधरस्तडित्वान्वारिदो-
म्बुभृत्। घनजीमूतमुदिरजलमुग्धूमयोनयः ७

(उ०) कुबेर (ई०) ईश (पूर्व्वादि दिग्गजों के नाम) (पू० ऐराव-
त (आ०) पुण्डरीक (द०) वामन (नै०) कुमुद (प०) अञ्जन ॥३॥
(वा०) पुष्पदन्त (उ०) सार्व्वभौम (ई०) सुप्रतीक क्रमसे इ-
न की स्त्रियां येहैं (पू०) अभ्रमु (आ०) कपिला (द०) पिङ्गला
(नै०) अनुपमा ॥ ४ ॥ (प०) ताम्रकर्णी १ (वा०) शुभ्रदन्ती १ (उ०)
अंगना २ (ई०) अञ्जनावती १ (कोणों के नाम) अपदिश १ वि-
दिक् २ ॥ ५ ॥ (बीच के नाम) अभ्यन्तर १ अन्तराल २ (घेरा
के नाम) चक्रवाल १ मण्डल २ (बादर के नाम) अभ्र १
मेघ २ (वारिवाह) ३ स्तनयित्नु ४ बलाहक ५ ॥ ६ ॥ धारा-
धर ६ जलधर ७ तडित्वान् ८ वारिद ९ अम्बुभृत् १०
घन ११ जीमूत १२ मुदिर १३ जलमुक् १४ धूमयोनि
१५ ॥ ७ ॥

कादम्बिनी मेघमाला त्रिषु मेघभवेऽभ्रियम् । स्तनितं गर्ज्जितं मेघनिर्घोषे रसितादि च ८ शम्पाशतह्रदा ह्रादिन्यैरावत्यः क्षणप्रभा । तडित्सौदामिनी विद्युच्चञ्चला चपलापि च ९ स्फूर्ज्जथुर्व्वज्रनिर्घोषो मेघज्योतिरिरम्मदः । इन्द्रायुधं शक्रधनुस्तदेव ऋजुरोहितम् १० वृष्टिर्व्वर्षं तद्विघातेऽवग्राहावग्रहौ समौ । धारासम्पात आसारः शीकरोऽम्बुकणाः स्मृताः ११ वर्षोपलस्तु करका मेघच्छन्नेऽह्नि दुर्द्दिनम् । अन्तर्द्धा व्यवधा पुंसि त्वन्तर्द्धिरपवारणम् १२

(मेघ पंक्ति के नाम) कादम्बिनी १ मेघमाला २ (मेघोत्पन्न वस्तु के नाम) अभ्रिय १ (गर्ज्जने के नाम) स्तनित १ गर्ज्जित २ रसित ३ ॥ ८ ॥ (बिजुली के नाम) शम्पा १ शतह्रदा २ ह्रादिनी ३ ऐरावती ४ क्षणप्रभा ५ तडित् ६ सौदामिनी ७ विद्युत् ८ चञ्चला ९ चपला १० ॥ ९ ॥ (वज्र के शब्द के नाम) स्फूर्ज्जथु १ वज्रनिर्घोष २ (वज्र के अग्नि के नाम) मेघज्योति १ इरम्मद २ (इन्द्रधनुष के नाम) इन्द्रायुध १ शक्रधनु २ ऋजुरोहित ३ ॥ १० ॥ (वर्षा के नाम) वृष्टि १ वर्ष २ (झूरा के नाम) अवग्राह १ अवग्रह २ (निरन्तर मेघधारा के नाम) धारासम्पात १ आसार २ (फुहारा का नाम) शीकर १ ॥ ११ ॥ (आकाश से गिरे हुये पत्थरों के नाम) वर्षोपल १ करका २ (बद्दरी का नाम) दुर्द्दिन १ (झंपना के नाम) अन्तर्द्धा १ व्यवधा २ अन्तर्द्धि ३ अपवारण ४ ॥ १२ ॥

अपिधानतिरोधानपिधानाच्छादनानि च। हि-
मांशुश्चन्द्रमाश्चन्द्र इन्दुः कुमुदबान्धवः २३
विधुस्सुधांशुश्शुभ्रांशुरोषधीशो निशापतिः।
अब्जो जैवातृकस्सोमो ग्लौर्मृगाङ्कः कलानिधिः
२४ द्विजराजश्शशधरो नक्षत्रेशः क्षपाकरः क-
ला तु षोडशो भागो बिम्बोऽस्त्री मण्डलन्त्रिषु २५
भित्तं शकलखण्डे वा पुंस्यर्द्धोऽर्द्धं समेंऽशके। च-
न्द्रिका कौमुदी ज्योत्स्ना प्रसादस्तु प्रसन्नता २६ क-
लङ्काङ्कौ लाञ्छनञ्च चिह्नं लक्ष्म च लक्षणम् सुष-
मा परमा शोभा शोभा कान्तिर्द्युतिश्छविः २७

अपिधान ५ तिरोधान ६ पिधान ७ आच्छादन ८ (चन्द्रमा के नाम) हिमांशु १ चन्द्रमा २ चन्द्र ३ इन्दु ४ कुमुदबान्धव ५ ॥ २३ ॥ विधु ६ सुधांशु ७ शुभ्रांशु ८ ओषधीश ९ निशापति १० अब्ज ११ जैवातृक १२ सोम १३ ग्लौ १४ मृगाङ्क १५ कलानिधि १६ ॥ २४ ॥ द्विजराज १७ शशधर १८ नक्षत्रेश १९ क्षपाकर २० (चन्द्र के १६ का नाम) कला १ (चन्द्र मण्डल के नाम) बिम्ब १ मण्डल २ ॥ २५ ॥ (खण्ड के नाम) भित्त १ शकल २ खण्ड ३ अर्द्ध ४ (समभाग का नाम) अर्द्धम् १ (उजियरिया के नाम) चन्द्रिका १ कौमुदी २ ज्योत्स्ना ३ (निर्मलता के नाम) प्रसाद १ प्रसन्नता २ ॥ २६ ॥ (चिन्ह के नाम) कलङ्क १ अङ्क २ लांछन ३ चिह्न ४ लक्ष्म ५ लक्षण ६ (अति शोभा का नाम सुखमा १ शोभा के नाम) शोभा १ कान्ति २ द्युति ३ छवि ४ ॥ २७

अवश्यायस्तु नीहारस्तुषारस्तुहिनं हिमम्। प्रालेयं मिहिका चाथ हिमानी हिमसंहतिः १८ शीतं गुणे तद्वदर्थास्सुषीमश्शिशिरो जड़ः। तुषारश्शीतलश्शीतो हिमस्सप्तान्यलिङ्गकाः १९ ध्रुव औत्तानपादिस्स्यादगस्त्यः कुम्भसम्भवः। मैत्रावरुणिरस्यैव लोपामुद्रा सधर्म्मिणी २० नक्षत्रमृक्षं भं तारा तारकाप्युडु वा स्त्रियाम्। दाक्षायण्योऽश्विनीत्यादि तारा अश्वयुगश्विनी २१ राधा विशाखा पुष्ये तु सिध्यतिष्यौ श्रविष्ठया। समा धनिष्ठा स्युः प्रोष्ठपदा भाद्रपदा स्त्रियाम् २२

(पाला के नाम) अवश्याय १ नीहार २ तुषार ३ तुहिन ४ हिम ५ प्रालेय ६ मिहिका ७ (महा पाला के नाम) हिमानी १ हिमसंहति २ ॥ १८ ॥ (जाड़ के नाम) सुषीम १ शिशिर २ जड़ ३ तुषार ४ शीतल ५ शीत ६ हिम ७ ॥ १९ ॥ (ध्रुव के नाम) ध्रुव १ औत्तानपादि २ (अगस्त्य के नाम) अगस्त्य १ कुम्भसम्भव २ मैत्रावरुणि ३ (अगस्त्य की स्त्री का नाम) लोपामुद्रा १ ॥ २० ॥ (नक्षत्रों के नाम) नक्षत्र १ ऋक्ष २ भ ३ तारा ४ तारका ५ उडु ६ (अश्विन्यादि का नाम) दाक्षायणी १ (अश्विनी के नाम) अश्वयुक् १ अश्विनी २ ॥ २१ ॥ (विशाखा के नाम) राधा १ विशाखा २ (पुष्य के नाम) पुष्य १ तिष्य २ सिध्य ३ (धनिष्ठा के नाम) श्रविष्ठा १ धनिष्ठा २ (पूर्व भाद्रपदा उत्तर भाद्रपदा के नाम) प्रोष्ठपदा १ भाद्रपदा २ ॥ २२ ॥

मृगशीर्षं मृगशिरस्तस्मिन्नेवाग्रहायणी । इल्व
लास्तच्छिरोदेशे तारका निवसन्ति याः २३ बृह
स्पतिः सुराचार्यो गीष्पतिर्धिषणो गुरुः । जीव आ
ङ्गिरसो वाचस्पतिश्चित्रशिखण्डिजः २४ शुक्रो
दैत्यगुरुः काव्य उशना भार्गवः कविः । अङ्गारकः
कुजो भौमो लोहिताङ्गो महीसुतः २५ रौहिणेयो
बुधः सौम्यः समौ सौरिशनैश्चरौ । तमस्तु राहुः स्व
र्भानुः सैंहिकेयो विधुन्तुदः २६ सप्तर्षयो मरीच्य
त्रिमुखाश्चित्रशिखण्डिनः । राशीनामुदयो लग्नं
ते तु मेषवृषादयः २७

(मृगशिर के नाम) मृगशीर्ष १ मृगशिर २ इस्की पूर्णिमा आग्रहायणी १ (मृगशिर के मस्तक पर रहने वाले नक्षत्रों के नाम) इल्वल १ ॥ २३ ॥ (बृहस्पति के नाम) बृहस्पति १ सुराचार्य २ गीष्पति ३ धिषण ४ गुरु ५ जीव ६ आंगिरस ७ वाचस्पति ८ चित्रशिखण्डिज ९ ॥ २४ ॥ (शुक्र के नाम) शुक्र १ दैत्यगुरु २ काव्य ३ उशना ४ भार्गव ५ कवि ६ (मंगल के नाम) अंगारक १ कुज २ भौम ३ लोहितांग ४ महीसुत ५ ॥ २५ ॥ (बुध के नाम) रौहिणेय १ बुध २ सौम्य ३ (शनि के नाम) सौरि १ शनैश्चर २ (राहु के नाम) तमः १ राहु २ स्वर्भानु ३ सैंहिकेय ४ विधुन्तुद ५ ॥ २६ ॥ (मरीचि अंगिरा अत्रि पुलस्त्य पुलह क्रतु वशिष्ठ इन सप्तर्षियों का नाम) चित्रशिखण्डी १ (राशि के उदय का नाम) लग्न १ (राशियों के नाम) मेष १ वृष २ मिथुन ३ कर्क ४ सिंह ५ कन्या ६ तुला ७ वृश्चिक ८ धन ९ मकर १० कुंभ ११ मीन १२ ॥ २७ ॥

सूरस्सूर्य्योर्य्यमादित्या द्वादशात्मा दिवाकराः । भास्करा
हस्करब्रध्नप्रभाकरविभाकराः २८ भास्वद्विव
स्वत्सप्ताश्व हरिदश्वोष्णा रश्मयः । विकर्त्तनार्क
मार्त्तण्डमिहिरारुणपूषणः २९ द्युमणिस्तर-
णिर्म्मित्रश्चित्रभानुर्व्विरोचनः । विभावसुर्ग्र
हपतिस्त्विषाम्पतिरहर्प्पतिः ३० भानुर्हंसस्स
हस्रांशुस्तपनस्सविता रविः । माठरः पिङ्गलो
दण्डश्चण्डांशोः पारिपार्श्विकाः ३१

(सूर्य्य के नाम) सूर १ सूर्य्य २ अर्य्यमा ३ आदित्य ४ द्वादशा-
त्मा ५ दिवाकर ६ भास्कर ७ अहस्कर ८ ब्रध्न ९ प्रभाकर १०
विभाकर ११ ॥ २८ ॥ भास्वान् १२ विवस्वान् १३ सप्ताश्व
१४ हरिदश्व १५ उष्णरश्मि १६ विकर्त्तन १७ अर्क १८ मा-
र्त्तण्ड १९ मिहिर २० अरुण २१ पूषा २२ ॥ २९ ॥ द्युमणि २३
तरणि २४ मित्र २५ चित्रभानु २६ विरोचन २७ विभावसु २८
ग्रहपति २९ त्विषाम्पति ३० अहर्प्पति ३१ ॥ ३० ॥ भानु ३२
हंस ३३ सहस्रांशु ३४ तपन ३५ सविता ३६ रवि ३७ कर्म्म
साक्षी ३८ जगच्चक्षु ३९ लोकबन्धु ४० त्रयीतनु ४१ प्रद्योत-
न ४२ दिनमणि ४३ खद्योत ४४ लोकबान्धव ४५ इन ४६
भग ४७ धामनिधि ४८ अंशुमाली ४९ अब्जिनीपति ५०
(सूर्य्यपार्श्ववर्त्तियों के नाम) माठर १ पिङ्गल २ दण्ड ३
॥ ३१ ॥

सूतः सूतोऽरुणोऽनूरुः काश्यपिर्गरुडाग्रजः। परिवेषस्तु परिधिरुपसूर्य्यकमण्डले ३२ किरणोऽस्रमयूखांशुगभस्तिघृणिरश्मयः। भानुः करोमरीचिस्स्त्रीपुंसयोर्दीधितिस्त्रियाम ३३ स्युःप्रभारुग्रुचिस्त्विड्भाभास्छविद्युति दीप्तयः। रोचिः शोचिरुभेक्लीबे प्रकाशो द्योत आतपः ३४ कोष्णङ्कवोष्णम्मन्दोष्णङ्कदुष्णन्त्रिषुतद्वति। तिग्मन्तीक्ष्णङ्खरन्तद्वन्मृगतृष्णा मरीचिका ३५ इति दिग्वर्गः ॥

( सूर्य्य के सारथि के नाम ) सूर सूत १ अरुण २ अनूरु ३ काश्यपि ४ गरुडाग्रज ५ ( सूर्य्य के मण्डल के अर्थात् जो कभी २ उन के चारों ओर घेरा सा बन जाता है उस के नाम ) परिवेष १ परिधि २ उपसूर्य्यक ३ मण्डल ४ ॥ ३२ ॥ ( सूर्य्य किरण के नाम ) किरण १ उस्र २ मयूख ३ अंशु ४ गभस्ति ५ घृणि ६ रश्मि ७ भानु ८ कर ९ मरीचि १० दीधिति ११ ॥ ३३ ॥ ( दीप्ति के नाम ) प्रभा १ रुक् २ रुचि ३ त्विट् ४ भा ५ भाः ६ छवि ७ द्युति ८ दीप्ति ९ रोचि १० शोचि ११ ( घाम के नाम ) प्रकाश १ द्योत २ आतप ३ ॥ ३४ ॥ ( थोड़े गर्म्मी के नाम ) कोष्ण १ कवोष्ण २ मन्दोष्ण ३ कदुष्ण ४ ( बहुत गर्म्मी के नाम ) तिग्म १ तीक्ष्ण २ खर ३ ( दो पहर की झल झलाहट के नाम ) मृगतृष्णा १ मरीचिका २ ॥ ३५ ॥ इति दिग्वर्गः ॥

कालो दिष्टोऽप्यनेहापि समयोऽप्यथ पक्षतिः ।
प्रतिपद् द्वे इमे स्त्रीत्वे तदाद्यास्तिथयो द्वयोः १ ॥
घस्रो दिनाहनी वा तु क्लीबे दिवसवासरौ । प्र-
त्यूषोऽहर्मुखं कल्यमुषःप्रत्यूषसी अपि २ प्र-
भातञ्च दिनान्ते तु सायं सन्ध्या पितृप्रसूः । प्रा-
ह्णापराह्णमध्याह्नास्त्रिसन्ध्यमथ शर्वरी ३
निशा निशीथिनी रात्रिस्त्रियामा क्षणदा क्षपा ।
विभावरीतमस्विन्यौ रजनी यामिनी तमी ४ तमि-
स्रा तामसी रात्रि ज्यौत्स्नी चन्द्रिकयान्विता । आ-
गामिवर्त्तमानाहर्युक्तायां निशि पक्षिणी ५

(समय के नाम) काल १ दिष्ट २ अनेहा ३ समय ४ (परिवा के नाम) पक्षति १ प्रतिपत् २ (प्रतिपदादि का नाम) तिथि १ ॥ १ ॥ (दिन के नाम) घस्र १ दिन २ अहः ३ दिवस ४ वासर ५ (प्रातःकाल के नाम) प्रत्यूष १ अहर्म्मुख २ कल्य ३ उषः ४ प्रत्यूषः ५ ॥ २ ॥ प्रभात ६ (सन्ध्या के नाम) दिनान्त १ सायम् २ सन्ध्या ३ पितृप्रसू ४ (प्रातस्सन्ध्या का नाम) प्राह्ण १ (मध्याह्न संध्या का नाम) मध्याह्न १ (सायं सन्ध्या का नाम) अपराह्ण १ (इन ३ सन्ध्याओं का नाम) त्रिसन्ध्या १ (रात्रि के नाम) शार्व्वरी १ ॥ ३ ॥ निशा २ निशीथिनी ३ रात्रि ४ त्रियामा ५ क्षणदा ६ क्षपा ७ विभावरी ८ तमस्विनी ९ रजनी १० रजनि ११ यामिनी १२ तमी १३ तमा १४ तमि १५ ॥ ४ ॥ अन्धियारी रात्रि का नाम तमिस्रा १ (उजियारी रात्रि का नाम) ज्योत्स्नी १ (वर्त्तमान और आगामुक दिन रात्रि का नाम) पक्षिणी १ ॥ ५ ॥

गणरात्रन्निशाबह्व्यः प्रदोषोरजनीमुखम्। अ-
र्द्धरात्रनिशीथौ द्वौ द्वौ यामप्रहरौ समौ ६ स पर्व्व
सन्धिः प्रतिपत्पञ्चदश्योर्य्यदन्तरम्। पक्षान्तौ
पञ्चदश्यौ द्वे पौर्णमासी तु पूर्णिमा ७ कला
हीने सानुमतिः पूर्णे राका निशाकरे। अमावा
स्यात्वमावस्या दर्शस्सूर्य्येन्दुसङ्गमः ८ सा-
दृष्टेन्दुस्सिनीवाली सानष्टेन्दुःकलाकुहूः।
उपरागो ग्रहो राहुग्रस्ते त्विन्दौ च पूष्णि च ९ सो-
पप्लवोपरक्तौ द्वावग्न्युत्पात उपाहितः। एकयो
क्त्या पुष्पवन्तौ दिवाकरनिशाकरौ १०

(बहुत रात्रियों के नाम) गणरात्र १ (रात्रि के प्रथम भाग के नाम)
प्रदोष १ रजनीमुख २ (आधी रात्रि के नाम) अर्द्धरात्र १ निशीथ २
(प्रहर के नाम) याम १ प्रहर २॥ ६॥ (प्रतिपत् पंचदशी के अन्तर के योग
के नाम) पर्व्व वा पर्व्व सन्धि २ (अमावास्या और पौर्णमासी के
नाम) पक्षान्त १ पञ्चदशी २ (पौर्णमासी के नाम) पौर्णमासी १
पूर्णिमा २॥ ७॥ (कला हीन पूर्णिमा का नाम) अनुमति १ (कलास-
हित पूर्णिमा का नाम) राका १ (अमावास्या के नाम) अमावास्या १ अ-
मावस्या २ अमावसी ३ अमावासी ४ अमामासी ५ अमामसी ६ अमा
७ दर्श ८ सूर्य्येन्दुसङ्गम ९॥ ८॥ (चतुर्द्दशी के दिन की अमावास्या
का नाम) सिनीवाली १ (परा अमावस्या के नाम) कुहू १ कुहु २ (ग्र-
हण के नाम) उपराग १ ग्रह २॥ ९॥ सोपप्लव ३ उपरक्त ४ (धूमकेतु
के नाम) अग्न्युत्पात १ उपाहित २ (सूर्य्य चन्द्र दोनों के एकत्र रहने
का नाम) पुष्पवन्तौ १॥ १०॥

अष्टादश निमेषास्तु काष्ठा त्रिंशत्तु ताः कला।
तास्तु त्रिंशत्क्षणस्ते तु मुहूर्तो द्वादशास्त्रिया
म् २१ ते तु त्रिंशदहोरात्रः पक्षस्ते दश पञ्च च।
पक्षौ पूर्वापरौ शुक्लकृष्णौ मासस्तु तावुभौ २२
द्वौ द्वौ माघादिमासौ स्यादृतुस्तैरयनं त्रिभिः।
अयने द्वे गतिरुदग्दक्षिणार्कस्य वत्सरः २३
समरात्रिन्दिवे काले विषुवद्विषुवच्च तत्। मार्ग
शीर्षे सहा मार्ग आग्रहायणिकश्च सः २४ पौ-
षे तैषसहस्यौ द्वौ तपा माघेऽथ फाल्गुने। स्यात्त
पस्यः फाल्गुनिकः स्याच्चैत्रे चैत्रिको मधुः २५

(पलक मारने का नाम) निमेष १ (१८ निमेष का नाम) काष्ठा १ (३० काष्ठा का नाम) कला १ (३० कला का नाम) क्षण १ (१२ क्षण का नाम) मुहूर्त १ ॥ २१ ॥ (३० मुहूर्त का नाम) अहोरात्र १ (१५ अहोरात्र का नाम) पक्ष १ पक्ष दो हैं शुक्ल १ कृष्ण २ (२ पक्ष का नाम) मास १ (२ मास का नाम) ऋतु १ (३ ऋतु का नाम) अयन १ ॥ २२ ॥ (अयन दो हैं दक्षिणायन १ उत्तरायण २ (२ अयन का नाम) वत्सर १ ॥ २३ ॥ (तुला मेष संक्रान्ति के नाम) विषुवत् १ विषुव २ (अगहन के नाम) मार्गशीर्ष १ सहाः २ मार्ग ३ आग्रहायणिक ४ ॥ २४ ॥ (पूस के नाम) पौष १ तैष २ सहस्य ३ (माघ के नाम) तपाः १ माघ २ (फाल्गुन के नाम) फाल्गुन १ तपस्य २ फाल्गुनिक ३ (चैत्र के नाम) चैत्र १ चैत्रिक २ मधु ३ ॥ २५ ॥

वैशाखे माधवो राधो ज्येष्ठे शुक्रः शुचिस्त्वयम् ।
आषाढे श्रावणे तु स्यान्नभाः श्रावणिकश्च सः
२६ स्युर्नभस्यप्रौष्ठपदभाद्रभाद्रपदाः समाः ।
स्यादाश्विन इषोप्याश्वयुजोपि स्यात्तु कार्तिके
२७ बाहुलोर्जौ कार्तिकिको हेमन्तः शिशिरोस्त्रिया
म् । वसन्ते पुष्पसमयः सुरभिर्ग्रीष्म ऊष्मकः २८
निदाघ उष्णोपगम उष्ण ऊष्मागमस्तपः । स्त्रि-
यां प्रावृट् स्त्रियां भूम्नि वर्षा अथ शरत्स्त्रियाम्
२९ षडमी ऋतवः पुंसि मार्गादीनां युगैः क्रमा-
त् । संवत्सरो वत्सरोऽब्दो हायनोस्त्री शरत्समाः ३०

(वैशाख के नाम) वैशाख १ माधव २ राध ३ (ज्येष्ठ के नाम) ज्येष्ठ १ शुक्र २ (आषाढ के नाम) शुचि १ आषाढ २ (श्रावण के नाम) श्रावण १ नभाः २ श्रावणिक ३ ॥ २६ ॥ (भादों के नाम) नभस्य १ प्रोष्ठपद २ भाद्र ३ भाद्रपद ४ (क्वार के नाम) आश्विन १ इष २ आश्वयुज ३ (कार्त्तिक के नाम) कार्तिक १ ॥ २७ ॥ बाहुल २ ऊर्ज ३ कार्तिकिक ४ (अगहन पूस का नाम) हेमन्त १ (माघ फाल्गुन का नाम) शिशिर १ (चैत्र बैशाख के नाम) बसन्त १ पुष्पसमय २ सुरभि ३ (ज्येष्ठ आषाढ के समय का नाम) ग्रीष्म १ ऊष्मक २ ॥ २८ ॥ निदाघ ३ उष्णोपगम ४ उष्ण ५ ऊष्मागम ६ तप ७ (वर्षा ऋतु के नाम) प्रावृट् १ वर्षा २ (क्वार कार्तिक का नाम) शरद् १ ॥ २९ ॥ (वर्ष के नाम) संवत्सर १ वत्सर २ अब्द ३ हायन ४ शरत् ५ समा ६ ॥ ३० ॥

मासेनस्यादहोरात्रः पैत्रो वर्षेण दैवतः । दैवेयु-
गसहस्रेद्वे ब्राह्मः कल्पौतुतौनृणाम् २१ म-
न्वन्तरन्तुदिव्यानां युगानामेकसप्ततिः । सम्ब
र्त्तःप्रलयःकल्पः क्षयःकल्पान्त इत्यपि २२
अस्त्रीपङ्कं पुमान्पाप्मा पापङ्किल्बिषकल्मष
म्। कलुषम्वृजिनैनोघ मंहोदुरितदुष्कृतम् २३
स्याद्धर्ममस्त्रियाम्पुण्य श्रेयसीसुकृतम्वृषः।
मुत्प्रीतिःप्रमदोहर्ष प्रमोदामोदसम्मदाः २४ स्या
दानन्दथुरानन्द श्शर्मशातसुखानिच ।श्वःश्रे
यसंशिवम्भद्रङ्कल्याणम्मङ्गलंशुभम् २५

मनुष्य के एक महीने का पितरों का दिन रात्रि जानों और १ वर्ष का देवताओं का दिन रात्रि सम. जो देवों के चतुर्युग सहस्र का ब्रह्मा का दिन रात्रि होता है जिसे कल्प कहते हैं ॥ २१ ॥ (देवताओं के ३६० दिन रात्रि का नाम) १ दिव्य वर्ष १२००० दिव्य वर्ष का मनुष्यों का चतुर्युग होता है (७१ दिव्य वर्ष का नाम) मन्वन्तर १ (प्रलय के नाम) संवर्त्त १ प्रलय २ कल्प ३ क्षय ४ कल्पान्त ५ ॥ २२ ॥ (पाप के नाम) पंक १ पाप्मा २ पाप ३ किल्बिष ४ कल्मष ५ कलुष ६ वृजिन ७ एन ८ अघ ९ अंह १० दुरित ११ दुष्कृत १२ ॥ २३ (धर्म के नाम) धर्म १ पुण्य २ श्रेयः ३ सुकृत ४ वृष ५ (हर्ष के नाम) मुत् १ प्रीति २ प्रमद ३ हर्ष ४ प्रमोद ५ आमोद ६ सम्मद ७ ॥ २४ ॥ आनन्दथु ८ आनन्द ९ शर्म १० शात ११ सुख १२ (कल्याण के नाम) श्वःश्रेयस १ शिव २ भद्र ३ कल्याण ४ मंगल ५ शुभ ६ ॥ २५ ॥

भावुकम्भविकम्भव्यं कुशलंक्षेममस्त्रियाम्।
शस्तञ्चाथत्रिषुद्रव्ये पापम्पुरायंसुखादिच २६
मतल्लिकामचर्चिका प्रकाराडमुद्धतल्लजौ।
प्रशस्तवाचकान्यमून्ययमश्शुभावहोविधिः २७
दैवंदिष्टम्भागधेयम्भाग्यं स्त्रीनियतिर्विधिः।
हेतुर्नाकारणम्बीजन्निदानन्त्वादिकारणम् २८
क्षेत्रज्ञ आत्मा पुरुषः प्रधानम्प्रकृतिः स्त्रियाम्।
विशेषःकालिकोवस्थागुणाः सत्त्वंरजस्तमः २९
जनुर्जननजन्मानि जनिरुत्पत्तिरुद्भवः। प्राणी
तु चेतनोजन्मीजन्तुजन्युशरीरिणः ३०

भावुक ७ भविक ८ भव्य ९ कुशल १० क्षेम ११ शस्त १२॥ २६॥ २ (अच्छे के नाम) मतल्लिका १ मचर्चिका २ प्रकाराड ३ उद्ध ४ तल्लज ५ (शुभद का नाम) अय १॥ २७॥ (भाग्य के नाम) दैव १ दिष्ट २ भागधेय ३ भाग्य ४ नियति ५ विधि ६ (कारण के नाम) हेतु १ कारण २ बीज ३ (आदि कारण का नाम) निदान १॥ ॥ २८॥ (चैतन्य पुरुष के नाम) क्षेत्रज्ञ १ आत्मा २ पुरुष ३ (प्रकृति के नाम) प्रधान १ प्रकृति २ (उमरका नाम) अवस्था १ (गुणों के नाम) सत्त्व १ रजः २ तमः ३॥ २९॥ (जन्म के नाम) जनु १ जनन २ जन्म ३ जनि ४ उत्पत्ति ५ उद्भव ६ (प्राणी के नाम) प्राणी १ चेतन २ जन्मी ३ जन्तु ४ जन्यु ५ शरीरी ६ ॥ ३०॥

जातिर्जातञ्च सामान्यम्व्यक्तिस्तु पृथगात्मता॥ चित्तन्तु चेतो हृदयं स्वान्तं हृन्मानसम्मनः ३१

इति कालवर्गः॥

बुद्धिर्म्मनीषा धिषणा धीः प्रज्ञा शेमुषी मतिः प्रेक्षोपलब्धिश्चित्सम्वित्प्रतिपज्ज्ञप्तिचेतनाः १ धीर्धारणावती मेधा सङ्कल्पः कर्म्म मानसम्। चित्ताभोगो मनस्कारश्चर्चा संख्या विचारणा २ अध्याहारस्तर्क ऊहो विचिकित्सा तु संशयः। सन्देहद्वापरौ चाथ समौ निर्णयनिश्चयौ ३

(जाति मात्र के नाम) जाति १ जात २ सामान्य ३ (व्यक्ति वाचक के नाम) व्यक्ति १ पृथगात्मता २ (चित्त के नाम) चित्त १ चेतः २ हृदय ३ स्वान्त ४ हृत् ५ मानस ६ मनः ७॥ ३१॥

इति कालवर्गः

(बुद्धि के नाम) बुद्धि १ मनीषा २ धिषणा ३ धी ४ प्रज्ञा ५ शेमुषी ६ मति ७ प्रेक्षा ८ उपलब्धि ९ चित् १० संवित् ११ प्रतिपत् १२ ज्ञप्ति १३ चेतना १४॥ १॥ (धारणावती बुद्धि का नाम) मेधा १ (मन के काम का नाम) संकल्प १ (चित्त की पूर्णता के नाम) चित्ताभोग १ मनस्कार २ (विचार के नाम) चर्चा १ संख्या २ विचारणा ३॥ २॥ (अपूर्व्व विचार के नाम) अध्याहार १ तर्क २ ऊह ३ (संशय के नाम) विचिकित्सा १ संशय २ संदेह ३ द्वापर ४ (निश्चय के नाम) निर्णय १ निश्चय २॥ ३॥

मिथ्या दृष्टिर्नास्तिकता व्यापादो द्रोह चिन्तनम्।
समौ सिद्धान्त राद्धान्तौ भ्रान्तिर्मिथ्यामतिर्भ्रमः ४
सम्विदागूः प्रतिज्ञान न्नियमाश्रव संश्रवाः। अ-
ङ्गीकाराभ्युपगम प्रतिश्रव समाधयः ५ मोक्षेधी-
र्ज्ञानमन्यत्र विज्ञानं शिल्प शास्त्रयोः। मुक्तिःकै-
वल्य निर्वाण श्रेयो निश्श्रेयसामृतम् ६ मोक्षो
पवर्गो थाज्ञान मविद्या हम्मतिस्स्त्रियाम्। रूपं
शब्दो गन्धरसस्पर्शाश्च विषयाअमी ७ गोच
राइन्द्रियार्थाश्च हृषीकन्विषयीन्द्रियम्। क-
र्मेन्द्रियन्तु पाय्वादि मनोनेत्रादि धीन्द्रियम् ८

(परलोक मिथ्या समझने का नाम) मिथ्या दृष्टि १ नास्तिक-
ता २ (पर द्रोह के नाम) व्यापाद १ द्रोह चिंतन २ (सिद्ध होने
के नाम) सिद्धान्त १ राद्धांत २ (भ्रम के नाम) भ्रांति १ मिथ्याम-
ति २ भ्रम ३ ॥ ४॥ (अंगीकार के नाम) संवित् १ आगू २ प्रति
ज्ञान ३ नियम ४ आश्रव ५ संश्रव ६ अंगीकार ७ अभ्युपग
म ८ प्रतिश्रव ९ समाधि १० ॥ ५॥ (मोक्ष में बुद्धि लगाने का
नाम) ज्ञान १ (मोक्ष में बाहर बुद्धि लगाने का नाम) विज्ञान १
(मोक्ष के नाम) मुक्ति १ कैवल्य २ निर्वाण ३ श्रेयः ४ निश्श्रेय-
स ५ अमृत ६ ॥ ६॥ मोक्ष ७ अपवर्ग ८ (अज्ञान के नाम)
अज्ञान १ अविद्या २ अहम्मति ३ (पञ्च विषयों के नाम) रूप १
रस १ शब्द १ गन्ध १ स्पर्श १ ॥ ७॥ इन्द्रिय के नाम, हृषीक १ वि-
षयी २ इंद्रिय ३ (कर्मेन्द्रियों के नाम) गुद १ लिंग १ हस्त १ पाद १
वाणी १ (ज्ञानेन्द्रियों के नाम) मनः १ कर्ण १ नेत्र १ जिह्वा १ त्वचा १ ना-
सिका १ ॥ ८॥

तुवरस्तु कषायोस्त्री मधुरो लवणः कटुः । तिक्तो
ऽम्लश्च रसाः पुंसि तद्वत्सु षडमी त्रिषु ९ विमर्दो-
त्थे परिमलो गन्धे जनमनोहरे । आमोदस्सोति-
निर्हारी वाच्यलिङ्ग-त्वमागुणात् १० समाकर्षी
तु निर्हारी सुरभि र्घ्राणतर्पणः । इष्टगन्धस्सुग
न्धिस्स्यादामोदी मुखवासनः ११ पूतिगन्धि
स्तु दुर्गन्धो विस्रं स्यादामगन्धियत् । शुक्लशु
भ्र शुचिश्वेतविशदश्येतपाण्डराः १२ अवदात
स्सितोगौरोऽवलक्षो धवलोऽर्ज्जुनः । हरिणः
पाण्डुरःपाण्डुरी पत्पाण्डुस्तु धूसरः १३

(कसैला रस के नाम) तुवर १ कषाय २ हरीत्यादि ॥ (अन्य रसों के नाम) मधुर १ जलादि ॥ लवण १ सैंधवादि ॥ कटु १ मरीचादि ॥ तिक्त निम्बादि ॥ अम्ल १ अम्लादि ॥ ९ ॥ (बकुल पुष्पगन्धि का नाम) परिमल १ (कस्तूरी गन्धि का नाम) आमोद १ ॥ १० ॥ (दूर ही से जिसकी गन्धि आवे उसके नाम) समाकर्षी १ निर्हारी २ (अत्यु-त्तम गन्ध के नाम) सुरभि १ घ्राणतर्पण २ इष्टगन्ध ३ सुगन्ध ४ (कर्पूर ताम्बूलादि मुख शोधक गन्ध के नाम) आमोदी १ मुख-वासनः २ ॥ ११ ॥ (दुर्गन्धि के नाम) पूतिगन्धि १ दुर्गन्धि २ (क-च्चे मांसादि के गन्ध का नाम) विस्र १ (उज्ज्वल के नाम) शुक्ल १ शुभ्र २ शुचि ३ श्वेत ४ विशद ५ श्येत ६ पाण्डुर ७ ॥ १२ ॥ अव-दात ८ सित ९ गौर १० अवलक्ष ११ धवल १२ अर्ज्जुन १३ ह-रिण १४ पाण्डुर १५ पाण्डु १६ (किञ्चित उज्ज्वल का नाम) धूसर १ ॥ १३ ॥

कृष्णो नीलासितश्यामकालश्यामलमेचकाः।
पीतो गौरो हरिद्राभः पालाशो हरितो हरित् २४
रोहितो लोहितो रक्तः शोणः कोकनदच्छविः।
अव्यक्तरागस्त्वरुणः श्वेतरक्तस्तु पाटलः २५
श्यावस्स्यात्कपिशो धूम्रधूमलौ कृष्णलोहिते।
कडारः कपिलः पिङ्गपिशङ्गौ कद्रुपिङ्गलौ २६
चित्रं किर्मीरकल्माषशबलैताश्च कर्बुरे। गुणे
शुक्लादयः पुंसि गुणिलिङ्गास्तु तद्वति २७
इति धीवर्गः॥

ब्राह्मी तु भारती भाषा गीर्वाग्वाणी सरस्वती।
व्याहार उक्तिर्लपितम्भाषितम्वचनम्वचः १

(काले के नाम) कृष्ण १ नील २ असित ३ श्याम ४ काल ५ श्यामल ६ मेचक ७ (पीले के नाम) पीत १ गौर २ हरिद्राभ ३ (हरे के नाम) पालाश १ हरित २ हरित् ३ ॥ २४ ॥ (लाल के नाम) लोहित १ रोहित २ रक्त ३ (लाल कमल सम रंग का नाम) शोण १ (थोड़े लाल का नाम) अरुण १ (उज्ज्वल लाल मिले हुये का नाम) पाटल १ ॥ २५ ॥ (धूमिले लाले रंग के नाम) श्याव १ कपिश २ (काले मिलित रक्त वर्ण के नाम) धूम्र १ धूमिल २ (कुम्हरे रंग के नाम) कडार १ कपिल २ पिंग ३ पिशंग ४ कद्रु ५ पिंगल ६ ॥ २६ ॥ (चित्र वर्ण अर्थात् किरमिजी के नाम) चित्र १ किर्मीर २ कल्माष ३ शबल ४ एत ५ कर्बुर ६ ॥ २७ ॥ इति धीवर्गः ॥

( बोलने के नाम) ब्राह्मी १ भारती २ भाषा ३ गीः ४ गिरा ५ वाक् ६ वाणी ७ सरस्वती ८ व्याहार ९ उक्ति १० लपित ११ भाषित १२ वचन १३ वचः १४ ॥ १

अपभ्रंशोपशब्दस्स्याच्छास्त्रे शब्दस्तु वाचकः
तिङ्सुबन्तचयो वाक्यङ्क्रिया वा कारकान्वि-
ता १ श्रुतिस्स्त्री वेद आम्नायस्त्रयीधर्म्मस्तुत
द्विधिः । स्त्रियामृक्सामयजुषी इति वेदास्त्रय
स्त्रयी २ शिक्षेत्यादिश्रुतेरङ्गमोङ्कारप्रणवौ
समौ । इतिहासःपुरावृत्तमुदात्ताद्यास्त्रयस्स्व
राः ४ आन्वीक्षिकी दण्डनीतिस्तर्कविद्या-
र्थशास्त्रयोः । आख्यायिकोपलब्धार्थापु-
राणम्पञ्चलक्षणम् ५

(अपध्वंश अर्थात् बिगरे हुये शब्द का नाम) अपभ्रंश १ (व्या-
करण शास्त्रानुसार शुद्ध शब्द का नाम) शब्द १ तिङन्त सुब
न्त के बटोर का नाम) वाक्य १ (कारकान्वित क्रिया का विकल्प क-
रके नाम) वाक्य १॥ २॥ (वेद के नाम) श्रुति १ वेद २ आम्नाय ३ त्रयी
४ (वेद के विधि का नाम) धर्म्म १ (वेदों के नाम) ऋक् १ यजुः २ सा
म १ (इन्हीं का नाम) त्रयी ३ ॥ ३॥ (वेद के ६ अंग ये हैं) शिक्षा १ क-
ल्प १ व्याकरण १ निरुक्त १ ज्योतिषांगति १ छन्दोविचिति १ (ओं-
कार के नाम) ओंकार १ प्रणव २ (इतिहास के नाम) इतिहास १ पुरा
वृत्त २ (उदात्त अनुदात्त स्वरित का नाम) स्वर १॥ ४ ॥ (तर्क विद्या
का नाम) आन्वीक्षिकी १ (अर्थ शास्त्र का नाम) दण्डनीति १ (अनु
भव के नाम) आख्यायिका १ उपलब्धार्था २ (पंच लक्षण जिसमें
हों उसका नाम) पुराण १ (पंच लक्षण ये हैं) सर्ग १ प्रतिसर्ग २ वं-
श वर्णन ३ मन्वन्तर कथा ४ वंशानुचरित ५ ॥ ५ ॥

प्रबन्धकल्पनाकथा प्रवल्हिका प्रहेलिका। स्मृ
तिस्तुधर्म्मसंहिता समाहृतिस्तुसंग्रहः ६
समस्यातुसमासार्थ्या किंवदन्तीजनश्रुतिः२८
वार्त्ताप्रवृत्तिर्वृत्तान्त उदन्तस्स्यादथाह्वयः ७ आ
ख्याह्वे अभिधानञ्च नामधेयञ्च नामच। हूति
राकारणाह्वानं संहूतिर्बहुभिः कृता ८ विवा
दो व्यवहारस्स्यादुपन्यासस्तुवाङ्मुखम्। उपोद्
घातउदाहार शपनं शपथःपुमान् ९ प्रश्नो
नुयोगःपृच्छाचप्रतिवाक्योत्तरे समे। मिथ्या
भियोगोऽभ्याख्यानमथमिथ्याभिशंसनम्१०

(बड़े वाक्य की रचना का नाम) कथा १ (जिस के अवण से अन्य अर्थ विदि-
त हो और विचारांश से और उस कहानी के नाम) प्रवल्हिका १ प्रहेलि-
का २ (धर्म्मबोधार्थ श्लोकों के बटोर का नाम) स्मृति १ (संग्रह के नाम)
समाहृति १ संग्रहः २॥ ६॥ (जिस में कुछ पूरा किया जावे उस का नाम) स-
मस्या १ (लोक प्रवाद अर्थात् दुर्यश के नाम) किंवदन्ती १ जनश्रुति २
(समाचार के नाम) वार्त्ता १ प्रवृत्ति २ वृत्तान्त ३ उदन्त ४ (नाम के नाम) आ-
ह्वय १॥ ७॥ आख्या २ अभिधान ३ नामधेय ४ नाम ५ (पुकारने के नाम) हू-
ति १ आकारण २ आह्वान ३ (बहुत जनों के पुकारने का नाम) संहूति १॥
॥ ८ ॥ (विवाद के नाम) विवाद १ व्यवहार २ (उपन्यास के नाम) उपन्यास १
वाङ्मुख २ (होनहार योग्य वर्णन के नाम) उपोद्घात १ उदाहार २ (सौगन्द
खाने के नाम) शपन १ शपथ २॥ ९॥ (प्रश्न के नाम) प्रश्न १ अनुयोग २ पृ-
च्छा ३ (उत्तर के नाम) प्रतिवाक्य १ उत्तर २ (झूंठ लगाने के नाम) मिथ्याभियो-
ग १ अभ्याख्यान २ (अदिया दिया न किसी को लगाने के नाम) मिथ्याभिशंसन १॥१०

अभिप्रायः प्रसादस्तु शब्दः स्यादनुरागजः। यशः कीर्तिस्समज्ञा च स्तवस्तोत्रंस्तुतिर्नुतिः ११ आम्रेडितं द्विस्त्रिरुक्तमुच्चैर्घुष्टन्तु घोषणा। काकुः स्त्रियां विकारो यश्शोकभीत्यादिभिर्ध्वनेः १२ अवर्णाक्षेपनिर्व्वाद परीवादापवादवत। उपक्रोशो जुगुप्साच कुत्सा निन्दाच गर्हणे १३ पारुष्यमतिवादस्याद्भर्त्सनन्त्वपकारगीः। यस्सनिन्द उपालम्भस्तत्र स्यात्परिभाषणम् १४ तत्र त्वाक्षारणायस्स्यादाक्रोशो मैथुनम्प्रति। स्यादाभाषणमालापः प्रलापोनर्त्थकम्वचः १५

अभिप्राय २ (अनुरागज शब्द का नाम) प्रसाद १ (कीर्त्ति के नाम) यश १ कीर्त्ति २ समज्ञा ३ (स्तुति के नाम) स्तव १ स्तोत्र २ स्तुति ३ नुति ४ ॥ ११॥ (दो तीन वार कहने का नाम) आम्रेडित १ (जोर से पढ़ने के नाम) उच्चैर्घुष्ट १ घोषणा २ (शोक भय कामादि युक्त वचन का नाम) काकु १ ॥ १२ ॥ (निन्दा के नाम) अवर्ण १ आक्षेप २ निर्व्वाद ३ परीवाद ४ परिवाद ५ अपवाद ६ उपक्रोश ७ जुगुप्सा ८ कुत्सा ९ निन्दा १० गर्हणा ११ ॥ १३ ॥ (निठुर भाषण के नाम) पारुष्य १ अतिवाद २ (चोरी आदि लगाके डरवाने का नाम) भर्त्सन १ (खिझाने का नाम) परिभाषण १॥ १४ ॥ (पर स्त्री से मैथुनार्त्थ वार्त्ता करने के नाम) आक्षारणा १ आक्षारणा २ (सम्बोधन पूर्व्वक वार्त्ता करने के नाम) आभाषण १ आलाप २ (अनर्त्थ वचन का नाम) प्रलाप १ ॥ १५॥

अनुलापो मुहुर्भाषा विलापः परिदेवनम्। वि-
प्रलापो विरोधोक्तिः संलापो भाषणं मिथः॥ १६॥
सुप्रलापः सुवचनमपलापस्तु निह्नवः। सन्देश-
वाग्वाचिकं स्यादुग्भेदास्तु त्रिषूत्तरे॥ १७॥ रुशती
वागकल्याणी स्यात्कल्या तु शुभात्मिका। अ-
त्यर्थमधुरं सान्त्वं सङ्गतं हृदयङ्गमम्॥ १८॥ निष्ठु-
रम्परुषं ग्राम्यमश्लीलं सूनृतम्प्रिये। सत्येथ संकु-
लक्लिष्टे परस्परपराहते॥ १९॥ लुप्तवर्णपदं ग्रस्त-
न्निरस्तन्त्वरितोदितम्। अम्बूकृतं सनिष्ठीवम-
बद्धं स्यादनर्थकम्॥ २०॥

(अभिशोक युक्त भाषण के नाम) अनुलाप १ मुहुर्भाषा २ (रोने के नाम) विलाप १ परिदेवन २ (परस्पर विरुद्ध भाषण के नाम) विप्रला-प १ विरोधोक्ति २ (परस्पर योग्य भाषण का नाम) संलाप १॥ १६॥ (सुन्दर वचन के नाम) सुप्रलाप १ सुवचन २ (छिपे हुये वचन के ना-म) अपलाप १ निह्नव २ (सन्देश के नाम) सन्देशवाक् १ वाचिक २ ॥ १७॥ (अमंगल वाक्य का नाम) रुशती १ (शुभ वचन का नाम) क-ल्या १ (अति मिष्ट वचन का नाम) सान्त्व १ (सम्बद्ध अर्थात् योग्य वचन का नाम) संगत १ हृदयंगम २॥ १८॥ (बड़े बोल के नाम) नि-ष्ठुर १ परुष २ (शिथिल वचन के नाम) ग्राम्य १ अश्लील २ (प्रिय सत्य वचन का नाम) सूनृत १ (पूर्वापर विरुद्ध वचन के नाम) सं-कुल १ क्लिष्ट २॥ १९॥ (आध कहे वचन का नाम) ग्रस्त १ (हल्ल बल्ल वचन का नाम) निरस्त १ (थूक सहित बोलने का नाम) अम्बूकृत १ (अर्थ न्यून वचन का नाम) अबद्ध १॥ २०॥

अनक्षरमवाच्यं स्यादाहतन्तु मृषार्थकम् । अ-
थ म्लिष्टमविस्पष्टं वितथन्त्वनृतं वचः २१ स-
त्यं तथ्यमृतं सम्यगमूनि त्रिषु तद्वति । शब्दे नि-
नादनिनदध्वनिध्वानरवस्वनाः २२ स्वान
निर्घोषनिर्ह्रादनादनिस्वाननिस्वनाः आर
वारावसंराव विरावा अथ मर्मरः २३ स्वनिते व-
स्त्रपर्णानां भूषणानान्तु शिञ्जितम् । निक्वा
णो निक्वणः क्वाणः क्वणः क्वणनमित्यपि २४
वीणायाः क्वणिते प्रादेः प्रक्वाणप्रक्वणादयः ।
कोलाहलः कलकलस्तिरश्चां वाशितं रुतम् २५

(अकथन योग्य के नाम) अनक्षर १ अवाच्य २ (झुठाई काना-
म) आहत १ (अप्रतीक के नाम) म्लिष्ट १ अविस्पष्ट २ (झूठ का
नाम) अनृत १ ॥ २१ ॥ (सत्य के नाम) सत्य १ तथ्य २ ऋत ३ सम्य-
क् ४ (शब्द के नाम) शब्द १ निनाद २ निनद ३ ध्वनि ४ ध्वान ५
रव ६ स्वन ७ ॥ २२ ॥ स्वान ८ निर्घोष ९ निर्ह्राद १० नाद ११ नि-
स्वान १२ निस्वन १३ आरव १४ आराव १५ संराव १६ विराव १७
(वस्त्र और पत्तों की मर्मराहट का नाम) मर्मर १ ॥ २३ ॥ (गह-
ना की खन खनाहट का नाम) शिंजित १ (वीणादि शब्दों
के नाम) निक्वाण १ निक्वण २ क्वाण ३ क्वण ४ क्वणन ५
॥ २४ ॥ (केवल वीणा के बाजा के नाम) प्रक्वाण १ प्रक्व-
ण २ प्रक्वणन ३ उपक्वणादि ४ (बड़े हल्ला के नाम)
कोलाहल १ कलकल २ (पक्षियों की बोली के नाम)
वाशित १ रुत २ ॥ २५ ॥

स्त्री प्रतिश्रुत्प्रतिध्वाने गीतङ्गानमिमे समे॥ इति शब्दादिवर्गः॥

निषादर्षभगान्धारषड्जमध्यमधैवताः। पञ्चमश्चेत्यमी सप्त तन्त्रीकण्ठोत्थिताः स्वराः १ काकली तु कले सूक्ष्मे ध्वनौ तु मधुरास्फुटे। कलो मन्द्रस्तु गम्भीरे तारोऽत्युच्चैस्त्रयस्त्रिषु २ समन्वितलयस्त्वेकतालो वीणा तु वल्लकी। विपञ्ची सा तु तन्त्रीभिस्सप्तभिः परिवादिनी ३ ततं वीणादिकं वाद्यमानद्धम्मुरजादिकम्। वंश्यादिकन्तु सुषिरं कांस्यतालादिकं घनम् ४

(प्रति शब्द अर्थात् गूंज के नाम) प्रतिश्रुत १ प्रतिध्वान २ (गाने के नाम) गीत १ गान २॥ इति शब्दादि वर्गः॥

(बाजा वा कण्ठ से गाने का नाम) निषाद १ ऋषभ २ गान्धार ३ षड्ज ४ मध्यम ५ धैवत ६ पञ्चम ७॥१॥ (इनमें इतनी की बोली) निषाद १ गौकी ऋषभ १ छाग की गान्धार १ मयूर की षड्ज १ क्रौंचादि की मध्यम १ घोड़े की धैवत १ कोकिल की पंचम १ (सूक्ष्म शब्द का नाम) काकली १ (मिठबोली बोली का नाम) कल १ (गम्भीर शब्द का नाम) मन्द्र १ (अत्युच्च शब्द का नाम) तार १॥२॥ (वाद्य गानादि के एक संग ताल स्वर का नाम) एकताल १ (वीणा के नाम) वीणा १ विपञ्ची २ वल्लकी ३ (वीणा का लक्षण) ७ तार हों जिस में॥३॥ (वीणादि का नाम) तत १ मुरजादिक अर्थात् मृदंगादि का नाम) आनद्ध १ (वंशादि का नाम) सुषिर १ (झांझ मजीरादि का नाम) घन १॥४॥

चतुर्व्विधमिदम्वाद्यम्वादित्रातोद्यनामकम्।
मृदङ्गामुरजा भेदास्त्वङ्क्यालिंग्योर्ध्वकास्त्र-
यः ५ स्याद्यशः पटहोढक्का भेर्य्यामानकदु-
न्दुभी। आनाकः पटहोस्त्रीस्यात्कोणोवी-
णादिवादनम् ६ वीणादण्डः प्रवालस्स्या-
त्ककुभस्तुप्रसेवकः। कोलम्बकस्तुकायो-
स्या उपनाहोनिबन्धनम् ७

तत १ आनद्ध १ घन १ सुषिर १ इन्हें आतोद्य कहते हैं (मृदं-
ग के नाम) मृदंगा १ मुरजा २ मृदंग के ३ भेद हैं अङ्क्य १ आ-
लिङ्ग्य १ ऊर्ध्वक गोदमें लेकर बजाया जावे सो अंक्य १ जो आ-
लिङ्गन करके बजाया जावे सो आलिङ्ग्य १ (ऊपर को मुख
करके बजाया जावे सो) ऊर्ध्वक १ (इन के लक्षण) (हरीत
की के डौल का) अङ्क्य १ (यव तुल्य मध्य) ऊर्ध्वक १ (गोपु-
च्छ सदृश) आलिंग्य १॥ ५॥ (डङ्कुन के नाम) यशः पटह १
ढक्का २ (नुरुही के नाम) भेरी १ आनक २ दुन्दुभि ३
(नगारा के नाम) आनाक १ पटह २ (जिस से वीणा-
दि बजाते हैं उस का नाम) कोण १॥ ६॥ (वीणा की
डाण्डी का नाम प्रवाल १ (वीणा के नीचे जो खोल २
चर्म्म से मढ़ा हुआ होता है उस के नाम) ककुभ १ प्रसे-
वक २ (वीणा के सर्व्वांग का नाम) कोलम्बक १ (
वीणा में जहां तार बांधे जाते हैं उस के नाम) उपनाह
१ निबन्धन २॥ ७॥ ७॥ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७॥

वाद्यप्रभेदा डमरुमड्डुडिण्डिमझर्झराः। मर्द्दलः पणवोन्येच नर्त्तकीलासिके समे ८ विलम्बितन्द्रुतम्मध्यं तत्त्वमोघोघनंक्रमात्। तालः कालक्रियामानं लयस्साम्यमथास्त्रियाम् ९ ताण्डवंनटनंनाट्यं लास्यन्नृत्यञ्चनर्त्तने। तौर्य्यत्रिकन्नृत्यगीतवाद्यन्नाट्यमिदन्त्रयम् १० भ्रकुंसश्चभ्रुकुंसश्च भ्रूकुंसश्चेतिनर्त्तकः। स्त्रीवेषधारीपुरुषोनाट्योक्तौगणिकाज्जुका ११

(डमरू के नाम) डमरू १ (बड़े डमरू का नाम) मड्डु १ (डिण्डिम का नाम) डिण्डिम १ (झांझड़े का नाम) झर्झर १ (मर्द्दल का नाम) मर्द्दल १ पणव २ (हुडुक का नाम) हुडक १ (नरसिंहा का नाम) गोमुख १ (नाचने वाली के नाम) नर्त्तकी १ लासिका २॥ ८॥ (धीरे २ नाच का नाम) तत्त्व १ (शीघ्र नाच का नाम) ओघ १ (मझोले नाच का नाम) घन १ (समय और क्रिया के प्रमाण का नाम) ताल १ (बाजा और नाच का एक संग ताल छूटना) लय १॥ ९॥ (नाच के नाम) ताण्डव १ नटन २ नाट्य ३ लास्य ४ नृत्य ५ नर्त्तन ६ (नाच गीत बाजा इन तीन के साझे का नाम) तौर्य्यत्रिक १ नाट्य २ ॥ १०॥ (स्त्री वेषधारी पुरुष नचैया अर्थात् सखी के नाम) भ्रकुंस १ भ्रुकुंस २ भ्रूकुंस ३ (केवल नाचने गाने वाली वेश्या के नाम) नाट्याधिकार में गणिका १ अज्जुका २॥ ११॥ ॥

भगिनीपतिरावुत्तो भावो विद्वानथावुकः। जनको युवराजस्तु कुमारो भर्तृदारकः १२ राजा भट्टारको देवस्तत्सुता भर्तृदारिका। देवी कृताभिषेकायामितरासुतु भट्टिनी १३ अब्रह्मण्यमवध्योक्तौ राजश्यालस्तु राष्ट्रियः। अम्बा माताथ बाला स्याद्वासूरार्य्यस्तु मारिषः १४ अत्तिका भगिनी ज्येष्ठा निष्ठा निर्वहणे समे। हण्डे हञ्जे हलाह्वाने नीचां चेटीं सखीं प्रति १५ अङ्गहारोऽङ्गविक्षेपो व्यञ्जकाभिनयौ समौ। निर्वृत्ते त्वङ्गसत्वाभ्यां द्वे त्रिष्वाङ्गिकसात्विके १६

(बहनोई का नाम) आवुत्त१ (विद्वान् का नाम) भाव१ (पिता का नाम) आवुक १ (युवराज के नाम) युवराज१ कुमार २ भर्तृदारक ३॥ १२॥ (राजा के नाम) राजा१ भट्टारक २ देव ३ (राज कन्या का नाम) भर्तृदारिका १ (अभिषेक की हुई स्त्री का नाम) देवी१ (अन्य राज स्त्रियों का नाम) भट्टिनी १॥ १३॥ (ब्राह्मणादि अवध्य का नाम) अब्रह्मण्य१ (राजा के शालेका नाम) राष्ट्रिय १ (माता के नाम) अम्बा१ माता २ (कुमारी के नाम) बाला१ वासू २ (श्रेष्ठ के नाम) आर्य्य१ मारिष २॥ १४॥ (जेठी बहिन का नाम) अत्तिका१ (नाटक की सन्धियों के नाम) निष्ठा१ निर्वहण २ (नीच स्त्री के पुकारने में) हण्डे१ (चारिका के पुकारने में) हञ्जे१ (सखी के पुकारने में) हला१ इतिनाट्याधिकारः यह संज्ञा केवल नाटक ही प्रयोगकी है॥ १५॥ (लचकने के नाम) अंगहार१ अंगविक्षेप २ (भाव बताने के नाम) व्यञ्जक१ अभिनय २ (भौंह आदि मटकाने का नाम) आंगिक१ (अन्तःकरण के भाव का नाम) सात्विक १॥ १६॥

शृङ्गारवीरकरुणाद्भुतहास्यभयानकाः।
वीभत्सरौद्रौ च रसाः शृङ्गारः शुचिरुज्ज्वलः १७
उत्साहवर्द्धनो वीरः कारुण्यं करुणा घृणा। कृ
पा दयानुकम्पा स्यादनुक्रोशोप्यथो हसः १८
हासो हास्यञ्च वीभत्सं विकृतं त्रिष्विदं द्वयम्
विस्मयोद्भुतमाश्चर्य्यं चित्रमप्यथ भैरवम् १९
दारुणं भीषणं भीष्मं भीमं घोरं भयानकम्।
भयङ्करं प्रतिभयं रौद्रन्तूग्रममी त्रिषु २० चतुर्द्द
श दरस्त्रासो भीतिर्भीः साध्वसम्भयम्। विकारो
मानसो भावोनुभावो भाव बोधकः २१

(दश रसों के नाम) शृंगार १ वीर २ करुणा ३ अद्भुत ४ हास्य ५ भयानक ६ वीभत्स ७ रौद्र ८ शान्त ९ वात्सल्य १० (शृंगार के नाम) शृंगार १ शुचि २ उज्ज्वल ३॥ १७॥ (वीररस के नाम) उत्साहवर्द्धन १ वीर २ (करुणारस के नाम) कारुण्य १ करुणा २ घृणा ३ कृपा ४ दया ५ अनुकम्पा ६ अनुक्रोश ७ (हास्य रस के नाम) हस १॥ १८॥ हास २ हास्य ३ (वीभत्स रस के नाम) वीभत्स १ विकृत २ (अद्भुत रस के नाम) अद्भुत १ आश्चर्य्य २ विस्मय ३ चित्र ४ (भयानक रस के नाम) भैरव १॥ १९॥ दारुण २ भीषण ३ भीष्म ४ घोर ५ भीम ६ भयानक ७ भयंकर ८ प्रतिभय ९ (रौद्ररस के नाम) रौद्र १ उग्र २॥ २०॥ (भय के नाम) दर १ त्रास २ भीति ३ भी ४ साध्वस ५ भय ६ (मन के विकार का नाम) भाव १ (भाव प्रकाशक का नाम) अनुभाव १॥ २१॥

गर्व्वोभिमानोहंकारो मानश्चित्तसमुन्नतिः। अ-
नादरःपरिभवःपरीभावस्तिरस्क्रिया २२ रीढ़ा
वमाननावज्ञा अवहेलनमसूर्क्षणम्। मंदाक्षं
ह्रीस्त्रपाव्रीडा लज्जासाऽपत्रपान्यतः २३ क्षान्ति
स्तितिक्षाभिध्यातु परस्य विषये स्पृहा। अक्षांति
रीर्ष्यासूयातुदोषारोपोगुणेष्वपि २४ वैरं विरो
धोविद्वेषोमन्युशोकौतुशुक्स्त्रियाम्। पश्चात्ता
पोनुतापश्च विप्रतीसारइत्यपि २५ कोपक्रोधा
मर्षरोष प्रतिघारुट्क्रुधौस्त्रियाम्। शुचौतुचरि
तेशील मुन्मादश्चित्तविभ्रमः २६

(अहङ्कार के नाम) गर्व्व १ अभिमान २ अहङ्कार ३ (बड़प्पन का ना-
म) मान १ (निरादर के नाम) अनादर १ परिभव २ परीभाव ३ तिरस्क्रि-
या ४ ॥ २२ ॥ रीढ़ा ५ अवमानना ६ अवज्ञा ७ अवहेलन ८ असूर्क्ष-
ण ९ (लज्जा के नाम) मन्दाक्ष १ ह्री २ त्रपा ३ व्रीड़ा ४ लज्जा ५ (दूसरे
से लजाने का नाम) अपत्रपा १ ॥ २३ ॥ (क्षमा के नाम) क्षांति १ तितिक्षा
२ (परधन लेने की इच्छा का नाम) अभिध्या १ (ईर्ष्या का नाम) अक्षां-
न्ति १ ईर्ष्या २ (पै लगाने का नाम) असूया १ ॥ २४ ॥ (वैर के नाम) वैर १
विरोध २ विद्वेष ३ (शोक के नाम) मन्यु १ शोक २ शुक ३ (पछिताने
के नाम) पश्चात्ताप १ अनुताप २ विप्रतीसार ३ ॥ २५ ॥ (क्रोध के
नाम) कोप १ क्रोध २ अमर्ष ३ रोष ४ प्रतिघा ५ रुट् ६ क्रुध ७ क्रुधा
८ रुषा ९ (शुद्धाचरण का नाम) शील १ (सिड़ीपन के नाम) उन्मा-
द १ चित्तविभ्रम २ ॥ २६ ॥

प्रेमानाप्रियताहार्दम्प्रेमस्नेहोऽथदोहदम्। इच्छा
कांक्षास्पृहेहातृड्वांछालिप्सामनोरथः २७ का
मोभिलाषस्तर्षश्च सोत्यर्थंलालसाद्वयोः। उ
पाधिर्नाधर्मचिन्तापुंस्याधिर्म्मानसीव्यथा २८
स्याच्चिन्तास्मृतिराध्यानमुत्कण्ठोत्कलिकेसमे। उत्साहोध्यवसायस्स्यात्सवीर्य्यमतिशक्तिभाक् २९ कपटोऽस्त्रीव्याजदम्भोपधयश्छद्मकैतवे। कुसृतिर्निकृतिःशाठ्यम्प्रमादोऽनवधानता ३०

---

(प्रेम के नाम) प्रेम १ प्रियता २ हार्द ३ प्रेम ४ स्नेह ५ (इच्छा के नाम) दोहद १ इच्छा २ काङ्क्षा ३ स्पृहा ४ ईहा ५ तृट् ६ वांछा ७ लिप्सा ८ मनोरथ ९ ॥ २७ ॥ काम १० अभिलाष ११ तर्ष १२ (बड़ी इच्छा के नाम) लालसा १ लालस २ (धर्म्मचिन्तन के नाम) उपाधि १ धर्म्मचिन्ता २ (मन की पीड़ा के नाम) आधि १ मानसीव्यथा २ ॥ २८ ॥ (स्मरण के नाम) चिन्ता १ स्मृति २ आध्यान ३ (कामादि से उत्पन्न स्मृति के नाम) उत्कण्ठा १ उत्कलिका २ (उत्साह के नाम) उत्साह १ अध्यवसाय २ (असाध्य साधन के उत्साह का नाम) वीर्य्य १ ॥ २९ ॥ (कपट के नाम) कपट १ व्याज २ दम्भ ३ उपधि ४ छद्म ५ कैतव ६ कुसृति ७ निकृति ८ शा-ठ्य ९ (अकर्त्तव्य के नाम) प्रमाद १ अनवधानता २ ॥ ३० ॥

कौतूहलङ्कौतुकञ्च कुतुकञ्च कुतूहलम्। स्त्रीणां
न्वि लास विब्बोक विभ्रमाल्ललितन्तथा ३१ हेला
लीलेत्यमीहावाः क्रियाश्शृङ्गारभावजाः। द्रव
केलिपरीहासाः क्रीडा खेलाचनर्म्मच ३२ व्या
जोपदेशो लक्ष्यञ्च क्रीडा खेलाचकूर्द्दनम्। धर्म्मो
निदाघस्स्वेदस्स्यात्प्रलयोनष्टचेष्टता ३३ अव
हित्थाकारगुप्तिस्समौ सम्वेगसम्भ्रमौ। स्यादाच्छु-
रितकं हासस्सोत्प्रासस्समनाक्स्मितम् ३४

(कौतुक के नाम) कौतूहल १ कौतुक २ कुतुक ३ कुतूहल ४ (स्त्रियों के हाव के नाम) विलास १ विब्बोक २ विभ्रम ३ ललित ४॥ ३१॥ हेला ५ लीला ६ (स्त्रियों के नेत्र मुख भृकुटी आदि से जो कुछ उत्पन्न हो उसका नाम) विलास १ (अहङ्कार करके पति के निरादर करने का नाम) विब्बोक १ (बोली वस्त्र आभूषणादि के उलटा पलट हो जाने का नाम) विभ्रम १ (सर्व्वांग अच्छे प्रकार से घुमाने का नाम) ललित १ (अवगणना पूर्व्वक दीनता दिखाने का नाम) हेला १ (पति के भूषण वचनादि के अनुकरण का नाम) लीला १ (लीला मात्र के नाम) द्रव १ केलि २ परीहास ३ परिहास ४ क्रीडा ५ लीला ६ नर्म ७॥ ३२॥ (ओढर के नाम) व्याज १ अपदेश २ लक्ष्य ३ (बालकों के खेल के नाम) क्रीडा १ खेला २ कूर्द्दन ३ (घाम के नाम) घर्म्म १ निदाघ २ स्वेद ३ (साधारण मूर्छा के नाम) प्रलय १ नष्टचेष्टता २॥ ३३॥ (शोक में मुखादि झांपने के नाम) अवहित्था १ आकारगुप्ति २ (हर्ष में शीघ्र कार्य्य करने के नाम) सम्वेग १ सम्भ्रम २ (सम्प्रयोजन हास का नाम) आच्छुरित १ (थोड़े हास का नाम) स्मित २॥ ३४॥ ॥

छिद्रं निर्व्यथनं रोकं रन्ध्रं श्वभ्रं वपा शुषिः । गर्त्ता वटो भुवि श्वभ्रे सरन्ध्रे शुषिरं त्रिषु २ अन्धकारो ऽस्त्रियां ध्वान्तं तमिस्रं तिमिरं तमः । ध्वान्ते गाढेऽन्धतमसं क्षीणेऽवतमसं तमः ३ विष्वक्सन्तमसं नागाः काद्रवेयास्तदीश्वरः । शेषोऽनन्तो वासुकिस्तु सर्पराजोऽथ गोनसे ४ तिलित्सः स्यादजगरे शयुर्वाहस इत्युभौ । अलगर्दो जलव्यालः समौ राजिलडुण्डुभौ ५ मालुधानो मातुलाहिर्निर्मुक्तो मुक्तकञ्चुकः । सर्पः पृदाकुर्भुजगो भुजङ्गोऽहिर्भुजङ्गमः ६

छिद्र १ निर्व्यथन २ रोक ३ रन्ध्र ४ श्वभ्र ५ वपा १० शुषि ११ (गड़हा के नाम) गर्त्त १ अवट २ (छिद्रवाली वस्तु के नाम) शुषिर १ ॥ २ ॥ (अंधियारे के नाम) अंधकार १ ध्वान्त २ तमिस्र ३ तिमिर ४ तमः ५ (बड़ी अंधियारी का नाम) अन्धतमस १ (कम अन्धियारी का नाम) अवतमस २ ॥ ३ ॥ (सर्वत्र व्यापी अन्धकार का नाम) सन्तमस १ (सर्पों के नाम) नाग १ काद्रवेय २ (नागों के स्वामी के नाम) शेष १ अनन्त २ (सर्पराज के नाम) वासुकि १ सर्पराज २ (धोरास सर्प के नाम) गोनस १ ॥ ४ ॥ तिलित्स २ (अजगर के नाम) अजगर १ शयु २ वाहस ३ (पनिहां सर्प के नाम) अलगर्द १ जलव्याल २ (विष रहित दुमुहा सर्प के नाम) राजिल १ राजील २ डुण्डुभ ३ ॥ ५ ॥ (चीत सर्प के नाम) मालुधान १ मातुलाहि २ (केचुली छोड़े हुये सब सर्पों के नाम) निर्मुक्त १ मुक्तकंचुक २ (सर्प के नाम) सर्प १ पृदाकु २ भुजग ३ भुजंग ४ अहि ५ भुजंगम ६ ॥ ६ ॥

आशी विषो विषधर श्चक्री व्याल स्सरी सृपः।
कुण्डली गूढ़ पाच्चक्षु श्श्रवाः काकोदरः फणी ७
दर्व्वीकरो दीर्घ पृष्ठो दन्दशूको विलेशयः। उर
गः पन्नगो भोगी जिह्मगः पवनाशनः ८ त्रिष्वाहे
यम्बिषा स्थादि स्फटायान्तु फणा द्वयोः। समौ कञ्चु
क निर्म्मोकौ क्ष्वेडस्तु गरलं स्विषम् ९ पुंसि क्लीवे च
काकोल कालकूट हला हला। सौराष्ट्रिकः शौक्ति
केयो ब्रह्मपुत्रः प्रदीपनः १० दारदो वत्सनाभश्च
विषभेदा अमी नव। विषवैद्यो जांगुलिको व्यालग्रा
ह्यहितुण्डिकः ११ ॥ इति पाताल भोगि वर्गः॥

आशी विष १ विषधर २ चक्री ३ व्याल १० सरीसृप ११ कुण्डली १२ गूढ़पात् १३ चक्षुश्श्रवा १४ काकोदर १५ फणी १६ ॥७॥ दर्व्वीकर १७ दीर्घपृष्ठ १८ दन्दशूक १९ विलेशय २० उरग २१ पन्नग २२ भोगी २३ जिह्मग २४ पवनाशन २५ लेलिहान २६ द्विरसन २७ गोकर्ण २८ कंचुकी २९ कुम्भीनस ३० फणाधर ३१ हरि ३२ भोगधर ३३॥ ८॥ (सर्प्प के विषादि का नाम) आहेय १ (फण के नाम) स्फटा १ फणा २ (केंचुल के नाम) कांचुक १ निर्म्मोक २ (विष के नाम) क्ष्वेड १ गरल २ विष ३॥ ९॥ (वृक्षों से उत्पन्न विष के नाम) काकोल १ कालकूट २ हालाहल ३ हलाहल ४ सौराष्ट्रिक ५ शौक्तिकेय ६ ब्रह्मपुत्र ७ प्रदीपन ८ ॥१०॥ दारद ९ वत्सनाभ १० (गारुड़ि अर्थात् सर्प्प के झाड़ वैद्य का नाम) विष वैद्य १ जांगुलिक २ (मंत्रादि से सर्प्प के पकड़ने वाले के नाम) व्यालग्राही १ अहितुंडिक २॥ ११॥ इति पाताल भोगि वर्गः॥

स्यान्नारकस्तु नरको निरयो दुर्गतिस्स्त्रियाम्।
तद्भेदास्तपनावीचिमहारौरवरौरवाः १ संहारः
कालसूत्रञ्चेत्याद्यास्सत्वास्तु नारकाः। प्रेतावै
तरणी सिन्धुस्स्यादलक्ष्मीस्तु निर्ऋतिः २ विष्टि
राजूः कारणा तु यातना तीव्रवेदना। पीडा बाधा व्य
थादुःखमामनस्यम्प्रसूतिजम् ३ स्यात्कष्टं कृच्छ्र
माभीलन्त्रिष्वेषाम्भेद्यगामि यत् ४ इति नरकवर्गः॥

समुद्रोब्धिरकूपारः पारावारस्सरित्पतिः। उद
न्वानुदधिस्सिन्धुस्सरस्वान्सागरोर्णवः १

(नरक के नाम) नारक १ नरक २ निरय ३ दुर्गति ४ (नरकों की जाति भेद के नाम) तपन १ अवीचि २ महारौरव ३ रौरव ४ ॥१॥ संहार ५ कालसूत्र ६ तामिस्र ७ कुम्भीपाकादि ८ (नरक निवासियों के नाम) प्रेत १ (प्रेतों की नदी का नाम) वैतरणी १ (नरक की अशोभा का नाम निर्ऋति १ ॥२॥ (हठ से नरक में ढकेलने और विगार के नाम) विष्टि १ आजू २ (नरक की पीड़ा के नाम) कारणा १ यातना २ तीव्रवेदना ३ (मन की पीड़ा के नाम ) पीड़ा १ बाधा २ आबाधा ३ व्यथा ४ दुःख ५ (अनमनी के नाम) आमनस्य १ प्रसूतिज २ ॥३॥ (शरीर की पीड़ा के नाम) कष्ट १ कृच्छ्र २ आभील ३ (किसी किसी के मत से ऊपर लिखे हुये पीड़ादि आभील पर्य्यन्त १० दुःख मात्र के नाम हैं ) ॥४॥ इति नरकवर्गः॥

(समुद्र के नाम) समुद्र १ अब्धि २ अकूपार ३ पारावार ४ सरित्पति ५ उदन्वान् ६ उदधि ७ सिन्धु ८ सरस्वान् ९ सागर १० अर्णव ११ ॥१॥

रत्नाकरोजलनिधिर्य्यादःपतिरपाम्पतिः । तस्य
प्रभेदाःक्षीरोदो लवणोदस्तथापरे २ आपस्त्री
भूम्निर्वार्व्वारि सलिलङ्कमलंजलम् । पयःकी
लालममृतं जीवनम्भुवनम्वनम् ३ कबन्ध
मुदकम्पाथः पुष्करं सर्व्वतोमुखम् । अम्भोर्ण
स्तोयपानीयन्नीरक्षीराम्बुशम्बरम् ४ मेघपुष्प
ङ्घनरसस्त्रिषुद्वे आप्यमम्मयम् । भङ्गःस्तरङ्ग
ऊर्म्मिर्व्वास्त्रियाम्वीचिरथोर्म्मिषु ५ महत्सू
ल्लोलकल्लोलौस्यादावर्त्तोम्भसाम्भ्रमः।
पृषन्तिविन्दुपृषताःपुमांसोविप्रुषस्त्रियः ६

रत्नाकर २२ जलनिधि २३ यादःपति २४ अपाम्पति २५ (तिसके
भेद) क्षीरोद १ लवणोद २ दध्युद ३ घृतोद ४ सुरोद ५ इक्षूद ६ स्वा-
दूद ७ ॥ २ ॥ (जल के नाम) आप १ वार् २ बारि ३ सलिल ४ स-
रिल ५ कमल ६ जल ७ पय: ८ कीलाल ९ अमृत १० जीवन ११
भुवन १२ बन १३ ॥ ३ ॥ कबन्ध १४ उदक १५ दक १६ पाथः १७
पुष्कर १८ सर्वतोमुख १९ अम्भः २० अर्ण २१ तोय २२ पानीय
२३ नीर २४ नार २५ क्षीर २६ अम्बु २७ शम्बर २८ कम्बर २९
॥ ४ ॥ मेघपुष्प ३० घनरस ३१ (जलविकार के नाम) आप्य १
अम्मय २ (लहरी के नाम) भंग १ तरंग २ ऊर्म्मि ३ वीचि ४ ॥
॥ ५ ॥ (बड़ी लहरी के नाम) उल्लोल १ कल्लोल २ (कु-
गड का नाम) आवर्त्त १ (बूंद के नाम) पृषत १ विन्दु २ पृ-
षत ३ विप्रुट ४ ॥ ६ ॥

चक्राणि पुटभेदास्स्युर्भ्रमाश्च जलनिर्गमाः। कूलंरोधश्च तीरञ्च प्रतीरञ्च तटन्त्रिषु ७ पारावारेपरार्व्वाची तीरेपात्रन्तदन्तरम्। द्वीपोस्त्रियामन्तरीपं यदन्तर्व्वारिणस्तटम् ८ तोयोत्थितन्तत्पुलिनं सैकतं सिकतामयम्। निषद्वरस्तुजम्बालः पङ्कोस्त्री शादकर्द्दमौ ९ जलोच्छ्वासाः परीवाहाः कूपकास्तु विदारकाः। नाव्यन्त्रिलिङ्गं नौतार्य्ये स्त्रियान्नौस्तरणिस्तरिः १० उडुपन्तुप्लवः कोलः स्रोतोऽम्बुस्सरणं स्वतः। आतरस्तरपण्यं स्याद्द्रोणी काष्ठाम्बुवाहिनी ११

(भंवर के नाम) चक्र १ पुटभेद २ भ्रम ३ जलनिर्गम ४ (नदी के किनारे के नाम) कूल १ रोधः २ तीर ३ प्रतीर ४ तट ५ ॥ ७ ॥ (उस पार का नाम) पार १ (इस पार का नाम) अवार १ (नदी के पाट का नाम) पात्र १ (रेता का नाम) द्वीप १ (जलगत भूमि का नाम) अन्तरीप १ ॥ ८ ॥ (कछार का नाम) पुलिन १ (बालुकाधिक स्थान के नाम) सैकत १ सिकतामय २ (कीचड़ के नाम) निषद्वर १ जम्बाल २ पङ्क ३ शाद ४ कर्द्दम ५ ॥ ९ ॥ (उफलाने के नाम) जलोच्छ्वास १ परीवाह २ परिवाह ३ (चूहा के नाम) कूपक १ विदारक २ (नौका से उतरने के योग्य जल का नाम) नाव्य १ (नाव के नाम) नौः १ तरणि २ तरि ३ तरी ४ तरणी ५ ॥ १० ॥ (घन्नई के नाम) उडुप १ प्लव २ कोल ३ (सोता का नाम) स्रोतः १ (उतराई के नाम) आतर १ तरपण्य २ (पत्थर वा काष्ठ निर्म्मित नौका कार बेड़ी के नाम) द्रोणि १ द्रुणि २ द्रोणी ३ ॥ ११ ॥

सांयात्रिकः पोतवणिक् कर्णधारस्तु नाविकः। नि-
यामकाः पोतवाहाः कूपको गुणवृक्षकः १२
नौकादण्डः क्षेपणी स्यादरित्रं केनिपातकः। अ-
भ्रिस्त्री काष्ठकुद्दालः सेकपात्रन्तु सेचनम् २३
क्लीवेऽर्द्धनावन्नावोऽर्द्धेऽतीतनौकेऽतिनु त्रिषु।
त्रिष्वागाधात्प्रसन्नोऽच्छः कलुषोऽनच्छ आविलः
२४ निम्नङ्गभीरङ्गम्भीरमुत्तानन्तद्विपर्य्यये।
अगाधमतलस्पर्शे कैवर्त्ते दाशधीवरौ २५

(नाव लादने वाले उद्यमी के नाम) सांय्यात्रिक १ पोतवणिक् २ (खेवैया के नाम) कर्णधार १ नाविक २ (जो नौका के पीछे खड़ा हुआ लकड़ी घुमाया करता है उस के नाम) नियामक १ पोतवाह २ (जिस खूंटा में नौका बांधी जाती है उस के नाम) कूपक १ गुणवृक्षक २॥ १२॥ (डाड़ के नाम) नौकादण्ड १ क्षे-पणी २ (करिया के नाम) अरित्र १ केनिपातक २ (फरुही के नाम) अभ्रि १ काष्ठकुद्दाल २ (जिससे नाव का जल उलचा जा-ता है उस के नाम) सेकपात्र १ सेचन २॥ २३॥ (आधी नाव का नाम) अर्द्धनाव १ (जो नाव लायक जल न हो उस का नाम) अतिनु १ (निर्म्मल के नाम) प्रसन्न १ अच्छ २ (मैले के ना-म) कलुष १ अनच्छ २ आविल ३॥ २४॥ (गहिरे के ना-म) निम्न १ गभीर २ गम्भीर ३ (उथले का नाम) उत्तान १ (अथाह का नाम) अगाध १ अतलस्पर्श २ (मल्लाह के नाम) कैवर्त्त १ दाश २ धीवर ३॥ २५॥

आनायः पुंसि जालं स्याच्छणसूत्रं पवित्रकम्। मत्स्याधानी कुवेणी स्याद्बडिशं मत्स्यवेधनम् २६ पृथुरोमा झषो मत्स्यो मीनो वैसारिणोऽण्डजः। विसारः शकुली चाथ गडकः शकुलार्भकः २७ सहस्रदंष्ट्रः पाठीन उलूपी शिशुकः समौ। नलमीनश्चिलिचिमः प्रोष्ठी तु शफरी द्वयोः २८ क्षुद्राण्डमत्स्यसंघातः पोताधानमथो झषाः। रोहितो मद्गुरः शालो राजीवः शकुलस्तिमिः २९

(जाल के नाम) आनाय १ जाल २ (सुतरी सन के नाम) शणसूत्र १ पवित्रक २ (जिस में मछली धरी जाय उस के नाम) मत्स्याधानी १ कुवेणी २ (कंटिया के नाम) बडिश १ बड़िशा २ बड़िशी ३ मत्स्यवेधन ४ ॥ २६ ॥ (मछली के नाम) पृथुरोम १ झष २ मत्स्य ३ मीन ४ वैसारिण ५ अण्डज ६ विसार ७ शकुली ८ (मछली के बच्चे के नाम) गडक १ शकुलार्भक २ ॥ २७ ॥ (पन्हा के नाम) सहस्रदंष्ट्र १ पाठीन २ (सूस के नाम) उलूपी १ शिशुक २ (चेल्हवा के नाम) नलमीन १ चिलिचिम २ चिलीचिम ३ चिलिचिमि ४ (सहरी के नाम) प्रोष्ठी १ शफरी २ ॥ २८ ॥ (छोटी मछली का नाम) पोताधान २ (रोहू का नाम) रोहित १ (मगरी का नाम) मद्गुर १ (सौरी का नाम) शाल १ (राया मछली का नाम) राजीव १ (सौरा का नाम) शकुल १ (बड़ी भारी मछली का नाम) तिमि १ ॥ २९ ॥ २९

२९ ॥ २९ २९ २९ २९

तिमिङ्गिलादयश्चाथ यादांसि जलजन्तवः। तद्भेदाः शिशुमारोद्रशङ्कवो मकरादयः २० स्यात्कुलीरः कर्कटकः कूर्म्मे कमठकच्छपौ। ग्राहोऽवहारो नक्रस्तु कुम्भीरोऽथ महीलता २१ गण्डूपदः किञ्चुलको निहाका गोधिका समे। रक्तपा तु जलौकायां स्त्रियां भूम्नि जलौकसः २२ मुक्तास्फोटः स्त्रियां शुक्तिः शङ्खः स्यात्कम्बुरस्त्रियाम्। क्षुद्रशङ्खाः शङ्खनखाः शम्बूका जलशुक्तयः २३ भेकमण्डूकवर्षाभूशालूरप्लवदर्दुराः। शिली गण्डूपदी भेकी वर्षाभ्वी कमठी डुलिः २४

(तिमि के लीलने वाली का नाम) तिमिंगिल १ (सर्व्व जलजन्तुओं के नाम) यादस १ जलजन्तु २ (शिसस का नाम) शिशुमार १ (ओद का नाम) उद्र १ (शंकु का नाम) शंकु १ (मगर का नाम) मगर १ ॥२०॥ (गँगाटा का नाम) कुलीर १ कर्कटक २ (कछुहा के नाम) कूर्म्म १ कमठ २ कच्छप ३ (घरयार के नाम) ग्राह १ अवहार २ (नाक के नाम) नक्र १ कुम्भीर २ (केचुवा के नाम) महीलता १ ॥२१॥ गण्डूपद २ किञ्चुलक ३ (गोह के नाम) निहाका १ गोधिका २ (जोंक के नाम) रक्तपा १ जलौका २ जलौकाः ३ ॥२२॥ (समुद्र की सूती के नाम) मुक्तास्फोट १ शुक्ति २ (शङ्ख के नाम) शङ्ख १ कम्बु २ (छोटे शङ्ख के नाम) क्षुद्रशङ्ख १ शङ्खनख २ (सब सूती के नाम) शम्बूक १ शम्बुक २ शाम्बूक ३ जलशुक्ति ४ ॥२३॥ (मेडुका के नाम) भेक १ मण्डूक २ वर्षाभू ३ दर्दुर ४ शालूर ५ प्लव ६ (कचुई के नाम) शिली १ गण्डूपदी २ (मेंडुकी के नाम) भेकी १ वर्षाभ्वी २ (कछुई के नाम) कमठी १ डुलि २ ॥२४॥

मद्गुरस्य प्रिया शृङ्गी दुर्नामा दीर्घकोशिका । ज-
लाशयो जलाधारस्तत्रागाधजलो ह्रदः २५ आ
हावस्तु निपानं स्यादुपकूपजलाशये । पुंस्येवा
न्धुः प्रहिः कूप उदपानन्तु पुंसिवा २६ नेमिस्त्रि
कास्य वीनाहो मुखबन्धनमस्य यत् । पुष्करि-
ण्यां तु खातं स्यादखातन्देवखातके २७ प-
द्माकरस्तडागोस्त्री कासारस्सरसी सरः । वेशा-
न्तः पल्वलश्चाल्पसरो वापी तु दीर्घिका २८
खेयन्तु परिखाधारस्त्वम्भसां यत्र धारणाम् । स्या
दालवालमावालमावापोथ नदी सरित् २९

(शींगी के नाम) शृंगी १ (झिंकवा के नाम) दुर्नामा १ दीर्घकोशिका
२ (तड़ाग झीलादि सब जलाशयों के नाम) जलाशय १ जलाधार २
(कुराड का नाम) ह्रद १ ॥ २५ ॥ (कूप के निकट की न्हर [illegible] के नाम)
आहाव १ निपान २ (कुओं के नाम) अन्धु १ प्रहि २ कूप ३ उदपान ४
॥ २६ ॥ (कुओं की पाढ़ि का नाम) त्रिका १ (पक्की जगत के नाम)
वीनाह १ विनाह २ (चौंकोने तालाब के नाम) पुष्करिणी १ खात २
(देवालय के समीप वाले तालाब के नाम) अखात १ देवखात २ ॥
॥ २७ ॥ (जिस तड़ाग में कमल हो उस के नाम) पद्माकर १ तड़ा-
ग २ (सामान्य तड़ाग के नाम) कासार १ सरसी २ सरः ३ (छोटी
तलैया के नाम) वेशान्त १ पल्वल २ अल्पसर ३ (बावली के ना-
म) वापी १ दीर्घिका २ ॥ २८ ॥ (खांवा के नाम) खेय १ परिखा
२ (बांध का नाम) आधार १ (थाल्हा के नाम) आलवाल १ अल
वाल २ आवाल ३ आवाप ४ (नदी के नाम) नदी १ सरित् २ ॥ २९ ॥

तरङ्गिणी शैवलिनी तटिनी ह्रादिनी धुनी। स्रोत
स्वती द्वीपवती स्रवन्ती निम्नगापगा ३० गङ्गा
विष्णुपदी जह्नुतनया सुरनिम्नगा। भागीरथी
त्रिपथगा त्रिस्रोता भीष्मसूरपि ३१ कालिन्दी
सूर्य्यतनया यमुना शमनस्वसा। रेवा तु नर्म-
दा सोमोद्भवा मेकलकन्यका ३२ करतोया स-
दानीरा बाहुदा सैतवाहिनी। शतद्रुस्तु शुतुद्रि
स्स्याद्विपाशा तु विपाडस्त्रियाम् ३३ शोणो
हिरण्यवाहः स्यात्कुल्याल्पा कृत्रिमा सरित्।
शरावती वेत्रवती चन्द्रभागा सरस्वती ३४

तरंगिणी ३ शैवलिनी ४ तटिनी ५ ह्रादिनी ६ धुनी ७ स्रोतस्वती ८ स्रोतस्विनी ९ द्वीपवती १० स्रवन्ती ११ निम्नगा १२ आपगा १३ अपगा १४ कूलङ्कषा १५ निर्झरिणी १६ रोधोवक्रा १७ सरस्वती १८ ॥ ३० ॥ (गंगाजी के नाम) गंगा १ विष्णुपदी २ जह्नुतनया ३ सुरनिम्नगा ४ भागीरथी ५ त्रिपथगा ६ त्रिस्रोताः ७ भीष्मसू ८ ॥ ३१ ॥ (यमुना के नाम) कालिंदी १ यमुना २ सूर्य्यतनया ३ शमनस्वसा ४ (नर्म्मदा के नाम) रेवा १ नर्म्मदा २ सोमोद्भवा ३ मेकलकन्यका ४ ॥ ३२ ॥ (जिसमें सर्वदा जल रहता है उस के नाम) करतोया १ सदानीरा २ (सहस्त्रबाहु की नदी के नाम) बाहुदा १ सैतवाहिनी २ (शतलज के नाम) शतद्रु १ शुतुद्रि २ (व्यासा नदी के नाम) विपाशा १ विपाट् २ ॥ ३३ ॥ (शोणभद्र के नाम) शोण १ हिरण्यवाह २ (नहर का नाम) कुल्या १ शरावती २ (बेत्रवती का नाम) वेत्रवती १ (चिनाव का नाम) चन्द्रभागा १ चान्द्रभागी २ चन्द्रभागी ३ (सरस्वती का नाम) सरस्वती १ ॥ ३४ ॥

कावेरी सरितोन्याश्च सम्भेदस्सिन्धुसङ्गमः । द्वयोः
प्रणाली पयसःपदव्यां त्रिषुतूत्तरे ३५ देविका-
यां सरय्वां च भवेदाविकसारवौ । सौगन्धिकन्तु-
कह्लारं हल्लकं रक्तसन्ध्यकम् ३६ स्यादुत्पलं
कुवलयमथ नीलाम्बुजन्म च । इन्दीवरञ्च नी-
लेस्मिन्नसिते कुमुदकैरवे ३७ शालूकमेषाङ्कु-
न्दस्स्याद्वारिपर्णीतु कुम्भिका । जलनीली तु शै-
वालं शैवालोथ कुमुद्वती ३८ कुमुदिन्यान्न-
लिन्यान्तु विसनी पद्मिनीमुखाः । वा पुंसि पद्म-
न्नलिनमरविन्दम्महोत्पलम् ३९

(कावेरिका का नाम) कावेरी १ (जहां एक नदी दूसरे से मिलती है उस संगम के नाम) सम्भेद १ सिन्धुसंगम २ (पनारा के नाम) प्रणाली १ प्रणाल २ ॥ ३५ ॥ (देविका नदी में जो २ उत्पन्न हों उन को नाम) दाविक १ (सरयू में जो २ हों) सारव १ (कुई के नाम) सौगन्धिक १ कह्लार २ कल्हार ३ (लाली कुई के नाम) हल्लक १ रक्तसन्ध्यक २ (कुमुद कमल साधारण के नाम उत्पल १ कुवलय २ ॥ ३६ ॥ (काले कमल के नाम) नीलाम्बुजन्म १ इन्दीवर २ इन्दिवर ३ इन्दीवार ४ (उज्ज्वल कमल के नाम) कुमुद १ कैरव २ ॥ ३७ ॥ (कमलों के कन्द का नाम) शालूक १ (जल कुम्भी के नाम) वारिपर्णी १ कुम्भिका २ (शैवाल के नाम) शैवाल १ शेवाल २ (कुमुदिनी वा कुमुद युक्त देश के नाम) कुमुद्वती १ ॥ ३८ ॥ कुमुदिनी २ (कमलिनी के नाम) नलिनी १ नड्निनी २ बिसिनी ३ पद्मिनी ४ सरोजिनी ५ (कमल मात्र के नाम) पद्म १ नलिन २ अरविन्द ३ महोत्पल ४ ॥ ३९ ॥

सहस्रपत्रङ्कमलंशतपत्रंकुशेशयम् । पङ्केरुहन्ता
मरसंसारसंसरसीरुहम् ४० विसप्रसूनराजीव
पुष्कराम्भोरुहाणिच । पुण्डरीकंसिताम्भोज
मथरक्तसरोरुहे ४१ रक्तोत्पलङ्कोकनदन्नालो
नालमथास्त्रियाम् । मृणालंबिसमब्जादिक
दम्बेखण्डमस्त्रियाम् ४२ करहाटश्शिफाक
न्दःकिंजल्कःकेसरोस्त्रियाम् । सम्वर्त्तिकानव
दलम्बीजकोशोवराटकः ४३ ॥इतिवारिवर्गः

उक्तंस्वर्व्योमदिक्कालधीशब्दादिसनाट्यकम् ।
पातालभोगिनरकम्वारिचैषाञ्चसङ्गतम् ॥
इत्थममरसिंहस्य नामलिङ्गानुशासने ।
स्वरादिकाण्डःप्रथमस्साङ्ग एवसमर्थितः ॥

सहस्रपत्र ४ कमल ६ शतपत्र ७ कुशेशय ८ पङ्केरुह ९ तामरस १० सा-
रस ११ सरसीरुह १२ ॥ ४० ॥ बिसप्रसून १३ राजीव १४ पुष्कर १५ अम्भो
रुह १६ (उज्ज्वल कमल के नाम) पुण्डरीक १ सिताम्भोज २ (लाल
कमल के नाम) रक्तसरोरुह १ ॥ ४१ ॥ रक्तोत्पल २ कोकनद ३ (कम-
ल की डाँड़ी के नाम) नाल १ नाला २ नाली ३ (भसीड के नाम) मृणाल
१ बिस २ बिसा ३ मृणाली ४ (कमलादि के समूह के नाम) षण्ड १ खण्-
ड २ (बल का भी नाम) खण्ड १ ॥ ४२ ॥ (कमल की जड़ के नाम) कर
हाट १ शिफाकन्द २ (कमल पुष्प मध्य में जो झालर होती है उसके ना
म) किञ्जल्क १ केसर २ (कमल के नव्य पत्तों के नाम) सम्वर्त्तिका १ नव-
दल २ (कमलाक्ष के नाम) बीजकोश १ वराटक २ ॥ ४३ ॥ इतिवारिवर्गः

इति प्रथम काण्डः ॥ १ ॥

श्रीगणेशायनमः

# अथ अमरकोष

## द्वितीयकाण्ड

वर्गाः पृथ्वीपुरक्ष्माभृद्वनौषधिमृगादिभिः।
नृब्रह्मक्षत्रविट्शूद्रैः साङ्गोपाङ्गैरिहोदिताः १
भूर्भूमिरचलाऽनन्ता रसा विश्वम्भरा स्थिरा। ध-
राधरित्री धरणिः क्षोणी ज्या काश्यपी क्षितिः २
सर्व्वंसहा वसुमती वसुधोर्व्वी वसुन्धरा। गोत्रा कुः
पृथिवी पृथ्वी क्ष्माऽवनिर्मेदिनी मही ३ विपुला
गह्वरी धात्री गौरिला कुम्भिनी क्षमा। भूतधात्री
रत्नगर्भा जगती सागराम्बरा ४

(पृथ्वी के नाम) भू १ भूमि २ अचला ३ अनन्ता ४ रसा ५ विश्वम्भ
रा ६ स्थिरा ७ धरा ८ धरित्री ९ धरणि १० क्षोणि, क्षोणी ११ ज्या १२
काश्यपी १३ क्षिति १४ ॥२॥ सर्व्वंसहा १५ वसुमती १६ वसुधा १७
उर्व्वी १८ वसुन्धरा १९ गोत्रा २० कु २१ पृथिवी २२ पृथ्वी २३ क्ष्मा
२४ अवनि २५ मेदिनी २६ मही २७ महि २८ ॥ ३॥ विपुला २९
गह्वरी ३० धात्री ३१ गौ ३२ इला ३३ कुम्भिनी ३४ क्षमा ३५ भूतधा-
त्री ३६ रत्नगर्भा ३७ जगती ३८ सागराम्बरा ३९ ॥ ४॥

श्लो०पू०॥ मृन्मृत्तिकाप्रशस्तातु मृत्सामृत्स्ना च मृत्तिका। उर्व्वरा सर्व्वसस्याढ्या स्यादूषः क्षारमृत्तिका ५ ऊषवानूषरो द्वावप्यन्यलिङ्गौ स्थलं स्थली। समानौ मरुधन्वानौ द्वे खिलाऽप्रहते समे ६ त्रिष्वथो जगती लोको विष्टपम्भुवनं जगत्। लोकोयम्भारतम्वर्षं शरावत्यास्तु योवधेः ७ देशः प्राग्दक्षिणः प्राच्य उदीच्यः पश्चिमोत्तरः। प्रत्यन्तो म्लेच्छदेशः स्यान्मध्यदेशस्तु मध्यमः ८ आर्य्यावर्त्तः पुण्यभूमिर्म्मध्यम्विन्ध्यहिमालयोः। नीवृज्जनपदो देशो विषयस्तूपवर्त्तनम् ९

(मिट्टी के नाम) मृत् १ मृत्तिका २ (अच्छी मिट्टी के नाम) मृत्सा १ मृत्स्ना २ (जिस मिट्टी में सब अन्न उपजें उस का नाम) उर्व्वरा १ (लोना के नाम) ऊषः १ क्षारमृत्तिका २॥ ५॥ (ऊसर के नाम) ऊषवान् १ ऊषर २ (स्थान के नाम) स्थल १ स्थली २ (माड़वार आदि निर्ज्जल देश के नाम) मरु १ धन्वा २ (बिन जोते खेत के नाम) खिल १ अप्रहत २॥ ६॥ (जगत् के नाम) जगती १ लोक २ विष्टप ३ भुवन ४ जगत् ५ (हिमालय से दक्षिण समुद्र से उत्तर के देश अर्थात् हिन्दुस्तान का नाम) भारत १ ॥ ७॥ (शरावती के पूर्व्व दक्षिण देश का नाम) प्राच्य १ (उस के पश्चिमोत्तर देश का नाम) उदीच्य १॥ ८॥ (फारस का बुल रूम आदि देशों के नाम) प्रत्यन्त १ म्लेच्छ देश २ (विन्ध्याचल से उत्तर हिमालय से दक्षिण कुरुक्षेत्र से पूर्व्व प्रयाग से पश्चिम के देश के नाम) मध्यदेश १ मध्यम २ (बंगाले के समुद्र से पश्चिम अरब समुद्र से पूर्व्व हिमाचल से दक्षिण विन्ध्याचल से उत्तर देश के नाम) आर्य्यावर्त्त १ पुण्यभूमि २ (राज्य के नाम) नीवृत १ जनपद २ (देशमात्र के नाम) देश १ विषय २ उपवर्त्तन ३॥ ९॥

त्रिष्वा गोष्ठान्नड प्रायेनड्वान्नड्वल इत्यपि । कुमुद्वा
न्कुमुदप्राये वेतस्वान्बहुवेतसे २० शाड्वलश्शा
द हरिते सजम्बाले तु पङ्किलः । जल प्रायमनूपं
स्यात्पुंसि कच्छस्तथाविधः २१ स्त्री शर्करा शा
र्करिल श्शार्करश्शार्करावति । देश एवादि
मावेवमुन्नेयास्सिकतावति २२ देशो नद्यम्बु
वृष्ट्यम्बु सम्पन्नव्रीहि पालितः । स्यान्नदी मा
तृको देव मातृकश्च यथाक्रमम् २३ सुराज्ञि
देशे राजन्वान्स्यात्ततोऽन्यत्र राजवान् । गोष्ठं
गोस्थानकन्तत्तु गोष्ठीनम्भूतपूर्वकम् २४

१ (नडाधिक देश के नाम) नड्वान् १ नड्वल २ (जहां बहुत कुमुद हों उ-
स देश का नाम) कुमुद्वान् १ (जहां बहुत बेत हों उस का नाम) वेतस्वा
न् १॥ २०॥ (जहां हरी घास हो उस का नाम) शाड्वल १ (कीचड़ देश
का नाम) पङ्किल १ (जहां बहुत पानी हो उस देश के नाम) जलप्रा-
य १ अनूप २ (कांछा का नाम) कच्छ १॥ २१॥ (कंकड़ देश के नाम)
शर्करा १ शार्करिल २ (कंकड़ देशादि के नाम) शार्कर १ शर्करा-
वान् २ (सिकता है देश के नाम) सिकता १ सिकतिल २ (सिकता है
देश बर्त्तन आदि के नाम) सैकत १ सिकतावान् २॥ २२॥ (जहां केव-
ल नदी जल से खेत सींचे जांय वर्षा न होती हो उस देश का नाम) न
दीमातृक १ (जहां वर्षा के ही जल से सींचे जांय उस का नाम) देवमा
मातृक १॥ २३॥ (धर्मात्मा राजा के देश का नाम) राजन्वान् १ (सामा-
न्य राजा के देश का नाम) राजवान् १ (गोठ के नाम) गोष्ठ १ गोस्थान
२ (जहां पूर्व काल में गायें रहती हों उसका नाम) गोष्ठीन १॥ २४॥

पर्य्यन्तभूः परिसरस्सेतुरालौस्त्रियाम्पुमान्। वा-
मलूरश्चनाकुश्च वल्मीकम्पुन्नपुंसकम् २५
अयनम्वर्त्म मार्गाध्व पन्थानःपदवी सृतिः। सर-
णिःपद्धतिःपद्या वर्त्मन्येकपदीतिच २६ अति
पन्थास्सुपन्थाश्च सत्पथश्चार्चितेऽध्वनि। व्यध्वो
दुरध्वो विपथः कदध्वा कापथस्समाः २७ अप-
न्थास्त्वपथन्तुल्ये शृङ्गाटकचतुःपथे। प्रान्तर-
न्दूरशून्योऽध्वा कान्तारम्वर्त्मदुर्गमम् २८ ग-
व्यूतिस्स्त्री क्रोशयुगन्नल्वः किष्कुचतुश्शतम्।
घण्टापथस्संसरणन्तत्पुरस्योपनिष्करम् २९

(नदी पर्व्वतादि के समीप की भूमि के नाम) पर्य्यन्तभू १ परिसर २ (पु-
ल के नाम) सेतु १ आलि २ आली ३ (बामी वा बमोरी के नाम) वाम-
लूर १ नाकु २ वल्मीक ३॥ २५॥ (गली के नाम) अयन १ वर्त्म २ मा-
र्ग ३ अध्वा ४ पन्था ५ पथ ६ बाट ७ पदवी ८ सृति ९ सरणि १० पद्ध-
ति ११ पद्या १२ एकपदी १३॥ २६॥ (अच्छी गली के नाम) अतिपन्था
१ सुपन्था २ सत्पथ ३ (खराब गली के नाम) व्यध्व १ दुरध्व २ विपथ
३ कदध्वा ४ कापथ ५ कुपथ ६॥ २७॥ (जहां गली न हो उस के नाम)
अपन्था १ अपथ २ (चौहटा वा चौक के नाम) शृङ्गाटक १ चतुष्पथ २
(जहां बड़ी दूर तक छाया जल मनुष्यादि न हों उस मार्ग का नाम) प्रा-
न्तर १ (चोर कण्टकादि युक्त मार्ग का नाम) कान्तार १॥ २८॥ (दो को-
श का नाम) गव्यूति १ (४०० हाथ का नाम) नल्व १ (राज मार्ग अर्था-
त सड़क के नाम) घण्टापथ १ संसरण २ (ग्राम के निकास का नाम
उपनिष्कर १॥ २९॥

श्लो०॥ द्यावापृथिव्यौ रोदस्यौ द्यावाभूमी च रोदसी।
दिवस्पृथिव्यौ गंजा तु रुमा स्याल्लवणाकरः॥
इति भूमिवर्गः॥

पूः स्त्री पुरीनगर्यौ वा पत्तनम्पुटभेदनम्। स्था
नीयन्निगमो ऽन्यत्तु यन्मूलनगरात्पुरम् १ तच्छा
खानगरम्वेशो वेश्याजनसमाश्रयः। आपणस्तु
निषद्यायां विपणिः पण्यवीथिका २ रथ्याप्र
तोली विशिखा स्याच्चयो वप्रमथास्त्रियाम्। प्राकारो
वरणः सालः प्राचीनम्प्रान्ततो वृतिः ३

(द्यावा भू के नाम) द्यावा पृथिव्यौ १ रोदस्यौ २ द्यावा भूमी ३ रोदसी ४ दिवस्पृथिव्यौ ५ (क्षार समुद्र के नाम) गंजा १ रुमा २ लवणाकर ३ ॥ इति भूमि वर्गः॥

(राजधानी के नाम) पूः १ पुरी २ नगरी ३ पत्तन ४ पुटभेदन ५ स्थानीय ६ निगम ७ पुर ८ नगर ९ ॥ १॥ (राजधानी को छोड़ अन्य पुर का नाम) शाखानगर १ (वेश्या के स्थान के नाम) वेश १ वेश्याजन-समाश्रय २ (बाज़ार के नाम) आपण १ निषद्या २ हट्ट ३ (जहां बाज़ार न हो पर वस्तु बिकती हो उसके नाम) विपणि १ पण्यवीथिका २ किसी किसी के मत से ५ बाज़ार के नाम हैं ॥ २॥ (बीच गांउ की गली के नाम) रथ्या १ प्रतोली २ विशिखा ३ (रक्षा के पखेड़ के नाम) चय १ वप्र २ (रक्षा के नाम) प्राकार १ वरण २ साल ३ (ब्योरा ही वा अन्तई के नाम) प्राचीन १ प्राचीर २॥ ३॥

भित्तिः स्त्री कुड्यमेडूकं यदन्तर्न्यस्तकीकसम्। गृहं गेहोदवसितं वेश्म सद्म निकेतनम् ४ निशान्तपस्त्यसदनं भवनागारमन्दिरम्। गृहाः पुंसि च भूम्न्येव निकाय्यनिलयालयाः ५ वासः कुटी द्वयोः शाला सभा संजवनन्त्विदम्। चतुःशालं मुनीनान्तु पर्णशालोटजोऽस्त्रियाम् ६ चैत्यमायतनन्तुल्ये वाजिशाला तु मन्दुरा। आवेशनं शिल्पशाला प्रपा पानीयशालिका ७ मठश्छात्रादिनिलयो गंजा तु मदिरागृहम्। गर्भागारं वासगृहमरिष्टं सूतिकागृहम् ८

(भीति वा दीवार के नाम) भित्ति १ कुड्य २ (जिस भीति में पुष्टतार्थ हड्डी रक्खी गई हों उस के नाम) एडूक १ (घर के नाम) गृह १ गेह २ उदवसित ३ वेश्म ४ सद्म ५ निकेतन ६ ॥४॥ निशान्त ७ पस्त्य ८ सदन ९ भवन १० अगार ११ मन्दिर १२ निकाय्य १३ निलय १४ आलय १५ ॥५॥ (सभामन्दिर के नाम) वास १ कुटी २ शाला ३ सभा ४ किसी किसी के मत से ये भी घर ही के नाम हैं (चौक के नाम) संजवन १ चतुःशाल २ (मुनियों की कुटी के नाम) पर्णशाला १ उटज २ ॥६॥ (यज्ञशाला के नाम) चैत्य १ आयतन २ (घोडसार के नाम) मन्दुरा १ वाजिशाला २ (थवई वा राज के घर के नाम) आवेशन १ शिल्पिशाला २ (पौशाला के नाम) प्रपा १ पानीयशालिका २ ॥७॥ (विद्यार्थी अतिथि आदि के गृह का नाम) मठ १ (जहां दारू चुआई जाती है वा धरी जाती है उस गृह के नाम) गंजा १ मदिरागृह २ (घर के बीच के नाम) गर्भागार १ वासगृह २ (सौरि के घर के नाम) अरिष्ट १ सूतिकागृह २ (पक्की गच का नाम) कुट्टिम १ (अटाली के नाम) चन्द्रशाला १ शिरोगृह २ ॥८॥

[illegible]०॥ [illegible]ऽस्त्री निष्कुह[illegible]शि-
गोमुखम्। वातायनं गवाक्षोऽथ मण्डपोऽस्त्री जना-
श्रयः॥ हर्म्यादि धनिनां वासः प्रासादो देवभू
भुजाम् ९ सौधोऽस्त्री राजसदनम् उपकार्योपका
रिका। स्वस्तिकः सर्वतोभद्रो नन्द्यावर्त्तादयोऽपि
च १० विच्छन्दकः प्रभेदा हि भवन्तीश्वरसद्म-
नाम्। स्त्र्यगारं भूभुजामन्तःपुरं स्यादवरोधनम्
११ शुद्धान्तश्चावरोधश्च स्यादट्टः क्षौममस्त्रिया
म्। प्रघाणप्रघणालिन्दा बहिर्द्वारप्रकोष्ठके १२

(झरोखों के नाम) वातायन १ गवाक्ष २ (माड़व के नाम) मण्डप १ जना-
श्रय २ (धनवानों के गृह के नाम) हर्म्य १ स्वस्तिका २ अट्टालिका ३
(देवता और राजाओं के गृह का नाम) प्रासाद १ ॥ ९ ॥ (राजाओं के
गृह के नाम) सौधः १ राजसदन २ उपकार्य्या ३ उपकारिका ४ (राज
गृह के भेद जिस में ४ दरवाजे हों वह) स्वस्तिक १ (दुमहला पचम
हल आदि का नाम) सर्व्वतोभद्र १ (जो गोलाकार बँगला नुमां
हो वह) नन्द्यावर्त्त १ ॥ १० ॥ (और राजमहल के भेद) विस्तीर्ण १
सुन्दर २ विच्छन्दक ३ विच्छर्द्दक ४ रुचक ५ वर्द्धमान ६।
(जहां राजाओं की स्त्रियां रहें उस के नाम) अन्तःपुर १ अवरो-
धन २ ॥ ११ ॥ शुद्धान्त ३ अवरोध ४ (अटारी के नाम) अट्ट १
क्षौम २ क्षोम ३ (चौपारि के नाम) प्रघाण १ प्रघण २ अलि-
न्द ३ ॥ १२ ॥

गृह्यावग्रहणी देहल्यङ्गणञ्चत्वराजिरे। अधस्ताद्दारुणि शिला नासादारुपरिस्थितम् २३ प्रच्छन्नमन्तर्द्धारं स्यात्पक्षद्वारन्तु पक्षकम्। वलीकनीध्रे पटलप्रान्तेऽथ पटलं छदिः २४ गोपानसीतु वलभी छादने वक्रदारुणि। कपोतपालिकायान्तु विटङ्कं पुन्नपुंसकम् २५ स्त्री द्वार्द्वारं प्रतीहारस्स्याद्वितर्दिस्तु वेदिका। तोरणोऽस्त्री बहिर्द्वारं पुरद्वारन्तु गोपुरम् २६ कूटन्द्वारि यद्धस्ति नखस्तस्मिन्नथ त्रिषु। कपाटमररन्तुल्ये तद्विष्कम्भोऽर्गलन्न ना २७

(देहली अर्थात् चौखटि के नाम) गृह्यावग्रहणी १ देहली २ (आंगन के नाम) अंगण १ चत्वर २ अजिर ३ प्राङ्गण ४ (तल खोंटा का नाम) शिला १ (उतरंग का नाम) नासा १॥२३॥ (खिड़की के नाम) प्रच्छन्न १ अंतर्द्धार २ (बगल के द्वार का नाम) पक्षद्वार १ पक्षक २ (ओरौनी के नाम) वलीक १ नीध्र २ (छानि के नाम) पटल १ छदि २॥२४॥ (छज्जा के नाम) गोपानसी १ वलभी २ (कबूतर खाने के नाम) कपोतपालिका १ विटङ्क २॥२५॥ (दुआर के नाम) द्वा १ द्वार २ प्रतीहार ३ प्रतिहार ४ (वेदी के नाम) वितर्दि १ वेदिका २ (घर के बाहर के फाटक के नाम) तोरण १ बहिर्द्वार २ (नगर के बाहर के फाटक के नाम) पुरद्वार १ गोपुर २॥२६॥ (खजुरा के नाम) हस्तिनख १ हस्तिनखा २ (केंवारा के नाम) कपाट १ अरर २ (वेड़ नावा घन्ना वासरि के नाम) अर्गल १ अर्गला २॥२७॥

आरोहणं स्यात्सोपानन्निश्रेणिस्त्वधिरोहिणी।
सम्मार्ज्जनीशोधनी स्यात्सङ्करोऽवकरस्तथा १८
सिद्धे मुखन्निःसरणं सन्निवेशो निकर्षणम्‌ ।
समौ सम्वसथग्रामौ वेश्मभूर्व्वास्तुरस्त्रियाम् १९
ग्रामान्त उपशल्यं स्यात्सीमसीमे स्त्रियामुभे ।
घोष आभीरपल्ली स्यात्पक्कणः शबरालयः
२० ॥ इति पुरवर्गः ॥

महीध्रे शिखरिक्ष्माभृदहार्य्यधरपर्व्वताः।
अद्रिगोत्रगिरिग्रावाचलशैलशिलोच्चयाः १

(मिट्टी पत्थर आदि की सीढ़ी के नाम) आरोहण १ सोपान २ (काठ की सीढ़ी के नाम) निःश्रेणि १ अधिरोहिणी २ (बढ़नी वा झाड़ू के नाम) संमार्ज्जनी १ शोधनी २ (करकट वा कूड़ा के नाम) सङ्कर १ अवकर २ ॥ १८ ॥ (निसरने के नाम) मुख १ निस्सरण २ (पैठने के नाम) सन्निवेश १ निकर्षण २ (ग्राम के नाम) सम्वसथ १ ग्राम २ (घर की भूमि का नाम) वास्तु १॥ १९ ॥ (गवैंड़े का नाम) उपशल्य १ । (डांड़ के नाम) सीमा १ नान्त सीमा २ (अहीरों के ग्राम के नाम) घोष १ आभीरपल्ली २ (जंगलियों के ग्राम का नाम) पक्कण १ ॥ २० ॥ इति पुरवर्गः ॥

(पर्व्वत के नाम) महीध्र १ शिखरी २ क्ष्माभृत् ३ अहार्य्य ४ धर ५ पर्व्वत ६ अद्रि ७ गोत्र ८ गिरि ९ ग्रावा १० अचल ११ शैल १२ शिलोच्चय १३ ॥ १॥

लोकालोकश्चक्रवालस्त्रिकूटस्त्रिककुत्समौ॥ अस्तस्तु चरमक्ष्माभृदुदयः पूर्व्वपर्व्वतः २ हिमवान्निषधो विन्ध्यो माल्यवान्पारियात्रकः। गन्धमादनमन्ये च हेमकूटादयो नगाः ३ पाषाणः प्रस्तरग्रावोपलाश्मानः शिला दृषत्। कूटो ऽस्त्री शिखरं शृङ्गम्प्रपातस्त्वतटो भृगुः ४ कटकोऽस्त्री नितम्बोद्रेः स्नुः प्रस्थस्सानुरस्त्रियाम्। उत्सः प्रस्रवणं वारिप्रवाहो निर्झरो झरः ५

(जो पर्व्वत पृथ्वी को घेरे है उसके नाम) लोकालोक १ चक्रवाल २ (त्रिकूट कि जिस पर लङ्का बसी है उस के नाम) त्रिकूट १ त्रिककुत् २ (अस्ताचल के नाम) अस्त १ चरमक्ष्माभृत् २ (उदयाचल के नाम) उदय १ पूर्व्व पर्व्वत २॥ २॥ (पर्व्वतों के भेद) हिमवान् १ निषध १ बिन्ध्य १ माल्यवान् १ पारियात्रक १ गन्धमादन १ हेमकूट १ मलय १ चित्रकूट १ मन्दरादि १ ॥ ३॥ (पत्थर के नाम) पाषाण १ प्रस्तर २ ग्रावा ३ उपल ४ अश्मा ५ शिला ६ दृषत् ७ (पहाड़ की चोटी वा कंगूरा के नाम) कूट १ शिखर २ शृङ्ग ३ (बिहड़ के नाम) प्रपात १ अतट २ भृगु ३॥ ४॥ (बीच पर्व्वत का नाम) कटक १ (पर्व्वत के किनारे के नाम) स्नु १ प्रस्थ २ सानु ३। (जहां पर्व्वत से बह कर पानी उतरता है अर्थात् कुण्ड के नाम) उत्स १ प्रस्रवण २ (झरना के नाम) वारिप्रवाह १ निर्झर २ झर ३॥ ५॥

दरीतु कन्दरोवास्त्री देवखातबिलेगुहा। गह्वरं गं-
डशैलास्तुच्युतास्स्थूलोपला गिरेः ६॥ दंतक
दन्तकास्तु बहिस्तिर्य्यक्प्रदेशान्निर्गता गिरेः।
खनिस्त्रियामाकरस्स्यात्पादाः प्रत्यन्तपर्व्वताः
उपत्यकाद्रेरासन्ना भूमिरूर्द्ध्वमधित्यका ७ धातु
र्म्मनःशिलाद्यद्रेर्गैरिकन्तु विशेषतः। निकुंज
कुंजौ वाक्लीबेलतादिपिहितोदरे ॥ ८ ॥ इति शै-
लवर्गः ॥

(बनाई हुई गुफा के नाम) दरी १ कन्दर २ कन्दरा ३ कन्दरी ४
(अपने आप बनी हुई गुफा के नाम) देवखात १ बिल २ गुहा ३ गह्वर
४ (जो कि पर्व्वत से भारी २ पत्थर गिरते हैं उन का नाम) गण्डशैल
१ ॥ ६ ॥ (जो कि नोकदार टुकड़े गिरते हैं उन का नाम) दन्तक १
(खानि के नाम) खनि १ खनी २ खानि ३ आकर ४ (पर्वत के
समीप वर्त्ती छोटे पर्व्वत के नाम) पाद १ प्रत्यन्त पर्वत २
(पहाड़ के नीचे की भूमि का नाम) उपत्यका १ (पहाड़
के ऊपर की भूमि का नाम) अधित्यका १ ॥ ७ ॥ (पर्वत में उ-
त्पन्न वस्तु का नाम) धातु १ (वे ये हैं) सोना १ चान्दी १
तांबा १ हरिताल १ मैनशिल १ गेरू १ आंजन १
कसीस १ लोह १ ईंगुर १ गन्धक १ नमक आदि (ज-
हां कि बहुत लता तृणादि से घिरा हो उसके नाम) निकु-
ञ्ज १ कुञ्ज २ ॥ ८ ॥ इति शैलवर्गः ॥

अटव्यरण्यं विपिनं गहनं काननं वनम्। म-
हारण्यमरण्यानी गृहारामास्तु निष्कुटाः १ आ-
रामः स्यादुपवनं कृत्रिमं वनमेव यत्। अमात्य
गणिकागेहोपवने वृक्षवाटिका २ पुमानाक्री
डउद्यानं राज्ञः साधारणं वनम्। स्यादेतदेव
प्रमदावनमन्तःपुरोचितम् ३ वीथ्यालिरावलिः
पंक्तिः श्रेणी लेखास्तु राजयः। वन्या वन
समूहे स्यादंकुरोऽभिनवोद्भिदि ४ वृक्षो मही
रुहः शाखी विटपी पादपस्तरुः। अनोकहः
कुटः शालः पलाशी द्रुद्रुमागमाः ५

(वन के नाम) अटवी १ अरण्य २ विपिन ३ गहन ४ कानन ५
वन ६ अटवि ७ (बड़े वन के नाम) महारण्य १ अरण्यानी २ (गृह के
समीप बनाये हुये वन के नाम) गृहाराम १ निष्कुट २॥ १॥ (गृह
समीप के वन के नाम) आराम १ उपवन २ (जहां राजा के नौकर
चाकर और उन की वेश्या रहें उसका नाम) वृक्षवाटिका १॥ २॥
(जहां कि राजा स्त्रियों के संग क्रीड़ा करे उस के नाम) आक्रीड़ १
उद्यान २॥ ३॥ (पंक्ति के नाम) वीथी १ वीथि २ आलि ३ आ-
वलि ४ पङ्क्ति ५ श्रेणि ६ श्रेणी ७ आली ८ आवली ९ पंक्ती १०
(लकीर के नाम) लेखा १ रेखा २ राजि ३ (वन के झुंड का नाम)
वन्या १ (अंखुआ के नाम) अंकुर १ अङ्कूर २॥ ४॥ (वृक्ष के ना-
म) वृक्ष १ महीरुह २ शाखी ३ विटपी ४ पादप ५ तरु ६ अनोकह ७
कुट ८ शाल ९ पलाशी १० द्रु ११ द्रुम १२ आगम १३॥ ५॥

वानस्पत्यः फलैः पुष्पात्तैरपुष्पाद्वनस्पतिः। ओष-
ध्यः फलपाकान्ताः स्यादवन्ध्यः फलेग्रहिः ६ व-
न्ध्योऽफलोऽवकेशी च फलवान्फलिनः फली। प्र-
फुल्लोत्फुल्लसम्फुल्लव्याकोशविकचस्फुटाः ७
फुल्लश्चैते विकसिते स्युरवन्ध्यादयस्त्रिषु। स्था-
णुर्वा ना ध्रुवः शंकुः ह्रस्वशाखाशिफः क्षुपः ८
अप्रकाण्डे स्तम्बगुल्मौ वल्ली तु व्रततिर्लता।
लता प्रतानिनी वीरुद्गुल्मिन्युलप इत्यपि ९ न-
गाद्यारोह उच्छ्राय उत्सेधश्चोच्छ्रयश्च सः। अ-
स्त्री प्रकाण्ड स्कन्धस्स्यान्मूलाच्छाखावधिस्तरोः १०

(जोकि फूलकर फरें जैसे आमादि उनका नाम) वानस्पत्य १ (जोकि फूलने विना फरैं जैसे गूलर कटहर उनका नाम) वनस्पति १ (वृक्षमात्र को भी वनस्पति कहते हैं (अन्न के नाम) ओषधी १ ओषधि २ (फरैया वृक्ष के नाम) अवन्ध्य १ फलेग्रहि २ ॥ ६ ॥ (जो न फरै उस के नाम) वन्ध्य १ अफल २ अवकेशी ३ (फरे हुये वृक्ष के नाम) फलवान् १ फलिन २ फली ३ (फुलाने वृक्ष के नाम) प्रफुल्ल १ उत्फुल्ल २ सम्फुल्ल ३ व्याकोश ४ व्याकोष ५ विकच ६ स्फुट ७ ॥ ७ ॥ फुल्ल ८ (छिनिगिया वा कांटे वृक्ष के नाम) स्थाणु १ ध्रुव २ शंकु ३ (जिस में छोटी २ डालैं औ २ जड़ैं हों उस का नाम) क्षुप १ ॥ ८ ॥ (ठूंठ के नाम) स्तम्ब १ गुल्म २ (बैंवर के नाम) वल्ली १ वल्लि २ वेल्लि ३ व्रतति ४ लता ५ प्रतानिनी ६ व्रतती ७ (बड़ी लम्बी बैंवरि के नाम) वीरुत् १ गुल्मिनी २ उलप ३ ॥ ९ ॥ (वृक्षादि के ऊँचाई के नाम) उच्छ्राय १ उत्सेध २ उच्छ्रय ३ (वृक्ष की पींड़ के नाम) प्रकाण्ड १ स्कन्ध २ ॥ १० ॥

समेशाखालतेस्कन्धशाखाशालेशिफाजटे ।
शाखाशिफाऽवरोहस्स्यान्मूलाच्छाग्रङ्गतालता ॥
११ शिरोऽग्रंशिखरम्वानामूलम्बुध्नोऽङ्घ्रिनामकः ।
सारोमज्जानरित्वक्स्त्रीवल्कम्वल्कलमस्त्रियाम् ।
१२ काष्ठन्दार्विन्धनन्त्वेधइध्ममेधस्समित्स्त्रिया
म् । निःकुहःकोटरम्वानावल्लरिर्म्मञ्जरिस्त्रियौ ।
१३ पत्रम्पलाशञ्छदनन्दलम्पर्णञ्छदस्पुमान् । पल्ल
वोऽस्त्रीकिसलयम्विस्तारोविटपोऽस्त्रियाम् १४
वृक्षादीनाम्फलंसस्यम्वृन्तम्प्रसवबन्धनम् । आ
मेफलेशलाटुस्स्याच्छुष्केवानमुभेत्रिषु १५

(डाल के नाम) शाखा १ लता २ (मोटे जंघा के नाम) स्कन्धशाखा १ शाला २ (जर के नाम) शिफा १ जटा २ (बरोह का नाम) अवरोह १ कुच कुमड़ा आदि को अवरोह कहते हैं ॥ ११ ॥ (टेरा के नाम) शिरोग्र १ शिखर २ (मिट्टी के भीतर की जर के नाम) मूल १ बुध्न २ अंघ्रिनामक ३ (गूदा के नाम) सार १ मज्जा २ (बकला के नाम) त्वक् १ त्वचा २ वल्कल ३ वल्क ४ ॥ १२ ॥ (काठ के नाम) काष्ठ १ दारु २ (ईंधन के नाम) इन्धन १ एधः २ इध्म ३ (यज्ञादि के ईंधन के नाम) एध १ समित् २ (खुड़िला के नाम) निष्कुह १ कोटर २ (मंजरी के नाम) वल्लरि १ वल्लरी २ मञ्जरि ३ मञ्जरी ४ ॥ १३ ॥ (पत्ता के नाम) पत्र १ पलाश २ छदन ३ दल ४ पर्ण ५ छद ६ (पल्लव के नाम) पल्लव १ किसलय २ (डारों के फैलावे के नाम) विस्तार १ विटप २ ॥ १४ ॥ (सस्य के नाम) फल १ (ढेंपा के नाम) वृन्त १ प्रसवबन्धन २ (कच्चे फल का नाम) शलाटु १ (सूखे सस्य का नाम) वान १ ॥ १५ ॥

क्षारकोजालकं क्लीवे कलिका कोरकः पुमान्। स्याद्गुच्छकस्तु स्तवकः कुड्मलो मुकुलोऽस्त्रियाम् २६ स्त्रियः सुमनसः पुष्पम्प्रसूनं कुसुमं सुमम्। मकरन्दः पुष्परसः परागः सुमनोरजः २७ द्विहीनम्प्रसवे सर्व्वं हरीतक्यादयः स्त्रियाम्। आश्वत्थवैणवप्लाक्षनैयग्रोधैङ्गुदम्फले २८ बार्हतञ्च फले जम्ब्वा जम्बूः स्त्री जम्बु जाम्बवम्। पुष्पे जातीप्रभृतयः स्वलिङ्गा व्रीहयः फले २९ विदार्य्याद्यास्तु मूलेऽपि पुष्पे क्लीवेऽपि पाटला। बोधिद्रुमश्चलदलः पिप्पलः कुंजराशनः ३०

(भई कली के नाम) क्षारक १ जालक २ (बिना फुलानी कली के नाम) कलिका १ कोरक २ (गुच्छा के नाम) गुच्छक १ स्तवक २ (आधफुलानी कली के नाम) कुड्मल १ मुकुल २॥ २६॥ (फूल के नाम) सुमनाः १ पुष्प २ प्रसून ३ कुसुम ४ (फूल के रस के नाम) मकरन्द १ पुष्परस २ (फूल की धूलि के नाम) पराग १ सुमनोरज २॥ २७॥ (हर्र का फल) हरीतकी १ (पीपर का फल) आश्वत्थ १ (बांस का फल) वैणव १ (पकड़िया के फल का नाम) प्लाक्ष १ (बरगद का फल) नैयग्रोध १ (पांखी का फल) ऐंगुद १॥ २८॥ (भटकटैया का फल) बार्हत १ (फरेंदा के फल के नाम) जम्बू १ जम्बु २ जाम्बव ३ (जाती फल) जाती १॥ २९॥ (पीपर के नाम) बोधिद्रुम १ चलदल २ पिप्पल ३ कुंजराशन ४॥ ३०॥

अश्वत्थेऽथ कपित्थे स्युर्दधित्थग्राहिमन्मथाः। त-
स्मिन्दधिफलः पुष्पफलदन्तशठावपि २१ उदुम्ब
रो जन्तुफलो यज्ञाङ्गो हेमदुग्धकः। कोविदारे चम-
रिकः कुद्दालो युगपत्रकः २२ सप्तपर्णो विशालत्व
क्शारदो विषमच्छदः। आरग्वधे राजवृक्षशा-
म्याकचतुरंगुलाः २३ आरेवतव्याधिघातकृत
मालसुवर्णकाः। स्युर्जम्बीरे दन्तशठजम्भज
म्भीरजम्भलाः २४ वरुणो वरणः सेतुस्तिक्त
शाकः कुमारकः। पुन्नागे पुरुषस्तुङ्गः केस
रो देववल्लभः २५

अश्वत्थ ५ (कैथा के नाम) कपित्थ १ दधित्थ २ ग्राही ३ मन्मथ ४ दधि
फल ५ पुष्पफल ६ दन्तशठ ७॥ २१॥ (गूलर के नाम) उदुम्बर १ जन्तुफ-
ल २ यज्ञांग ३ हेमदुग्धक ४ (कचनार के नाम) कोविदार १ चमरिक
२ कुद्दाल ३ युगपत्रक ४ ॥ २२ ॥ (छतिवन के नाम) सप्तपर्ण १ वि-
शालत्वक् २ शारद ३ विषमच्छद ४ (किरवार अमिलतास के ना
म) आरग्वध १ आरग्वध २ आर्ग्वध ३ राजवृक्ष ४ शम्याक ५ चतुरंगु
ल ६ ॥ २३ ॥ आरेवत ७ व्याधिघात ८ कृतमाल ९ सुवर्णक १० सु-
वर्णक ११ (जम्बीरी निम्बू के नाम) जम्बीर १ दन्तशठ २ जम्भ ३
जम्भीर ४ जम्भल ५ ॥ २४ ॥ (वारुणा के नाम) वरुण १ वरण २ से-
तु ३ तिक्तशाक ४ कुमारक ५ (नागकेसर के नाम) पुन्नाग १ पुरुष
२ तुंग ३ केसर ४ देववल्लभ ५ ॥ २५॥

पारिभद्रे निम्बतरुर्म्मन्दारः पारिजातकः ।
तिनिशे स्यन्दनो नेमी रथद्रुरतिमुक्तकः २६
वंजुलश्चित्रकृच्चाथ द्वौ पीतनकपीतनौ । आ-
म्रातके मधूके तु गुडपुष्पमधुद्रुमौ २७ वान-
प्रस्थमधुष्ठीलौ जलजेऽत्र मधूलकः । पीलौ
गुडफलः स्रंसी तस्मिंस्तु गिरिसम्भवे २८ अ-
क्षोट कन्दरालौ द्वावङ्कोटे तु निकोचकः । पलाशे
किंशुकः पर्णो वातपोथोऽथ वेतसे २९ रथाभ्र
पुष्पविदुलशीतवानीरवंजुलाः । द्वौ परिव्या-
धविदुलौ नादेयी चाम्बुवेतसे ३०

(बकैना के नाम) पारिभद्र १ निम्बतरु २ मन्दार ३ पारिजातक ४ (ति-
शावन के नाम) तिनिश १ स्यन्दन २ नेमी ३ नेमि ४ रथद्रु ५ अतिमु-
क्तक ६ ॥ २६ ॥ वंजुल ७ चित्रकृत ८ (अम्बार के नाम) पीतन १ कपी-
तन २ अम्रातक ३ (महुआ के नाम) मधूक १ मधुक २ गुडपुष्प ३ म-
धुद्रुम ४ ॥ २७ ॥ वानप्रस्थ ५ मधुष्ठील ६ (पहाड़ी महुआ के नाम) म-
धूलक १ (पीलू के नाम) पीलु १ गुडफल २ स्रंसी ३ ॥ २८ ॥ (पहा-
ड़ी पीलू के नाम) अक्षोट १ कन्दराल २ (अंकुहर के नाम) अङ्को-
ट १ अङ्कोठ २ अङ्कोल ३ निकोचक ४ (ढिउल के नाम) पलाश १
किंशुक २ पर्ण ३ वातपोथ ४ (बेत के नाम) वेतस १ ॥ २९ ॥ रथ २
अभ्रपुष्प ३ विदुल ४ शीत ५ वानीर ६ वंजुल ७ (पानी के बेत के ना-
म) परिव्याध १ विदुल २ नादेयी ३ अम्बुवेतस ४ ॥ ३० ॥

सोभाञ्जने शिग्रुतीक्ष्णगन्धकाक्षीवमोचकाः।
रक्तोऽसौ मधुशिग्रुस्स्यादरिष्टः फेनिलस्समौ ३१
बिल्वे शाण्डिल्यशैलूषौ मालूरश्रीफलावपि।
प्लक्षो जटी पर्क्कटी स्यान्न्यग्रोधो बहुपाद्वटः ३२
गालवश्शावरो लोध्रस्तिरीटस्तिल्वमार्ज्जनौ।
आम्रश्चूतोरसालोऽसौ सहकारोऽतिसौरभः ३३
कुम्भोलूखलकं क्लीवे कौशिको गुग्गुलुः पुरः।
शेलुश्श्लेष्मातकश्शीत उद्दालो बहुवारकः ३४
राजादनम्प्रियालस्स्यात्सन्नकद्रुर्धनुःपटः। ग-
म्भारी सर्व्वतोभद्रा काश्मरी मधुपर्णिका ३५

(सँहिजन के नाम) सोभांजन १ सौभांजन २ शिग्रु ३ तीक्ष्णगन्धक ४ अक्षीव ५ मोचक ६ (लाल फूल के सँहिँजन के नाम) मधुशिग्रु १ (रीठी के नाम) अरिष्ट १ फेनिल २॥ ३१॥ (बेल के नाम) बिल्व १ शाण्डिल्य २ शैलूष ३ मालूर ४ श्रीफल ५ (पकरिया के नाम) प्लक्ष १ जटी २ पर्क्कटी (बरगद के नाम) न्यग्रोध १ बहुपात् २ वट ३॥ ३२॥ (लोध के नाम) गालव १ शावर २ लोध्र ३ तिरीट ४ तिल्व ५ मार्ज्जन ६ (आम के नाम) आम्र १ चूत २ रसाल ३ (सुगन्धित आम का नाम) सहकार १॥ ३३॥ (गूगुर के नाम) कुम्भ १ लूखलक २ कौशिक ३ गुग्गुलु ४ गुग्गुल ५ पुर ६ (लसोढ़ा के नाम) शेलु १ श्लेष्मातक २ शीत ३ उद्दाल ४ बहुवारक ५॥ ३४॥ (चिरोंजी के नाम) राजादन १ प्रियाल २ सन्नकद्रु ३ धनुष्पट ४ (रवँभारि के नाम) गम्भारी १ सर्व्वतोभद्रा २ काश्मरी ३ काश्मर्मरी ४ मधुपर्णिका ५॥ ३५॥

श्रीपर्णी भद्रपर्णी च काश्मर्य्यश्चाप्यथ द्वयोः।
कर्कन्धूर्ब्बदरी कोलिः कोलं कुवल फेनिले ३६
सौवीरम्बदरङ्घोण्टाप्यथ स्यात्स्वादुकण्टकः। वि
कङ्कत स्स्रुवावृक्षो ग्रन्थिलो व्याघ्रपादपि ३७
ऐरावतो नागरङ्गो नादेयी भूमिजम्बुका। तिन्दु
क स्स्फूर्ज्जकः कालस्कन्ध श्च शितिसारके ३८
काकेन्दुः कुलकः काकतिन्दुकः काकपीलुके।
गोलीढो झाटलो घण्टा पाटलि र्म्मोक्षमुष्ककौ।
३९ तिलकः क्षुरक श्रीमान्समौ पिचुलझावुकौ।
श्रीपर्णिका कुमुदिका कुम्भी कैडर्य्य कटफलौ ४०

श्री पर्णी ६ भद्रपर्णी ७ काश्मर्य्य ८ (बेर के नाम) कर्कन्धू १ कर्कन्धु २ बदरी ३ कोलि ४ कोली ५ कोला ६ (बेर के फल के नाम) कोल १ फेनिल २॥ ३६॥ सौवीर ३ सौवीर्य्य ४ बदर ५ घोण्टा ६ (कँटाय के नाम) स्वादुकण्टक १ विकङ्कत २ वैकङ्कत ३ स्रुवावृक्ष ४ ग्रन्थिल ५ व्याघ्रपात ६॥ ३७॥ (नारंगी के नाम) ऐरावत १ नागरंग २ नादेयी ३ भूमिजम्बुका ४ (तेंदू के नाम) तिन्दुक १ तिन्दुकी २ स्फूर्ज्जक ३ काल स्कन्ध ४ शितिसारक ५॥ ३८॥ (काक तेंदू के नाम) काकेन्दु १ कुलक २ काकतिन्दुक ३ काकपीलुक ४ (काठियाडरि के नाम) गोलीढ १ झाटल २ घण्टापाटलि ३ घण्टा ४ पाटलि ५ मोक्ष ६ मुष्कक ७॥ ३९॥ (तिलक के नाम) तिलक १ क्षुरक २ श्रीमान् ३ (झाऊ के नाम) पिचुल १ झावुक २ (कैफरा के नाम) श्री पर्णिका १ कुमुदिका २ कुम्भी ३ कैडर्य्य ४ कटफल ५॥ ४०॥

क्रमुकः पट्टिकाख्यस्स्यात्पट्टी लाक्षाप्रसादनः।
तूदस्तु यूपः क्रमुको ब्रह्मण्यो ब्रह्मदारु च ४१
तूलञ्च नीपप्रियक कदम्बास्तु हलिप्रिये। वी-
रवृक्षोऽरुष्करोऽग्निमुखी भल्लातकी त्रिषु ४२
गर्दभाण्डे कन्दराल कपीतन सुपार्श्वकाः। प्ल-
क्षश्च तिन्तिडी चिञ्चाऽम्लिकाथो पीतसारके।
४३ सर्ज्जकासन बन्धूक पुष्पप्रियक जीवकाः।
साले तु सर्ज्जकार्श्याश्वकर्णकास्सस्य सम्बरः।
४४ नदीसर्ज्जो वीरतरुरिन्द्रद्रुः ककुभोऽर्ज्जुनः।
राजादनः फलाध्यक्षः क्षीरिकायामथ द्वयोः ४५

१ (पठिआ लोध के नाम) क्रमुक १ पट्टिकाख्य २ पट्टी ३ लाक्षाप्रसादन ४ (पार्श्व पिप्पल वा तूत के नाम) तूद १ तूद २ यूप ३ क्रमुक ४ ब्रह्मराय ५ ब्रह्मदारु ६॥४१॥ तूल ७ (कदम्ब के नाम) नीप १ प्रियक २ कदम्ब ३ हलिप्रिय ४ (भिलावा के नाम) वीर वृक्ष १ अरुष्कर २ अग्निमुखी ३ भल्लातकी ४॥४२॥ (गोठी के नाम) गर्द्दभाण्ड १ कन्दराल २ कपीतन ३ सुपार्श्वक ४ प्लक्ष ५ (अमिली के नाम) तिन्तिडी १ तिन्तिली २ चिञ्चा ३ अम्लिका ४ आम्लिका ५ अम्लीक ६ आम्लीका ७ (विजयसार के नाम) पीतसारक १॥४३॥ सर्ज्जक २ असन ३ आसन ४ बन्धूकपुष्प ५ प्रियक ६ जीवक ७ (शाखू के नाम) शाल १ सर्ज्ज २ कार्श्य ३ कार्ष्य ४ अश्वकर्णक ५ सस्य सम्बर ६॥४४॥ (अर्ज्जुन वृक्ष के नाम) नदीसर्ज्ज १ वीरतरु २ इन्द्रद्रु ३ ककुभ ४ अर्ज्जुन ५ (खिन्नी के नाम) राजादन १ फलाध्यक्ष २ क्षीरिका ३॥४५॥

इंगुदी तापसतरु र्भूर्ज्जे चर्म्मिमृदुत्वचौ। पिच्छिला पूरणी मोचा स्थिरायुः शाल्मलिर्द्वयोः ४६ पिच्छा तु शाल्मलीवेष्टे रोचनः कूटशाल्मलिः। चिरिविल्वो नक्तमालः करजश्च करंजके ४७ प्रकीर्य्यः पूतिकरजः पूतिकः कलिमारकः। करंजभेदाः षड्ग्रन्थो मर्क्कट्यङ्गारवल्लरी ४८ रोही रोहितकः प्लीहशत्रुर्दाडिमपुष्पकः। गायत्री बालतनयः खदिरो दन्तधावनः ४९ अरिमेदो विट्खदिरे कदरः खदिरे सिते। सोमवल्को ऽप्यथ व्याघ्रपुच्छगन्धर्व्वहस्तकौ ५०

(धारवी के नाम) इंगुदी १ तापसतरु २ इंगुद ३ (भोजपत्र वृक्ष के नाम) भूर्ज्ज १ चर्म्मी २ मृदुत्वक ३ (सेमर के नाम) पिच्छिला १ पूरणी २ मोचा ३ स्थिरायु ४ शाल्मलि ५॥ ४६॥ (सेमर के गोंद के नाम) पिच्छा १ शाल्मलिवेष्ट २ (काले सेमर का नाम) रोचन १ कूटशाल्मलि २ (कंजी के नाम) चिरिविल्व १ चिरविल्व २ नक्तमाल ३ करज ४ करंज ५॥ ४७॥ (कंजा के नाम) प्रकीर्य्य १ पूतिकरज २ पूतीकरज ३ पूतिक ४ पूतीक ५ कलिमारक ६ (कंजा के भेद) षड्ग्रन्थ १ अंगारवल्लरी २ मर्क्कटी ३॥ ४८॥ (गुलनार के नाम) रोही १ रोहितक २ प्लीहशत्रु ३ दाडिमपुष्पक ४ (खयर के नाम) गायत्री १ बालतनय २ खदिर ३ दन्तधावन ४॥ ४९॥ (रींवा के नाम) अरिमेद १ विट्खदिर २ (दुधिया खयर के नाम) कदर १ सोमवल्क २ (रेंड़ के नाम) व्याघ्रपुच्छ १ गन्धर्व्वहस्तक २॥ ५०॥

शम्याड उरुबूकश्च रुचकश्चित्रकश्च सः ॥
चञ्चुः पञ्चाङ्गुलो मराड वर्द्धमान व्यडम्बकाः ५१
अल्पाशमी शमीरस्याच्छमी सक्तुफला शिवा।
पिराडीतको मरुवक श्वसनः करहाटकः ५२ शा-
ल्यश्च मदने शक्रपादपः पारिभद्रकः। भद्रदारु
द्रुकिलिमम्पीतदारुच दारुच ५३ पूतिकाष्ठ-
ञ्च सप्त स्युर्देवदारुरायथद्वयोः। पाटलिःपाट-
ला मोघा काचस्थाली फलेरुहा ५४ कृष्णावृ-
न्ता कुवेराक्षी श्यामा मातु महिलाह्वया। लतागो-
वन्दिनी गुन्द्रा प्रियंगुः फलिनी फली ५५

शम्याड ३ उरुबूक ४ उरुबुक ५ रुचक ६ चित्रक ७ चंचु ८ पञ्चांगु
ल ९ मराड १० वर्द्धमान ११ व्यडम्बक १२॥ ५१॥ (छोटीशमी का
नाम) शमीर १ (शमी के नाम) शमी १ सक्तुफला २ शिवा ३ (म-
यनफर के नाम) पिराडीतक १ मरुवक २ श्वसन ३ करहाटक ४
॥ ५२॥ शाल्य ५ मदन ६ (देवदारु के नाम) शक्रपादप १ पारिभ-
द्रक २ भद्रदारु ३ द्रुकिलिम ४ पीतदारु ५ दारु ६ ॥ ५३ ॥ पूतिका-
ष्ठ ७ देवदारु ८ (पाडरि के नाम) पाटलि १ पाटली २ पाटला ३ मो-
घा ४ अमोघा ५ काचस्थाली ६ फलेरुहा ७ ॥ ५४ ॥ कृष्णावृ-
न्ता ८ कुवेराक्षी ९ (काकुनि के नाम) श्यामा १ महिलाह्वया
२ लता ३ गोवन्दनी ४ गुन्द्री ५ प्रियंगु ६ फलिनी ७ फली ८
॥ ५५॥

विष्वक्सेनागन्धफलीकारम्भाप्रियकश्च सा।
मण्डूकपर्णपत्त्रोर्णनटकट्वङ्गटुण्टुकाः ५६
स्योनाकशुकनासर्क्षदीर्घवृन्तकुटन्नटाः।
शोणकश्चारलौतिष्यफलात्वामलकीत्रिषु
५७ अमृताचवयस्थाचत्रिलिङ्गस्तुविभीतकः।
नाक्षस्तुषःकर्षफलोभूतावासःकलिद्रुमः ५८
अभयात्वव्यथापथ्याकायस्थापूतनामृता।
हरीतकीहैमवतीचेतकीश्रेयसीशिवा ५९
पीतद्रुस्सरलःपूतिकाष्ठञ्चाथद्रुमोत्पलः।
कर्णिकारःपरिव्याधोलकुचोलिकुचोडहुः ६०

विष्वक्सेना ९ गन्धफली १० कारम्भा ११ प्रियक १२ (सरिवन के नाम) मण्डूकपर्णा १ पत्त्रोर्णा २ नट ३ कट्वंग ४ टुण्टुक ५॥ ५६॥ स्योनाक ६ शुकनास ७ ऋक्ष ८ दीर्घवृन्त ९ कुटन्नट १० शोणाक ११ अरलु १२ (आँवरा के नाम) तिष्यफला १ आमलकी २॥ ५७॥ अमृता ३ वयस्था ४ आमलक ५ (बहेरा के नाम) विभीतक १ अक्ष २ तुष ३ कर्षफल ४ भूतावास ५ कलिद्रुम ६॥ ५८॥ (हर्रै के नाम) अभया १ अव्यथा २ पथ्या ३ कायस्था ४ पूतना ५ अमृता ६ हरीतकी ७ हैमवती ८ चेतकी ९ श्रेयसी १० शिवा ११॥ ५९॥ (सरला के नाम) पीतद्रु १ सरल २ पूतिकाष्ठ ३ (कटचम्पा के नाम) द्रुमोत्पल १ कर्णिकार २ परिव्याध ३ (बड़हर के नाम) लकुच १ लिकुच २ डुहू ३ डुहू ४॥ ६०॥

पनसः कण्टकिफलो निचुलो हिज्जलोऽम्बुजः।
काकोदुम्बरिका फल्गुर्म्मलयूर्ज्जघनेफला ६१
अरिष्टस्सर्व्वतोभद्रहिंगुनिर्य्यासमालकाः।
पिचुमन्दश्च निम्बेऽथपिच्छिलाऽगुरुशिंशपा ६२ कपिलाभस्मगर्भासा शिरीषस्तु कपीतनः। भण्डिलोऽप्यथ चाम्पेयश्चम्पको हेमपुष्पकः ६३ एतस्य कलिका गन्धफली स्यादथ केसरे। बकुलो वंजुलोऽशोके समौ करकदाडिमौ ६४ चाम्पेयः केसरो नागकेसरः काञ्चनाह्वयः। जयाजयन्ती तर्क्कारी नादेयी वैजयन्तिका ६५

(कटहर के नाम) पनस १ कण्टकिफल २ कण्टकफल ३ (समुद्रफल के नाम) निचुल १ हिज्जल २ अम्बुज ३ (कटूबरि के नाम) काकोदुम्बरिका १ फल्गु २ मलयु ३ मलपू ४ जघनेफला ५॥ ६१॥ (नीब के नाम) अरिष्ट १ सर्व्वतोभद्र २ हिंगुनिर्यास ३ मालक ४ पिचुमन्द ५ पिचुमर्द ६ निम्ब ७ (सिवसई वा सीसम के नाम) पिच्छिला १ अगुरुशिंशपा २॥ ६२॥ कपिला ३ भस्मगर्भा ४ (शिरसा के नाम) शिरीष १ कपीतन २ भण्डिल ३ (चम्पा के नाम) चाम्पेय १ चम्पक २ हेमपुष्पक ३॥ ६३॥ (चम्पा के फूल का नाम) गन्धफली १ (मौलसिरी के नाम) केसर १ केशर २ बकुल ३ (अशोक के नाम) वंजुल १ अशोक २ (अनार के नाम) करक १ दाड़िम २॥ ६४॥ (नागकेसर के नाम) चाम्पेय १ केसर २ नागकेसर ३ काञ्चनाह्वय ४ (जाही के नाम) जया १ जयन्ती २ तर्क्कारी ३ नादेयी ४ वैजयंतिका ५॥ ६५॥

श्रीपर्णी मग्निमन्थस्स्यात्कर्णिका गणिकारिका। जयोऽथकुटजश्शक्रो वत्सको गिरिमल्लिका ६६ स्तस्यैव कलिङ्गेन्द्रयवभद्रयवं फले। कृष्णपाकफलाविग्नसुषेणाः करमर्दके ६७ कालस्कन्धस्तमालस्स्यात्तापिञ्छोऽथसिन्दुके। सिन्धुवारेन्द्रसुरसौ निर्गुण्डीन्द्राणिकेत्यपि ६८ वेणी गरा गरी देवताडो जीमूत इत्यपि। श्रीहस्तिनी तु भूरुण्डी तृणशून्यन्तु मल्लिका ६९ भूपदी शीतभीरुश्च सास्फोटा वनोद्भवा। शेफालिका तु सुवहा निर्गुण्डी नीलिका च सा ७०

(अरणी के नाम) श्रीपर्णी १ अग्निमन्थ २ कर्णिका ३ गणिकारिका ४ जय ५ (कुरैया के नाम) कुटज १ शक्र २ वत्सक ३ गिरिमल्लिका ४ ॥ ६६ ॥ (इन्द्रजव अर्थात् कुरैया के फल के नाम) कलिंग १ इन्द्रयव २ भद्रयव ३ (करौंदा के नाम) कृष्णपाकफल १ अविग्न २ आविग्न ३ सुषेण ४ करमर्दक ५ ॥ ६७ ॥ (तमाल के नाम) कालस्कन्ध १ तमाल २ तापिञ्छ ३ (म्योंढी के नाम) सिन्दुक १ सिन्दुवार २ इन्द्रसुरस ३ निर्गुण्डी ४ निर्गुण्ठी ५ इन्द्राणिका ६ ॥ ६८ ॥ (बन्दाल वृक्ष जो गुजरात में गोडी प्रसिद्ध है उसके नाम) वेणी १ गरा २ गरी ३ अगरी ४ गरागरी ५ देवताड ६ जीमूत ७ (घुघुवा के नाम) श्रीहस्तिनी १ भूरुण्डी २ (बेला के नाम) तृणशून्य १ मल्लिका २ ॥ ६९ ॥ भूपदी ३ शीतभीरु ४ (बन बेला के नाम) आस्फोटा १ (न्यवारी के नाम) शेफालिका १ सुवहा २ निर्गुण्डी ३ नीलिका ४ ॥ ७०

सिताऽसौ श्वेतसुरसा भूतवेश्यथ मागधी। गणिका यूथिकाम्बष्ठा सा पीता हेमपुष्पिका ७१ अतिमुक्तः पुण्ड्रकस्स्याद्वासन्ती माधवीलता। सुमना मालती जातिस्सप्तला नवमल्लिका ७२ माध्यं कुन्दं रक्तकस्तु बन्धूको बन्धुजीवकः। सहाकुमारी तरणिरम्लानस्तु महासहा ७३ तत्र शोणो कुरवकस्तत्र पीते कुरण्टकः। नीली झिण्टी द्वयोर्बाणा दासी चार्त्तगलश्च सा ७४ सैरेयकस्तु झिण्टी स्यात्तस्मिन्कुरवकोऽरुणे। पीता कुरण्टको झिण्टी तस्मिन्सहचरी द्वयोः ७५

(उजली नेवाड़ी के नाम) श्वेतसुरसा १ भूतवेशी २ (जुही के नाम) मागधी १ गणिका २ यूथिका ३ अम्बष्ठा ४ (पीले फूल की जुही का नाम) हेमपुष्पिका १॥ ७१॥ (बसन्ती के नाम) अतिमुक्त १ पुण्ड्रक २ बासन्ती ३ माधवी ४ लता ५ (चमेली के नाम) सुमनाः १ मालती २ जाति ३ जाती ४ सुमना ५ (वर्षा की बेली का नाम) सप्तला १ नवमल्लिका २॥ ७२॥ (कुन्द के नाम) माध्य १ कुन्द २ (दुपहरी के फूल के नाम) रक्तक १ बन्धूक २ बन्धुक ३ बन्धुजीवक ४ (घिउ कुंआरि के नाम) सहा १ कुमारी २ तरणि ३ (कटसैरया के नाम) अम्लान १ महासहा २॥ ७३॥ (लाल कटसैरया के नाम) कुरबक १ कुरुबक २ (पीली कटसैरया के नाम) कुरण्टक १ (नीली झिण्डी के नाम) बाणा १ दासी २ अर्त्तगल ३ आर्त्तगल ४॥ ७४॥ (झिण्टी मात्र के नाम) सैरयक १ सैरीयक २ झिण्डी ३ (लाल झिण्डी के नाम) कुरबक १ (पीली झिण्ठी का नाम) कुरण्टक १ सहचर २ सहचरी ३॥ ७५॥

ओड्रपुष्पं जपापुष्पम्वज्रपुष्पन्तिलस्ययत्। प्रति
हासशतप्रास चराड्डातहयमारकाः ७६ करवी
रे करीरेतुक्रकरग्रन्थिलावुभौ। उन्मत्तः कित
वोधूर्तोधत्तूरोकनकाह्वयः ७७ मातुलोमद
नश्चास्य फलेमातुलपुत्रकः। फलपूरोबीज
पूरोरुचकोमातुलुङ्गके ७८ समीरणोमरुव
कः प्रस्थपुष्पःफणिज्जकः। जम्बीरोऽप्यथप
र्णासे कठिंजरकुठेरकौ ७९ सितेऽर्ज्जकोऽत्र
पाठीतु चित्रकोवह्निसंज्ञकः। अर्काह्ववसुका
ऽस्फोटगणरूपविकीरणाः ८०

(गुड़हरके पुष्प के नाम) ओड्रपुष्प १ जपापुष्प २ (तिली के फूल
का नाम) वज्रपुष्प १ (कँदइल के नाम) प्रतिहास १ शतीहास २ प्रा-
न ग्रास ३ चगड्डात ४ हयमारक ५॥ ७६॥ करवीर ६ (करील के
नाम) करीर १ क्रकल २ ग्रन्थिल ३ (धतूर के नाम) उन्मत्त १
कितव २ धूर्त ३ धत्तूर ४ कनकाह्वय ५॥ ७७॥ मातुल ६ मद
न ७ (धतूर के फल का नाम) मातुलपुत्रक १ (बिजौरा नैंबू
के नाम) फलपूर १ बीजपूर २ रुचक ३ मातुलुंगक ४॥ ७८॥
(दैवना के नाम) समीरण १ मरुवक २ प्रस्थपुष्प ३ फणिज्ज-
क ४ जम्बीर ५ जम्भीर ६ (बबई के नाम) कठिञ्जर १ कुठेरक
२ पर्णास ३॥ ७९॥ (उजली बबई का नाम) अर्ज्जक १ (चीत
के नाम) पाठी १ चित्रक २ वह्नि संज्ञक ३ (मदार के नाम) अर्का-
ह्व १ वसुक २ वसुका ३ आस्फोट ४ गणरूप ५ विकीरण ६॥ ८०॥

मन्दारश्चार्कपर्णोऽत्र शुक्लेऽलर्कप्रतापसौ।
शिवमल्ली पाशुपत एकाष्ठीलो बुको वसुः ८१
वृन्दा वृक्षादनी वृक्षरुहा जीवन्तिकेत्यपि। वत्सादनी छिन्नरुहा गुडूची तन्त्रिकामृता ८२ जीवन्तिका सोमवल्ली विशल्या मधुपर्ण्यपि। मूर्वा देवी मधुरसा मोरटा तेजनी स्रवा ८३ मधूलिका मधुश्रेणी गोकर्णी पीलुपर्ण्यपि। पाठाम्बष्ठा विद्धकर्णी स्थापनी श्रेयसी रसा ८४ एकाष्ठीला पापचेली प्राचीना वनतिक्तिका। कटुः कटम्भराशोकरोहिणी कटुरोहिणी ८५

मन्दार ७ अर्कपर्ण ८ (उजले मदारके नाम) अलर्क १ प्रतापस २ (गूँबा के नाम) शिवमल्ली १ पाशुपत २ एकाष्ठील ३ बुक ४ बक ५ बसु ६ ॥८१॥ (बाँदा के नाम) वृन्दा १ वृक्षादनी २ वृक्षरुहा ३ जीवन्तिका ४ (गुरुच के नाम) वत्सादनी १ छिन्नरुहा २ गुडूची ३ गुडुची ४ तंत्रिका ५ अमृता ६ ॥८२॥ जीवन्तिका ७ सोमवल्ली ८ विशल्या ९ मधुपर्णी १० (चिनार के नाम) मूर्वा १ मूर्वी २ देवी ३ मधुरसा ४ मोरटा ५ तेजनी ६ स्रवा ७ ॥८३॥ स्रुवा ८ मधूलिका ९ मधुश्रेणी १० गोकर्णी ११ पीलुपर्णी १२ (पाढ़ी के नाम) पाठा १ अम्बष्ठा २ विद्धकर्णी ३ अविद्धकर्णी ४ स्थापनी ५ श्रेयसी ६ रसा ७ ॥८४॥ एकाष्ठीला ८ पापचेली ९ प्राचीना १० वनतिक्तिका ११ (कुटकी के नाम) कटु १ कटम्भरा २ कटम्बरा ३ अशोकरोहिणी ४ अशोका ५ कटुरोहिणी ६ रोहिणी ७ ॥८५॥

मत्स्यपित्ता कृष्णाभेदी चक्राङ्गी शकुलाद
नी। आत्मगुप्ताजडाव्यङ्गा कराडूरा प्रावृषाय-
णी ८६ ऋष्यप्रोक्ता शूकशिम्बिः कपिकच्छुश्च
मर्कटी। चित्रोपचित्रा न्यग्रोधी द्रवन्ती शाम्बरी वृषा।
८७ प्रत्यक्श्रेणी सुतश्रेणी रराडा मूषिकपर्ण्यपि।
अपामार्गः शैखरिकोऽधामार्गवमयूरको ८८
प्रत्यक्पर्णी केशपर्णी किणिही खरमंजरी। हंजि
का ब्राह्मणी पद्मा भार्गी ब्राह्मणयष्टिका ८९ अ
ङ्गारवल्ली बालेयशाकबर्बरबर्द्धकाः। मंजिष्ठा वि
कसा जिङ्गी समङ्गा कालमेषिका ९०

मत्स्यपित्ता ८ कृष्णाभेदी ९ कृष्णाभेदा १० चक्रांगी ११ शकुला
दनी १२ (कौंवाच के नाम) आत्मगुप्ता १ अजहा २ जडा ३ अ-
व्यंगा ४ कराडूरा ५ कराडुरा ६ प्रावृषायणी ७॥ ८६॥ ऋष्य
प्रोक्ता ८ शूकशिम्बि ९ शूकशिम्बा १० कपिकच्छु ११ कपि-
कच्छू १२ मर्कटी १३ (मूसाकानी के नाम) चित्रा १ उपचित्रा २ न्य
ग्रोधी ३ द्रवन्ती ४ शाम्बरी ५ वृषा ६॥ ८७॥ प्रत्यक्श्रेणी ७ सुतश्रे
णी ८ रराडा ९ मूषिकपर्णी १० (लटजीरा चिचिड़ा के नाम) अपामार्ग १
शैखरिक २ अधामार्गव ३ मयूरक ४॥ ८८॥ प्रत्यक्पर्णी ५ केश
पर्णी ६ किणिही ७ खरमंजरी ८ (भारंगी के नाम) हंजिका १ ब्रा-
ह्मणी २ पद्मा ३ भार्गी ४ ब्राह्मणयष्टिका ५॥ ८९॥ अंगारवल्ली ६
बालेयशाक ७ बर्बर ८ बर्द्धक ९ (मजीठ के नाम) मंजिष्ठा १ विकसा २
जिंगी ३ समंगा ४ कालमेषिका ५ कालमेशिका ६॥ ९०॥

मराडूकपर्णी भराडीरी भराडी योजनवल्ल्यपि । या
सो जवासो दुस्स्पर्शो धन्वयासः कुनाशकः ९१
रोदनी कच्छुरानन्ता समुद्रान्ता दुरालभा । पृश्नि
पर्णी पृथक्पर्णी चित्रपर्णयंघ्रिवल्लिका ९२ क्रो
ष्टुविन्ना सिंहपुच्छी कलशी धावनी गुहा । निदि
ग्धिका स्पृशी व्याघ्री बृहती कराटकारिका ९३
प्रचोदनी कुली क्षुद्रा दुस्स्पर्शा राष्ट्रिकेत्यपि ।
नीली काला क्लीतकिका ग्रामीणा मधुपर्णिका ।
९४ रंजनी श्रीफली तुत्था द्रोणी दोला चनीलि-
नी । अवल्गुजस्सोमराजी सुवल्लिस्सोमवल्लिका ९५

मराडूकपर्णी ७ भराडीरी ८ भरिडरी ९ भराडी १० योजन वल्ली ११ (यवासा के नाम) याम १ यवास २ दुस्स्पर्श ३ धन्वयास ४ धनुर्व्या स ५ कुनाशक ६ ॥ ९१ ॥ रोदनी ७ चोदनी ८ कच्छुरा ९ अनन्ता १० समुद्रान्ता ११ दुरालभा १२ (पिथिवन के नाम) पृश्निपर्णी १ पृथक पर्णी २ चित्रपर्णी ३ अंघ्रिवल्लिका ४ ॥ ९२ ॥ क्रोष्टुविन्ना ५ सिंहपु-च्छी ६ कलशी ७ धावनी ८ गुहा ९ (अटकटैया के नाम) निदिग्धिका १ स्पृशी २ व्याघ्री ३ बृहती ४ कराटकारिका ५ ॥ ९३ ॥ प्रचोदनी ६ कुली ७ क्षुद्रा ८ दुस्स्पर्शा ९ राष्ट्रिका १० (नील के नाम) नीली १ काला २ क्लीतकिका ३ ग्रामीणा ४ मधुपर्णी का ५ ॥ ९४ ॥ रंजनी ६ श्रीफली ७ तुत्था ८ द्रोणी ९ तूणी १० दोला ११ नीलिनी १२ (बकुची के नाम) अवल्गुज १ सोमराजी २ सुवल्लि ३ सोमवल्लिका ४ ॥ ९५ ॥

कालमेषी कृष्णफला वाकुची पूतिफल्यपि। कृष्णोपकुल्या वैदेही मागधी चपला करा॥९६ उषणा पिप्पली शौण्डी कोलाथ करिपिप्पली। कपिवल्ली कोलवल्ली श्रेयसी वशिरः पुमान् ९७ चव्यं तु चविका काकचिञ्ची गुंजे तु कृष्णला। पलङ्कषा त्विक्षुगन्धा श्वदंष्ट्रा स्वादुकण्टकः ९८ गोकण्टको गोक्षुरको वनशृङ्गाट इत्यपि। विश्वा विषा प्रतिविषातिविषोपविषारुणा ९९ शृङ्गी महौषधं चाथ क्षीरावी दुग्धिका समे। शतमूली बहुसुताऽभीरुरिन्दीवरी वरी १००

कालमेषी ५ कृष्णफला ६ वाकुची ७ पूतिफली ८ (पीपर के नाम) कृष्णा १ उपकुल्या २ वैदेही ३ मागधी ४ चपला ५ करा ६ ॥ ९६ ॥ उषणा ७ उषणा ८ पिप्पली ९ शौंडी १० पिप्पला ११ कोला १२ (गजपीपर के नाम) करिपिप्पली १ कपिवल्ली २ कोलवल्ली ३ श्रेयसी ४ वशिर ५ ॥ ९७ ॥ (चाव के नाम) चव्य १ चव्या २ चविका ३ चाविकी ४ (घुंघुची के नाम) काकचिञ्ची १ काकचिञ्चा २ गुंजा ३ कृष्णला ४ (गूखुर के नाम) पलङ्कषा १ इक्षुगन्धा २ श्वदंष्ट्रा ३ स्वादुकण्टक ४ ॥ ९८ ॥ गोकण्टक ५ गोक्षुरक ६ वनशृंगाट ७ (अतीस के नाम) विश्वा १ विषा २ प्रतिविषा ३ अतिविषा ४ उपविषा ५ अरुणा ६ ॥ ९९ ॥ शृंगी ७ महौषध ८ (दूधी के नाम) क्षीरावी १ दुग्धिका २ (शतावरि के नाम) शतमूली १ बहुसुता २ अभीरु ३ इन्दीवरी ४ वरी ५ ॥ १०० ॥

ऋष्यप्रोक्ता भीरुपत्री नारायण्यश्शतावरी । अहे
रुरथ पीतद्रु कालीयक हरिद्रवः २०१ दार्व्वी पच
म्पचा दारुहरिद्रा पर्ज्जनीत्यपि । वचोग्रगन्धा
षड्ग्रन्था गोलोमी शतपर्व्विका २०२ शुक्ला हैम
वती वैद्यमातृसिंह्यौ तु वाशिका । वृषोऽटरूष-
स्सिंहास्यो वासको वाजिदन्तकः २०३ आस्फो
ता गिरिकर्णी स्याद्विष्णुक्रान्ताऽपराजिता । इक्षु
गन्धा तु काण्डेक्षु कोकिलाक्षेक्षुरक्षुराः २०४
शालेयस्स्याच्छीतशिवश्छत्रा मधुरिका मिसिः ।
मिश्रेयाप्यथसीहुण्डो वज्रस्स्नुक्स्त्री स्नुही गुडा २०५

ऋष्यप्रोक्ता ६ अभीरुपत्री ७ नारायणी ८ शतावरी ९ अहेरु १० (दा रु हल्दी के नाम) पीतद्रु १ कालीयक २ हरिद्रु ३ ॥ २०१ ॥ दार्व्वी ४ पचम्पचा ५ दारुहरिद्रा ६ पर्ज्जनी ७ (वच के नाम) वचा १ उग्रगन्धा २ षड्ग्रंथा ३ गोलोमी ४ शतपर्विका ५ ॥ २०२ ॥ (उजली बच का नाम) हैमवती १ (रूस के नाम) वैद्यमाता १ सिंही २ वासिका ३ वाशिका ४ वृष ५ अटरूष ६ अडरूष ७ सिंहास्य ८ वासक ९ वाजिदन्तक १० ॥ २०३ ॥ (विष्णुक्रान्ता के नाम) आस्फोता १ गिरिकर्णी २ विष्णुकांता ३ अपराजिता ४ (तालमखाने के नाम) इक्षुगन्धा १ काण्डेक्षु २ कोकिलाक्ष ३ इक्षुर ४ क्षुर ५ ॥ २०४ ॥ (सौंफ के नाम) शालेय १ शीतशिव २ छत्रा ३ मधुरिका ४ मिसि ५ मिसी ६ मिशि ७ मिश्री ८ मिश्रेया ९ (सेहुंडा के नाम) सीहुण्ड १ सिहुण्ड २ समीहुण्ड ३ वज्र ४ स्नुक ५ स्नुही ६ स्नुहि ७ स्नुता ८ गुडा ९ गुडी १० ॥ २०५ ॥

समङ्गमुग्धा भौवेल्लममोघा चित्रतण्डुला । तण्डुलश्च कृमिघ्नश्च विडङ्गं पुन्नपुंसकम् १०६ बला वाट्यालका घण्टारवा तु शणपुष्पिका । मृद्वीका गोस्तनी द्राक्षा स्वाद्वी मधुरसेति च १०७ सर्वानुभूतिः सरला त्रिपुटा त्रिवृता त्रिवृत् । त्रिभण्डी रेचनी श्यामा पालिन्द्यो तु सुषेणिका १०८ काला मसूरविदलार्द्धचन्द्रा कालमेषिका । मधुकं क्लीतकं यष्टिमधुकं मधुयष्टिका १०९ विदारी क्षीरशुक्लेक्षुगन्धा क्रोष्ट्री तु या सिता । अन्या क्षीरविदारी स्यान्महाश्वेतर्क्षगन्धिका ११०

समङ्गमुग्धा ११ (वायुभिरंग के नाम) वेल्ल १ अमोघा २ मोघा ३ चित्रतंडुला ४ तण्डुल ५ कृमिघ्न ६ विडंग ७ ॥ १०६ ॥ (बरियारा के नाम) बला १ वाट्यालका २ । सनई के नाम) घण्टारवा १ शणपुष्पिका २ (दाख के नाम) मृद्वीका १ गोस्तनी २ गोस्तना ३ द्राक्षा ४ स्वाद्वी ५ मधुरसा ६ ॥ १०७ ॥ (श्वेत त्रिधारा के नाम) सर्वानुभूति १ सरला २ त्रिपटा ३ त्रिपुटी ४ त्रिवृता ५ त्रिवृत ६ त्रिभण्डी ७ रेचनी ८ (काले त्रिधारा के नाम) श्यामा १ पालिन्दी २ सुषेणिका ३ ॥ १०८ ॥ काला ४ मसूरविदला ५ अर्द्धचन्द्रा ६ कालमेषिका ७ (जेठी मधु के नाम) मधुक १ क्लीतक २ यष्टिमधुक ३ मधुयष्टिका ४ ॥ १०९ ॥ (कृष्ण भूकूष्माण्ड के नाम) विदारी १ क्षीरशुक्ला २ इक्षुगन्धा ३ क्रोष्ट्री ४ (शुक्ल भूकूष्माण्ड के नाम) क्षीरविदारी १ महाश्वेता २ ऋक्षगन्धिका ३ ॥ ११० ॥

लाङ्गली शारदी तोयपिप्पली शकुलादनी। खरा श्वा कारवी दीप्यो मयूरो लोचमस्तकः १११ गोपी श्यामा शारिवा स्यादनन्तोत्पल शारिवा। योग्य मृद्धिस्सिद्धिलक्ष्म्यौ वृद्धेरप्याह्वयाइमे ११२ कदली वारणा बुसा रम्भा मोचांशुमत्फला। काष्ठीला मुद्गपर्णी तु काकमुद्गा सहेत्यपि ११३ वार्त्ताकी हिंगुली सिंही भण्टाकी दुष्प्रधर्षिणी। नाकुली सुरसा रास्ना सुगन्धा गन्धनाकुली ११४ नकुलेष्टा भुजङ्गाक्षी छत्राकी सुवहा च सा। विदारिगन्धांशुमती सालपर्णी स्थिरा ध्रुवा ११५

(जल पीपर के नाम) लांगली १ शारदी २ तोयपिप्पली ३ शकुलादनी ४ (मयूरशिखा वा अजुमोदा के नाम) खराश्वा १ कारवी २ दीप्य ३ मयूर ४ लोचमस्तक ५॥ १११॥ (कारी शाम्ब के नाम) गोपी १ गोपा २ श्यामा ३ शारिवा ४ सारिवा ५ अनन्ता ६ उत्पल शारिवा ७ (वृद्धौषधि के बर्गो के नाम) योग्य १ ऋद्धि २ सिद्धि ३ लक्ष्मी ४॥ ११२॥ (केला के नाम) कदली १ कदला २ कदल ३ वारणा बुसा ४ वारणा बुषा ५ रम्भा ६ मोचा ७ अंशुमत्फला ८ काष्ठीला ९ (बन मूंग के नाम) मुद्गपर्णी १ काकमुद्गा २ सहा ३॥ ११३॥ (बन भांटा के नाम) वार्त्ताकी १ वार्त्ताक २ हिंगुली ३ सिंही ४ भण्टाकी ५ दुमधर्षिणी ६ (रासन के नाम) नाकुली १ सुरसा २ रास्ना ३ सुगन्धा ४ गन्धनाकुली ५॥ ११४॥ नकुलेष्टा ६ भुजंगाक्षी ७ छत्राकी ८ सुवहा ९ (शालपर्णी वा सरिवन के नाम) विदारिगन्धा १ विदारीगन्धा २ अंशुमती ३ शालपर्णी ४ सालपर्णी ५ स्थिरा ६ ध्रुवा ७॥ ११५॥

तुरिडकेरीसमुद्रान्ता कार्प्पासी वदरेति च। भारद्वाजी तुसावन्या शृङ्गी तु ऋषभो वृषः ११६ गाङ्गेरुकी नागबला झषा ह्रस्वगवेधुका। धामार्गवो घोषकस्स्यान्महाजाल्नी सपीतकः ११७ ज्योत्स्नी पटोलिका जाली नादेयी भूमिजम्बुका। स्याल्लाङ्गलिक्यग्निशिखा काकाङ्गी काकनासिका ११८ गोधापदी तु सुवहा मुसली तालमूलिका। अजशृङ्गी विषाणी स्याद्गोजिह्वा दार्व्विके समे ११९ ताम्बूलवल्ली ताम्बूली नागवल्ल्यप्यथ द्विजा। हरेणू रेणुका कौन्ती कपिला भस्मगन्धिनी १२०

(कपास के नाम) तुरडकेरी १ समुद्रान्ता २ कार्प्पासी ३ वदरा ४ (वन की कपास नरमा का नाम) भारद्वाजी १ (काकरा शृंगी के नाम) शृंगी १ ऋषभ २ वृष ३॥ ११६॥ (कँकही के नाम) गांगेरुकी १ नागबला २ झषा ३ ह्रस्वगवेधुका ४ (श्वेत तुरई के नाम) धामार्गव १ घोषक २ (पीले फूल की तुरई के नाम) महाजाली १॥ ११७॥ (चिँचिंडा के नाम) ज्योत्स्नी १ ज्योत्स्ना २ पटोलिका ३ जाली ४ (भूमि जामुनि के नाम) नादेयी १ भूमिजम्बुका २ (काकजंघा अर्त्थात् कौवा ढोढ़ी के नाम) काकांगी १ काकनासिका २॥ ११८॥ (करियारी के नाम) लांगलिकी १ अग्निशिखा २ (हंसपदी के नाम) गोधापदी १ सुवहा २ (मुसरि के नाम) मुसली १ तालमूलिका २ (मेंढ़ा शृंगी के नाम) अजशृंगी १ विषाणी २ (गोभी के नाम) गोजिह्वा १ दार्व्विका २ दार्व्विका ३॥ ११९॥ (नागबेलि के नाम) ताम्बूलवल्ली १ नागवल्ली २ (गाँगनधूरि के नाम) द्विजा १ हरेणु २ रेणुका ३ कौन्ती ४ कपिला ५ भस्मगन्धिनी ६॥ १२०॥

मल्लवालुकमैलेयं सुगन्धि हरिवालुकम्। वालु-
क ञ्चाथपालंकया म्मुकुन्दः कुन्द कुन्दुरू १२१
वालं ह्रीवेर वर्हिष्ठो दीच्यङ्के शाम्बुनामच। का-
लानुसार्य्यं वृद्धा श्मपुष्य शीत शिवानितु १२२
शैलेयं तालपर्णीतु दैत्या गन्धकुटी मुरा। गन्धि-
नी गजभक्ष्यातु सुवहा सुरभीरसा १२३ महेर-
णा कुन्दुरुकी सल्लकी ह्लादिनीतिच। अग्नि-
ज्वाला सुभिक्षेतु धातकी धातुपुष्पिका १२४
पृथ्वीका चन्द्रवाले ला निष्कुटि र्बहुलाथसा।
सूक्ष्मोपकुञ्चिका तुत्था कोरङ्गी त्रिपुटा त्रुटिः १२५

(मूस घर के नाम) मलवालुक १ ऐलेय २ सुगन्धि ३ हरिवालुक ४ वालु-
क ५ (पल्ला की के नाम) पालङ्की १ मुकुन्द २ कुन्द ३ कन्दुरू ४॥ १२१॥
(नेत्रबाला के नाम) वाल १ ह्रीवेर २ वर्हिष्ठ ३ उदीच्य ४ केश ५ अम्बु
६ (शिलाजित पथर चटा के नाम) वृद्ध १ अश्मपुष्प २ शीतशिव ३
॥ १२२॥ शैलेय ४ कालानुसार्य्य ५ (मुरठी वा तालिस पत्र के नाम)
तालपर्णी १ दैत्या २ गन्धकुटी ३ मुरा ४ गन्धिनी ५ (साल के नाम)
गजभक्ष्या १ गजभक्षा २ सुवहा ३ सुरभी ४ सुरभि ५ रसा ६॥ १२३॥
महेरणा ७ महेरुणा ८ कुन्दुरुकी ९ सल्लकी १० ह्लादिनी ११ ह्ला-
दिनी १२ (धवई के नाम) अग्निज्वाला १ सुभिक्षा २ धातकी ३ धातु
पुष्पिका ४ ॥ १२४ ॥ (इलायची के नाम) पृथ्वीका १ चन्द्रवाला
२ एला ३ निष्कुटि ४ निष्कुटी ५ बहुला ६ (गुजराती इलायची के नाम)
उपकुञ्चिका १ तुत्था २ कोरंगी ३ त्रिपुटा ४ त्रुटि ५ त्रुटी ६ ॥ १२५॥

व्याधिः कुष्ठमस्त्रारिभाव्यम्वाप्यम्स्यापाकलमुत्पलम शङ्खिनी चोरपुष्पी स्यात्केशिन्यथवितुन्नकः
१२६ झटामला झटानाली शिवातामलकीतिच।
प्रपौराडरीकम्पौराडर्य्यमथतुन्नः कुबेरकः १२७
कुणिः कच्छः कान्तलकोनन्दिवृक्षोथराक्षसी।
चराडा धनहरी क्षेमदुष्पत्रगराहासकाः १२८
व्याड़ायुधम्व्याघ्रनखङ्करजञ्चक्रकारकम्।
सुषिराविद्रुमलताकपोतांघ्रिर्नटीनली १२९ ध
मन्यंजनकेशीचहनुर्हट्टविलासिनी। शुक्ति
शङ्खः खुरः कोलदलन्नखमथाढकी १३०

कूट के नाम) व्याधि १ कुष्ठ २ पारिभाव्य ३ वाप्य ४ व्याप्य ५ आप्य ६ पाकल ७ उत्पल ८ (शङ्ख कोडिल्ला हुल्ला के नाम) शङ्खिनी १ चोरपुष्पी २ केशिनी ३ (भूम्या मल की अर्थात् आँवरी के नाम) वितुन्नक १ ॥ १२६ ॥ झटामला २ झटा ३ तानी ४ शिवा ५ तामलकी ६ (गुलाब के नाम) प्रपौराडरीक १ पौराडर्य्य २ (तुनि के नाम) तुन्न १ कुबेरक २ ॥ १२७ ॥ कुणि ३ नुणि ४ कच्छ ५ कान्तलक ६ नन्दिवृक्ष ७ नन्दीवृक्ष ८ (धनहरी के नाम) राक्षसी १ चराडा २ धनहरी ३ क्षेम ४ दुष्पत्र ५ गराहासक ६ ॥ १२८ ॥ (नखनाख्य गन्धद्रव्य के नाम) व्याड़ायुध १ व्यालायुध २ व्याघ्रनख ३ करज ४ चक्रकारक ५ (पवारी के नाम) सुषिरा १ विद्रुमलता २ कपोतांघ्रि ३ नटी ४ नली ५ ॥ १२९ ॥ धमनी ६ अंजनकेशी ७ (ककूदनि के नाम) हनु १ हट्टविलासिनी २ शुक्ति ३ शंख ४ खुर ५ कोलदल ६ नख ७ नखी ८ (अरहरी के नाम) आढकी १ ॥ १३० ॥

कासी मृत्स्ना तु वरिका मृत्तालक सुराष्ट्रजे। कुट
न्नटं दासपुरं वानेयं परिपेलवम् १३१ प्लवगो
पुरगोनर्द्दकैवर्त्तीमुस्तकानि च। ग्रन्थिपर्णं शुक
म्बर्हं पुष्पं स्थौणेयकुक्कुरे १३२ मरुन्माला तु
पिशुना स्पृक्का देवी लता लघुः। समुद्रान्ता वधूः
कोटिवर्षा लङ्कोपिकेत्यपि १३३ तपस्विनी ज-
टामांसी जटिला लोमशा मिसी। त्वक्पत्रमुत्क-
टम्भृङ्गन्त्वचम्चोचम्वराङ्गकम् १३४ कर्पूर
कोद्राविडकः काल्पको वेधमुख्यकः। ओष-
ध्यो जातिमात्रे स्युरजातौ सर्वमौषधम् १३५

कासी २ मृत्स्ना ३ तुवरिका ४ तवरिका ५ मृत्तालक ६ सुराष्ट्रज ७ (मोथा के नाम) कुटन्नट १ दासपुर २ वानेय ३ परिपेलव ४॥१३१॥ प्लव ५ गोपुर ६ गोनर्द्द ७ कैवर्त्ती ८ मुस्तक ९ (कुकुरौंधा के नाम) ग्रन्थिपर्ण १ शुक २ वर्हपुष्प ३ शुकवर्ह ४ वर्हिपुष्प ५ वर्हिष्पुष्प ६ वर्ह ७ पुष्प ८ स्थौणेय ९ कुक्कुर १०॥ १३२॥ (स्पक्क के नाम) मरुन्माला १ पिशुना २ स्पृक्का ३ देवी ४ लता ५ लघु ६ समुद्रान्ता ७ वधू ८ कोटिवर्षा ९ लङ्कोपिका १०॥ १३३॥ (जटामासी के नाम) तपस्विनी १ जटामांसी २ जटिला ३ लोमशा ४ मिसी ५ मिसि ६ (तज के नाम) त्वक्पत्र १ उत्कट २ भृंग ३ त्वच ४ चोच ५ वरांगक ६॥ १३४॥ (कपूर के नाम) कर्पूरक १ द्राविडक २ काल्पक ३ वेधमुख्यक ४ (तृणवृक्षों का नाम) ओषधि १ (तूलाज मात्र का नाम) औषध १॥ १३५॥

शाकाख्यं पत्रपुष्पादि तण्डुलीयोऽल्पमारिषः।
विशल्याग्निशिखानन्ता फलिनी शक्रपुष्पिका।
२३६ स्याद्रक्षगन्धाछगलान्त्र्यावेगी वृद्धदारकः
भुङ्गो ब्राह्मी तु मत्स्याक्षी वयस्था सोमवल्लरी २३७
पटुपर्णी हैमवती स्वर्णक्षीरी हिमावती। हयपु-
च्छी तु काम्बोजी माषपर्णी महासहा २३८ तु-
ण्डिकेरी रक्तफला बिम्बिकापीलुपर्ण्यपि। बर्ब-
रा कबरी तुङ्गी खरपुष्पाजगन्धिका २३९ एलाप-
र्णी तु सुवहा रास्ना युक्तरसा च सा। चाङ्गेरी चुक्रि-
का दन्तशठाम्बष्ठाम्ललोणिका २४०

(तरकारी मात्र का नाम) शाक १ (चौराई के नाम) तण्डुलीय १ अल्पमारिष २ (इन्द्र पुष्पी के नाम) विशल्या १ अग्निशिखा २ अनन्ता ३ फलिनी ४ शक्रपुष्पिका ५॥ २३६॥ (विधारे के नाम) वृक्षगन्धा १ ऋष्यगन्धा २ छगलांत्री ३ आवेगी ४ वृद्धदारक ५ जुङ्ग ६ (ब्रह्मी बूटी के नाम) ब्राह्मी १ मत्स्याक्षी २ वयस्था ३ सोमवल्लरी ४॥ २३७॥ (मकोई के नाम) पटुपर्णी १ हैमवती २ स्वर्णक्षीरी ३ हिमावती ४ (मूंग के नाम) हयपुच्छी १ काम्बोजी २ माषपर्णी ३ महासहा ४॥ २३८॥ (कुँदुरू के नाम) तुण्डिकेरी १ रक्तफला २ बिम्बिका ३ पीलुपर्णी ४ (बबई के नाम) बर्बरा १ कबरी २ तुंगी ३ खरपुष्पा ४ अजगन्धिका ५॥ २३९॥ (कोलिन्दरा के नाम) एलापर्णी १ सुवहा २ रास्ना ३ युक्तरसा ४ (अम्लोना वा चूक के नाम) चांगेरी १ चुक्रिका २ दन्तशठा ३ अम्बष्ठा ४ अम्ललोणिका ५॥ २४०॥

सहस्रवेधी चुक्रोऽम्लवेतस शतवेध्यपि। नम-
स्कारी गराडकारी समङ्गा खदिरेत्यपि १४१ जीवन्ती
जीवनी जीवा जीवनीया मधुस्रवा। कूर्च्चशीर्षो मधु
रकश्शृङ्ग ह्रस्वाङ्ग जीवकाः १४२ किराततिक्तो
भूनिम्बोऽनार्य्यतिक्तोऽथसप्तला। विमला सात
ला भूरिफेना चर्म्मकषेत्यपि १४३ वायसोली
स्वादुरसा वयस्थाथ मकूलकः। निकुम्भो दन्ति
का प्रत्यक्श्रेण्युदुम्बरपर्ण्यपि १४४ अजमोदा
तूग्रगन्धा ब्रह्मदर्भा यवानिका। मूलपुष्कर
काश्मीरपद्मपत्राणि पौष्करे १४५

(अँबिलबेत के नाम) सहस्रवेधी १ चुक्र २ अम्लवेतस ३ शतवेधी ४ (कि-
सी २ के मत से चांगेरी आदि ५ भी अँबिलबेत के लजालू के नाम) नमस्का-
री १ गराडकारी २ समंगा ३ खदिरी ४ ॥ १४१ ॥ (जिसे गुर्ज्जर देश में डोडी
कहते हैं उस औषधि के नाम) जीवन्ती १ जीवनी २ जीवा ३ जीवनीया ४ म-
धुस्रवा ५ (जीवक के नाम) कूर्च्चशीर्ष १ मधुरक २ शृंग ३ ह्रस्वांग ४ जी-
वक ५ ॥ १४२ ॥ (चिरायता के नाम) किराततिक्त १ भूनिम्ब २ अना-
र्य्यतिक्त ३ (सीकुराडु भेद के नाम) सप्तला १ विमला २ शातला ३ सात-
ला ४ भूरिफेना ५ चर्म्मकषा ६ ॥ १४३ ॥ (काकोलि के नाम) वाय-
सोली १ स्वादुरसा २ वयस्था ३ (दँतिया के नाम जिस के बीज को
जयपाल कहते हैं) मकूलक १ निकुम्भ २ दन्तिका ३ प्रत्यक्श्रेणी
४ उदुम्बरपर्णी ५ ॥ १४४ ॥ (यवायानि के नाम) अजमोदा १ उग्रगन्धा २ ब्र-
ह्मदर्भा ३ यवानिका ४ (पुष्कर मूल के नाम) पुष्कर १ काश्मीर २ पद्मपत्र ३ ॥ १४५

अव्यथातिचरापद्माचारटीपद्मचारिणी। का-
म्पिल्यःकर्कशश्चन्द्रोरक्ताङ्गोरोचनीत्यपि॥१४६
प्रपुन्नाडस्त्वेडगजोदद्रुघ्नश्चक्रमर्द्दकः।पद्मा
टउरणाख्यश्चपलाण्डुस्तुमुकन्दकः१४७ल
तार्कदुद्रुमौतत्रहरितेऽथमहौषधम्।लशुनं
गृञ्जनारिष्टमहाकन्दरसोनकाः१४८ पुनर्न्न
वातुशोथघ्नीवितुन्नंसुनिषण्णकम्।स्याद्वा
तकःशीतलोपराजितशणपर्ण्यपि१४९
पारावताङ्घ्रिःकटभीपण्याज्योतिष्मतीलता।
वार्षिकन्त्रायमाणास्यात्त्रायन्तीवलभद्रिका१५०

(कपिला के नाम) अव्यथा१ अतिचरा२ पद्मा३ चारटी४ पद्मचा-
रिणी५ (कबीला के नाम) काम्पिल्य१ कर्कश२ चन्द्र३ रक्तांग
४ रोचनी५ रेचनी६॥१४६॥ (चकवड वा पवार के नाम) प्रपुन्नाड
१ एडगज२ दद्रुघ्न३ चक्रमर्द्दक४ पद्माट५ उरणाख्य६ (प्याज
के नाम) पलाण्डु१ मुकन्दक२॥१४७॥ लतार्क३ दुद्रुम४ (ल-
हसुन के नाम) महौषध१ लशुन२ गृञ्जन३ अरिष्ट४ महाक-
न्द५ रसोनक६॥१४८॥ (गदहपुन्ना के नाम) पुनर्न्नवा१ शो-
थघ्नी२ (विसखपरिया के नाम) वितुन्न१ सुनिषण्णक२ (पटुवा
वा पटशाखा के नाम) वातक१ शीतल२ अपराजिता३ शणप-
र्णी४॥१४९॥ (माल्ककांगनी के नाम) पारावताङ्घ्रि१ कटभी२
पण्या३ ज्योतिष्मती४ लता५ (चिरायता के फल के नाम) वार्षि
क१ त्रायमाणा२ त्रायन्ती३ वलभद्रिका४॥१५०॥

विष्वक्सेनप्रिया गृष्टिर्वाराही बदरेत्यपि। मा-
र्कवो भृङ्गराजस्स्यात्काकमाची तु वायसी १५१
शतपुष्पा सितच्छत्राऽतिच्छत्रा मधुरा मिसिः। अ-
वाक्पुष्पी कारवी च सरणा तु प्रसारिणी १५२
तस्यां कटम्भरा राजबला भद्रबलेत्यपि। जनी
जतूका रजनी जतुकृच्चक्रवर्त्तिनी १५३ संस्प-
र्शाथ शटी गन्धमूली षड्ग्रन्थिकेत्यपि। कर्चूरो
ऽपि पलाशोऽथ कारवेल्लः कटिल्लकः १५४ सु-
षवी चाथ कुलकम्पटोलस्तिक्तकः पटुः। कूष्मा-
ण्डकस्तु कर्कारुरुर्व्वारुः कर्कटी स्त्रियौ १५५

(वाराही कन्द के नाम) विष्वक्सेनप्रिया १ गृष्टि २ वाराही ३ बदरा ४ (भँगिरा के नाम) मार्कव १ भृंगराज २ (कौंवैया वा कौवाहाड़ी गोड़ी के नाम) काकमाची १ वायसी २॥ १५१॥ (सौंफ के नाम) शतपुष्पा १ सितच्छत्रा २ अतिच्छत्रा ३ मधुरा ४ मिसि ५ अवाक्पुष्पी ६ कारवी ७ (कुब्ज प्रसारिणी वा चाँद वेल वा पसारनि के नाम) सरणा १ प्रसारिणी २॥ १५२॥ कटम्भरा ३ राजबला ४ भद्रबला ५ (चक्वत के नाम) जनी १ जतूका २ रजनी ३ जतुकृत् ४ चक्रवर्त्तिनी ५॥ १५३॥ संस्पर्शा ६ (कचूर के नाम) शटी १ गन्धमूली २ षड्ग्रन्थिका ३ कर्चूर ४ पलाश ५ (करैला के नाम) कारवेल्ल १ कटिल्लक २॥ १५४॥ सुषवी ३ (परवर के नाम) कुलक १ पटोल २ तिक्तक ३ पटु ४ (कुम्हड़ा के नाम) कूष्माण्डक १ कर्कारु २ (ककरी के नाम) उर्व्वारु १ कर्कटी २॥ १५५॥

इक्ष्वाकुः कटुतुम्बी स्यात्तुम्ब्यलाबूरुभे समे।
चित्रागवाक्षीगोदुग्धा विशाला त्विन्द्रवारुणी
१५६ अर्शोघ्नस्सूरणः कन्दो गण्डीरस्तु समष्ठिला
कलम्ब्युपोदिका स्त्री तु मूलकं हिलमोचिका १५७
वास्तुकं शाकभेदास्स्युर्दूर्वा तु शतपर्विका। सह-
स्रवीर्य्या भार्गव्यौ रुहानन्ताथसासिता १५८ गो-
लोमी शतवीर्य्या च गण्डाली शकुलाक्षकः। कुरु-
विन्दो मेघनामा मुस्ता मुस्तकमस्त्रियाम् १५९
स्याद्भद्रमुस्तको गुन्द्रा चूडाला चक्रलोच्चटा। वं-
शे त्वक्सारकर्मारत्वचिसारतृणध्वजाः १६०

(करुई लौकी के नाम) इक्ष्वाकु १ कटुतुम्बी २ (लौकी के नाम) तुम्बी १ अलाबू २ (जंगली ककरी के नाम) चित्रा १ गवाक्षी २ गो-दुग्धा ३ गोडुम्बा ४ (इंद्रायण के नाम) विशाला १ इन्द्रवारु-णी २॥ १५६॥ (सूरण वा कांद के नाम) अर्शोघ्न १ सूरण २ सू-रण ३ कन्द ४ (गंडरी के नाम) गण्डीर १ समष्ठिला २ (करेमुवा का नाम) कलम्बी १ (पोई का नाम) उपोदिका १ (मूरी का नाम) मूलक १ (हिलसा का नाम) हिलमोचिका २॥ १५७॥ (बथुई का नाम) वास्तुका १ (दूब के नाम) दूर्वा १ शतपर्विका २ सहस्रवीर्य्या ३ भार्गवी ४ रुहा ५ अनंता ६ (उजली दूब के नाम)॥ १५८॥ गोलोमी १ शत-वीर्य्या २ गण्डाली ३ शकुलाक्षक ४ (मोथा के नाम) कुरुविन्द १ मेघ नामा २ मुस्ता ३ मुस्तक ४॥ १५९॥ (नागर मोथा के नाम) भद्रमुस्तक १ भद्रा २ गुन्द्रा ३ ये भी मोथा विशेष के नाम हैं चूडाला १ चक्रला २ उच्चटा ३ (बांस के नाम) वंश १ त्वक्सार २ कर्मार ३ त्वचिसार ४ तृणध्वज ५॥ १६०॥

शतपर्व्वा यवफलो वेणुमस्करतेजनाः। वेण-
वः कीचकास्ते स्युर्ये स्वनन्त्यनिलोद्धताः २६१
ग्रन्थिर्ना पर्व्व परुषी गुन्द्रस्तेजनकः शरः। नड-
स्तु धमनः पोटगलोऽथो काशमस्त्रियाम् २६२ इ-
क्षुगन्धा पोटगलः पुंसि भूम्नि तु बल्वजाः। रसाल
इक्षुस्तद्भेदाः पुण्ड्रकान्तारकादयः २६३ स्याद्वी-
रणं वीरतरं मूलेऽस्योशीरमस्त्रियाम्। अभयन्न-
लदं सेव्यममृणालं जलाशयम् २६४ लाम-
ज्जकं लघुलयमवदाहेष्टकापथे। नडादयस्तृ-
णं गर्मुच्छ्यामाकप्रमुखा अपि २६५

शतपर्व्वा ६ यवफल ७ वेणु ८ मस्कर ९ तेजन १० (जो छेद में वायु
जाने से शब्द करने लगे उन बाँसों का नाम) कीचक १॥ २६१॥
(गांठि वा पोढ़ के नाम) ग्रन्थि १ पर्व २ परुष ३ (रामशर वा सरह-
री के नाम) गुन्द्र १ तेजनक २ शर ३ (नरकुल के नाम) नड १ धमन
२ पोटगल ३ (काश के नाम) काश १॥ २६२॥ इक्षुगन्धा २ पोट-
गल ३ (बगई का नाम) बल्वज १ (ऊंख के नाम) रसाल १ इक्षु २
(पौंडा ऊंख का नाम) पुण्ड्र १ (केतारा ऊंख के नाम) कान्तार १॥
२६३॥ (गांडर के नाम) वीरण १ वीरतर २ (गांडरे की जड़ के ना-
म) उशीर १ अभय २ नलद ३ सेव्य ४ अमृणाल ५ जलाशय
६॥ २६४॥ लामज्जक ७ लघुलय ८ अवदाह ९ इष्टकापथ १०
(नडादि गर्मुच्छ श्यामाकादि का नाम) तृण १॥ २६५॥

अस्त्री कुशं कुथो दर्भः पवित्रमथ कत्तृणम् ।
पौरसौगन्धिकध्यामदेवजग्धकरौहिषम् १६६
छत्रातिछत्रपालघ्नौ मालातृणकभूस्तृणे । शा-
ष्पं बालतृणं घासो यवसं तृणमर्ज्जुनम् १६७
तृणानां संहतिस्तृण्या नड्या तु नडसंहतिः । तृ-
णराजाह्वयस्तालो नालिकेरस्तु लाङ्गली १६८
घोराटा तु पूगः क्रमुको गुवाकः खपुरोस्य तु ।
फलमुद्वेगमेते च हिंतालसहितास्त्रयः १६९
खर्ज्जूरः केतकी ताली खर्ज्जूरी च तृणद्रुमाः ॥
इति वनौषधिवर्गः ॥

(कुश के नाम) कुश १ कुथ २ दर्भ ३ पवित्र ४ (रौहिष के नाम) क-
त्तृण १ पौर २ सौगन्धिक ३ ध्याम ४ देवजग्धक ५ रौहिष ६ ॥ १६६ ॥
(पानी के खर के नाम) छत्रा १ अतिछत्र २ पालघ्न ३ मालातृणक
४ भूस्तृण ५ (नये खर के नाम) शाष्प १ बालतृण २ (घास के ना-
म) घास १ यवस २ (खरमात्र के नाम) तृण १ अर्ज्जुन २ ॥ १६७ ॥
(खरही का नाम) तृण्या १ (नरई आदि के बटोर का नाम)
नड्या १ (तार के नाम) तृणराज १ ताल २ (नारियल के नाम) नालि-
केर १ लांगली २ ॥ १६८ ॥ (सुपारी के नाम) घोराटा १ पूग २
क्रमुक ३ गुवाक ४ खपुर ५ (सुपारी के फल का नाम) उद्वे-
ग १ (खजूरि के नाम) खर्ज्जूर १ केतकी २ ताली ३ खर्ज्जूरी ४
ये ८ का तृणद्रुम नाम है ॥ १६९ ॥ इति वनौषधिवर्गः

सिंहो मृगेन्द्रः पञ्चास्यो हर्य्यक्षः केशरी हरिः। कण्ठीरवो मृगरिपुर्मृगदृष्टिर्मृगाशनः॥ पुण्डरीकः पञ्चनखश्चित्रकायमृगद्विषः। शार्दूलद्वीपिनौ व्याघ्रे तरक्षुस्तु मृगादनः १ वराहः शूकरो घृष्टिः कोलः पोत्री किरिः किटिः। दंष्ट्री घोणी स्तब्धरोमा क्रोडो भूदार इत्यपि २ कपिप्लवङ्गप्लवगशाखामृगवलीमुखाः। मर्कटो वानरः कीशो वनौकाश्च भल्लुके ३ ऋक्षाच्छभल्लभल्लूका गण्डके खड्गखड्गिनौ। लुलायमहिषो वाहद्विषत्कासरसैरिभाः ४

(सिंह के नाम) सिंह १ मृगेन्द्र २ पञ्चास्य ३ हर्य्यक्ष ४ केसरी ५ केशरी ६ हरि ७ कण्ठीरव ८ मृगरिपु ९ मृगदृष्टि १० मृगाशन ११ (बाघ के नाम) शार्दूल १ द्वीपी २ व्याघ्र ३ (तेंदुवा के नाम) तरक्षु १ मृगादन २॥ १॥ (सुवर के नाम) वराह १ शूकर २ घृष्टि ३ गृष्टि ४ कोल ५ पोत्री ६ किरि ७ किटि ८ दंष्ट्री ९ घोणी १० स्तब्धरोमा ११ क्रोड १२ भूदारक १३॥ २॥ (वानर के नाम) कपि १ प्लवंग २ प्लवग ३ शाखामृग ४ वलीमुख ५ मर्कट ६ वानर ७ कीश ८ वनौकाः ९ (रीछ के नाम) भल्लुक १ ॥ ३॥ ऋक्ष २ अच्छभल्ल ३ भल्लूक ४ (गैंडा के नाम) गण्डक १ खड्ग २ खड्गी ३ (भैंसा के नाम) लुलाय १ महिष २ वाहद्विषत ३ कासर ४ सैरिभ ५॥ ४॥

स्त्रियां शिवा भूरिमायो गोमायु मृगधूर्त्तकाः । शृ
गालवञ्चककोष्टु फेरुफेरवजम्बुकाः ५ ओतु
र्विड़ालो मार्ज्जारो वृषदंशक आखुभुक । त्रयो गो
धेरगोधार गौधेया गोधिकात्मजे ६ श्वावित्तु
शल्यस्तल्लोम्नि शल्ली शललं शलम् ।
वातप्रमीर्व्वातमृगः कोकस्त्वीहामृगो वृकः
७ मृगेकुरङ्गवातायु हरिणा जिनयोनयः ।
ऐणेयमेणयाश्चर्मा द्यमेणास्यैणमुभेत्रिषु ८
कदली कन्दली चीनश्चमूरु प्रियकावपि । समू
रुश्चेति हरिणा अमी अजिनयोनयः ९

(सियार के नाम) शिवा १ भूरिमाय २ गोमायु ३ मृगधूर्त्तक ४ शृ
गाल ५ वञ्चक ६ बंचक ७ क्रोष्टा ८ फेरु ९ फेरव १० जम्बुक ११
॥ ५॥ (बिलार के नाम) ओतु १ विड़ाल २ मार्ज्जार ३ वृषदंश-
क ४ आखुभुक ५ (चन्दन गोह के नाम) गोधेर १ गोधार २ गो-
धेय ३॥ ६॥ (साही के नाम) श्वावित १ शल्य २ (साही के रो-
वों के नाम) शल्ली १ शलल २ शल ३ (वातप्रमी के नाम)
वातप्रमी १ वातमृग २ (भ्यड़हा वा बिग के नाम) कोक १ ई-
हामृग २ वृक ३॥ ७॥ (हरिण के नाम) मृग १ कुरंग २ वा-
तायु ३ हरिण ४ अजिनयोनि ५ (हरणी के चर्म्म मांसादि का
नाम) ऐणेय १ (और हरणा के चर्म्मादि का नाम) ऐण १
॥ ८॥ (मृग भेदों के नाम) कदली १ कन्दली २ चीन ३ चमूरु
४ प्रियक ५ समूरु ६ हरिण ७॥ ९॥

कृष्णसाररुरुन्यंकुरंकुशम्बररौहिषाः।गोक
र्णपृषतैणर्श्यरोहिताश्चमरोमृगाः २० गन्ध
र्व्वशरभरामसृमरागवयशशाः। इत्या
दयोमृगेन्द्राद्या गवाद्याःपशुजातयः २१अ
धोगन्तातुखनकोवृकःपुन्ध्वजउन्दुरः। उन्दु
रुर्मूषिकोप्याखुर्गिरिकाबालमूषिका।
सरटःकृकलासस्स्यान्मुसलीगृहगोधिका २२

(काले हरिण का नाम) कृष्णसार १ (भुवार का नाम) रुरु १ (नागुण का नाम) न्यंकु १ (चीता का नाम) रंकु १ (सावर का नाम) शम्बर १ (रोही का नाम) रौहिष १ (गोव का नाम) गोकर्ण १ (पृषित का नाम) पृषत १ (सुन्दर नेत्र वाले हरिण का नाम) एण १ (जल्द च लने वाले का नाम) ऋष्य १ (लाले हरिण का नाम) रोहित १ (सुरह गाय का नाम) चमरी १ ॥२०॥ (मृग भेदों के नाम) गन्धर्व १ शरभ २ राम ३ सृमर ४ गवय ५ शश ६ (इनमें मद कुचे मृग का नाम) गन्धर्व १ शरभ २ लड़ी सरा ३ (अति रमणीय का नाम) राम १ (दोड़िया का नाम) सृमर १ (लीलगाह का नाम) गवय १ (चौग ड़ा का नाम) शश १ (सिंह हरिण गो महिषादि सब चौपायों का नाम) पशुजाति १ ॥२१॥ (मूस के नाम) अधोगन्ता १ ख नक २ वृक ३ पुन्ध्वज ४ उन्दुर ५ उन्दुरु ६ मूषिक ७ आखु ८ (छोटी मुसरी के नाम) गिरिका १ बालमूषिका २ (गिरगिरान के नाम) सरट १ कृकलास २ (छपकी वा विस्तुइया के नाम) मुसली १ गृहगोधिका २॥ २२॥

लूता स्त्री तन्तुवायोर्णा नाम मर्कटकाः समाः।
नीलङ्गुस्तु क्रमिः कर्णजलौका शतपद्युभे
२३ वृश्चिकः शूककीटः स्यादलिद्रोणौ तु वृ-
श्चिके। पारावतः कलरवः कपोतोऽथ शशा-
दनः २४ पत्री श्येन उलूके तु वायसारातिपेच-
कौ। दिवान्धः कौशिको घूको दिवाभीतो नि-
शाटनः। व्याघ्राटः स्याद्भरद्वाजः खञ्जरीटस्तु
खञ्जनः २५ लोहपृष्ठस्तु कङ्कः स्यादथ चाषः
किकीदिविः। कलिङ्गभृङ्गधूम्याटा अथ स्या-
च्छतपत्रकः २६

(मकरी के नाम) लूता १ तन्तुवाय २ ऊर्णानाभ ३ मर्कटक ४ (सो-
न किरवा के नाम) नीलंगु १ क्रमि २ (खनखजूर वा गोजर के ना-
म) कर्णजलौका १ शतपदी २ ॥ २३ ॥ (डांडा के नाम) वृश्चि-
क १ शूककीट २ (बीछी के नाम) आलि १ द्रोण २ वृश्चिक ३ (क-
बूतर के नाम) पारावत १ कलरव २ कपोत ३ (बाज के नाम) श-
शादन १ ॥ २४ ॥ पत्री २ श्येन ३ (खूसट घुघुवा वा उल्लू के ना-
म) उलूक १ वायसाराति २ पेचक ३ दिवान्ध ४ कौशिक ५ घूक ६
दिवाभीत ७ निशाटन ८ (भर्दूल के नाम) व्याघ्राट १ भरद्वाज २
(खड़ैरेचा के नाम) खञ्जरीट १ खञ्जन २ ॥ २५ ॥ (उजली चील्ह
के नाम) लोहपृष्ठ १ कङ्क २ (नील कराठ वा लीला गराला के ना-
म) चाष १ किकीदिवि २ (भुजा कैल वा भुजेरा के नाम) कलिं-
ग १ भृंग २ धूम्याट ३ (कठफोरवा के नाम) शतपत्रक १ ॥ २६ ॥

दार्व्वाघाटोऽथसारङ्गस्तोककश्चातकस्समाः।
कृकवाकुस्ताम्रचूडः कुक्कुटश्चरणायुधः १७
चटकः कलविङ्कस्स्यात्तस्यस्त्रीचटकातयोः।
पुमपत्येचाटकैरस्स्यपत्येचटकैवसा १८॥
कर्क्करेटुः करेटुस्स्यात्कृकणक्रकरौसमौ। व
नप्रियःपरभृतःकोकिलःपिकइत्यपि १९ का
केतुकरटारिष्टबलिपुष्टसकृत्प्रजाः। ध्वांक्षा
त्मघोषपरभृद्बलिभुग्वायसाअपि २० समव
चचिरंजीवीचैकदृष्टिश्चमौकुलिः। द्रोणका
कस्तुकाकोलोदात्यूहःकालकण्ठकः।

दार्व्वाघाट१ (पपीहा के नाम) सारंग१ तोकक२ चातक ३ (मुरगा के नाम) कृकवाकु१ ताम्रचूड़२ कुक्कुट ३ चरणायुध४॥१७॥ (गौरवा के नाम) चटक१ कलविङ्क२ (गौरैया के नाम) चटका१ (इन के बच्चा का नाम) चाटकैर१ (इन की बच्ची) चटका१॥१८॥ (कोइला के नाम) कर्क्करेटु १ करेटु २ (मुर्गा चिरई के नाम) कृकण१ क्रकर २ (कोकिल वा कोयल के नाम) बनप्रिय १ परभृत २ कोकिल ३ पिक ४॥१९॥ (कौवा के नाम) काक १ करट २ अरिष्ट ३ बलिपुष्ट ४ सकृत्प्रजा ५ ध्वांक्ष ६ आत्मघोष ७ परभृत ८ बलिभुक् ९ वायस १०॥२०॥ चिरञ्जीवी ११ एकदृष्टि १२ मौकुलि १३ (डोंव काक अर्थात् धूमिले कौवा के नाम) द्रोणकाक१ काकोल २ (काले कौवा के नाम) दात्यूह १ कालकण्ठक२॥

आतापिचिल्लौ दाक्षाय्यगृध्रौ कीरशुकौ समौ २१ क्रुङ्क्रौञ्चाऽथ बकः कह्वः पुष्कराह्वस्तु सारसः। कोकश्चक्रश्चक्रवाको रथाङ्गाह्वयनामकः २२ कादम्बः कलहंसस्स्यादुत्क्रोशकुररौ समौ। हंसास्तु श्वेतगरुतश्चक्राङ्गा मानसौकसः २३ राजहंसास्तु ते चञ्चुचरणैर्लोहितैः सिताः। मलिनैर्मल्लिकाक्षास्ते धार्त्तराष्ट्राः सितेतरैः २४ शरारिराटिराडिश्च बलाका बिसकण्ठिका। हंसस्य योषिद्वरटा सारसस्य तु लक्ष्मणा २५

(चील्ह के नाम) आतापी १ चिल्ह २ (गीध के नाम) दाक्षाय्य १ गृध्र २। (सुआ के नाम) कीर १ शुक २॥ २१॥ (करांकुलि के नाम) क्रुङ् १ क्रौञ्च २ (बगुला के नाम) बक १ कह्व २ (सारस के नाम) पुष्कराह्व १ सारस २ (चकई चकवा के नाम) कोक १ चक्र २ चक्रवाक ३ रथांग ४॥ २२॥ (बत्तख वा बत के नाम) कादम्ब १ कलहंस २ (कुररी के नाम) उत्क्रोश १ कुरर २ (हंस के नाम) हंस १ श्वेतगरुत् २ चक्रांग ३ मानसौकाः ४ ॥ २३॥ (जिन हंसों के चोंच पैर लाल और देह उज्ज्वल होती है उन का नाम) राजहंस १ (और जिन के चरणादि मैले हों उन का नाम) मल्लिकाक्ष १ (जिन के काले चंचु चरणादि हों उन का नाम) धार्त्तराष्ट्र १॥ २४॥ (आड़ी के नाम) शरारि १ आटि २ आडि ३ (बगुला के दूसरी जाति के नाम) बलाका १ बिसकण्ठिका २ (हंसी का नाम) वरटा १ (सारस की स्त्री का नाम) लक्ष्मणा १॥ २५॥ २५॥

जतुका जिनपत्रा स्यात्परोष्णी तैलपायिका। वर्वणा मक्षिका नीला सरघा मधुमक्षिका २६ पतङ्गिका पुत्तिका स्याद्दंशस्तु वनमक्षिका। दंशी तज्जातिरल्पा स्याद्गन्धोली वरटा द्वयोः २७ भृङ्गारी भीरुका चीरी झिल्लिका च समा इमाः। समौ पतङ्गशलभौ खद्योतो ज्योतिरिङ्गणः २८ मधुव्रतो मधुकरो मधुलिण्मधुपालिनः। द्विरेफपुष्पलिड्भृङ्गषट्पदभ्रमरालयः २९ मयूरो वर्हिणो वर्ही नीलकण्ठो भुजङ्गभुक्। शिखावलः शिखी केकी मेघनादानुलास्यपि ३०

(चमगूदरी के नाम) जतुका १ अजिनपत्रा २ (गोदुर के नाम) परोष्णी १ तैलपायिका २ (माखी के नाम) वर्वणा १ मक्षिका २ नीला ३ (शहद की मक्खी के नाम) सरघा १ मधुमक्षिका २॥ २६॥ (पाखी के नाम) (पतंगिका १ पुत्तिका २ (डांस के नाम) दंश १ वनमक्षिका २ (मसा का नाम) दंशी १ (बर्रे के नाम) गन्धोली १ वरटा २॥ २७॥ (झींगुर के नाम) भृंगारी १ भीरुका २ चीरी ३। झिल्लिका ४ (फनिगा के नाम) पतंग १ शलभ २ (जुगुनू के नाम) खद्योत १ ज्योतिरिंगण २॥ २८॥ (भँवरा के नाम) मधुव्रत १ मधुकर २ मधुलिट् ३ मधुप ४ अली ५ द्विरेफ ६ पुष्पलिट् ७ भृंग ८ षट्पद ९ भ्रमर १० अलि ११॥ २९॥ (मुरैला वा मोर के नाम) मयूर १ वर्हिण २ वर्ही ३ नीलकण्ठ ४ भुजंगभुक ५ शिखावल ६ शिखी ७ केकी ८ मेघनादानुलासी ९॥ ३०॥

केका वाणी मयूरस्य समौ चन्द्रकमेचकौ । शिखा चूडा शिखण्डस्तु पिच्छबर्हे नपुंसके ३१ खगे विहङ्गविहगविहङ्गमविहायसः । शकुन्तिपक्षिशकुनिशकुन्तशकुनद्विजाः ३२ पतत्रिपत्रिपतगपतत्पत्ररथाण्डजाः । नगौकोवाजिविकिरविविष्किरपतत्रयः ३३ नीडोद्भवा गरुत्मन्तः पित्सन्तो नभसङ्गमाः । तेषां विशेषा हारीतो मद्गुः कारण्डवः प्लवः ३४ तित्तिरिः कुक्कुभो लावो जीवञ्जीवश्चकोरकः । कोयष्टिकष्टिट्टिभको वर्तको वर्तिकादयः ३५

(मोर की बोली का नाम) केका १ (मोर के पङ्खों के बुन्दकों के नाम) चन्द्रक १ मेचक २ (मोर की चोटी के नाम) शिखा १ चूडा २ (उसके पङ्खों के नाम) शिखण्ड १ पिच्छ २ बर्ह ३ ॥ ३१ ॥ (चिरई वा चिड़िया वा पक्षी के नाम) खग १ विहंग २ विहग ३ विहंगम ४ विहायस ५ शकुन्ति ६ पक्षी ७ शकुनि ८ शकुन्त ९ शकुन १० द्विज ११ ॥ ३२ ॥ पतत्री १२ पत्री १३ पतग १४ पतत् १५ पत्ररथ १६ अण्डज १७ नगौका १८ वाजी १९ विकिर २० वि २१ विष्किर २२ पतत्रि २३ ॥ ३३ ॥ नीडोद्भव २४ गरुत्मान् २५ पित्सन् २६ नभसंगम २७ (हरिल का नाम) हारीत १ (जलमुर्गी का नाम) मद्गु १ (बतख के नाम) कारण्डव १ प्लव २ ॥ ३४ ॥ (तीतिर का नाम) तित्तिर १ (बनमुर्गी का नाम) कुक्कुभ १ (लवा के नाम) लाव १ जीवन २ (चकोर के नाम) जीव १ चकोर २ (टिटहरी के नाम) कोयष्टिक १ टिट्टिभक २ (बटई के नाम) वर्तक १ वर्तिक २ ॥ ३५ ॥

गरुत्पक्षच्छदाः पत्रं पतत्रञ्च तनूरुहम्। स्त्री
पक्षतिः पक्षमूलञ्च चञ्चुस्त्रोटिरुभे स्त्रियौ ३६
प्रडीनोड्डीनसण्डीनान्येताः खगगतिक्रियाः। पेशी
कोशो द्विहीनेऽण्डं कुलायो नीडमस्त्रियाम् ३७
पोतः पाकोऽर्भको डिम्भः पृथुकः शावकः शिशु-
ः। स्त्रीपुंसौ मिथुनन्द्वन्द्वं युग्मन्तु युगलं युगम्
३८ समूहे निवहव्यूहसन्दोहविसरव्रजाः। स्तो-
मौघनिकरव्रातवारसङ्घातसञ्चयाः ३९ समु-
दायस्समुदयस्समवायश्चयो गणाः। स्त्रिया-
न्तु संहतिर्वृन्दं निकुरम्बं कदम्बकम् ४०

(पंख वा परवा के नाम) गरुत् १ पक्ष २ छद ३ पत्र ४ पतत्र ५ तनूरुह ६ (पं-
खना की जड़ का नाम) पक्षति १ (चोंच के नाम) चञ्चु १ त्रोटि २॥ ३६॥
(पक्षियों के तिरछे उड़ने का नाम) प्रडीन १ (ऊपर के उड़ने का नाम)
उड्डीन १ (अच्छे प्रकार उड़ने का नाम) सण्डीन १ (अण्डा के नाम)
पेशी १ कोश २ अण्ड ३ (ओझ के नाम) कुलाय १ नीड २॥ ३७॥ (पक्षि
यों के वा सब के बच्चाओं के नाम) पोत १ पाक २ अर्भक ३ डिम्भ ४ पृथु-
क ५ शावक ६ शिशु ७ (स्त्री पुरुष के जोड़े के नाम) स्त्रीपुंसौ १ मिथुन
२ द्वन्द्व ३ (दो के नाम) युग्म १ युगल २ युग ३॥ ३८॥ (समूह वा झुं-
ड वा झुंड के नाम) समुदाय १ समुदय २ समवाय ३ चय ४ गण ५
संहति ६ वृन्द ७ निकुरम्ब ८ कदम्बक ९ समूह १० निवह ११ व्यू-
ह १२ सन्दोह १३ विसर १४ व्रज १५ स्तोम १६ ओघ १७ निकर १८
व्रात १९ वार २० संघात २१ सञ्चय २२॥ ३९॥ ४०॥

वृन्दभेदास्समैर्वर्गस्संघ सार्थौतु जन्तुभिः।
सजातीयैः कुलंयूथन्तिरश्चाम्पुन्नपुंसकम् ४१
पशूनांसमजोऽन्येषांसमाजोऽथसधर्म्मिणाम्
स्यान्निकायःपुंजराशी तूत्करः कूटमस्त्रियाम् ।
४२ कापोतशौकमायूरतैत्तिरादीनितद्गणे ।
गृहासक्ताःपक्षिमृगाश्छेकास्ते गृह्यकाश्च
ते ४३ ॥ इति सिंहादिवर्गः॥

मनुष्या मानुषा मर्त्या मनुजा मानवा नराः।
स्युःपुमांसःपञ्चजनाःपुरुषाःपूरुषानरः १

(प्राणी वा अप्राणी का जहां एक ही जाति का झुण्ड हो उसका नाम) वर्ग १ (जो केवल जन्तुओं का समूह है उसके नाम) संघ १ सार्थ २ (सजातीय जन्तुओं के झुण्ड का नाम) कुल १ (पक्षियों का समूह) यूथ १ ॥ ४१ ॥ (पशुओं के झुण्ड का नाम) समज १ (पशुओं को छोड़ अन्य झुण्ड का नाम) समाज १ (एक धर्म्म वालों के समूह का नाम) निकाय १ (अन्नादि के ढेर के नाम) पुञ्ज १ राशि २ उत्कर ३ कूट ४ ॥ ४२ ॥ (कबूतर के झुंड का नाम) कापोत १ (शुआओं के झुण्ड का नाम) शौक १ (मोरों के झुण्ड का नाम) मायूर १ (तित्तिरों के झुण्ड का नाम) तैत्तिर १ इत्यादि (पालतू पक्षी और मृगों के नाम) छेक १ गृह्यक २ ॥ ४३ ॥ इति सिंहादिवर्गः ॥

(मनुष्य के नाम) मनुष्य १ मानुष २ मर्त्य ३ मनुज ४ मानव ५ नर ६ पुमान् ७ पञ्चजन ८ पुरुष ९ पूरुष १० ना ११ ॥ १ ॥

स्त्री योषिद बला योषा नारी सीमन्तिनी वधूः। प्र-
तीपदर्शिनी वामा वनिता महिला तथा २ वि-
शेषास्त्वङ्गना भीरुः कामिनी वाम लोचना।
प्रमदा मानिनी कान्ता ललना च नितम्बिनी ३
सुन्दरी रमणी रामा कोपना सैव भामिनी। वरा-
रोहा मत्तकाशिन्युत्तमा वरवर्णिनी ४ कृता-
भिषेका महिषी भोगिन्योऽन्या नृपस्त्रियः। प-
त्नी पाणिगृहीती च द्वितीया सहधर्मिणी ५

(स्त्री के नाम) स्त्री १ योषित् २ अबला ३ योषा ४ नारी ५ सीमन्ति-
नी ६ वधू ७ प्रतीपदर्शिनी ८ वामा ९ वनिता १० महिला ११॥ २॥
(अच्छे अंग वाली स्त्री का नाम) अंगना १ (डरभुनही का नाम)
भीरु १ (काम युत स्त्री का नाम) कामिनी १ (सुन्दर नेत्र वाली
का नाम) वामलोचना १ (बहुत काम वती का नाम) प्रमदा १
(अगाय कोप वाली का नाम) मानिनी १ (मन हरने वाली का
नाम) कान्ता १ (दुलारी स्त्री का नाम) ललना १ नितम्बिनी २
॥ ३॥ (सुन्दर अंग वाली स्त्री का नाम) सुन्दरी १ (जिस में अ-
ति चित्त रमित हो) रमणी १ रमणा २ (विहार के योग्य स्त्री
का नाम) रामा १ (रिसही के नाम) कोपना १ भामिनी २ (बहुत ही उ-
त्तम स्त्री का नाम) वरारोहा १ मत्तकाशिनी २ उत्तमा ३ वरवर्णिनी ४
॥ ४॥ (जिस रानी का अभिषेक हुआ हो उस का नाम) महिषी १ (महि-
षी को छोड़ अन्य राजा की स्त्री का नाम) भोगिनी १ (व्याही हुई
स्त्री के नाम) पत्नी १ पाणिगृहीती २ द्वितीया ३ सहधर्मिणी ४॥ ५॥

भार्य्याजायाथ पुम्भूम्नि दाराःस्यात्तु कुटुम्बिनी। पुरन्ध्री सुचरित्रा तु सती साध्वी पतिव्रता ६ कृत-सापत्निका ध्यूढाधिविन्नाथ स्वयम्वरा। पति-म्वरा च वर्य्याथ कुलस्त्री कुलपालिका ७ कन्या कुमारी गौरी तु नग्निकानागतार्त्तवा। स्यान्मध्य-मादृष्टरजास्तरुणी युवतिस्समे ८ समाःस्नु-षाजनी वध्वश्चिरिण्टी तु सुवासिनी। इच्छा-वती कामुका स्याद्वृषस्यन्ती तु कामुकी ९।

(भार्य्या १ जाया २ दारा ३ (जिस के पति पुत्र दोनों विद्यमान होंउ-स के नाम) कुटुम्बिनी १ पुरन्ध्री २ (पतिव्रता स्त्री के नाम) सुच-रित्रा १ सती २ साध्वी ३ पतिव्रता ४ ॥ ६ ॥ (जिस के बहुत स्त्रियां हों उनमें जो प्रथम ब्याही गई हो उसके नाम) कृतसापत्निका १ अध्यूढा २ अधिविन्ना ३ (जो अपने आप स्वयम्वरादि में पति की इ-च्छा करे उसके नाम) स्वयम्वरा १ पतिम्वरा २ वर्य्या ३ (कुलवती के नाम) कुलस्त्री १ कुलपालिका २ ॥ ७ ॥ (पांच वर्ष की कन्या के नाम) कन्या १ कुमारी २ (दश वर्ष की कन्या के नाम) गौरी १ न-ग्निका २ अनागतार्त्तवा ३ (प्रथम रजोवती के नाम) मध्यमा १ दृष्टर-जा २ (जुवानी स्त्री के नाम) तरुणी १ युवति २ युवती ३ ॥ ८ ॥ (पतो-हू के नाम) स्नुषा १ जनी २ वधू ३ (जो कि किञ्चित् युवावस्था को प्रा-प्त ब्याही हुई निजपिता के घर में रहती हो उसके नाम) चिरिण्टी १ चिरण्टी २ सुवासिनी ३ (जो धनादि की इच्छा करती हो उसके नाम) इच्छावती १ कामुका २ (मैथुन की इच्छा किये हुई के नाम) वृषस्यन्ती १ कामुकी २ ॥ ९

कान्तार्थिनी तु या याति सङ्केतं साभिसारिका। पुं-
श्चली धर्षिणी बन्धक्यसती कुलटेत्वरी १० स्वै-
रिणी पांशुला च स्यादशिश्वी शिशुना विना। अ-
वीरा निष्पतिसुता विश्वस्ता विधवे समे ११ आ-
लिस्सखी वयस्याथ पतिवत्नी सभर्तृका। वृद्धा-
पलिक्नी प्राज्ञी तु प्रज्ञा प्राज्ञा तु धीमती १२ शूद्री
शूद्रस्य भार्य्या स्याच्छूद्रा तज्जातिरेव मा। आभी-
री तु महाशूद्री जातिपुंयोगयोस्समा १३

(जो पति की इच्छा कर कामार्त्त हो संकेत को जावे उस का नाम) अभि-
सारिका १ (व्यभिचारिणी अर्थात् छिनार के नाम) पुंश्चली १ धर्षि-
णी २ बन्धकी ३ असती ४ कुलटा ५ इत्वरी ६॥ १०॥ स्वैरिणी ७ पां-
शुला ८ (बिन पुत्र वाली का नाम) अशिश्वी १ (जिस के पति पु-
त्र न हों उस का नाम) अवीरा १ (रांड के नाम) विश्वस्ता १ विधवा
२ ।११।। (सखी व साथ के खेलने वाली के नाम) आलि १ सखी २
वयस्या ३ (अहिवाती के नाम) पतिवत्नी १ सभर्तृका २ (बूढ़ी स्त्री
के नाम) वृद्धा १ पलिक्नी २ (बुद्धि व समझदार स्त्री के नाम) प्रा-
ज्ञी १ प्रज्ञा २ (अति बुद्धिमती के नाम) प्राज्ञा १ धीमती २॥ १२॥
(चाहे अन्य जाति भी हो पर शूद्र की स्त्री हो उस का नाम) शू-
द्री १ (शूद्रिनि अन्य की स्त्री हो तो उस का नाम) शूद्रा १ (अ-
हिरिनि के नाम) आभीरी १ महाशूद्री २॥ १३॥ १३॥

अर्य्याणीस्वयमर्य्या स्यात्क्षत्रिया क्षत्रियाण्यपि। उपाध्यायाप्युपाध्यायी स्यादाचार्य्यापि च स्वतः १४ आचार्य्यानी तु पुंयोगे स्यादर्य्यी क्षत्रियी तथा। उपाध्यायान्युपाध्यायी पोटा स्त्री पुंसलक्षणा १५ वीरपत्नी वीरभार्य्या वीरमाता तु वीरसूः। जातापत्या प्रजाता च प्रसूता च प्रसूतिका १६ स्त्री नग्निका कोटवी स्याद्दूती सञ्चारिके समे। कात्यायन्यर्द्धवृद्धा या काषायवसनाधवा १७

(बनिनि के नाम) अर्य्याणी १ अर्य्या २ (क्षत्रिनि के नाम) क्षत्रिया १ क्षत्रियाणी २ (पढ़ाने वाले पण्डित की स्त्री के नाम) उपाध्याया १ उपाध्यायी २ (जो अपने आप मंत्रों के अर्त्थ कह सके उस का नाम) आचार्य्या १ ॥ १४ ॥ (चाहे मंत्रादि की व्याख्यान कर सके पर आचार्य्य की स्त्री हो उस का नाम) आचार्य्यानी १ तिसी प्रकार (अर्य्य की स्त्री) अर्य्यी २ (क्षत्रिय की) क्षत्रियी १ (पढ़ाने वाले की स्त्री के इसी प्रकार के नाम) उपाध्यायानी १ उपाध्यायी २ (जिस में स्त्री पुरुष दोनों के लक्षण हों अर्त्थात् कुच और मोछ दोनों हों उस का नाम) पोटा १ ॥ १५ ॥ (वीर की स्त्री के नाम) वीरपत्नी १ वीरभार्य्या २ (वीर की माता के नाम) वीरमाता १ वीरसू २ (प्रसूता अर्त्थात् सौरिहाई स्त्री के नाम) जातापत्या १ प्रजाता २ प्रसूता ३ प्रसूतिका ४ ॥ १६ ॥ (नंगी स्त्री के नाम) नग्निका १ कोटवी २ (दूती के नाम) दूती १ दूति २ सञ्चारिका ३ (अध बैस विधवा स्त्री का नाम) कात्यायनी १ ॥ १७ ॥

सैरन्ध्री परवेश्मस्थास्ववशा शिल्पकारिणी।
असिक्नी स्यादवृद्धा या प्रेष्यान्तःपुरचारिणी १८
वारस्त्री गणिका वेश्या रूपाजीवाथ सा जनैः।
सत्कृता वारमुख्या स्यात्कुट्टनी शम्भली समे।
१९ विप्रश्निका त्वीक्षणिका दैवज्ञाथ रजस्वला।
स्त्रीधर्म्मिण्यविरात्रेयी मलिनी पुष्पवत्यपि २०
ऋतुमत्यप्युदक्यापि स्याद्रजः पुष्पमार्त्तवम्।
श्रद्धालुर्दोहदवती निष्कला विगतार्त्तवा २१
आपन्नसत्वा स्याद्गुर्व्विण्यन्तर्व्वत्नी च गर्भिणी।

(लौंडी का नाम) सैरन्ध्री १ (जो जवानी स्त्री घर के भीतर का कार्य करती हो उस लौंडी के नाम) असिक्नी १॥ १८॥ (पतुरिया के नाम) वारस्त्री १ गणिका २ वेश्या ३ रूपाजीवा ४ (जिस वेश्या का बड़ा आदर जन करते हों उस का नाम) वारमुख्या १ (कुटनी के नाम) कुट्टनी १ शम्भली २॥ १९॥ (जो देखत ही नीक जबून जानले उस के नाम) विप्रश्निका १ ईक्षणिका २ दैवज्ञा ३ (रजस्वला के नाम) रजस्वला १ स्त्रीधर्म्मिणी २ अवि ३ आत्रेयी ४ मलिनी ५ पुष्पवती ६॥ २०॥ ऋतुमती ७ उदक्या ८ (स्त्री के पुष्प अर्त्थात जो उन के मास २ पर भग से रुधिर वहता है उस के नाम) रजः १ पुष्प २ आर्त्तव ३ (जो गर्भ रहने पर उत्तमा आदि की इच्छा करती है उस के नाम) श्रद्धालु १ दोहदवती २ (रजोहीन स्त्री के नाम) निष्कला १ विगतार्त्तवा २॥ २१॥ (गर्भिणी स्त्री के नाम) आपन्नसत्वा १ गुर्व्विणी २ अन्तर्वत्नी ३ गर्भिणी ४॥

गणिकादेस्तु गाणिक्यं गार्भिणं यौवतं गणे २२ पुनर्भूर्दिधिषूरूढा द्विस्तस्या दिधिषुः पतिः। सतु द्विजोऽग्रेदिधिषूस्सैव यस्य कुटुम्बिनी २३ कानीनः कन्यकाजातस्सुतोऽथ सुभगासुतः। सौभागिनेयस्स्यात्पारस्त्रैणेयस्तु परस्त्रियाः २४ पैतृष्वस्रेयस्स्यात्पैतृष्वस्रीयश्च पितृष्वसुः। सुतो मातृष्वसुश्चैवं वैमात्रेयो विमातृजः २५ अथ बान्धकिनेयस्स्याद्बन्धुलश्चासतीसुतः। कौलटेरः कौलटेयो भिक्षुकी तु सती यदि २६

(वेश्याओं के झुण्ड का नाम) गाणिक्य १ (गर्भिणियों का समूह) गार्भिण्य १ (युवतियों का समूह) यौवत १॥२२॥ (उढ़री के नाम) पुनर्भू १ दिधिषू २ (उढ़री के पति का नाम) दिधिषु १ (कदाचित् उढ़री का पति ब्राह्मण क्षत्री वैश्य हो और उस के वही उढ़री हो गृह कृत्य करने वाली हो तो उस पति का नाम) अग्रेदिधिषू १ (बिना ब्याही स्त्री के पुत्र के नाम) कानीन १ कन्यकाजात २ (सुभगा के पुत्र का नाम) सुभगासुत १ सौभागिनेय २ (पराई स्त्री के पुत्र का नाम) पारस्त्रैणेय १॥२४॥ (फूफी के पुत्र के नाम) पैतृष्वस्रेय १ पैतृष्वस्रीय २ (मौसी के पुत्र के नाम) मातृष्वस्रेय १ मातृष्वस्रीय २ (सौतेले भाई के नाम) वैमात्रेय १ विमातृज २॥२५॥ (कुलटा के पुत्र के नाम) बान्धकिनेय १ बन्धुल २ असतीसुत ३ कौलटेर ४ कौलटेय ५ (भिक्षियारिनि के पुत्र के नाम) कौलटिनेय १ कौलटेय २ (पुत्र के नाम)॥

तद्दा कौलटिनेयो ऽस्याः कौलटेयो ऽपि चात्मजः।
आत्मजस्तनयस्सूनुस्सुतः पुत्रस्स्त्रियान्त्वमी २७
आहुर्दुहितरं सर्व्वे ऽपत्यन्तोकं तयोस्समे। स्वजा
ते त्वौरसौरस्यौ तातस्तु जनकः पिता २८ जन-
यित्री प्रसूर्म्माता जननी भगिनी स्वसा। नना-
न्दा तु स्वसा पत्युर्नप्त्री पौत्री सुतात्मजा २९ भा-
र्य्यास्तु भ्रातृवर्गस्य यातरस्स्युः परस्परम्। प्र-
जावती भ्रातृजाया मातुलानी तु मातुली ३० पति-
पत्न्योः प्रसूः श्वश्रूः श्वशुरस्तु पिता तयोः। पितु-
र्भ्राता पितृव्यस्स्यान्मातुर्भ्राता तु मातुलः ३१

आत्मज १ तनय २ सूनु ३ सुत ४ पुत्र ५॥ २६॥ २७॥ तोक ६ अपत्य ७ (क-
न्या के नाम) आत्मजा १ तनया २ सूनु ३ सुता ४ पुत्री ५ दुहिता ६
अपत्या ७ तोक ८ (जो सवर्णा स्त्री मे अपना से उत्पन्न हो उस पुत्र
के नाम) औरस १ उरस्य २ (पिता के नाम) तात १ जनक २ पिता ३
॥ २८॥ (माता के नाम) जनयित्री १ प्रसू २ माता ३ जननी ४ (बहि-
न के नाम) भगिनी १ स्वसा २ (ननद का नाम) ननान्दा १ (नाति-
नि के नाम) नप्त्री १ पौत्री २ सुतात्मजा ३ ॥ २९॥ (देवरानी जेठानी
के नाम) याता १ (भौजाई वा भैहो के नाम) प्रजावती १ भ्रातृजा-
या २ (मामी के नाम) मातुलानी १ मातुली २॥ ३०॥ (पति औ-
र स्त्री की माता का नाम) श्वश्रू १ (पति और स्त्री के बाप का ना-
म) श्वशुर १ (पित्ती वा चाचा का नाम) पितृव्य १ (मामा का ना-
म) मातुल १॥ ३१॥

श्याला स्युर्भ्रातरः पत्न्याः स्वामिनो देवृदेवरौ। स्वस्रीयो भागिनेयस्स्याज्जामाता दुहितुः पतिः ३२ पितामहः पितृपिता तत्पिता प्रपितामहः। मातुर्मातामहाद्येवं सपिण्डास्तु सनाभयः ३३ समानोदर्य्यसोदर्य्यसगर्भ्यसहजास्समाः। सगोत्रबान्धवज्ञातिबन्धुस्वस्वजनास्समाः ३४ ज्ञातेयम्बन्धुता तेषां क्रमाद्भावसमूहयोः। धवः प्रियः पतिर्भर्ता जारस्तूपपतिस्समौ ३५

(शाले का नाम) श्याल १ (देवर के नाम) देवा १ देवर २ (भैने के नाम) स्वस्रीय १ भागिनेय २ (दमाद का नाम) जामाता १ ॥ ३२ ॥ (आजा के नाम) पितामह १ पितृपिता २ (परपाजा का नाम) प्रपितामह १ (नाना के नाम) मातामह १ मातृपिता २ (नाना के बाप का नाम) प्रमातामह १ (पुश्त के भाई बन्धुओं के नाम) सपिण्ड १ सनाभि २ ॥ ३३ ॥ (सगे भाई के नाम) समानोदर्य्य १ सोदर्य्य २ सगर्भ्य ३ सहज ४ (एक गोत्र वालों के अर्थात् सम गोत्रियों के नाम) सगोत्र १ बान्धव २ ज्ञाति ३ बन्धु ४ स्व ५ स्वजन ६ ॥ ३४ ॥ (बिरादरी के भाव का नाम) ज्ञातेय १ (परिवार के झुण्ड का नाम) बन्धुता १ (दुल्हा के नाम) धव १ प्रिय २ पति ३ भर्त्ता ४ (जिस के साथ ब्याही हो उस से अन्य से मैथुन कराती हो तो उस पति के नाम) जार १ उपपति २ ॥ ३५ ॥

अस्त्रनेजारजः कुण्डो मृते भर्त्तरि गोलकः । भ्रात्री-
यो भ्रातृजो भ्रातृ भगिन्यौ भ्रातरावुभौ ३६ माता
पितरौ पितरौ मातर पितरौ प्रसूजनयितारौ । श्व-
श्रूश्वशुरौ श्वशुरौ पुत्रौ पुत्रश्च दुहिता च ३७ दम्प-
ती जम्पती जायापती भार्य्यापती च तौ । गर्भाशा-
यो जरायुः स्यादुल्वञ्च कललोऽस्त्रियाम् ३८
सूतिमासो वैजननो गर्भो भ्रूण इमौ समौ । तृ-
तीया प्रकृतिः षण्डः क्लीवः पण्डो नपुंसके ३९

(अपने पति के जीते ही अन्य पति से जो पुत्र हो उस का नाम) कुण्ड १
(और जो पति के मरने पर अन्य पति से उत्पन्न हो उस का नाम) गो-
लक १ (भतीजे के नाम) भ्रात्रीय १ भ्रातृव्य २ भ्रातृज ३ (बहिन भाई
का नाम) भ्रातरौ १॥ ३६॥ (जहां माता पिता का साथ ही कहना
हो उस के नाम) मातापितरौ १ पितरौ २ मातर पितरौ ३ प्रसूज-
नयितारौ ४ (ऐसे ही सासु श्वशुर के नाम) श्वश्रूश्वशुरौ १
श्वशुरौ २ (इसी प्रकार कन्या पुत्र का नाम) पुत्रौ १॥ ३७॥ (स्त्री
पुरुष के नाम) दम्पती १ जम्पती २ जायापती ३ भार्य्यापती ४।
(ओझरी के नाम) गर्भाशय १ जरायुज २ उल्व ३ (जब गर्भा-
धान होता है तो पांच रात्रि में पुरुष का काम और स्त्री का रक्त मि-
लकर जो कुछ बनता है उस का नाम) कलल १॥ ३८॥ (गर्भ रह-
ने से नववें वा दशवें मास के नाम जिस में लड़का उत्पन्न होता है)
सूतिमास १ वैजनन २ (गर्भ के नाम) गर्भ १ भ्रूण २ (हिजड़ा के
नाम) तृतीयाप्रकृति १ षण्ड २ क्लीव ३ पण्ड ४ नपुंसक ५॥ ३९॥

शिशुत्वं शैशवं बाल्यं तारुण्यं यौवनं समे। स्यात्स्थाविरं तु वृद्धत्वं वृद्धसङ्घेऽपि वार्द्धकम् ४० पलितं जरसा शौक्ल्यं केशादौ विस्रसा जरा। स्यादुत्तानशया डिम्भा स्तनपा च स्तनन्धयी ४१ बालस्तु स्यान्माणवको वयस्थस्तरुणो युवा। प्रवयाः स्थविरो वृद्धो जीनो जीर्णो जरन्नपि ४२ वर्षीयान्दशमी ज्यायान्पूर्वजस्त्वग्रियोऽग्रजः। जघन्यजे स्युः कनिष्ठयवीयोऽवरजानुजाः ४३ अमांसो दुर्बलश्छातो बलवान्मांसलोंऽसलः॥

(लड़काई वा लड़कपन के नाम) शिशुत्व १ शैशव २ बाल्य ३ (जुआनी के नाम) तारुण्य १ योवन २ (बुढापा के नाम) स्थाविर १ वृद्धत्व २ वार्द्धक ३ (बुढापाओं के भुण्ड का नाम) वार्द्धक १॥ ४०॥ (अति बुढाई के नाम) पलित १ विस्रसा २ जरा ३ (दुधपिई छोटी लड़की वा लड़के के नाम) उत्तानशया १ डिम्भ २ स्तनपा ३ स्तनंधयी ४॥ ४१॥ (सोलह वर्ष पर्यंत लड़के के नाम) बाल १ माणवक २ (जुआने पुरुष के नाम) वयस्थ १ तरुण २ युवा ३ (बूढे के नाम) प्रवयाः १ स्थविर २ वृद्ध ३ जीन ४ जीर्ण ५ जरन् ६॥ ४२॥ (अति बूढे के नाम) वर्षीयान् १ दशमी २ ज्यायान् ३ (ज्येष्ठ भाई के नाम) पूर्वज १ अग्रिय २ अग्रज ३ (छोटे भाई के नाम) जघन्यज १ कनिष्ठ २ कनीयान ३ यवीयान् ४ यविष्ठ ५ अवरज ६ अनुज ७॥ ४३॥ (दूबरे के नाम) अमांस १ दुर्बल २ छात ३ (बलगर के नाम) बलवान् १ मांसल २ अंसल ३॥

तुन्दिलस्तुन्दिभस्तुन्दी बृहत्कुक्षिः पिचण्डिलः ४४
अवटीटोऽवनाटश्चावभ्रटो नतनासिके। केशवः केशिकः केशी बलिनो वलिभस्समौ ४५
विकलाङ्गस्त्वपोगण्डः खर्वो ह्रस्वश्च वामनः।
खरणाः स्यात्खरणसो विग्रस्तु गतनासिके ४६
खुरणाः स्यात्खुरणसः प्रज्ञुः प्रगतजानुकः। ऊर्ध्वज्ञुरूर्ध्वजानुः स्यात्संज्ञुः स्यात्संहतजानुकः ४७
स्यादेडे बधिरः कुब्जे गडुलः कुकरे कुणिः॥

(तुँदारे मनुष्य के नाम) तुन्दिल १ तुन्दिभ २ तुन्दी ३ बृहत्कुक्षि ४ पिचण्डिल ५॥ ४४॥ (नक चपटे के नाम) अवटीट १ अवनाट २ अवभ्रट ३ नतनासिक ४ (अच्छे बाल वाले के नाम) केशव १ केशिक २ केशी ३ (जिसकी बुढापे के मारे खाल सिकुर गई हो उसके नाम) बलि १ बलिभ २॥ ४५॥ (जिसका अपने ही से कोई अंग अधिक वा कम हो उस के नाम) विकलांग १ अपोगण्ड २ (बवना के नाम) खर्व १ ह्रस्व २ वावन ३ (जिसकी सुड लिबारी नाक हो उसके नाम) खरणाः १ खरणस २ (नकटे के नाम) विग्र १ गतनासिक २ ॥ ४६॥ (जिस की पशु खुर सदृश नासिका हो उस के नाम) खुरणाः १ खुरणस २ (ल्यचरा के नाम) प्रज्ञु १ प्रगतजानुक २ (जिस की जांघ ऊंची हो उस के नाम) ऊर्ध्वज्ञु १ ऊर्ध्वजानु २ (जिस की मिली हुई पींली हो) संज्ञु १ संगतजानुक २॥ ४७॥ (बहिरा के नाम) एड १ बधिर २ (कुबरा के नाम) कुब्ज १ गडुल २ (रोगादि से जिस के हाथ में कुछ विकार हो) कुकर १ कुणि २॥

पृश्निरल्पतनौ श्रोणः पङ्गौ मुण्डस्तु मुण्डिते ४८
वलिरः केकरे खोडे खञ्जस्त्रिषु जरावराः। जडु-
लः कालकः पिप्लुस्तिलकस्तिलकालकः ४९
अनामयं स्यादारोग्यं चिकित्सा रुक्प्रतिक्रिया।
भेषजौषधभैषज्यान्यगदो जायुरित्यपि ५० स्त्री
रुग्रुजा चोपतापरोगव्याधिगदामयाः। क्षयशो-
षश्च यक्ष्मा च प्रतिश्यायस्तु पीनसः ५१ स्त्री-
क्षुत्क्षुतं क्षवः पुंसि कासस्तु क्षवथुः पुमान्। शो-
फस्तु श्वयथुः शोथः पादस्फोटो विपादिका ५२

(जिस का बहुत ही छोटा शरीर हो उस के नाम) पृश्नि १ अल्पतनु २ (पंगुला के नाम) श्रोण १ पंगु २ (मुंड़ा के नाम) मुण्ड १ मुण्डित २॥४८॥ (कञ्जा के नाम) वलिर १ केकर २ (लंगड़े के नाम) खोड़ १ खञ्ज २ (जिसके अंग में लशुनाकार चिन्ह हो उसके नाम) जडुल १ कालक २ पिप्लु ३ (देह के तिल के नाम) तिलक १ तिलकालक २॥४९॥ (बिना रोग के नाम) अनामय १ आरोग्य २ (इलाज करने के नाम) चिकित्सा १ रुक्प्रतिक्रिया २ (इलाज के नाम) भेषज १ औषध २ भैषज्य ३ अगद ४ जायु ५॥५०॥ (रोग के नाम) रुक् १ रुजा २ उपताप ३ रोग ४ व्याधि ५ गद ६ आमय ७ (क्षयी रोग के नाम) क्षय १ शोष २ यक्ष्मा ३ (पीनस के नाम) प्रतिश्याय १ पीनस २॥५१॥ (छींक के नाम) क्षुत् १ क्षुत २ क्षव ३ (खांसी के नाम) कास १ क्षवथु २ (सूजन वा सुजाव के नाम) शोफ १ श्वयथु २ शोथ ३ (बिवाई के नाम) पादस्फोट १ विपादिका २॥५२॥

किलासमसिध्मोकच्छ्वांतुपामपामाविचर्च्चिका।
कराडूःखर्ज्जूश्चकराडूयाविस्फोटपिटकस्त्रिषु।
५३ व्रणोऽस्त्रियामीर्म्ममरुःक्लीबेनाडीव्रणःः
पुमान्। कोठोमराडलकंकुष्ठंश्वित्रेदुर्न्नामका-
र्शसी ५४ अनाहस्तुविबन्धस्स्याद्ग्रहणीरुक्प्र
वाहिका। प्रच्छर्हिकावमिश्चस्त्रीपुमांस्तुवमथुस्स
माः ५५ व्याधिभेदाविद्रधिस्स्त्रीज्वरमेहभगन्दराः।
श्लीपदम्पादवल्मीकङ्केशघ्नस्त्विन्द्रलुप्तकः।
अश्मरीमूत्रकृच्छ्रंस्यात्पूर्व्वेशुक्रादयस्त्रिषु ५६

(स्यहुंओं के नाम) किलास१ सिध्म२ (खाजु के नाम) कच्छ्र१ पा-
म२ पामा३ विचर्च्चिका ४ (खजुवाव के नाम) कराडू१ खर्ज्जू२ क-
राडूया३ (फोरिया फोड़ा के नाम) विस्फोट१ पिटक२॥ ५३॥ (घा-
व के नाम) व्रण१ ईर्म्म२ अरु३ (नसूर का नाम) नाड़ीव्रण१ जो
उज्ज्वल चकत्ते पड़ जाते हैं उस कोढ़ के नाम) कोठ१ मराडलक२
(कुष्ठ के नाम) कुष्ठ१ श्वित्र२ (बवासीर के नाम) दुर्न्नामक१
अर्शः२॥ ५४॥ (कजई के नाम) आनाह१ विबन्ध२ (संग्रह-
णी के नाम) ग्रहणी१ रुक्प्रवाहिका२ (उछार या डाकने के ना-
म) प्रच्छर्दिका१ वमि२ वमथु३॥ ५५॥ (ब्यरथिया का नाम) वि
द्रधि१ (ज्वर का नाम) ज्वर१ (प्रमेह का नाम) मेह१ (भगन्दर अ-
र्थात् गुद समीप के फोड़ा का नाम) भगन्दर१ (हाड़ा रोग के ना-
म) श्लीपद१ पादवल्मीक२ (चाँई चूँई के नाम) केशघ्न१ इन्द्र
लुप्तक२ (ककड़ी रोग के नाम) अश्मरी१ मूत्रकृच्छ्र२॥ ५६॥

रोगहार्य्यगदङ्कारो भिषग्वैद्यौ चिकित्सके। वार्त्तो निरामयः कल्य उल्लाघो निर्गतो गदात् ५७

ग्लानग्लास्नू आमयावी विकृतो व्याधितोऽपटुः आतुरोऽभ्यमितोऽभ्यान्तः समौ पामनकच्छुरौ ५८

दद्रुणो दद्रुरोगी स्यादर्शोरोगयुतोऽर्शसः। वातकी वातरोगी स्यात्सातिसारोऽतिसारकी ५९

स्युः क्लिन्नाक्षे चुल्लचिल्लपिल्लाः क्लिन्नेऽक्ष्णि चाप्यमी। उन्मत्त उन्मादवति श्लेष्मलः श्लेष्मणः कफी। ६०

(वैद्य के नाम) रोगहारी १ अगदङ्कार २ भिषक् ३ वैद्य ४ चिकित्सक ५ (रोग रहित के नाम) वार्त्त १ निरामय २ कल्य ३ उल्लाघ ४ ॥ ५७ ॥ (रोग वश से क्षीण होजाने के नाम) ग्लान १ ग्लास्नु २ (रोगी के नाम) आमयावी १ विकृत २ व्याधित ३ अपटु ४ आतुर ५ अभ्यमित ६ अभ्यान्त ७ (खजुहा के नाम) पामन १ कच्छुर २ ॥ ५८ ॥ (दद्रुहा के नाम) दद्रुण १ दद्रुरोगी २ (बवासिरहा का नाम) अर्शस १ (बाइहा के नाम) वातकी १ वातरोगी २ (जिस के बहुत दस्त हों उस के नाम) सातिसार १ अतिसारकी २ ॥ ५९ ॥ (चिपरा वा चोंधरा के नाम) क्लिन्नाक्ष १ चुल्ल २ चिल्ल ३ पिल्ल ४ (चिपरी वा चोंधरी आंखों के भी यही नाम हैं) चुल्ल १ चिल्ल २ पिल्ल ३ (जो वात रोग से भ्रमित होके सिड़ीसा हो जावे) उन्मत्त १ उन्मादवान् २ (जिस के कफ जकड़ा हो उसके नाम) श्लेष्मल १ श्लेष्मण २ कफी ३ ॥ ६० ॥

न्युब्जो भुग्नरुजा वृद्धनाभौ तुन्दिलतुन्दिभौ।
किलासी सिध्मलोऽन्धोऽदृङ्मूर्च्छाले मूर्त्तमूर्च्छितौ
६१ शुक्रन्तेजो रेतसी च बीजवीर्य्येन्द्रियाणि च।
मायुः पित्तङ्कफश्लेष्मा स्त्रियान्तु त्वगसृग्धरा ६२
पिशितन्तरसम्मांसम्पललङ्क्रव्यमामिषम्। उत्त-
प्तं शुष्कमांसं स्यात्तद्वल्लूरन्त्रिलिङ्गनाम ६३
रुधिरेऽसृग्लोहितास्त्ररक्तक्षतजशोणितम्। बु-
क्काग्रमांसं हृदयं हृन्मेदस्तु वपा बसा ६४

(जो रोग से टेढ़ा हो उस के नाम) न्युब्ज १ (जो बाई से तोंदारा हो उस के नाम) वृद्धनाभि १ तुन्दिल २ तुन्दिभ ३ (सेहुआ वाले के नाम) किलासी १ सिध्मल २ (आंधरा के नाम) अन्ध १ अदृक् २ (मुरझाने के नाम) मूर्च्छाल १ मूर्त २ मूर्च्छित ३॥ ६१॥ (काम के नाम) शुक्र १ तेजः २ रेतः ३ बीज ४ वीर्य्य ५ इन्द्रिय ६ (पित्त के नाम) मायु १ पित्त २ (कफ के नाम) कफ १ श्लेष्मा २ (खाल के नाम) त्वक् १ असृग्धरा २॥ ६२॥ (मांस के नाम) पिशित १ तरस २ मांस ३ पलल ४ क्रव्य ५ आमिष ६ (सूखे मांस के नाम) उत्तप्त १ शुष्कमांस २ वल्लूर ३ वल्लूरा ४॥ ६३॥ (रक्त के नाम) रुधिर १ असृक् २ लोहित ३ अस्त्र ४ रक्त ५ क्षतज ६ शोणित ७ (करेज के नाम) बुक्का १ अग्रमांस २ (हृदय के नाम) हृदय १ हृत् २ (चरबी के नाम) मेदः १ वपा २ बसा ३॥ ६४॥

पश्चाद्ग्रीवा शिरामन्यानाडीतुधमनिःशिरा॥ति
लकंक्लोममस्तिष्कङ्गोर्दंकिट्टम्मलोऽस्त्रियाम्
६५ अन्त्रम्पुरीतद्गुल्मस्तुप्लीहापुंस्यथवस्नसा॥
स्नायुस्त्रियाङ्कालखण्डयकृतीतुसमेइमे ६६
सृणिकास्यन्दिनीलालादूषिकानेत्रयोर्मलम्
नासामलंतुसिंघाणंपिंजूषःकर्णयोर्मलम्॥
मूत्रम्प्रस्रावउच्चारावस्करौशमलंशकृत् ६७ पु
रीषंगूथवर्च्चस्कमस्त्रीविष्ठाविशौस्त्रियौ। स्या
त्कर्प्परःकपालोऽस्त्रीकीकसंकुल्यमस्थिच ६८

(गले के पीछे की नस का नाम) मन्या १ (नाड़ी के नाम) नाड़ी १ ध-
मनि २ शिरा ३ (तिल के नाम) तिलक १ क्लोम २ (गूदा के नाम)
मस्तिष्क १ गोर्द २ (काटि के नाम) किट्ट १ मल २॥ ६५॥ (आंत
के नाम) अन्त्र १ पुरीतत् २ (पिलही के नाम) गुल्म १ प्लीहा २
(नस के नाम) वस्नसा १ स्नायु २ (पेट में जो दहनी ओर वटि-
या हो उस को) कालखण्ड १ यकृत् २॥ ६६॥ (राल के नाम)
सृणिका १ स्यन्दिनी २ लाला ३ (कीचर का नाम) दूषिका १ (न-
क चपटी का नाम) सिंघाण १ (खूंट का नाम) पिंजूष १ (मूत के
नाम) मूत्र १ प्रस्राव २ (गूह के नाम) उच्चार १ अवस्कर २ शम-
ल ३ शकृत् ४॥ ६७॥ पुरीष ५ गूथ ६ वर्च्चस्क ७ विष्ठा ८ वि-
ट् ९। (कपार के नाम) कर्प्पर १ कपाल २ (हाड़ के नाम) की-
कस १ कुल्य २ अस्थि ३॥ ६८॥

स्यात्छरीरास्थ्नि कङ्कालः पृष्ठास्थ्नि तु कशेरुका। शिरोस्थीनि करोटिः स्त्री पार्श्वास्थनि तु पर्शुका ६९ अङ्गं प्रतीकोऽवयवोऽपघनोऽथ कलेवरम्। गात्रं वपुः संहननं शरीरं वर्ष्म विग्रहः ७० कायो देहः क्लीबपुंसोः स्त्रियां मूर्त्तिस्तनुस्तनूः। पादाग्रं प्रपदम्पादः पदङ्घ्रिश्चरणोऽस्त्रियाम् ७१ तद्ग्रन्थी घुटिके गुल्फौ पुमान्पार्ष्णिस्तयोरधः। जङ्घा तु प्रसृता जानूरुपर्वाष्ठीवदस्त्रियाम् ७२ सक्थि क्लीबे पुमानूरुस्तत्सन्धिः पुंसि वङ्क्षणः। गुदन्त्वपानम्पायुर्ना वस्तिर्नाभेरधो द्वयोः ७३

(मांजरि का नाम) कङ्काल १ (रीढ़ का नाम) कशेरुका १ (खोपरी के नाम) करोटि १ करोटी २ (पँसुड़ी का नाम) पर्शुका १॥ ६९॥ (अंग के नाम) अंग १ प्रतीक २ अवयव ३ अपघन ४ (देह के नाम) कलेवर १ गात्र २ वपुः ३ संहनन ४ शरीर ५ वर्ष्म ६ विग्रह ७॥ ७०॥ काय ८ देह ९ मूर्त्ति १० तनु ११ तनू १२ (पैर के आगे के नाम) पादाग्र १ प्रपद २ (पांव के नाम) पाद १ पत् २ अंघ्रि ३ चरण ४॥ ७१॥ (घुट्टू के नाम) घुटिका १ गुल्फ २ (एड़ी का नाम) पार्ष्णि १ (जांघ के नाम) जंघा १ प्रसृता २ (फीली के नाम) जानु १ ऊरूपर्व्व २ अष्ठीवत् ३॥ ७२॥ (निरोह के नाम) सक्थि १ ऊरू २ (विङ्कुनी का नाम) वङ्क्षण १ (गुदा के नाम) गुद १ अपान २ पायु ३ (जहां मूत्र रहता है उस का नाम) वस्ति १॥ ७३॥

कटोनाश्रोणिफलकङ्कटिश्श्रोणिःककुद्मती।
पश्चान्नितम्बस्स्त्रीकट्याःक्लीबेतुजघनम्पुरः७४
कूपकौतुनितम्बस्थौद्वयहीनेकुकुन्दरे।स्त्रियां
स्फिचौकटिप्रोथावुपस्थोवक्ष्यमाणयोः७५
भगंयोनिर्द्वयोश्शिश्नोमेढ्रोमेहनशेफसी।मु-
ष्कोऽण्डकोशोवृषणःपृष्ठवंशाधरेत्रिकम्७६
पिचण्डकुक्षीजठरोदरन्तुन्दंकुचौस्तनौ।चूचुक
न्तुकुचाग्रंस्यान्ननाक्रोडम्भुजान्तरम्७७ उरोव
त्समञ्चवक्षश्चपृष्ठन्तुचरमन्तनोः।स्कन्धोभुजशि
रोंऽसोऽस्त्रीसन्धीतस्यैवजत्रुणी७८

(कौरहांव के नाम) कट १ श्रोणिफलक २ कटि ३ श्रोणि ४ ककुद्मती ५ (स्त्री के चूतर का नाम) नितम्ब १ (स्त्री के जांघ का नाम) जघन १॥७४॥ (नितम्ब में जो दो गढ़े होते हैं उन का नाम) कुकुन्दर १ (कूले के नाम) स्फिच १ कटिप्रोथ २ (लिंग गुदा का नाम) उपस्थ १॥७५॥ (योनि के नाम) भग १ योनि २ (लिंग के नाम) शिश्न १ मेढ्र २ मेहन ३ शेफः ४ (अण्ड के नाम) मुष्क १ अण्डकोश २ वृषण ३ (चाकठि का नाम) त्रिक १॥७६॥ (पेट के नाम) पिचण्ड १ पिचिण्ड २ कुक्षि ३ जठर ४ उदर ५ तुन्द ६ (कुच के नाम) कुच १ स्तन २ (कुच की ढेपुनी के नाम) चूचुक १ कुचाग्र २ (कोरा के नाम) क्रोड १ क्रोडी २ भुजान्तर ३॥७७॥ (छाती के नाम) उरः १ वत्स २ वक्ष ३ (किसी २ के मत से ये सबों छाती ही के नाम हैं) (पीठि के नाम) पृष्ठ १ (कांधे के नाम) स्कन्ध १ भुजशिरः २ अंस ३ (हंसिया का नाम) जत्रु १॥७८॥

बाहुमूले उभे कक्षौ पार्श्वमस्त्री तयोरधः। मध्य
मं चावलग्नं च मध्यो ऽस्त्री द्वौ परौ द्वयोः ७९ भु
जबाहू प्रवेष्टो दोः स्यात्कफोणिस्तु कूर्परः। अस्यो
परि प्रगण्डः स्यात्प्रकोष्ठस्तस्य चाप्यधः ८० म
णिबन्धादाकनिष्ठं करस्य करभो बहिः। पञ्च
शाखः शयः पाणिस्तर्जनी स्यात्प्रदेशिनी ८१
अंगुल्यः करशाखाः स्युः पुंस्यंगुष्ठः प्रदेशिनी। म
ध्यमानामिका चापि कनिष्ठा चेति ताः क्रमात् ८२

(कांख वा कंखरी के नाम) बाहुमूल १ कक्ष २ (बगल का नाम) पा-
र्श्व १ (कमर के नाम) मध्यम १ अवलग्न २ मध्य ३॥ ७९॥ (बांह के
नाम) भुज १ भुजा २ बाहु ३ बाहू ४ प्रवेष्ट ५ दोः ६ बाहा ७ (कोंहनि के
नाम) कफोणि १ कफोणी २ कूर्पर ३ (कूर्पर अर्थात् कोंहनि के ऊपर का
नाम) प्रगण्ड १ (गांठि के नीचे का नाम) प्रकोष्ठ १॥ ८०॥ (मणि
बन्ध से कनिष्ठ अंगुरिया पर्य्यन्त का नाम) करभ १ (हाथ के नाम)
पञ्चशाख १ शय २ पाणि ३ हस्त ४ कर ५ (अंगुठा के लगी वाली
अंगुली के नाम) तर्ज्जनी १ प्रदेशनी २ प्रदेशिनी ३॥ ८१॥ (अं-
गुरी के नाम) अंगुलि १ अंगुली २ करशाखा ३ (अंगुठा का ना-
म) अंगुष्ठ १ (अंगुठा के लगा वाली का नाम) प्रदेशिनी १
(बीच वाली का नाम) मध्यमा १ (बीच वाली और कन अंगु-
रिया के बीच वाली का नाम) अनामिका १ (कन अंगुरिया
का नाम) कनिष्ठा १॥ ८२॥

पुनर्भवः कररुहो नखोऽस्त्री नखरोऽस्त्रियाम्। प्रादेशतालगोकर्णास्तर्ज्जन्यादियुते तते ८३ अंगुष्ठे सकनिष्ठे स्याद्वितस्तिर्द्वादशांगुलः। पाणौ चपेटप्रतलप्रहस्ता विस्तृतांगुलौ ८४ द्वौ संहतौ संहतलः प्रतलौ वामदक्षिणौ। पाणिर्निकुब्जः प्रसृतिस्तौ युतावंजलिः पुमान् ८५ प्रकोष्ठे विस्तृतकरे हस्तो मुष्ट्या तु बद्धया। सरत्निः स्यादरत्निस्तु निष्कनिष्ठेन मुष्टिना ८६ व्यामो बाह्वोः सकरयोस्ततयोस्तिर्य्यगन्तरम्। ऊर्ध्वविस्तृतदोष्पाणिनृमाने पौरुषं त्रिषु ८७

(नँह के नाम) पुनर्भव १ कररुह २ नख ३ नखर ४ अंगुष्ठ ५ तर्ज्जनी तक की लम्बाई का नाम) प्रादेश १ (अंगुष्ठ मध्यमा तक के फैलाने की लम्बाई का नाम) ताल १ (अंगुष्ठ अनामिका के फैलाने की लम्बाई का नाम) गोकर्ण १॥८३॥ (बीता के नाम) बितस्ति १ द्वादशांगुल २ (चटकना वा चपरा के नाम) चपेट १ चर्प्पट २ प्रतल ३ प्रहस्त ४॥८४॥ (दुहस्सा चटकना के नाम) संहतल १ सिंहतल २ प्रतल ३ (पसर का नाम) प्रसृति १ (अंजुरी का नाम) अञ्जलि १॥८५॥ (हाथ का नाम) हस्त १ (मूठि का नाम) रत्नि १ (कनि अँगुरिया छोड़ के मूठा बाधने का नाम) अरत्नि १ ॥८६॥ (हाथ के फैलाने का नाम) व्याम १ (ऊपर के हाथ उठाने का नाम) पौरुष १ पौरुषी २॥८७॥

कण्ठो गलोऽथ ग्रीवायां शिरोधिः कन्धरेत्यपि।
कम्बुग्रीवा त्रिरेखा सावटुर्घाटा कृकाटिका॥ ८८
वक्त्रास्ये वदनं तुण्डमाननं लपनं मुखम्। क्लीबे घ्राणं गन्धवहा घोणा नासा च नासिका॥ ८९
ओष्ठाधरौ तु रदनच्छदौ दशनवाससी। अधस्ताच्चिबुकं गण्डौ कपोलौ तत्परा हनुः॥ ९०
रदना दशना दन्ता रदास्तालु तु काकुदम्। रसज्ञा रसना जिह्वा प्रान्तावोष्ठस्य सृक्किणी॥ ९१

(नट्टी के नाम) कण्ठ १ गल २ (गर्दन के नाम) ग्रीवा १ शिरोधि २ कन्धरा ३ (जिस गर्दन में रेखा हो उस का नाम) कम्बुग्रीवा १ (घांटी के नाम) अवटु १ घाटा २ कृकाटिका ३॥ ८८॥ (मुंह के नाम) वक्त्र १ आस्य २ वदन ३ तुण्ड ४ आनन ५ लपन ६ मुख ७ (नाक के नाम) घ्राण १ गन्धवहा २ घोणा ३ नासा ४ नासिका ५ नसा ६ नस्या ७॥ ८९॥ (ओठ के नाम) ओष्ठ १ अधर २ रदनच्छद ३ दशनवासः ४ (कोई २ ऊपर के ओठ को ओष्ठ और नीचे वाले को अधर कहते हैं (ठोढ़ी का नाम) चिबुक १ (गाल के नाम) गण्ड १ कपोल २ (कनपटी का नाम) हनु १॥ ९०॥ (दांत के नाम) रदन १ दशन २ दन्त ३ रद ४ (तालू के नाम) तालु १ काकुद २ (जीभ के नाम) रसज्ञा १ रसना २ रसन ३ जिह्वा ४ (ओठ की बगली का नाम) सृक्किणी २॥ ९१॥

ललाटमलिकं गोधिरूर्ध्वे दृग्भ्यां भ्रुवौ स्त्रियौ।
कूर्चमस्त्री भ्रुवोर्मध्यं तारकाक्ष्णः कनीनि-
का ९२ लोचनं नयनं नेत्रमीक्षणं चक्षुरक्षु-
णी। दृग्दृष्टी चास्रु नेत्राम्बु रोदनं चास्रमश्रु च
९३ अपाङ्गौ नेत्रयोरन्तौ कटाक्षोऽपाङ्गदर्शने।
कर्णशब्दग्रहौ श्रोत्रं श्रुतिः स्त्री श्रवणं श्रवः ९४
उत्तमाङ्गं शिरः शीर्षं मूर्धा ना मस्तकोऽस्त्रियाम्।
चिकुरः कुन्तलो बालः कचः केशः शिरोरुहः ९५
तद्वृन्दे कैशिकं कैश्यमलकाश्चूर्णकुन्तलाः। ते ल-
लाटे भ्रमरकाः काकपक्षः शिखण्डकः ९६

(लिलार के नाम) ललाट १ अलिक २ गोधि ३ (भौंह का नाम) भ्रू
१ (भौंह की बीच का नाम) कूर्च १ (आंखि के तिल का नाम) तारका
१॥ ९२॥ (आंखि के नाम) लोचन १ नयन २ नेत्र ३ ईक्षण ४ चक्षुः
५ अक्षि ६ दृक् ७ दृष्टि ८ (आंसु के नाम) अस्रु १ नेत्राम्बु २ रोदन ३
अस्र ४ अश्रु ५॥ ९३॥ (आंखि के किनारों का नाम) अपांग १ (अ-
पांग से देखने का नाम) कटाक्ष १ (कान के नाम) कर्ण १ शब्दग्रह २
श्रोत्र ३ श्रुति ४ श्रवण ५ श्रव ६॥ ९४॥ (शिर के नाम) उत्तमांग १ शि-
रः २ शीर्ष ३ मूर्द्धा ४ मस्तक ५ (बार के नाम) चिकुर १ चिकूर २ कु-
न्तल ३ बाल ४ कच ५ केश ६ शिरोरुह ७॥ ९५॥ (बालों के झुंड के
नाम) कैशिक १ कैश्य २ (टेढ़े बालों के नाम) अलक १ चूर्णकुन्तल २
(जो बे लिलार पर झुके हों तो उनका नाम) भ्रमरक १ (जुल्फ़ के नाम) का-
कपक्ष १ शिखण्डक २ शिखण्डिक ३ सिखण्डक ४ ॥ ९६॥

कबरी केशवेशोऽथ धम्मिल्लः संयताः कचाः । शि-
खा चूडा केशपाशी व्रतिनस्तु जटा सटा ९७ वेणिः
प्रवेणी शीर्षण्यशिरस्यौ विशदे कचे । पाशः पक्ष-
श्च हस्तश्च कलापार्थाः कचात्परे ९८ तनूरुहं
रोम लोम तद्वृद्धौ श्मश्रु पुंमुखे । आकल्पवेषौ
नेपथ्यं प्रतिकर्म प्रसाधनम् ९९ दशैते त्रिष्व-
लङ्कर्त्तालङ्करिष्णुश्च मण्डितः । प्रसाधितोऽलंकृ-
तश्च भूषितश्च परिष्कृतः १०० विभ्राड्भ्राजिष्णु
रोचिष्णू भूषणं स्यादलंक्रिया । अलङ्कारस्त्वा-
भरणं परिष्कारो विभूषणम् १०१

(चोटी के नाम) कबरी १ केशवेश २ (जूरा का नाम) धम्मिल्ल १ (चोटी के नाम) शिखा १ चूड़ा २ केशपाशी ३ (जटा के नाम) जटा १ सटा २ ॥ ९७ ॥ (तैलादि न लगाने के हेतु रूखे बार हो जाने के नाम) वेणि १ प्रवेणी २ (साफ बालों के नाम) शीर्षण्य १ शिरस्य २ (केशसमूह के नाम) पाश १ केशपाश २ केशपक्ष ३ कुन्तलहस्त ४ इत्यादि ॥ ९८ ॥ (रोमों के नाम) तनूरुह १ रोम २ लोम ३ (मोछ दाढ़ी का नाम) श्मश्रु १ (अलङ्कार की शोभा के नाम) आकल्प १ वेष २ वेश ३ नेपथ्य ४ प्रतिकर्म ५ प्रसाधन ६ ॥ ९९ ॥ (अलङ्कार करने वाले के नाम) अलङ्कर्त्ता १ अलङ्करिष्णु २ (अलङ्कारयुक्त के नाम) मण्डित १ प्रसाधित २ अलङ्कृत ३ भूषित ४ परिष्कृत ५ ॥ १०० ॥ (अलङ्कारादि से शोभित जे हुये के नाम) विभ्राट् १ भ्राजिष्णु २ रोचिष्णु ३ (संवारने वा सिंगारने के नाम) भूषण १ अलंक्रिया २ (गहना आदि के नाम) अलङ्कार १ आभरण २ परिष्कार ३ परिस्कार ४ विभूषण ५ मण्डन ६ ॥ १०१ ॥

मण्डनन्त्वाथ मुकुटङ्किरीटम्पुन्नपुंसकम् । चूडाम-
णिःशिरोरत्नन्तरलोहारमध्यगः १०२ बाल-
पाश्या पारितथ्या पत्रपाश्या ललाटिका । कर्णि-
कातालपत्रंस्यात्कुण्डलङ्कर्णवेष्टनम् १०३ ग्रै-
वेयङ्कण्ठभूषा लम्बनंस्याल्ललन्तिका । स्व
र्णैः प्रालम्बिकाथोरःसूत्रिका मौक्तिकैःकृता ॥
१०४ हारो मुक्तावली देवच्छन्दोऽसौशतयष्टि-
का । हारभेदायष्टिभेदाद्गुच्छगुच्छार्द्धगोस्तनाः
१०५

१ (मुकुट के नाम) मुकुट १ किरीट २ (सोशी के मणि के नाम) चूडाम-
णि १ शिरोरत्न २ (जो हार के मध्य में मध्यको बड़ा मणि होता है
उसका नाम) तरल १ ॥ १०२ ॥ (वशोपक वा शीशफूल में बाँधी हु-
ई सुवर्णादि की पाटी के नाम) बालपाश्या १ पारितथ्या २ ।
(बेंदी वा टीका के नाम) पत्रपाश्या १ ललाटिका २ (तरकी के
नाम) कर्णिका १ तालपत्र २ (सुवर्णादि निर्मित तरकी बारी
आदि के नाम) कुण्डल १ कर्णवेष्टन २ ॥ १०३ ॥ (कण्ठी वा क-
ण्ठा के नाम) ग्रैवेयक १ कण्ठभूषा २ (जो नाभीतक लम्बी क-
ण्ठी हो उसका नाम) लम्बन १ ललन्तिका २ (यदि सोने की क-
ण्ठी वैसी हो तो) प्रालम्बिका १ (और वही मोती से गुथी होतो)
उरःसूत्रिका १ ॥ १०४ ॥ (मोती के हार के नाम) हार १ मुक्तावली २
(जो सौ लर का हार हो) देवच्छन्दक १ (बत्तीस लर का हार हो) गु-
च्छ १ (चौबीस लर का) गुच्छार्द्ध १ (चार लर का हार हो) गोस्त-
न १ ॥ १०५ ॥

अर्द्धहारो माणवक एकावल्येकयष्टिका। सैव
नक्षत्रमाला स्यात् सप्तविंशतिमौक्तिकैः॥१०६॥ आ-
वापकः पारिहार्य्यः कटको वलयोऽस्त्रियाम्।
केयूरमङ्गदं तुल्ये अङ्गुलीयकमूर्म्मिका॥१०७॥ सा-
क्षराङ्गुलिमुद्रा स्यात् कङ्कणं करभूषणम्। स्त्रीक-
ट्यां मेखला काञ्ची सप्तकी रशना तथा॥१०८॥ क्लीबे
सारसनं चाथ पुंस्कट्यां शृङ्खलं त्रिषु। पादाङ्गद
तुलाकोटिर्मञ्जीरो नूपुरोऽस्त्रियाम्॥१०९॥

(बारह लड़ का) अर्द्धहार १ (बीस लड़ का) माणवक १ (एक लड़ का
हार) एकावली १ (जो एक लड़ सत्ताईस की हो उसका नाम)
नक्षत्रमाला १ (कड़े [illegible] पहुँचियों के नाम) आवापक १ पारिहार्य्य २
कटक ३ वलय ४ (बाहु में [illegible] बहुंटा विजायठ बाजूबन्द पट्टी
जोशन [illegible] बाँधने वाले गहनों के नाम) केयूर १ अंग
द २ (मुंदरी छल्ले के नाम) अंगुलीयक १ ऊर्म्मिका २॥१०७॥
(जिस अंगूठी में नाम आदि अक्षर लिखित हों उसका नाम) अंगु
लिमुद्रा १ (कंकण के नाम) कङ्कण १ करभूषण २ (स्त्रियों के क-
मर के तागड़ी जंजीरी और कमर पट्टा आदि के नाम) मेखला १
काञ्ची २ सप्तकी ३ [illegible] ४ रशना ५ रसना ६ सारसन ७ (एक
लड़ की) काञ्ची १ (आठ लड़ की) मेखला १ (१६ लड़ की) रशना १ (२५ लड़ का) क-
लाप १॥१०८॥ (पुरुष की कमर के कमरपट्टी के नाम) शृङ्खल १ शृङ्खल
२ (बिछिया वा पायजेबों के नाम) पादाङ्गद १ तुलाकोटि २ तुलाकोटी ३ (पै
जनियों के नाम) मञ्जीर १ नूपुर २॥१०९॥

हंसकः पादकटकः किङ्किणी क्षुद्रघण्टिका।
त्वक्फलं कृमिरोमाणि वस्त्रयोनिर्दश त्रिषु २२०
वाल्कं क्षौमादि फालन्तु कार्प्पासम्बादरञ्च त
त्। कौशेयं कृमिकोशोत्थं राङ्कवम्मृगरोमज
म् २२१ अनाहतन्निष्प्रवाणि तन्त्रकञ्च नवाम्ब
रम्। तत्स्यादुद्गमनीयं यद्धौतयोर्वस्त्रयोर्य्युग-
म् २२२ पत्त्रोर्णन्धौतकौशेयम्बहुमूल्यम्महाधन
म्। क्षौमन्दुकूलं स्याद्द्वे तु निवीतम्प्रावृतन्त्रिषु २२३
स्त्रियाम्बहुत्वे वस्त्रस्य दशाः स्युर्वस्तयोर्द्वयोः। दै
र्घ्यमायाम आरोहः परिणाहो विशालता २२४

(कड़ा के नाम) हंसक १ पादकटक २ (घुंघुरू के नाम) किङ्किणी १
क्षुद्रघण्टिका २॥२२०॥ (अलसी आदि से बने वस्त्र का नाम) वाल्क
१ (कपास से बने हुये वस्त्रों के नाम) फाल १ कार्प्पास २ बादर ३
(कुशुवारी से बने हुये का नाम) कौशेय १ (पशुओं के रोम से बने
हुये वस्त्रों का नाम) राङ्कव १॥ २२१॥ (कोरे मड़िहाये वस्त्र के ना-
म) अनाहत १ निष्प्रवाणि २ तन्त्रक ३ नवाम्बर ४ (धोये कपड़े
का नाम) उद्गमनीय १॥ २२२॥ (कौशेय कुशुवारी के धोये व-
स्त्र का नाम) पत्त्रोर्ण १ (बड़े मोल के वस्त्रादि का नाम) महाधन १
(रेशमी कपड़े के नाम) क्षौम १ दुकूल २ (कपड़ा के कोर के नाम)
निवीत १ प्रावृत २॥२२३॥ (छीरा का नाम) दशा १ (कपड़े की ल
म्बाई के नाम) दैर्घ्य १ आयाम २ आरोह ३ आनाह ४ (पनहा वा
[illegible] के नाम) परिणाह १ विशालता २॥२२४॥

पटच्चरंजीर्णं वस्त्रं समौ नक्तककर्पटौ। वस्त्रमा-
च्छादनं वासश्चैलं वसनमंशुकम् ११५ सुचे-
लकः पटोऽस्त्री स्याद्वराशिः स्थूलशाटकः। निचो-
लः प्रच्छदपटस्समौ रल्लककम्बलौ ११६ अन्तरी-
योपसंव्यानपरिधानान्यधोंऽशुके। द्वौ प्रावारोत्तरास-
ङ्गौ समौ बृहतिका तथा ११७ संव्यानमुत्तरीयं
च चोलः कूर्पासकोऽस्त्रियाम्। नीशारस्स्या-
त्प्रावरणो हिमानिलनिवारणः ११८ अर्द्धोरुकं
न्वरस्त्रीणां स्याच्चण्डातकमस्त्रियाम्। स्यात्त्रिष्वा-
प्रपदीनन्तत्प्राप्नोत्याप्रपदं हि यत् ११९

(पुराने कपड़े के नाम) पटच्चर १ जीर्णवस्त्र २ (फटे चिथरा के नाम) नक्तक १ लक्तक २ कर्पट ३ (कपड़ा मात्र के नाम) वस्त्र १ आच्छादन २ वासः ३ चैल ४ चेल ५ वसन ६ अंशुक ७ ॥ ११५॥ (अच्छे वस्त्र के नाम) सुचेलक १ पट २ (मोटे कपड़े के नाम) वराशि १ वराशि २ स्थूलशाटक ३ (बहार के नाम) निचोल १ निचुल २ प्रच्छदपट ३ (कम्बर के नाम) रल्लक १ कम्बल २॥ ११६॥ (धोती के नाम) अन्तरीय १ उपसंव्यान २ परिधान ३ अधोंऽशुक ४ (अंगोछा के नाम) प्रवार १ प्रावर २ उत्तरासंग ३ बृहतिका ४॥ ११७॥ संव्यान ५ उत्तरीय ६ (चोलिया के नाम) चोल १ कूर्पासक २ (रजाई वा अंगरखा के नाम) नीशार १॥ ११८॥ (उंडंगो लहंगा का नाम) अर्द्धोरुक १ (लम्बे लहंगा का नाम) आप्रपदीन १ ॥ ११९॥

अस्त्री वितानमुल्लोचो दूष्याद्यन्तु पटवेश्मनि।
प्रतिसीरा जवनिकास्यात्तिरस्करिणी च सा १२० प-
र्य्यङ्किका परिकरः पर्य्यङ्कश्चावसक्थिका। अन्तु
लन्त्वंशुकान्ते नीवी सारसनं उच्चयः १२१ परि-
कर्म्माङ्गसंस्कारस्स्यान्मार्ष्टिर्म्मार्ज्जना मृजा।
उद्वर्त्तनोत्सादने द्वे समे आप्लाव आप्लवः १२२ स्ना-
नं चर्च्चा तु चार्च्चिक्यं स्थासकोऽथ प्रबोधनम्।
अनुबोधः पत्रलेखा पत्रांगुलिरिमे समे १२३

(चँदवा के नाम) वितान १ उल्लोच २ (तम्बू वा डेरा के ना-
म) दूष्य १ पटकुटी २ पटवेश्म ३ पटकुड्यादि ४ (कनात
के नाम) प्रतिसीरा १ जवनिका २ यमनिका ३ तिरस्करिणी
४ तिरस्कारिणी ५ ॥१२०॥ (पटुका के नाम) पर्य्यङ्किका
१ परिकर २ पर्य्यंग ३ अवसक्थिका ४ (आंचर का नाम) अ-
न्तुल १ (कोंछी वा फुफुंदी का नाम) नीवी १॥१२१॥ (स्नाना-
दि अंग संस्कार के नाम) परिकर्म्म १ अंगसंस्कार २ (पों-
छने का नाम) मार्ष्टि १ मार्ज्जना २ मृजा ३ (उबटन वा बुक-
वा के नाम) उद्वर्त्तन १ उत्सादन २ (नहाने के नाम) आ-
प्लाव १ आप्लव २ ॥१२२॥ स्नान ३ (चन्दनादि से देह के
लेप के नाम) चर्च्चा १ चार्च्चिक्य २ स्थासक ३ (गन्ध मिटा-
ने के नाम) प्रबोधन १ अनुबोध २ (गाल स्तनादि में स्त्रियों
के किसी गन्धादि से ऊकेहने के नाम) पत्रलेखा १ पत्रांगु-
लि २॥१२३॥

तमालपत्रतिलकचित्रकाणिविशेषकम्। द्वितीयञ्च तुरीयञ्च न स्त्रियामथ कुङ्कुमम् १२४ काश्मीरजन्माग्निशिखम्वरम्बाह्लीकपीतनम्। रक्तसंकोचपिशुनन्धीरं लोहितचन्दनम् १२५ लाक्षाराक्षा जतु क्लीबे यावोऽलक्तोद्रुमामयः। लवङ्गन्देवकुसुमं श्रीसंज्ञमथ जायकम् १२६ कालीयकञ्च कालानुसार्य्यञ्चाथ समार्त्यकम्। वंशिका गुरुराजार्हं लोहं कृमिजजोङ्गकम् १२७ कालागुर्व्वगुरुस्यात्तु मङ्गल्या मल्लिगन्धियत्। यक्षधूपसर्ज्जरसो राल सर्व्वरसावपि १२८

(मस्तक में कस्तूरी आदि से टीका लगाने के नाम) तमालपत्र १ तिलक २ चित्रक ३ विशेषक ४ (कुंकुम के नाम) कुंकुम १॥१२४॥ काश्मीरजन्म २ अग्निशिख ३ वर ४ वाह्लीक ५ वाह्लिक ६ पीतन ७ रक्तसङ्कोचपिशुन ८ धीर ९ लोहितचन्दन १० रक्त ११ सङ्कोच १२ पिशुन १३॥१२५॥ (लाह के नाम) लाक्षा १ राक्षा २ जतु ३ याव ४ अलक्त ५ द्रुमामय ६ (लवंग के नाम) लवंग १ देवकुसुम २ श्रीसंज्ञ ३ (पीले चन्दन के नाम) जायक १॥ १२६॥ कालीयक १ कालानुसार्य्य ३ (गूगुर के नाम) वंशिका १ अगुरु २ राजार्ह ३ लोह ४ कृमिज ५ जोंगक ६॥ १२७॥ (काले गूगुरु का नाम) कालागुरु १ अगुरु २ मंगल्या ३ (राल के नाम) यक्षधूप १ सर्ज्जरस २ राल ३ सर्व्वरस ४॥ १२८॥

बहुरूपोऽप्यथ वृकधूपकृत्रिमधूपकौ। तुरुष्कः
पिण्डकस्सिह्लो यावनोऽप्यथपायसः २२९ श्री-
वासोवृकधूपोऽपि श्रीवेष्टसरलद्रवौ। मृगनाभि-
र्मृगमदः कस्तूरी चाथकोलकम् २३० कंकोल-
कङ्कोशफलमथकर्पूरमस्त्रियाम्। घनसारश्च-
न्द्रसंज्ञस्सिताभ्रोहिमवालुका २३१ गन्धसारो-
मलयजोभद्रश्रीचन्दनोऽस्त्रियाम्। तैलपर्णि-
कगोशीर्षे हरिचन्दनमस्त्रियाम् २३२ तिलप-
र्णी तु पत्राङ्गं रंजनं रक्तचन्दनम्। कुचन्दनञ्चा-
थ जातीकोशजातीफले समे २३३

बहुरूप ५ (अनेक पदार्थ मिलित धूपके नाम) वृकधूप १ कृत्रिमधू-
पक २ (लोबानके नाम) तुरुष्क १ पिण्डक २ सिह्ल ३ यावन ४ (देवदा-
रु धूपके नाम) पायस १॥ २२९॥ श्रीवास २ वृकधूप ३ श्रीवेष्ट ४ श्री-
पिष्ट ५ सरलद्रव ६ (कस्तूरी के नाम) मृगनाभि १ मृगमद २ कस्तूरी ३
(कचाबचीनी के नाम) कोलक १ कोरक २॥ २३०॥ कंकोलक ३ को-
शफल ४ (कपूरके नाम) कर्पूर १ घनसार २ चन्द्र ३ सिता भ्र ४ सिता-
भ्र ५ हिमवालुका ६॥ २३१॥ (मलयागिरी चन्दनके नाम) गन्धसार-
१ मलयज २ भद्रश्री ३ चन्दन ४ (गुड़ उजले चन्दन का नाम) तैलपर्णि-
क १ (जिसमें कमल के समान गन्ध हो उस चन्दन का नाम) गोशी-
र्ष १ (कपिल वर्ण चन्दन का नाम) हरिचन्दन १॥ २३२॥ (लाल च-
न्दन देवी चन्दन के नाम) तिलपर्णी १ पत्राङ्ग २ रञ्जन ३ रक्तचन्दन ४
कुचन्दन ५ (जायफर के नाम) जातीकोश १ जातीफल २॥ २३३॥

कर्पूरागुरुकस्तूरीकक्कोलैर्य्यक्षकर्द्दमः। गा-
त्रानुलेपनी वर्त्तिर्व्वर्णकं स्याद्विलेपनम् २३४
चूर्णानि वासयोगास्स्युर्भावितम्वासितन्त्रि-
षु। संस्कारोगन्धमाल्याद्यैर्य्यः स्यात्तदधिवा-
सनम् २३५ माल्यम्मालास्रजौमूर्द्ध्नि केशम-
ध्येतुगर्भकः। प्रभ्रष्टकं शिखालम्बिपुरोन्य-
स्तंललामकम् २३६ प्रालम्बमृजुलम्बिस्या-
त्कण्ठाद्वैकक्षकन्तुतत्। यत्तिर्य्यक्क्षिप्तमु-
रसि शिखास्वापीडशेखरौ २३७

१ (कर्पूर अगुर कस्तूरी कबाबचीनी बराबर २ मिलाने से जो लेप-
न बनता है उस का नाम) यक्षकर्द्दम १ (पिसी हुई लेपन वस्तु
के नाम) गात्रानुलेपनी १ वर्ति २ (घिसी अगरी हुई लेपन वस्तु
के नाम) वर्णक १ विलेपन २॥२३४॥(कपरछान करके जो गन्ध
वस्तु घोरी जावे उस के नाम) चूर्ण १ वासयोग २ (सुगन्ध कई वस्तु
से भिगोई हुई वस्तु के नाम) भावित १ वासित २ (गन्धमाल्यादि
लगाने पहिरने का नाम) अधिवासन १॥२३५॥ (मूड़ पर की मा-
ला के नाम) माल्य १ माला २ स्रक ३ (बालों के बीच में धारण की हुई
माला का नाम) गर्भक १ (चोटी में गुही हुई पुष्प पंक्ति का नाम) प्रभ्रष्टक
१ (जो शिखा में लिलार तक लपटी माला हो उस का नाम) ललामक १
॥२३६॥ (जो गरदई के नीचे सीधी लटकी माला हो उसका नाम) प्रा-
लम्ब १ (जो यज्ञोपवीत के सदृश पहिनी हो उस का नाम) वैकक्षक १
(जो शिखा में पहिरी जाय उस के नाम) आपीड़ १ शेखर २॥२३७॥

रचनास्यात्परिस्पन्द आभोगः परिपूर्णता । उपधा
नन्तूपवर्हः शय्यायांशयनीयवत् १३८ शयनम्म
ञ्चपर्य्यङ्कः पल्यङ्कः खट्टयासमाः । गेन्दुकः क
न्दुको दीपः प्रदीपः पीठमासनम १३९ समुद्गक
स्सम्पुटकः प्रतिग्राहः पतद्ग्रहः । प्रसाधनी कङ्कति
कापिष्टातः पटवासकः । दर्प्पणो मुकुरादर्शौ व्य
जनन्तालवृन्तकम् १४० इतिमनुष्यवर्गः ॥

सन्ततिर्गोत्रजननकुलान्यभिजनान्वयौ ।
वंशोऽन्ववायः सन्तानो वर्णास्स्युर्ब्राह्मणादयः १

(शिल्पादि रचना के नाम) रचना १ परिस्पन्द २ (सर्व्व सामग्री के पूरे होने के नाम) आभोग १ परिपूर्णता २ (तकिया के नाम) उपधान १ उपवर्ह २ (तोसक गलीचा आदि बिछौना के नाम) शय्या १ शयनीय २ ॥१३८॥ शयन १ (खटिया वा पलंग के नाम) मंच १ पर्य्यङ्क २ पल्यङ्क ३ खट्वा ४ (गेंद वा गोंद के नाम) गेन्दुक १ कन्दुक २ (दिया के नाम) दीप १ प्रदीप २ (पीढ़ा के नाम) पीठ १ आसन २॥ १३९॥ (डब्बा के नाम) समुद्गक १ सम्पुटक २ (पीकदान के नाम) प्रतिग्राह १ पतद्ग्रह २ (कंघी वा ककही के नाम) प्रसाधनी १ कङ्कतिका २ (बुकवा के नाम) पिष्टात १ पटवासक २ (दर्प्पण वा सीसा के नाम) दर्प्पण १ मुकुर २ मकुर ३ आदर्श ४ मंकुर ५ (बेना वा पङ्खा के नाम) व्यजन १ तालवृन्तक २॥ १४०॥ इति मनुष्यवर्गः ॥

(वंश के नाम) सन्तति १ गोत्र २ जनन ३ कुल ४ अभिजन ५ अन्वय ६ वंश ७ अन्ववाय ८ सन्तान ९ (ब्राह्मणादि का नाम) वर्ण १॥१॥

विप्रक्षत्रियविट्शूद्राश्चातुर्व्वर्ण्यमिति स्मृतम्॥१
राजबीजी राजवंश्यो बीज्यस्तु कुलसम्भवः २ महा
कुलकुलीनार्य्यसभ्यसज्जनसाधवः। ब्रह्मचारी
गृही वानप्रस्थो भिक्षुश्चतुष्टये ३ आश्रमोऽस्त्री
द्विजात्यग्रजन्मभूदेववाडवः। विप्रश्च ब्राह्मणोऽसौ
षट्कर्म्मा यागादिभिर्वृतः ४ विद्वान्विपश्चिद्दो
षज्ञः सन्सुधीः कोविदो बुधः। धीरो मनीषी ज्ञः प्रा
ज्ञः संख्यावान्पण्डितः कविः ५ धीमान्सूरिः कृ
ती कृष्टिर्लब्धवर्णो विचक्षणः। दूरदर्शी दीर्घद
र्शी श्रोत्रियच्छान्दसौ समौ ६

(ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्रों के नाम) चातुर्व्वर्ण्य १ (राजा के वंश वालों के नाम) राजबीजी १ राजवंश्य २ (कुलीन के नाम) बीज्य १ कुलसम्भव २॥ २॥ (सज्जन के नाम) महाकुल १ कुलीन २ आर्य्य ३ सभ्य ४ सज्जन ५ साधु ६ (ब्रह्मचारी गृही वानप्रस्थ यती इनका नाम)॥ ३॥ आश्रम १ (ब्राह्मण के नाम) द्विजाति १ अग्रजन्मा २ भूदेव ३ वाडव ४ विप्र ५ ब्राह्मण ६ (इज्या अध्ययन दान याजन अध्यापन प्रतिग्रह इन षट्कर्म्मों करके युक्त ब्राह्मण का नाम) षट्कर्म्मा १॥ ४॥ (पण्डित के नाम) विद्वान् १ विपश्चित् २ दोषज्ञ ३ सन् ४ सुधी ५ कोविद ६ बुध ७ धीर ८ मनीषी ९ ज्ञ १० प्राज्ञ ११ प्रज्ञ १२ संख्यावान् १३ पण्डित १४ कवि १५॥ ५॥ धीमान् १६ सूरि १७ कृती १८ कृष्टि १९ लब्धवर्ण २० विचक्षण २१ दूरदर्शी २२ दीर्घदर्शी २३ (वेदपाठी पण्डित के नाम) श्रोत्रिय १ छान्दस २॥ ६॥

मीमांसको जैमिनीये वेदान्ती ब्रह्मवादिनि ।
वैशेषिकस्स्यादौलूक्यः सौगतः शून्यवादिनि
७ नैयायिकस्त्वक्षपदः स्यात्स्याद्वादिक आर्ह-
कः। चार्व्वाकलौकायतिकौ सत्कार्य्ये सांख्यका-
पिलौ ८ उपाध्यायोऽध्यापकोऽथ स्यान्निषेकादि-
कृद्गुरुः। मन्त्रव्याख्याकृदाचार्य्य आदेष्टा त्वध्व-
रे व्रती ९ यष्टा च यजमानश्च स सोमवति दीक्षि-
तः। इज्याशीलो यायजूको यज्वा तु विधिनेष्टवा-
न् १०

(मीमांसा शास्त्र पाठी के नाम) मीमांसक १ जैमिनीय २ (वेदांती के ना-
म) वेदान्ती १ ब्रह्मवादी २ (वैशेषिक के नाम) वैशेषिक १ औलूक्य २
(नास्तिक के नाम) सौगत १ शून्यवादी २॥ ७॥ (नैयायिक के नाम) नै-
यायिक १ अक्षपाद २ आक्षपाद ३ (मोक्षमार्ग दिखाने वाले के नाम)
स्याद्वादिक १ आर्हक २ (बौद्धमतावलम्बी के नाम) चार्व्वाक १ लौ-
कायतिक २ (सांख्य शास्त्र जानने वाले के नाम) सांख्य १ कापिल २
॥ ८॥ (जो पढ़ाता हो उस पण्डित के नाम) उपाध्याय १ अध्यापक २
(गर्भाधानादि के करैया पिता का नाम) गुरु १ (मंत्र की व्याख्या कर-
ने वाले का नाम) आचार्य्य १ (यज्ञ में सब ऋत्विजों के सिखाने वाले का
नाम) आदेष्टा १॥ ९॥ (यजमान के नाम) यष्टा १ व्रती २ यजमान ३
(सोमवान् यज्ञ के यजमान का नाम) दीक्षित १ (बारम्बार यज्ञ करने
वाले के नाम) इज्याशील १ यायजूक २ (जो विधि से यज्ञ करै
उस का नाम) यज्वा १॥ १०॥

गीष्पतीष्ट्या स्थपतिः सोमपीती तु सोमपाः। स-
र्ववेदास्स येनेष्टो यागस्सर्वस्वदक्षिणः ११ अ-
नूचानः प्रवचने साङ्गेऽधीती गुरोस्तु यः। लब्धा-
नुज्ञः समावृत्तः सुत्वा त्वभिषवे कृते १२ छात्रा-
न्तेवासिनौ शिष्ये शैक्षाः प्राथमकल्पिकाः।
एकब्रह्मव्रताचारा मिथः सब्रह्मचारिणः १३
सतीर्थ्यास्त्वेकगुरव श्चितवानग्निमग्निचित्।
पारंपर्य्योपदेशे स्यादैतिह्यमितिहाव्ययम् १४
उपज्ञा ज्ञानमाद्यं स्यात् ज्ञात्वारम्भ उपक्रमः।

(बृहस्पति सव नाम यज्ञ करने वाला) स्थपति १ (सोम ओषधी पीने वाले यजमान के नाम) सोमपीती १ सोमपा २ (जो यज्ञमें अपना सब धन दे डाले उसका नाम) सर्ववेदाः १ ॥११॥ (सांगोपांग वेद पढ़ने वालेका नाम) अनूचान १ (वही अनूचान गुरू की गृहस्थाश्रमादि में प्राप्त होने की आज्ञा पावें तो) समावृत्त १ (अभिषव स्नान करैया का नाम) सुत्वा १ ॥१२॥ (विद्यार्थी के नाम) छात्र १ अन्तेवासी २ अन्नवासी ३ शिष्य ४ (छोटे नये विद्यार्थी के नाम) शैक्ष १ प्राथमकल्पिक २ (सहपाठी अर्थात् एक साथ एक ही वस्तु पढ़ने वाले का नाम) सब्रह्मचारी १ ॥१३॥ (जितने एक गुरू से पढ़ते हों उन का नाम) सतीर्थ्य १ (जो अग्नि को बटोर रहै वह) अग्निचित् १ (परम्परा उपदेश के नाम) ऐतिह्य १ इतिह २ ॥१४॥ (प्रथम के ज्ञान का नाम) उपज्ञा १ (समझ के ग्रन्थ के प्रारम्भ करने का नाम) उपक्रम १

यज्ञस्सवोध्वरोयागः सप्ततन्तुर्म्मखः क्रतुः २५
पाठोहोमश्चातिथीनां सपर्य्यातर्प्पणम्बलिः।
एते पञ्च महायज्ञा ब्रह्मयज्ञादिनामकाः २६
समज्या परिषद्गोष्ठी सभासमितिसंसदः। आ-
स्थानी क्लीवमास्थानं स्त्रीनपुंसकयोस्सदः २७
प्राग्वंशः प्राग्घविर्गेहात्सदस्या विधिदर्शिनः।
सभासदः सभास्तारास्सभ्याः सामाजिकाश्चते २८
अध्वर्य्यूद्गातृहोतारो यजुःसामर्ग्विदः क्रमात्।

(यज्ञके नाम) यज्ञ १ सव २ अध्वर ३ याग ४ सप्ततन्तु ५ मरव ६ क्रतु ७।२५।
पाठ १ होम २ अतिथि पूजा ३ तर्प्पण ४ बलि ५ (इन का नाम) महाय-
ज्ञ १ (तिन में पाठ वेदादि का पढ़ना उस का नाम) ब्रह्मयज्ञ १ (वैश्व-
देवांग होम हो उस का नाम) देव यज्ञ १ (अतिथि पूजा जो कोई अ-
पने गृह में बिना चीन्हा हुआ आजावे उस को भोजनादि देना उस का
नाम) मनुष्ययज्ञ १ (तर्प्पण प्रसिद्ध है उस का नाम) पितृयज्ञ १ (ब-
लि प्रदानादि का नाम) भूतयज्ञ १ यही पांच यज्ञ हैं ॥२६॥ (सभा
के नाम) समज्या १ परिषत २ गोष्ठी ३ सभा ४ समिति ५ संसत् ६ आ-
स्थानी ७ आस्थान ८ सदः ९॥ २७॥ (सदस्यों के गृह का नाम) प्रा-
ग्वंश १ (यज्ञ में न्यूनाधिक न होने पावे इस विधि के देखने वाले का
नाम) सदस्य १ (सभा में बैठने वालों के नाम) सभासत् १ सभास्तार २
सभ्य ३ सामाजिक ४ ॥ २८॥ (यजुर्व्वेद जानने वाले के नाम) अ-
ध्वर्य्यु १ (ऋग्वेदी का नाम) होता १ (सामवेदी का नाम) उ-
द्गाता १॥

यज्ञस्सवोध्वरोयागः सप्ततन्तुर्म्मखः क्रतुः २५
पाठोहोमश्चातिथीनां सपर्य्यातर्प्पणम्बलिः।
एतेपञ्चमहायज्ञाब्रह्मयज्ञादिनामकाः २६
समज्यापरिषद्गोष्ठीसभासमितिसंसदः। आ-
स्थानीक्लीवमास्थानंस्त्रीनपुंसकयोस्सदः २७
प्राग्वंशःप्राग्घविर्गेहात्सदस्याविधिदर्शिनः।
सभासदःसभास्ताराःसभ्याःसामाजिकाश्चतेः२८
अध्वर्य्यूद्गातृहोतारोयजुःसामर्ग्विदःक्रमात्।

(यज्ञ के नाम) यज्ञ १ सव २ अध्वर ३ याग ४ सप्ततन्तु ५ मख ६ क्रतु ७॥ २५॥ पाठ १ होम २ अतिथि पूजा ३ तर्प्पण ४ बलि ५ (इन का नाम) महायज्ञ १ (तिन में पाठ वेदादि का पढ़ना उस का नाम) ब्रह्मयज्ञ १ (वैश्वदेवांग होम हो उस का नाम) देवयज्ञ १ (अतिथि पूजा जो कोई अपने गृह में बिना चीन्हा हुआ आजावे उस को भोजनादि देना उस का नाम) मनुष्ययज्ञ १ (तर्प्पण प्रसिद्ध है उस का नाम) पितृयज्ञ १ (बलि प्रदानादि का नाम) भूतयज्ञ १ यही पांच यज्ञ हैं ॥ २६ ॥ (सभा के नाम) समज्या १ परिषत् २ गोष्ठी ३ सभा ४ समिति ५ संसत् ६ आस्थानी ७ आस्थान ८ सदः ९ ॥ २७ ॥ (सदस्यों के गृह का नाम) प्राग्वंश १ (यज्ञ में न्यूनाधिक न होने पावे इस विधि के देखने वाले का नाम) सदस्य १ (सभा में बैठने वालों के नाम) सभासत् १ सभास्तार २ सभ्य ३ सामाजिक ४ ॥ २८ ॥ (यजुर्व्वेद जानने वाले के नाम) अध्वर्य्यु १ (ऋग्वेदी का नाम) होता १ (सामवेदी का नाम) उद्गाता १ ॥

ऋक्सामिधेनीधाय्या च या स्यादग्निसमिन्धने। गायत्रीप्रमुखं छन्दो हव्यपाके चरुः पुमान् २४ आमिक्षा सा शृतोष्णे या क्षीरे स्याद्दधियोगतः। धवित्रं व्यजनं तद्यद्रचितं मृगचर्म्मणा २५ पृषदाज्यं सदध्याज्ये परमान्नन्तु पायसम्। हव्यकव्ये दैवपित्र्ये अन्ने पात्रं स्रुवादिकम् २६ ध्रुवोपभृज्जुहूर्न्ना तु स्रुवो भेदाः स्रुचः स्त्रियः। उपाकृतः पशुरसौ योऽभिमंत्र्य क्रतौ हतः २७ परम्पराकं शमनं प्रोक्षणं च वधार्थकम्। वाच्यलिङ्गाः प्रमीतोपसम्पन्नप्रोक्षिता हते २८

१(अग्नि बारने के अर्थ जो ऋचा पढ़ी जाय उस के नाम) सामिधेनी १ धाय्या २ (गायत्री उष्णिक् अनुष्टुभ इत्यादि का नाम) छन्द १ (अग्नि में छोड़ने वाली जाउरि का नाम) चरु १॥ २४॥ (गरम पके दूध में दही डारने से जो बनता उस का नाम) आमिक्षा १ मृगचर्म से बने हुये बेना का नाम) धवित्र १॥ २५॥ (दही घी मिले हुये का नाम) पृषदाज्य १ (जाउरि वा खीर के नाम) परमान्न १ पायस २। (देवता के अर्थ की जाउरि के नाम) हव्य १ (पितरों की का नाम) कव्य २ (स्रुवा आदि का नाम) पात्र १॥ २६॥ (स्रुवा के भेद) ध्रुवा १ उपभृत २ जुहू ३ स्रुव ४ (यज्ञ के पशु का नाम) उपाकृत १॥ २७॥ (पशु मारने का नाम) परम्पराक १ शमन २ प्रोक्षण ३ (यज्ञ में मारे हुये पशु का नाम) प्रमीत १ उपसम्पन्न २ प्रोक्षित ३॥ २८॥

सान्नाय्यं हविरग्नौ तु हुतन्त्रिषु वषट्कृतम् ॥
दीक्षान्तोऽवभृथो यज्ञे तत्कर्म्मार्हन्तु यज्ञियम् २९ त्रिष्वथ क्रतु कर्म्मेष्टं पूर्त्तङ्खातादिकर्म्म यत् । अमृतं विघसो यज्ञशेष भोजनशेषयोः ३० त्यागो विहापितन्दानमुत्सर्ज्जनविसर्ज्जने । विश्राणनं वितरणं स्पर्शनम्प्रतिपादनम् ३१ प्रादेशनं निर्व्वपणमपवर्ज्जनमंहतिः । मृतार्थन्तदहे दानं त्रिषु स्यादौर्ध्वदैहिकम् ३२ पितृदानन्निवापः स्याच्छ्राद्धन्तत्कर्म्म शास्त्रतः । अन्वाहार्य्यं मासिकेंऽशोऽष्टमोऽह्नः कुतपोऽस्त्रियाम् ३३

(साकल्य के नाम) सान्नाय्य१ हविः२ (अग्नि में जो जो हुना जावे उस का नाम) वषट्कृत १ (यज्ञान्त स्नान का नाम) अवभृथ १ (यज्ञ योग्य वस्तु का नाम) यज्ञिय१ ॥ २९ ॥ (यज्ञ में कर्म्म का नाम) इष्ट १ (बावली तालादि खुदाने का नाम) पूर्त्त१ (यज्ञ से बची हुई जाठरि आदि का नाम) अमृत १ (देव पित्रादि के भोजन से बची हुई वस्तु का नाम) विघस १ ॥ ३० ॥ (दान के नाम) त्याग १ विहापित २ दान ३ उत्सर्ज्जन ४ विसर्ज्जन ५ विश्राणन ६ वितरण ७ स्पर्शन ८ प्रतिपादन ९ ॥ ३१ ॥ प्रादेशन १० निर्व्वपण ११ अपवर्ज्जन १२ अंहति १३ (मृतक के अर्थ जो दश दिन के बीच में पिण्डादि दिये जाते हैं उन का नाम) और्ध्वदैहिक १ और्ध्वदेहिक २ और्ध्वदेहिकी ३ ॥ ३२ ॥ (पितरों के निमित्त जो दान दिया जावे उस के नाम) पितृदान १ निवाप २ (पितरों के देने के निमित्त के कर्म्म का नाम) श्राद्ध १ (अमावास्या के श्राद्ध के नाम) अन्वाहार्य्य १ मासिक २ (दिन के आठवें हिस्सा का नाम) कुतप १ ॥ ३३ ॥

पर्य्येषणा परीष्टिश्चान्वेषणा च गवेषणा। स-
निस्त्वध्येषणा याञ्चाभिशस्तिर्याचनार्थना
३४ षट्तु त्रिष्वर्घ्यमर्घार्थे पाद्यम्पादाय वारि-
णि। क्रमादातिथ्यातिथेये अतिथ्यर्थेऽत्र साधु-
नि ३५ स्युरावेशिक आगन्तुरतिथिर्नागृहागत
ते। प्राघूर्णिकः प्राघुणकश्चाभ्युत्थानन्तु गौ-
रवम् ३६ पूजा नमस्यापचितिः सपर्य्यार्चार्ह
णाः समाः। वरिवस्या तु शुश्रूषा परिचर्य्या-
प्युपासना ३७

(आदि में ब्राह्मण की भक्ति और सेवा करने के नाम) पर्य्येषणा १ परी-
ष्टि २ (धर्म्म युक्त कार्य्य करने के नाम) अन्वेषणा १ गवेषणा २
(विनती के नाम) सनि १ अध्येषणा २ (मांगने के नाम) याञ्चा १
अभिशस्ति २ अभिषस्ति ३ याचना ४ अर्थना ५॥ ३४॥ (पूजार्थ
पानी छोड़ने का नाम) अर्घ्य १ (पाय धोने के अर्थ जो पानी दिया
जावे उसका नाम) पाद्य १ (अतिथि के अर्थ जो कर्म्म उसका नाम)
आतिथ्य १ (अतिथि के निमित्त जो सिद्ध हो वह) आतिथेय १॥ ३५॥
(महिमान के नाम) आवेशिक १ आगन्तु २ अतिथि ३ गृहागत ४।
(अभ्यागत के नाम) प्राघूर्णिक १ प्राघुणक २। (किसी के आने पर
आदर पूर्व्वक उठ के खड़े होने के नाम) अभ्युत्थान १ गौरव २॥
॥ ३६॥ (पूजा के नाम) पूजा १ नमस्या २ अपचिति ३ सपर्य्या ४ अ-
र्च्चा ५ अर्हणा ६ (उपासना के नाम) वरिवस्या १ शुश्रूषा २ परि-
चर्य्या ३ उपासना ४ उपासन ५॥ ३७॥

व्रज्याऽटाऽट्या पर्य्यटनं चर्य्या त्वीर्य्यापथे स्थितिः॥ उपस्पर्शस्त्वाचमनमथ मौनमभाषणम् ३८ प्राचेतसश्चादिकविः स्यान्मैत्रावरुणिश्च सः वाल्मीकिश्चाथ गाधेयो विश्वामित्रश्च कौशिकः ३९ व्यासो द्वैपायनः पाराशर्य्यः सत्यवतीसुतः। आनुपूर्व्वी स्त्रियां वावृत्परिपाटी अनुक्रमः। पर्य्यायश्चातिपातस्तु स्यात्पर्य्यय उपात्ययः ४० नियमो व्रतमस्त्री तच्चोपवासादि पुण्यकम्। औपवस्तन्तूपवासो विवेकः पृथगात्मता ४१

(विदेश में भ्रमण करने के नाम) व्रज्या १ अटा २ अट्या ३ पर्य्यटन ४ ध्यान ५ (मौनादि में टिकने का नाम) चर्य्या १ (आचमन के नाम) उपस्पर्श १ आचमन २ (चुप रहने के नाम) मौन १ अभाषण २ ॥ ३८॥ (वाल्मीकि मुनि के नाम) प्राचेतस १ आदिकवि २ मैत्रावरुणि ३ वल्मीक ४ वाल्मीकि ५ वल्मिकि ६ वल्मीक ७ (विश्वामित्र के नाम) गाधेय १ विश्वामित्र २ कौशिक ३ कौषिक ४॥ ३९॥ (व्यासजी के नाम) व्यास १ द्वैपायन २ पाराशर्य्य ३ सत्यवतीसुत ४ (अनुक्रम के नाम) आनुपूर्वी १ आवृत्त २ परिपाटि ३ परिपाटी ४ अनुक्रम ५ पर्य्याय ६ (अतिक्रम के नाम) अतिपात १ पर्य्यय २ उपात्यय ३॥ ४०॥ (व्रत के नाम) नियम १ व्रत २ (जिसमें उर्द्द प्रहद मसूढ़ी न खाई जाय उसके वा चान्द्रायणादि के भी नाम) औपवस्त १ उपवास २ (प्रकृति पुरुष के भेद जानने अन्य विचार का भी नाम) विवेक १ पृथगात्मता २॥ ४१॥

स्याद्ब्रह्मवर्चसंवृत्ताध्ययनर्द्धिरथांजलिः। पाठे ब्रह्मांजलिः पाठे विप्रुषो ब्रह्मबिन्दवः ४२ ध्यानयोगासने ब्रह्मासनङ्कल्पे विधिक्रमौ। मुख्यः स्यात्प्रथमःकल्पोऽनुकल्पस्तु ततोऽधमः ४३ संस्कारपूर्व्वं ग्रहणं स्यादुपाकरणं श्रुतेः। समे तु पादग्रहणमभिवादनमित्युभे ४४ भिक्षुः परिव्राट् कर्म्मन्दी पाराशर्य्यपि मस्करी। तपस्वी तापसः पारिकांक्षी वाचंयमो मुनिः ४५ तपःक्लेशसहो दान्तो वर्णिनो ब्रह्मचारिणः॥

(सदाचार पालन और वेदाभ्यास करने से जो तेज होता है उसका नाम) ब्रह्मवर्च्चस १ (वेद पढ़ने के समय की अञ्जलि का नाम) ब्रह्माञ्जलि १ (वेद पढ़ने के समय जो मुख से जल छूटता है उसका नाम) ब्रह्मविन्दु १॥ ४२॥ (ध्यान और योग के आसन का नाम) ब्रह्मासन १ (वियोग शास्त्र के नाम) कल्प १ विधि २ क्रम ३ (प्रथम विधि का नाम) मुख्य १ (द्वितीय विधि का नाम) अनुकल्प १॥ ४३॥ (संस्कार पूर्व्वक वेद के सुनने का नाम) उपाकरण १ (नाम गोत्रादि पूछ के प्रणाम करने के नाम) पादग्रहण १ अभिवादन २॥ ४४॥ (संन्यासी के नाम) भिक्षु १ परिव्राट् २ कर्म्मन्दी ३ पाराशरी ४ मस्करी ५ (तपस्वी के नाम) तपस्वी १ तापस २ पारिकांक्षी ३ (मुनि के नाम) वाचंयम १ मुनि २॥ ४५॥ (तपस्या के क्लेश के सहनेवाले के नाम) दान्त १ (ब्रह्मचारी के नाम) वर्णी १ ब्रह्मचारी २॥

ऋषयः सत्यवचसः स्नातकस्त्वाप्लुतव्रती ४६
येनिर्जितेन्द्रियग्रामा यतिनो यतयश्च ते । यस्स्थ-
ण्डिलेव्रतवशाच्छेते स्थाण्डिलशाय्यसौ ४७
स्थाण्डिलश्चाथ विरजस्तमसस्स्युर्द्वयाति-
गाः । पवित्रः प्रयतः पूतः पाखण्डाः सर्वलिङ्गिनः
४८ पालाशो दण्ड आषाढो व्रते राम्भस्तु वैणवः
अस्त्री कमण्डलुः कुण्डी व्रतिनामासनं वृषी
४९ अजिनञ्चर्म कृत्तिः स्त्री भैक्षं भिक्षाकदम्बकम्
स्वाध्यायः स्याज्जपः सुत्याभिषवः सवनञ्च सा ५०

(ऋषि के नाम) ऋषि १ सत्यवचा २ (जो वेद व्रत धारण किये हुये गु-
रु की आज्ञा से स्नान करै उसका नाम) स्नातक १॥४६॥ (जितेन्द्रिय
के नाम) यती १ यति २ (जो व्रत वश हो पृथ्वी पर सोवै उस के नाम)
स्थण्डिलशायी १॥४७॥ स्थाण्डिल २ (रजोगुण तमोगुण र-
हित व्यासादि मुनि के नाम) विरजस्तमाः १ द्वयातिग २ (पवित्र के
नाम) पवित्र १ प्रयत २ पूत ३ (बौद्ध क्षपणकादि दुष्ट शास्त्रवर्त्तियों
का नाम) पाखण्ड १॥४८॥ (ब्रह्मचर्य में पलाश के दण्ड का ना-
म) आषाढ १ (यदि वह बांसका हो तो उसका नाम) राम्भ १ (व्रति
यों के लोटा के नाम) कमण्डलु १ कुण्डी २ यह कण्डी का भी ना-
म है (और उनके आसन का नाम) वृषी १॥४९॥ (मृगादि के चर्म
का नाम) अजिन १ चर्म २ कृत्ति ३ (भीख के ढेर का नाम) भैक्ष १ (वेद
के अभ्यास के नाम) स्वाध्याय १ जप २ (यज्ञोषधी के कूटने के नाम)
सुत्या १ अभिषव २ सवन ३॥५०॥

सर्वैनसामपध्वंसिजप्यन्त्रिष्वघमर्षणम्। दर्शश्चपौर्णमासश्चयागौपक्षान्तयोःपृथक् ५१ शरीरसाधनापेक्षन्नित्यंयत्कर्म्मतद्यमः। नियमस्तुसयत्कर्म्मनित्यमागन्तुसाधनम् ५२ क्षौरन्तुभद्रकरणम्मुण्डनम्वपनन्त्रिषु। उपवीतंब्रह्मसूत्रंप्रोद्धृतेदक्षिणेकरे। प्राचीनावीतमन्यस्मिन्निवीतङ्कण्ठलम्बितम् ५३ अंगुल्यग्रेतीर्त्थंदैवंस्वल्पांगुल्योर्म्मूलेकायं। मध्येंगुष्ठांगुल्योःपित्र्यंमूलेत्वंगुष्ठस्यब्राह्मम् ५४

(सब पाप के नाश करने वाले मंत्र का नाम) अघमर्षण १ (अमावस के दिन के यज्ञ का नाम) दर्श १ (पौर्णमासी के दिन के यज्ञ का नाम) पौर्णमास १॥ ५१॥ (अहिंसा सत्य चोरी करना ब्रह्मचर्य्य परिग्रह लेना इन का नाम) यम १ (शौच सन्तोष तप स्वाध्याय ईश्वर प्रणिधान इन का नाम) नियम १॥ ५२॥ (बार बनवाने के नाम) क्षौर १ भद्रकरण २ मुण्डन ३ वपन ४ (बांये कांधे के जनेऊ के नाम) उपवीत १ ब्रह्मसूत्र २ (दहिने कांधे पर रहने वाले का नाम) प्राचीनावीत १ (माला कार यज्ञोपवीत पहिरने का नाम) निवीत १॥ ५३॥ अंगुलियों के आगे देवतीर्त्थ होता है इसी से देवताओं का तर्प्पण अंगुलियों के आगे से किया जाता है अनामिका कनिष्ठा के मूल में प्रजापति तीर्त्थ अंगुष्ठा तर्ज्जनी के बीच में पितरों का तीर्त्थ होता है अंगूठा की जड़ में ब्राह्म तीर्त्थ होता है॥
॥ ५४॥

स्याद्ब्रह्मभूयं ब्रह्मत्वं ब्रह्मसायुज्यमित्यपि। दे-
वभूयादिकन्तद्वत्कृच्छ्रं सांतपनादिकम् ५५ सं-
न्यासवत्यनशने पुमान्प्रायोऽथ वीरहा। नष्टा-
ग्निः कुहना लोभान्मिथ्येर्य्यापथकल्पना ५६
व्रात्यः संस्कारहीनस्स्यादस्वाध्यायो निराकृतिः।
धर्म्मध्वजी लिङ्गवृत्तिरवकीर्णी क्षतव्रतः ५७
सुप्ते यस्मिन्नस्तमेति सुप्ते यस्मिन्नुदेति च। अंशु-
मानभिनिर्म्मुक्ताभ्युदितौ च यथाक्रमम् ५८ प-
रिवेत्ताऽनुजोऽनूढे ज्येष्ठे दारपरिग्रहात्॥

(ब्रह्म में मिल जाने के नाम) ब्रह्मभूय १ ब्रह्मत्व २ ब्रह्मसायुज्य ३ (देव में मिलने के नाम) देवभूय १ देवत्व २ देवसायुज्य ३ (गोमूत्र गोबर दूध दही घी कुशोदक इन का भक्षण करने और एक रात्रि के उपवास का नाम) कृच्छ्र १॥ ५५॥ (संन्यास पूर्व्वक भोजन त्याग का नाम) प्राय १ (जिस तपस्वी का अग्नि बुझ गया हो उसके नाम) वीरहा १ नष्टाग्नि २ (दम्भ से ध्यानादि करने के नाम) कुहना १॥ ५६॥ (जिस ब्राह्मण का गौण काल में भी यज्ञोपवीत न हुआ हो उस का नाम) व्रात्य १ (वेदाभ्यास रहित का नाम) निराकृत १ (बहुरूपिया ब्राह्मण के नाम) धर्म्मध्वजी १ लिंगवृत्ति २ (जिसका ब्रह्मचर्य्य नष्ट होगया हो उसके नाम) अवकीर्णी १ क्षतव्रत २॥ ५७॥ (सायं सन्ध्या में सोने वाले का नाम) अभिनिर्म्मुक्त १ (प्रातः काल की संध्या में सोने वाले का नाम) अभ्युदित १॥ ५८॥ (जिस का बड़ा भाई न ब्याहा गया हो प्रथम छोटा ब्याहा जाय तो उस छोटे का नाम) परिवेत्ता १॥

परिवित्तिस्तु तस्यास्मिन् विवाहोपयमौ समौ ५९ तथा परिणयोद्वाहोपयामाः पाणिपीडनम् । व्यवायो ग्राम्यधर्म्मो मैथुनं निधुवनं रतम् ६० त्रिवर्गो धर्म्मकामार्थैश्चतुर्व्वर्गः समोक्षकैः । सबलैस्तैश्चतुर्भद्रं जन्याः स्निग्धा वरस्य ये ६१ इति ब्रह्मवर्गः

मूर्द्धाभिषिक्तो राजन्यो बाहुजः क्षत्रियो विराट् । राजा राट् पार्थिवक्ष्माभृन्नृपभूपमहीक्षितः १ राजा तु प्रणताशेषसामन्तः स्यादधीश्वरः । चक्रवर्त्ती सार्व्वभौमो नृपोऽन्यो मण्डलेश्वरः २

(और उस बड़े का नाम) परिवित्ति १ (विवाह के नाम) विवाह १ उपयम २ ॥ ५९ ॥ परिणाय ३ उद्वाह ४ उपयाम ५ पाणिपीडन ६ (मैथुन के नाम) व्यवाय १ ग्राम्यधर्म्म २ मैथुन ३ निधुवन ४ रत ५ ॥ ६० ॥ (वेदविहित यज्ञादि पथ्य विधि स्त्री सेवन न्याय से धनोपार्ज्जन इन का नाम) त्रिवर्ग १ (और मोक्ष करके युक्त हों तो) चतुर्व्वर्ग १ (और वे धर्म्मादि सबल हों तो) चतुर्भद्र १ (बराती या वर की हमजोली वाले का नाम) जन्य १ ॥ ६१ ॥ इति ब्रह्मवर्गः ॥

(क्षत्रिय के नाम) मूर्द्धाभिषिक्त १ राजन्य २ बाहुज ३ क्षत्रिय ४ विराट ५ ॥ (राजा के नाम) राजा १ राट २ पार्त्थिव ३ क्ष्मा भृत ४ क्ष्मा भुक् ५ नृप ६ भूप ७ महीक्षित ८ ॥ २ ॥ (जो बहुत राजाओं का मालिक हो उसका नाम) अधीश्वर १ (समुद्र पर्य्यन्त जिसका राज्य हो उसके नाम) चक्रवर्त्ती १ सार्व्वभौम २ (४०००० कोश के राजा का नाम) मण्डलेश्वर १ ॥ २ ॥

येनेष्टं राजसूयेन मण्डलस्येश्वरश्च यः। शास्ति यश्चाज्ञया राज्ञः स सम्राडथ राजकम् ३ राजन्यकञ्च नृपतिक्षत्रियाणाङ्गणे क्रमात्। मन्त्री धीसचिवोमात्योऽन्ये कर्मसचिवास्ततः ४ महामात्राः प्रधानानि पुरोधास्तु पुरोहितः। द्रष्टरि व्यवहाराणाम्प्राड्विवाकाक्षदर्शकौ ५ प्रतीहारे द्वारपालद्वाःस्थद्वाःस्थितदर्शकाः। रक्षिवर्गस्त्वनीकस्थोथाध्यक्षाधिकृतौ समौ ६ स्यायुकोऽधिकृतो ग्रामे गोपो ग्रामेषु भूरिषु। भौरिकः कनकाध्यक्षो रूप्याध्यक्षस्तु नैष्किकः ७

(वही मण्डलेश्वर राजसूय यज्ञ किये हो और सब राजाओं का शिक्षक हो तो उसका नाम) सम्राट् १ (राजाओं के गण का नाम) राजक १॥३॥ (क्षत्रियों के गण का नाम) राजन्यक १ (मंत्री के नाम) मंत्री १ धीसचिव २ अमात्य ३ (मंत्री से छोटे अन्य मुसाहिबों का नाम) कर्मसचिव १॥४॥ (मुख्य मंत्री के नाम) महामात्र १ प्रधान २ (पुरोहित के नाम) पुरोधाः १ पुरोहित २ (पञ्च न्यायाधीश के नाम) प्राड्विवाक १ अक्षदर्शक २॥५॥ (द्वारपाल के नाम) प्रतीहार १ द्वारपाल २ द्वाःस्थ ३ द्वाःस्थित ४ दर्शक (रखवारे के नाम) रक्षिवर्ग १ अनीकस्थ २ (अधिकारी के नाम) अध्यक्ष १ अधिकृत २॥ ६॥ (एक ग्राम के ठेकेदार का नाम) स्यायुक १ (बहुत गावों के ठेकेदार का नाम) गोप १ (सोने के अधिकारी के नाम) भौरिक १ कनकाध्यक्ष २ (रूपयों के खजाने का मालिक) रूप्याध्यक्ष १ नैष्किक २॥७॥

अन्नः पुरेत्वधिकृतःस्यादन्तर्वंशिकोजनः। सौ-
विदल्लाःकञ्चुकिनःस्थापत्यास्सौविदाश्चते।
८ षराडो वर्षवरस्तुल्यौ सेवकार्थ्यनुजीविनः।
विषयानन्तरोराजा शत्रुर्मित्रमतःपरम् ९ उदा
सीनःपरतरःपार्ष्णिग्राहस्तु पृष्ठतः। रिपौवैरिस
पत्नारिद्विषद्वेषणदुर्हृदः १० द्विड्विपक्षाहिता-
मित्रदस्युशात्रवशात्रवः। अभिघातिपरारातिप्र-
त्यर्थिपरिपन्थिनः ११ वयस्यःस्निग्धःसव
याः अथमित्रं सखासुहृत ॥

(जो जनाने की वस्तुओं का अधिकारी हो उसका नाम) अन्तर्वंशि-
क १ (राजा वा राजस्त्रियों के निकट जो वेत लिये हुये रहते हैं उनके
नाम) सौविदल्ल १ कंचुकी २ स्थापत्य ३ सौविद ४॥ ८॥ (खोजा के
नाम) षराड १ वर्षवर २ (सेवक वा नौकर के नाम) सेवक १ अर्थी
२ अनुजीवी ३ (अपने डांडे वाले राजा का नाम) शत्रु १ (उससे अ-
न्य राजा का नाम) मित्र १॥ ९॥ (इन शत्रु मित्रों से पर अन्य राजा
ओं का नाम) उदासीन १ (जो अपने राज्य के पीछे राजा हो वह) पा-
र्ष्णिग्राह १ (वैरी के नाम) रिपु १ वैरी २ सपत्न ३ अरि ४ द्विष ५
द्वेषण ६ दुर्हृत ७॥ १०॥ द्विट ८ विपक्ष ९ अहित १० अमित्र ११
दस्यु १२ शात्रव १३ शत्रु १४ अभिघाती १५ पर १६ अराति १७
प्रत्यर्थी १८ परिपन्थी १९॥ ११॥ (हमजोली वाले के नाम) वय
स्य १ स्निग्ध २ सवया ३ (मित्र के नाम) मित्र १ सखा २ सुहृत् ३॥

सख्यं साप्तपदीनं स्यादनुरोधोऽनुवर्त्तनम् १२
यथार्हवर्णः प्रणिधिरपसर्प्पश्चरः स्पशः।
चारश्च गूढपुरुषश्चाप्तप्रत्ययितौ समौ १३
सांवत्सरो ज्यौतिषिको दैवज्ञगणकावपि।
स्युर्मौहूर्त्तिकमौहूर्त्तज्ञानिकार्त्तान्तिका अपि १४ तान्त्रिको ज्ञातसिद्धान्तः सत्री गृहपतिस्समौ। लिपिकारोऽक्षरचणोऽक्षरचञ्चुश्च लेखके १५ लिखिताक्षरविन्यासे लिपिर्लिबिरुभे स्त्रियौ। स्यात्सन्देशहरो दूतो दूत्यन्तद्भावकर्म्मणि १६

(सिताई के नाम) सख्य १ साप्तपदीन २ (भला मनाने के नाम) अनुरोध १ अनुवर्त्तन २॥ १२॥ (जासूस वा हरिकारा के नाम) यथार्हवर्ण १ प्रणिधि २ अपसर्प्प ३ चर ४ स्पश ५ चार ६ गूढपुरुष ७ (मोतिबर विश्वासी के नाम) आप्त १ प्रत्ययित २॥ १३॥ (ज्योतिषी पण्डित के नाम) सांवत्सर १ ज्योतिषिक २ दैवज्ञ ३ गणक ४ मौहूर्त्तिक ५ मौहूर्त्त ६ ज्ञानी ७ कार्त्तान्तिक ८॥ १४॥ (शास्त्री के नाम) तान्त्रिक १ ज्ञातसिद्धान्त २ (मोदी के नाम) सत्री १ गृहपति २ (लेखक के नाम) लिपिकर १ लिबिकर २ लिबिकार ३ लिपिकार ४ लिबिङ्कर ५ अक्षरचण ६ अक्षरचंचु ७ लेखक ८॥ १५॥ (लिखे हुये के नाम) लिपि १ लिबि २ लिखित ३ अक्षरविन्यास ४ (दूत वा पठवनियां के नाम) संदेशहर १ दूत २ (दुताई के नाम) दूत्य १ दौत्य २॥ १६॥

अध्वनीनोध्वगोध्वन्यः पान्थः पथिकइत्यपि।
स्वाम्यमात्यसुहृत्कोषराष्ट्रदुर्गबलानिच २७
राज्याङ्गानि प्रकृतयः पौराणांश्रेणयोऽपिच।
सन्धिर्नाविग्रहोयानमासनन्द्वैधमाश्रयः २८
षड्गुणाः शक्तयस्तिस्त्रः प्रभावोत्साहमन्त्रजाः
क्षयस्थानञ्चवृद्धिश्च त्रिवर्गोनीतिवेदिना
म् २९ सप्रतापःप्रभावश्चयत्तेजःकोशदण्ड
जम्। सामदानेभेददण्डावित्युपायचतुष्टय-
म् ३० ॥

(राही के नाम) अध्वनीन १ अध्वग २ अध्वन्य ३ पान्थ ४ पथिक ५।
(स्वामी राजा अमात्य मन्त्री सुहृत् मित्र कोश खजाना राष्ट्र देशकी भूमि दुर्ग दुर्गमस्थान बल फौज इन सबके नाम) ॥ २७ ॥ राज्यांग १ प्रकृति २ पौरश्रेणि ३ (सुवर्णादि देके शत्रु के मिलाने का नाम) सन्धि १ (पर राज्य के लूट फूंक देने का नाम) विग्रह १ (शत्रु के ऊपर चढ़ जाने का नाम) यान १ (शत्रु बलवान् देख के किला आदि में बैठ रहना) आसन १ (बलवान् शत्रु से मिल जाना निर्बल को मारना) द्वैध १ (शत्रु से पीडित होके किसी बलवान् के पीछे लुकना) आश्रय १ ॥ २८ ॥ (सन्ध्यादि को का नाम) षड्गुण १ (राजा की शक्तियों के नाम) प्रभाव १ उत्साह २ मन्त्रज ३।
(नीति शास्त्रोक्त क्षय स्थान वृद्धि का नाम) त्रिवर्ग १ ॥ २९ ॥
(प्रभाव के नाम) प्रताप १ प्रभाव २ (राजा के चारों उपायों के नाम) साम १ दान २ भेद ३ दण्ड ४ ॥ ३० ॥

साहसन्तु दमो दण्डः साम सान्त्वमथो समौ। भे-
दोपजापावुपधा धर्म्माद्यैर्यत्परीक्षणम् २१
पञ्च त्रिष्वषडक्षीणो यस्तृतीयाद्यगोचरः। वि-
विक्तविजनच्छन्ननिःशलाकास्तथा रहः २२
रहश्चोपांशु चालिङ्गे रहस्यं तद्भवे त्रिषु। समौ
विस्रम्भविश्वासौ भ्रेषो भ्रंशो यथोचितात् २३
अभ्रेषन्यायकल्पास्तु देशरूपं समञ्जसम्। यु-
क्तमौपयिकं लभ्यं भजमानाभिनीतवत् २४
न्याय्यञ्च त्रिषु षट् सम्प्रधारणा तु समर्थनम्।
अववादस्तु निर्देशो निदेशः शासनञ्च सः २५

(दण्ड देने के नाम) साहस १ दम २ दण्ड ३ (सलूक करने के नाम) साम १ सान्त्व २ (फरक डालने के नाम) भेद १ उपजाप २ (धर्मा द्यादि के परखने का नाम) उपधा १॥ २१॥ (दो जनों की सलाह का नाम) अषडक्षीण १ (एकान्त के नाम) विविक्त १ विजन २ छन्न ३ निश्शलाक ४ रहः ५॥ २२॥ उपांशु ६ (एकान्त की बात वा कर्म्म का नाम) रहस्य १ (विश्वास वा इतिवार के नाम) विस्रम्भ १ निश्वास २ विश्रम्भ ३ (अन्याय का नाम) भ्रेष १॥ २३॥ (निश्चाव के नाम) अभ्रेष १ न्याय २ कल्प ३ देशरूप ४ समञ्जस ५ (न्याय से जो वसूली जावे उसके नाम) युक्त १ औपयिक २ लभ्य ३ भजमान ४ अभिनीत ५॥ २४॥ न्याय्य ६ (ठीक जबून के परखने के नाम) सम्प्रधारणा १ समर्थन २ (आज्ञा हुक्म के नाम) अववाद १ निर्देश २ निदेश ३ शासन ४॥ २५॥

शिष्टिश्चाज्ञा च संस्था तु मर्य्यादा धारणा स्थितिः
आगोऽपराधो मन्तुश्च समे तूद्दानबन्धने २६ द्वि-
पाद्यो द्विगुणो दण्डो भागधेयः करो बलिः। घ-
ट्टादिदेयं शुल्कोऽस्त्री प्राभृतन्तु प्रदेशनम् २७ उपा-
यनमुपग्राह्यमुपहारस्तथोपदा। यौतकादि तु
यद्देयं सुदायो हरणञ्च तत् २८ तत्कालस्तु
तदात्वं स्यादुत्तरः काल आयतिः। सान्दृष्टि-
कं फलं सद्य उदर्कः फलमुत्तरम् २९ अदृष्टं
वह्नितोयादि दृष्टं स्वपरचक्रजम्। महीभुजाम-
हिभयं स्वपक्षप्रभवम्भयम् ३०

शिष्टि ४ आज्ञा ६ (मर्य्याद के नाम) संस्था १ मर्य्यादा २ धारणा ३ स्थि-
ति ४ (अपराध के नाम) आगः १ अपराध २ मन्तु ३ (बाँधने के नाम)
उद्दान १ बन्धन २॥ २६॥ (दूने दण्ड का नाम) द्विपाद्य १ (पोत के ना-
म) भागधेय १ कर २ बलि ३ (जगाति वा कौड़ी का नाम) शुल्क १ (भें-
ट वा नज़रि के नाम) प्राभृत १ प्रदेशन २॥ २७॥ उपायन ३ उपग्राह्य ४
उपहार ५ उपदा ६ (दहेज वा भाई बन्धु के देने की वस्तु का नाम) सुदाय १
हरण २ (केवल कन्या दान में वा व्रत भिक्षा में देने के नाम) यौतक १
यौतुक २॥ २८॥ (इसी समय वर्त्तमान समय के नाम) तत्काल १ तदा-
त्व २ (आने वाले समय का नाम) आयति १ (तुरन्त के फल का नाम) सा-
न्दृष्टिक १ (आगे जो होवैया है उसका नाम) उदर्क १॥ २९॥ (आगि ला-
गने और अति वृष्टि होने के उत्पात का नाम) अदृष्ट १ (अपने वा परा-
ये राज्य से चौरादि के भय का नाम) दृष्ट १ (अपने सहायक से भय का नाम)
अहिभय १॥ ३०॥

प्रक्रियात्वधिकारस्स्याच्चामरन्तु प्रकीर्णकम्।
नृपासनं यत्तद्भद्रासनं सिंहासनन्तु तत् ३१ हे-
मं छत्रं त्वातपत्रं राज्ञस्तु नृपलक्ष्म तत्। भद्रकु-
म्भः पूर्णकुम्भो भृङ्गारः कनकालुका ३२ नि-
वेशः शिबिरं षण्डे सज्जनन्तूपरक्षणम्। ह-
स्त्यश्वरथपादातं सेनाङ्गं स्याच्चतुष्टयम् ३३
दन्ती दन्तावलो हस्ती द्विरदोऽनेकपो द्विपः। म-
तङ्गजो गजो नागः कुंजरो वारणः करी ३४

(कानून चलाने के नाम) प्रक्रिया १ अधिकार २ (चँवर के ना-
म) चामर १ चमर २ प्रकीर्णक ३ (मणि आदि से बनी हुई रा-
ज गद्दी के नाम) नृपासन १ भद्रासन २ (कदाचित् वही राजा
के बैठने का स्थान सोने से बना हो तो उसका नाम) सिंहास-
न १॥ ३१॥ (छतुरी के नाम) छत्र १ आतपत्र २ (राजा की छ-
तुरी का नाम) नृपलक्ष्म १ (भरे घड़ा के नाम) भद्रकुम्भ १ पू-
र्णकुम्भ २ (झारी के नाम) भृंगार १ कनकालुका २॥ ३२॥
(आगन्तुक फौज के परनेके स्थानके वा डेरा के नाम) नि-
वेश १ शिबिर २ (पहरावा गस्त घूमने के नाम) सज्ज-
न १ उपरक्षण २ (हाथी घोड़ा रथ सिपाही इन सब
का नाम) सेनांग १॥ ३३॥ (हाथी के नाम) दन्ती १ दन्ता-
वल २ हस्ती ३ द्विरद ४ अनेकप ५ द्विप ६ मतंगज ७
गज ८ नाग ९ कुञ्जर १० वारण ११ करी १२॥ ३४॥

इभस्तम्बेरमः पद्मी यूथनाथस्तु यूथपः। मदोत्कटो मदकलः कलभः करिशावकः ३५ प्रभिन्नो गर्ज्जितो मत्तः समावुद्वान्तनिर्म्मदौ। हास्तिकङ्गजता वृन्दे करिणी धेनुका वशा ३६ गण्डः कटो मदो दानम्वमथुः करसीकरः। कुम्भौ तु पिण्डौ शिरसस्तयोर्म्मध्ये विदुः पुमान् ३७ अवग्रहो ललाटं स्यादीषिका त्वक्षिकूटकम्। अपाङ्गदेशो निर्य्याणं कर्णमूलन्तु चूलिका ३८

इभ १३ स्तम्बेरम १४ पद्मी १५ (हाथियों के मालिक बड़े हाथी के नाम) यूथनाथ १ यूथप २ (मदान्ध हाथी के नाम) मदोत्कट १ मदकल २ (हाथी के बच्चे के नाम) कलभ १ करभ २ करिशावक ३॥ ३५॥ (जिसके मद बहता हो उस हाथी के नाम) प्रभिन्न १ गर्ज्जित २ मत्त ३ (बे मद वाले के नाम) उद्वान्त १ निर्म्मद २ (हाथियों के झुण्ड के नाम) हास्तिक १ गजता २ (हथिनी के नाम) करिणी १ धेनुका २ वशा ३॥ ३६॥ (हाथी के गाल का नाम) कट १ (हाथी के मद के नाम) दान १ मद २ (हाथी के सूंड़ में पानी निकलने के नाम) वमथु १ करसीकर २ (हाथी के मस्तक के मांस का नाम) कुम्भ १ (दोनों कुम्भों के मध्य में जो खाली होता है उस का नाम) विन्दु १॥ ३७॥ हाथी के लिलार के नाम) अवग्रह १ अवग्राह २ (उसके नेत्रों की गोलाई के नाम) ईषिका १ अक्षिकूटक २ (उसके निहारने का नाम) निर्य्याण १ (उस के जहां से कान जमते हैं उस का नाम) चूलिका १॥ ३८॥

अधः कुम्भस्य वाहित्थं प्रतिमानमधोऽस्य यत्।
आसनं स्कन्धदेशः स्यात्पद्मकं बिन्दुजालकम्
३९ पार्श्वभागः पक्षभागो दन्तभागस्तु योऽग्रतः।
द्वौ पूर्वपश्चाज्जङ्घादिदेशौ गात्रावरे क्रमात् ४०
तोत्रम्वेणुकमालानम्बन्धस्तम्भेऽथ शृङ्खले।
अन्दुको निगडोऽस्त्री स्यादङ्कुशोऽस्त्री सृणिः स्त्रि-
याम् ४१ दूष्या कक्ष्या वरत्रा स्यात्कल्पना सज्ज-
ना समे। प्रवेण्यास्तरणम्वर्णः परिस्तोमः कु-
थो द्वयोः ४२

(उसके सिरके नीचे का नाम) वाहित्थ १(वाहित्थ के नीचे का नाम) प्रतिमान १ (इस के कन्धा का नाम) आसन १(उसके बिन्दुओं का नाम) पद्मक १॥ ३९॥ (हाथी की बगल का नाम) पक्षभाग १( उस के आगे के भाग का नाम) दन्तभाग १(उसके आगे के जंघादि भाग का नाम) गात्र १(पीछे के भाग का नाम) अवर १॥ ४०॥ (चाबुक की डांडी के नाम) तोत्र १ वैणुक २ वेणुक ३ (हाथी के खूंटा का नाम) आलान १ (हाथी की जंजीर के नाम) शृंखल १ अन्दुक २ निगड़ ३ (आंगुस के नाम) अंकुश १ सृणि २ सृणि ३॥ ४१॥ (उसके कमर बांधने की रस्सी के नाम) दूष्या १ कक्ष्या २ वरत्रा ३ (मालिक के चढ़ने के वास्ते उसे तैयार करने के नाम) कल्पना १ सज्जना २ (गद्दी वा झूल के नाम) प्रवेणी १ आस्तरण २ वर्ण ३ परिस्तोम ४ कुथ ५ कुथा ६॥
॥४२॥ ४२॥

वीतन्त्वसारं हस्त्यश्वं वारी तु गजबन्धनी। घोट-केवीतितुरगतुरङ्गाश्वतुरङ्गमाः ४३ वाजिवाह-र्वगन्धर्व्वहयसैन्धवसप्तयः। आजानेयाः कु-लीनास्स्युर्व्विनीतास्साधुवाहिनः ४४ वना-युजाः पारसीकाः काम्बोजावाह्लिकाहयाः। य-युरश्वोऽश्वमेधीयो जवनस्तु जवाधिकः ४५ पृ-ष्ठ्यः स्थौरी सितः कर्कोरथ्यो वोढा रथस्य यः। बा-लः किशोरो वाम्यश्वा वडवा वाडवं गणे ४६

(हाथी घोड़े के नाम) वीत १ (जिस भूमि में हाथी बांधे जांय उस का नाम) वारी १ (घोड़े के नाम) घोटक १ घोट २ वीति ३ पीति ४ तुरग ५ तुरंग ६ अश्व ७ तुरंगम ८॥ ४३॥ वाजी ९ बाह १० अर्वा ११ गन्ध-र्व्व १२ हय १३ सैन्धव १४ सप्ति १५ (कुलीन घोड़े का नाम) आजाने-य १ (सीखे हुये घोड़े का नाम) विनीत १॥ ४४॥ (वनायु देशोत्प-न्न घोड़े का नाम) वनायुज १ (पारस देश वाले के नाम) पारसीक १ काम्बोज २ (काबुली घोड़े का नाम) वाह्लिक १ बाह्लीक २ (जि-स का एक कान काला हो अन्य सर्वांग उज्ज्वल हो उस का नाम) ययु १ (वेग चलने वाले का नाम) जवन १॥ ४५॥ (लदुआ घोड़े का नाम) पृष्ठ्य १ स्थौरी २ (उजले घोड़े का नाम) कर्क १ (रथ में चलने वाले का नाम) रथ्य १ (बछेड़ा का नाम) कि-शोर १ (घोड़ी के नाम) वामी १ अश्वा २ वडवा ३ (घोड़ी के झुण्ड का नाम) वाडव १॥ ४६॥

त्विध्वाश्वीनं यदश्वेन दिनेनैकेन गम्यते। कश्यन्तु मध्यमश्वानां हेषा ह्रेषा च निस्वनः ४७ निगाल-स्तु गलोद्देशो वृन्दे त्वश्वीयमाश्ववत्। आस्क-न्दितं धौरितकं रेचितं वल्गितं प्लुतम् ४८ गत-योऽमूः पञ्च धारा घोणा तु प्रोथमस्त्रियाम्। कवि-का तु खलीनोऽस्त्री शफं क्लीबे खुरः पुमान् ४९ पुच्छोऽस्त्री लूमलाङ्गूले वालहस्तश्च वालधिः। त्रिषूपावृत्तलुठितौ परावृत्ते मुहुर्भुवि ५० याने चक्रिणि युद्धार्थे शताङ्गः स्यन्दनो रथः। असौ पुष्यरथश्चक्रयानन्न समराय यत् ५१

(घोड़े की एक मैंजलि का नाम) आश्वीन १ (घोड़े की बीच देही का नाम) कश्य १ (हिन हिनाने के नाम) हेषा १ ह्रेषा २॥ ४७॥ (घोड़े के गल का नाम) निगाल १ (उन के झुण्ड के नाम) अश्वीय १ आ श्व २ (आस्कन्दित धौरितक रेचित वल्गित प्लुत इन पांचों चालों का नाम) धारा १ आस्कन्दित सर्प्पट धौरितक दोड़ जाना रेचित दुलकी वल्गित उछाल प्लुत कावा (घोड़े की नाक का नाम) प्रोथ १ (लगाम के नाम) कविका १ खलीन २ खलिन ३ (टाप के नाम) शफ १ खुर २ क्षुर ३॥ ४९॥ (पूंछि के नाम) पुच्छ १ लूम २ लांगूल ३ लांगुल ४ (बाल युक्त पूंछि के नाम) बालहस्त १ बालधि २ (लोटने के नाम) उपावृत्त १ लुठित २॥ ५०॥ (लड़ाई में चढ़ने वाले रथ के नाम) शतांग १ स्यन्दन २ रथ ३ (सामान्य रथ का नाम) पुष्परथ १॥ ५१॥

कर्णीरथः प्रवहणंडयनन्तु समन्त्रयम् ।
क्लीवेनः शाकटोऽस्त्री स्याद्गन्त्री कम्बलिवाह्य-
कम् ५२ शिविकायाप्ययानंस्याद्दोलाप्रेङ्खा-
दिकास्त्रियाम् । उभौ तु द्वैपवैयाघ्रौ द्वीपिचर्म्मावृ-
तेरथे ५३ पाण्डुकम्बलसम्वीतः स्यन्दनः पाण्डु-
कम्बली । रथेकाम्बलवास्त्राद्याः कम्बलादिभि-
रावृते ५४ त्रिषुद्वैपादयोरथ्यारथकट्यारथव्रजे ।
धूःस्त्री क्लीवेयानमुखं स्याद्रथाङ्गमपस्करः ५५
चक्रं रथाङ्गं तस्यान्ते नेमिस्त्री स्यात्प्रधिः पुमान् ।
पिण्डिकानाभिरक्षाग्रकीलके तु द्वयोरणिः ५६

(घोड़ी लम्बी अथवा गाड़ी के नाम) कर्णीरथ१ प्रवहण२ डयन३ हय-
न४ (छकड़े के नाम) अनः१ शाकट२ (गाड़ी के नाम) गन्त्री१ गान्त्री२
॥५२॥ (पालकी के नाम) शिविका१ याप्ययान२ (डोली वा हिंडोले
के नाम) दोला१ दोली२ प्रेंखा३ (जिस रथ पर बाघ के चमड़ा का व-
ह्वार हो उसके नाम) द्वैप१ वैयाघ्र२ ॥५३॥ (पीले रंग के कम्बल के च-
ह्वारेवाले का नाम) पाण्डुकम्बली१ (कम्बल के चह्वार वाले का ना-
म) काम्बल१ (वस्त्र वाले का नाम) वास्त्र१ (दुकूल वाले का ना-
म) दौकूल१ ऐसेही और भी जानो ॥५४॥ (रथ के समूह के नाम)
रथ्या१ रथकट्या२ (धुरी के नाम) धूः१ यानमुख२ (तांगा के
नाम) रथाङ्ग१ अपस्कर२ ॥५५॥ (पहिया के नाम) चक्र१ रथां-
ग२ (पुट्ठी के नाम) नेमि१ नेमी२ प्रधि३ (नाह के नाम) पिण्डिका
१ नाभि२ पिण्डी३ नाभी४ (कुला वा का नाम) अणि१ ॥५६॥

रथगुप्तिर्वरूथोना कूबरस्तु युगन्धरः। अनुकर्षो दार्व्वधस्थं प्रासङ्गोना युगाद्युगः ५७ सर्व्वं स्याद्वाहनं यानं युग्यम्पत्रञ्च धोरणम्। परम्परावाहनं यत्तद्वैनीतकमस्त्रियाम् ५८ आधोरणा हस्तिपका हस्त्यारोहा निषादिनः। नियन्ता प्राजिता यन्ता सूतः क्षत्ता च सारथिः ५९ सव्येष्ठृदक्षिणस्थौ च संज्ञा रथकुटुम्बिनः। रथिनः स्यन्दनारोहा अश्वारोहास्तु सादिनः ६० भटा योधाश्च योद्धारः सेनारक्षास्तु सैनिकाः। सेनायां समवेता ये सैन्यास्ते सैनिकाश्च ते ६१

(लोहनिर्म्मित रथके वहार के नाम) रथगुप्ति १ वरूथ २ (वकी-रा के नाम) कूबर १ युगन्धर २ (लगुन का नाम) अनुकर्ष १ (जु-आ के नाम) प्रासंग १ युग २ ॥ ५७ ॥ (सवारी के नाम) वाहन १ यान २ युग्य ३ पत्र ४ धोरण ५ (कहार आदि वाहनों का नाम) वैनीतक १ ॥ ५८ ॥ (हथिवाल वा महावत के नाम) आधोरण १ हस्तिपक २ हस्त्यारोह ३ निषादी ४ (रथादि के हांकने वाले गाड़ीवान् बहलवान् इत्यादि के नाम) नियन्ता १ प्राजिता २ यन्ता ३ सूत ४ क्षत्ता ५ सारथि ६ ॥ ५९ ॥ सव्येष्ठ ७ दक्षिणस्थ ८ (रथपर चढ़के लड़ने वालों के नाम) रथी १ स्यन्दनारोह २ (सवार के नाम) अश्वारोह १ सादी २ (लड़ने वाले के नाम) भट १ योध २ योद्धा ३ (गश्त घूमने वाले पहरा देने वालों के नाम) सेनारक्ष १ सैनिक २ (फौज भर के नाम) सैन्य १ सैनिक २ ॥ ६१ ॥

बलिनो ये सहस्रेण साहस्रास्ते सहस्रिणः। परिधिस्थः परिचरः सेनानीर्वाहिनीपतिः ६२ कञ्चुको वारवाणोऽस्त्री यत्तु मध्ये सकञ्चुकाः। बध्नन्ति तत्सारसनमधिकाङ्गोऽथ शीर्षकम् ६३ शीर्षण्यञ्च शिरस्त्रेऽथ तनुत्रम्वर्म्म दंशनम्। उरश्छदः कङ्कटको जगरः कवचोऽस्त्रियाम् ६४ आमुक्तः प्रतिमुक्तश्च पिनद्धश्चापिनद्धवत्। संनद्धो वर्म्मितः सज्जो दंशितो व्यूढकङ्कटः ६५ त्रिष्वामुक्तादयो वर्म्मभृतां कावचिकङ्गणे। पदातिपत्तिपदगपादातिकपदातयः ६६

(हज़ार सिपाहों के मालिक के नाम) साहस्र १ सहस्री २ (जो फौज रखवाने के लिये चारों ओर घूमता रहै उसके नाम) परिधिस्थ १ परिचर २ (फौज के मालिक के नाम) सेनानी १ वाहिनीपति २ ॥ ६२ ॥ (बखतर के नाम) कञ्चुक १ वारवाण २ (इन्है पहिन के जो कमर पट्टी बांधते हैं उस के नाम) सारसन १ अधिकाङ्ग २ (टोप के नाम) शीर्षक १ ॥ ६३ ॥ शीर्षण्य २ शिरस्त्र ३ (कवच के नाम) तनुत्र १ वर्म्म २ दंशन ३ उरश्छद ४ कङ्कटक ५ जगर ६ जागर ७ कवच ८ ॥ ६४ ॥ (झिलिमादि पहिने हुये के नाम) आमुक्त १ प्रतिमुक्त २ पिनद्ध ३ अपिनद्ध ४ (मंत्रादि कवच धारण किये हुये के नाम) संनद्ध १ वर्म्मित २ सज्ज ३ दंशित ४ व्यूढकङ्कटक ५ ॥ ६५ ॥ (कवच धारण करने वालों के समूह का नाम) कावचिक १ (पियादा वा पैदल के नाम) पदाति १ पत्ति २ पदग ३ पादातिक ४ पदाति ५ ॥ ६६

पङ्क्त्यश्च परिकश्चाथ पादातम्पत्तिसंहतिः। शा-
स्त्राजीवे काण्डपृष्ठायुधीया युधिकास्समाः ६७
कृतहस्तः सुप्रयोगविशिखः कृतपुङ्खवत्। अ-
पराद्धपृषत्कोसौ लक्ष्याद्यश्च्युतसायकः ६८
धन्वी धनुष्मान्धानुष्को निषंग्यस्त्री धनुर्द्धरः।
स्यात्काण्डवांस्तु काण्डीरः शाक्तीकः शक्ति-
हेतिकः ६९ याष्टीकपारश्वधिकौ यष्टिपार्श्व-
धहेतिकौ। नैस्त्रिंशिको सिहेतिः स्यात्समौ प्रा-
सिककौन्तिकौ ७०

पङ्क्ति पदिक ७ (पैदरों के झुराड का नाम) पादात १ (जो हथियार ही बांध के जीविका करते हों उनके नाम) शस्त्राजीव १ काराड-पृष्ठ २ काराडस्पृष्ठ ३ आयुधीय ४ आयुधिक ५॥ ६७॥ (अच्छे तीरन्दाज के नाम) कृतहस्त १ सुप्रयोग विशिख २ कृतपुंख ३ (जिस का तीर निशाने से चूकिजाय उसका नाम) अपराद्धपृष-त्क १॥ ६८॥ (धनुहा वारा बांधने वाले के नाम) धन्वी १ धनुष्मान् २ धानुष्क ३ निषंगी ४ अस्त्री ५ धनुर्द्धर ६ (केवल वारा बांधने वाले के नाम) काराडवान् १ काराडीर २ (शक्ति आदि शस्त्र धारी के नाम) शाक्तीक १ शक्तिहे-तिक २॥ ६९॥ (लठिहा का नाम) याष्टीक १ (फरसा बांधने वाले का नाम) पारश्वधिक १ (तरवारि बांधे हुये का नाम) नैस्त्रिंशिक १ (सांग बांधे हुये का नाम) प्रासिक १ (आला वरदार का नाम) कौंतिक १॥ ७०॥

चर्म्मी फलकपाणिः स्यात्पताकी वैजयन्तिकः। अनुप्लवः सहायश्चानुचरोऽभिसरः समाः ७१ पुरोगाग्रेसरः प्रष्ठा ग्रतःसरपुरस्सराः। पुरोगमः पुरोगामी मन्दगामी तु मन्थरः ७२ जङ्घालोऽतिजवस्तुल्यौ जङ्घाकरिकजाङ्घिकौ। तरस्वी त्वरितो वेगी प्रजवी जवनो जवः ७३ जय्योयः शक्यते जेतुं जेयो जेतव्यमात्रके। जैत्रस्तु जेता यो गच्छत्यलं विद्विषतः प्रति ७४ सोऽभ्यमित्र्योऽभ्यमित्रीयोऽप्यभ्यमित्रीण इत्यपि। ऊर्ज्जस्वलः स्यादूर्ज्जस्वी य ऊर्ज्जातिशयान्वितः ७५

(ढलैत के नाम) चर्म्मी१ फलकपाणि २(निशान लेकर चलने वाले के नाम) पताकी १ वैजयन्तिक २(सहायक या मददगार के नाम) अनुप्लव १ सहाय २ अनुचर ३ अभिसर ४॥ ७१॥ (अगुवा के नाम) पुरोग १ अग्रेसर २ अग्रसर ३ प्रष्ठ ४ अग्रतस्सर ५ पुरस्सर ६ पुरोगम ७ पुरोगामी ८ (धीरे धीरे चलनेवाले के नाम) मन्दगामी१ मन्थर २॥ ७२॥ (बड़े चलैया के नाम) जंघाल १ अतिजव २(हरिकारा के नाम) जांघिक १ जंघाकारक २ (जल्द बाज के नाम) तरस्वी १ त्वरित २ वेगी ३ प्रजवी ४ जवन ५ जव ६॥ ७३॥ (जिसे जीति सकै उसका नाम) जय्य १ (जीतने लायक का नाम) जेय १ (जो जीति सकै उस के नाम) जैत्र १ जेता २(जो शत्रु के सामने बड़ी मर्द्दई के साथ लड़े उसके नाम) अभ्यमित्र्य १ अभ्यमित्रीय २ अभ्यमित्रीण ३ (पहलवान के नाम) ऊर्ज्जस्वल १ ऊर्ज्जस्वी २॥ ७५॥

स्यादुरस्वानुरसिलोरथिनोरथिकोरथी। काम-
ङ्गाम्यनुकामीनोऽत्यन्तीनस्तथाभृशम् ७६ शू-
रोवीरश्चविक्रान्तोजेताजिष्णुश्चजित्वरः। सांयु-
गीनोरणेसाधुः शस्त्राजीवादयस्त्रिषु ७७ ध्व-
जिनीवाहिनीसेनापृतनाऽनीकिनीचमूः। वरू-
थिनीबलंसैन्यञ्चक्रञ्चानीकमस्त्रियाम् ७८
व्यूहस्तुबलविन्यासोभेदादण्डादयोयुधि। प्र-
त्यासारोव्यूहपार्ष्णिः सैन्यपृष्ठेप्रतिग्रहः ७९ ए-
केभैकरथात्र्यश्वापत्तिःपञ्चपदातिका। पत्यङ्गै-
स्त्रिगुणैःसर्व्वैःक्रमादाख्यायथोत्तरम् ८०

(सुन्दरछातीवालेकेनाम) उरस्वान् १ उरसिल २ (रथकेमालि-
ककेनाम) रथिन १ रथिक २ रथी ३ (जोअपनेमनसेचलताहो
उसकानाम) अनुकामीन १ (बारम्बारचलनेवालेकानाम) अ-
त्यन्तीन १॥७६॥ (बहादुरकेनाम) शूर १ वीर २ विक्रान्त ३ (जि-
तैयाकेनाम) जेता १ जिष्णु २ जित्वर ३ (रणकुशलकानाम) सां-
युगीन १॥७७॥ (फौजकेनाम) ध्वजिनी १ वाहिनी २ सेना ३ पृत
ना ४ अनीकिनी ५ चमू ६ वरूथिनी ७ बल ८ सैन्य ९ चक्र १० अ-
नीक ११॥७८॥ (किलाबांधनेकानाम) व्यूह १ (सैन्यकेएका-
एकीसंगहीपरजानेकानाम) दण्ड १ (व्यूहकेपीछेकेनाम) प्र-
त्यासार १ व्यूहपार्ष्णि २ (फौजकेपीछेकेनाम) सैन्यपृष्ठ १ प्रतिग्र-
ह २॥७९॥ (जिसमेंहाथीरथएक २ घोड़े ३ पैदर ५ होंउसफौज
कानाम) पत्ति १ (पत्तिकेत्रिगुणकरनेसेक्रमसेयेनामहोतेहैं॥८०

सेना मुखं गुल्मगणौ वाहिनी पृतना चमूः। अनी-
किनी दशानीकिन्यक्षौहिण्यथ सम्पदि ८१ स-
म्पत्तिः श्रीश्च लक्ष्मीश्च विपत्त्यां विपदापदौ।
आयुधन्तु प्रहरणं शस्त्रमस्त्रमथास्त्रियौ ८२ ध-
नुश्चापौ धन्वशरासनकोदण्डकार्म्मुकम्। इ-
ष्वासोप्यथ कर्णस्य कालपृष्ठं शरासनम् ८३
कपिध्वजस्य गाण्डीवगाण्डिवौ पुन्नपुंसकौ।
कोटिरस्याटनी गोधे तलेज्या घातवारणे ८४

(३ पत्ति का नाम) सेनामुख १ (३ सेना मुख का नाम) गुल्म १ (एक गुल्म का नाम) गण १ (३ गण का नाम) वाहिनी १ (३ वाहिनी का नाम) पृतना १ (३ पृतना का नाम) चमू १ (३ चमू का नाम) अनीकिनी १ (१० अनीकिनी का नाम) अक्षौहिणी १ (जिसमें २१८७० हाथी २१८७० रथ के घोड़ों को छोड़ के अन्य ६५६१० घोड़े १०९३५० पैदल सिपाही हों उस का नाम) अक्षौहिणी १ (सम्पत्ति के नाम) सम्पत् १ ॥ ८१ ॥ सम्पत्ति २ श्री ३ लक्ष्मी ४ सम्पदा ५ (विपत्ति के नाम) विपत्ति १ विपत् २ आपत् ३ आपत्ति ४ आपदा ५ (हथियार के नाम) आयुध १ प्रहरण २ शस्त्र ३ अस्त्र ४ ॥ ८२ ॥ (धनुहों के नाम) धनु १ चाप २ धन्व ३ शरासन ४ कोदण्ड ५ कार्म्मुक ६ इष्वास ७ (राजा कर्ण के धन्वा का नाम) कालपृष्ठ १ ॥ ८३ ॥ (अर्जुन के धन्वा का नाम) गाण्डीव १ गाण्डिव २ (धन्वा के दोनों खंटों के नाम) कोटि १ अटनी २ (चर्म्म से तीरों की चपेट बचाने के दस्ताना का नाम) गोधा १ तल २ ॥ ८४ ॥

लस्तकस्तु धनुर्म्मध्यम्मौर्व्वीज्याशिंजिनीगुणः
स्यात्प्रत्यालीढमालीढमित्यादिस्थानपञ्चक-
म् ८५ लक्षंलक्ष्यंशरव्यञ्चशराभ्यासउपासनम्।
पृषत्कबाणविशिखाअजिह्मगखगाशुगाः ८६
कलम्बमार्गणशराःपत्रीरोपइषुर्द्वयोः। प्रक्ष्वे
डनास्तुनाराचाःपक्षोवाजस्त्रिषूत्तरे ८७ निरस्तः
प्रहितेबाणेविषाक्तेदिग्धलिप्तकौ। तूणोपास-
ङ्ग-तूणीरनिषङ्गाइषुधिर्द्वयोः ८८

(धन्वाकेमध्यअर्थात् मूठिकानाम) लस्तक१(रोदाकेनाम) मौर्व्वी१
ज्या२शिञ्जिनी३गुण४(धनुर्द्धरकेआसनकेनाम) प्रत्यालीढ१आली-
ढ२समपद३वैशाख४मण्डल५इनकेलक्षण(बाईंजांघकोआगेक
रिदहिनीसिकोरकरबैठनेकानाम) प्रत्यालीढ१(दहिनीजांघआगेकरके औ
रबाईंसिकोरनेकानाम) आलीढ१(दोनोंपांवबराबररखनेसे) समप-
द१(बीताभरकेअन्तरपरपैररखनेसे) वैशाख१(घुमाकरपैररखनेसे)
मण्डलक१॥८५॥ (निशानाकेनाम) लक्ष१लक्ष्य२शरव्य३(बाणाभ्या
सीसीखनेकेनाम) शराभ्यास१उपासन२(बाण अर्थात् तीरकेनाम)
पृषत्क१बाण२विशिख३अजिह्मग४खग५आशुग६॥८६॥ कल-
म्ब७मार्गण८शर९पत्री१०रोप११इषु१२(लोहियातीरकेनाम) प्रक्ष्वे-
डन१नाराच२(बाणकेफोंककेनाम) पक्ष१वाज२॥८७॥ (चलायेतीर
कानाम) निरस्त१(जहरीबाणकेनाम) विषाक्त१दिग्ध२लिप्तक३
(तरकसकेनाम) तूण१उपासंग२तूणीर३निषंग४इषुधि५
॥८८॥

तूणी खड्गे तु निस्त्रिंशचन्द्रहासासिरिष्टयः । कौ-
क्षेयको मण्डलाग्रः करवालः कृपाणवत् ८९
त्सरुः खड्गादिमुष्टौ स्यान्मेखला तन्निबन्धनम् ।
फलकोऽस्त्री फलं चर्म्म संग्राहो मुष्टिरस्य यः ९०
द्रुघणो मुद्गरघनौ स्यादीली करवालिका । भि-
न्दिपालः सृगस्तुल्यौ परिघः परिघातनः ९१ द्व-
योः कुठारः स्वधितिः परशुश्च परश्वधः । स्याच्छ-
स्त्री चासिपुत्री च छुरिका चासिधेनुका ९२ वा पुं-
सि शल्यं शङ्कुर्ना सर्व्वला तोमरोऽस्त्रियाम् । प्रा-
सस्तु कुन्तः कोणस्तु स्त्रियः पाल्यश्रिकोटयः ९३

तूणी ६ (तरवारि का नाम) खड्ग १ निस्त्रिंश २ चन्द्रहास ३ असि ४ ।
रिष्टि ५ ऋष्टि ६ कौक्षेयक ७ मण्डलाग्र ८ करवाल ९ कृ-
पाण १० ॥ ८९ ॥ (कबुजा का नाम) त्सरु १ (परतला का नाम) मेख-
ला १ (ढाल के नाम) फलक १ फल २ चर्म्म ३ (हथकरा का नाम) सं-
ग्राह १ ॥ ९० ॥ (मुद्गर के नाम) द्रुघण १ द्रुघन २ मुद्गर ३ घन ४ (खां-
ड़ा के नाम) ईली १ करवालिका २ (धनवासी के नाम) भिन्दिपाल
१ सृग २ (लोहयी के नाम) परिघ १ परिघातन २ ॥ ९१ ॥ (फरसा वा
कुल्हारी के नाम) कुठार १ स्वधिति २ परशु ३ परश्वध ४ कुठारी ५ (छु-
री के नाम) शस्त्री १ असिपुत्री २ छुरिका ३ असिधेनुका ४ ॥ ९२ ॥ (फर के
नाम) शल्य १ शंकु २ (गुर्ज के नाम) सर्व्वलि १ तोमर २ (सांग का ना-
म) प्रास १ (भाला वा बरछी का नाम) कुन्त १ (खड्गादि की नोक के ना-
म) कोण १ पालि २ पाली ३ अश्रि ४ कोटि ५ कोटी ६ ॥ ९३ ॥

सर्व्वाभिसारः सर्व्वौघः सर्व्वसन्नहनार्त्थकः।
लोहाभिसारोऽस्त्रभृतां राज्ञांनीराजनाविधिः
९४ यत्सेनयाऽभिगमनमरौ तदभिषेणनम्।
यात्रा व्रज्याऽभिनिर्य्याणं प्रस्थानं गमनं गमः।
९५ स्यादासारः प्रसरणं प्रचक्रं चलितार्त्थक-
म्। अहितान्प्रत्यभीतस्य रणे यानमभिक्रमः ९६
वैतालिका बोधकराश्चाक्रिका घाण्टिकार्त्थकाः।
स्युर्म्मागधास्तु मगधा वन्दिनः स्तुतिपाठकाः ९७
संशप्तकास्तु समयात्सङ्ग्रामादनिवर्त्तिनः। रेणुर्द्व-
योस्त्रियां धूलिः पांशुर्न्ना न द्वयो रजः ९८

(फौज की तैयारी या जमाव के नाम) सर्व्वाभिसार १ सर्व्वौघ २ सर्व्वसन्नहन ३ (महानवमी के पहिले लड़ाई के निमित्त राजाओं के हथियार पूजने का नाम) लोहाभिसार १॥ ९४॥ (शत्रु के ऊपर फौज चढ़ने का नाम) अभिषेणन १ (यात्रा के नाम) यात्रा १ व्रज्या २ अभिनिर्य्याण ३ प्रस्थान ४ गमन ५ गम ६॥ ९५॥ (फौज के फैलाव के नाम) आसार १ प्रसरण २ (चली हुई फौज के नाम) प्रचक्र १ चलित २ (निडर होकर शत्रुओं के सन्मुख जाने का नाम) अभिक्रम १॥ ९६॥ (स्तुति करके प्रातःकाल राजा के जगानेवालों के नाम) वैतालिक १ बोधकर २ (घरियारी के नाम) चाक्रिक १ घाण्टिक २ (वंश परम्परा बखाननेवालों का नाम) मागध १ मगध २ (भाट के नाम) बन्दी १ स्तुतिपाठक २॥ ९७॥ (भगोलुवा का नाम) संशप्तक १ (धूलि के नाम) रेणु १ धूलि २ धूली ३ पांशु ४ रज ५॥ ९८॥

चूर्णे क्षोदः समुत्पिंजपिंजलौ भृशमाकुले। पता-
का वैजयन्ती स्यात्केतनन्ध्वजमस्त्रियाम् ९९ सा
वीराशंसनं युद्धभूमिर्य्याऽतिभयप्रदा। अहम्पूर्व्व-
महम्पूर्व्वमित्यहम्पूर्व्विका स्त्रियाम्॥ आहोपुरु-
षिका दर्पाद्या स्यात्सम्भावनात्मनि २०० अहमह-
मिका तु सा स्यात्परस्परं यो भवत्यहङ्कारः। द्रविणं त-
रः सहो बलशौर्य्याणि स्थाम शुष्मञ्च २०१ श-
क्तिः पराक्रमः प्राणो विक्रमस्त्वतिशक्तिता २०२।
वीरपानन्तु यत्पानम्वृत्ते भाविनि वा रणे। युद्धमा-
योधनं जन्यम्प्रधनम्प्रविदारणम् २०३

(चून के नाम) चूर्ण १ क्षोद २ (किसी २ के मत से ये भी धूरही के नाम
हैं) (अकुलाने के नाम) समुत्पिञ्ज १ पिञ्जल २ (पताका फरहरा
वा निशान वा आराड़ा के नाम) पताका १ वैजयन्ती २ केतन ३ ध्व-
ज ४॥ ९९॥ (भयावनू रण भूमि का नाम) वीराशंसन १ (जिसमें
वीर कहैं कि हम पहिले लड़ेंगे २ उस लड़ाई का नाम) अहम्पूर्वि-
का १ (जिसमें वीर कहैं कि हम पुरुष हैं हम हीं लड़ेंगे उस लड़ाई
का नाम) आहोपुरुषिका १॥ २००॥ (आपस के इस कहने को
कि हम शक्त हैं हम लड़ सक्ते हैं उस का नाम) अहमहमिका १॥
(पराक्रम वा पारा कम के नाम) द्रविण १ तरः २ सहः ३ बल ४
शौर्य्य ५ स्थाम ६ शुष्म ७॥ २०१॥ शक्ति ८ पराक्रम ९ प्राण १०
(अति पराक्रम के नाम) विक्रम १ अतिशक्तिता २॥ २०२॥ (लड़
ने के निमित्त नसा खाने पीने का नाम) वीरपान १ वीरपाण २ (लड़ा
ई के नाम) युद्ध १ आयोधन २ जन्य ३ प्रधन ४ प्रविदारण ५॥ २०३॥

मृधमास्कंदनं संख्यं समीकं सांपरायिकम्। अस्त्रि-
यां समरानीकरणाः कलहविग्रहौ २०४ सम्प्रहारा-
भिसम्पातकलिसंस्फोटसंयुगाः। अभ्यामर्दस-
माघातसंग्रामाभ्यागमाहवाः २०५ समुदायःस्त्रि-
यां संयत्समित्याजिसमिद्युधः। नियुद्धम्बाहुयुद्धेऽथ
तुमुलं रणसंकुले २०६ क्ष्वेडा तु सिंहनादस्याल्क-
रिणां घटना घटा। क्रन्दनं योधसंरावो बृंहितं करिग-
र्ज्जितम् २०७ विस्फारो धनुषस्स्वानः पटहाडम्बरौ
समौ। प्रसभन्तु बलात्कारो हठोऽथ स्खलितं छ-
लम् २०८

मृध ६ आस्कन्दन ७ संख्य ८ समीक ९ साम्परायिक १० समर ११
अनीक १२ रण १३ कलह १४ विग्रह १५ ॥२०४॥ सम्प्रहार १६
अभिसम्पात १७ कलि १८ संस्फोट १९ संयुग २० अभ्यामर्द २१
समाघात २२ संग्राम २३ अभ्यागम २४ आहव २५ ॥ २०५ समु-
दाय २६ संयत् २७ समिति २८ आजि २९ समित् ३० युत ३१ (बां-
हांजोटी के नाम) नियुद्ध १ बाहुयुद्ध २ (बांध भरजाने का नाम) तु-
मुल १॥ २०६॥ (वीरों के गर्ज्जने के नाम) क्ष्वेडा १ सिंहनाद २।
(हाथियों की कतार का नाम) घटा १ (वीरों के निन्दा पूर्वक पुका-
रने का नाम) क्रन्दन १ (हाथियों के गर्ज्जने का नाम) बृंहित १ ॥
२०७॥ (धनुषों के शब्द का नाम) विस्फार १ (जुझाऊ नगारा के
शब्द का नाम) पटह १ आडम्बर २ (हठ के नाम) प्रसभ १ बलात्का-
र २ हठ ३ (धोखा देने के नाम) स्खलित १ छल २ ॥ २०८॥

अजन्यंक्लीबमुत्पातउपसर्गःसमन्त्रयम् । मू-
र्च्छातुकश्मलम्मोहोऽप्यवमर्दस्तुपीडनम् २०९
अन्यच्च ॥ अभ्यवस्कन्दनन्त्वभ्यासादनम्विज-
योजयः। वैरशुद्धिःप्रतीकारोवैरनिर्यातनञ्चसा
२१० प्रद्रावोद्द्रावसंद्रावसन्द्रवाविद्रवोद्रवः। अ-
पक्रमोऽपयानञ्चरणेभङ्गःपराजयः॥ पराजित-
पराभूतौत्रिषुनष्टतिरोहितौ २११ प्रमापणन्नि-
बर्हणंनिकारणन्विशारणम्। प्रवासनम्परा-
सनन्निषूदनंनिहिंसनम् २१२ निर्व्वासनंसंज्ञ-
पनन्निर्ग्रन्थनमपासनम् २१३

(उत्पात के नाम) अजन्य १ उत्पात २ उपसर्ग ३ (मूर्छा के नाम)
मूर्च्छा १ कश्मल २ मोह ३ (फौज की लात गँव दिया के नाम) अव-
मर्द १ पीडन २॥ २०९॥ (धोखे से दबाय लेने के नाम) अभ्य-
वस्कन्दन १ अभ्यासादन २ (जीत के नाम) विजय १ जय २ (वैर
मिटाने के नाम) वैरशुद्धि १ प्रतीकार २ वैरनिर्यातन ३॥ २१०॥
(भागने के नाम) प्रद्राव १ उद्द्राव २ सन्द्राव ३ संद्रव ४ विद्रव ५
द्रव ६ अपक्रम ७ अपयान ८ (हारि का नाम) पराजय १ (हारे
का के नाम) पराजित १ पराभूत २ (लुके हुये के नाम) नष्ट १
तिरोहित २॥ २११॥ (मारने के नाम) प्रमापण १ प्रमापन २
निबर्हण ३ निर्व्बर्हण ४ निकारण ५ निशारण ६ विशा-
रण ७ प्रवासन ८ परासन ९ निषूदन १० निसूदन ११ नि-
हिंसन १२॥ २१२॥ निर्व्वासन १३ संज्ञपन १४ निर्ग्रन्थन १५
अपासन १६॥ २१३॥

निस्तर्हणन्निहननंक्षणनम्परिवर्जनम्। निर्व्वा-
पणन्विशसनम्मारणम्प्रतिघातनम् ११४ उद्दा-
सनप्रमथनक्रथनोज्जासनानिच। आलम्भपिं-
जविशरघातोन्माथवधाअपि ११५ स्यात्पञ्चता-
कालधर्म्मौदिष्टान्तःप्रलयोऽत्ययः। अन्तोनाशो
द्वयोर्मृत्युर्मरणन्निधनोःस्त्रियाम् ११६ परासु
प्राप्तपञ्चत्वपरेतप्रेतसंस्थिताः। मृतप्रमीतौत्रिष्वे-
तेञ्चिताचित्याचितिस्त्रियाम् ११७ कबन्धो
स्त्रीक्रियायुक्तमपमूर्द्धकलेवरम्। श्मशानंस्या-
त्पितृवनंकुणपःशवमस्त्रियाम् ११८

निस्तर्हण १७ निहनन १८ क्षणन १९ परिवर्ज्जन २० निर्वापण
२१ विशसन २२ मारण २३ प्रतिघातन २४॥ ११४॥ उद्वासन २५
प्रमथन २६ क्रथन २७ उज्जासन २८ आलम्भ २९ पिञ्ज ३०
विशर ३१ घात ३२ उन्मथ ३३ उन्माथ ३४ बध ३५॥ ११५॥ (मृ-
त्यु वा मौत के नाम) पञ्चता १ पञ्चत्व २ कालधर्म्म ३ दिष्टान्त
४ प्रलय ५ अत्यय ६ अन्त ७ नाश ८ मृत्यु ९ मरण १० निधन
११॥ ११६॥ (मृतक वा मुर्दा के नाम) परासु १ प्राप्तपञ्चत्व
२ परेत ३ प्रेत ४ संस्थित ५ मृत ६ प्रमीत ७ (चिता के नाम)
चिता १ चित्या २ चिति ३॥ ११७॥ (विना मूड़ वाले को नाम
कबन्ध १ (श्मशान के नाम) श्मशान १ पितृवन २ (निर्जी-
व के नाम) कुणप १ शव २॥ ११८॥

प्रग्रहोपग्रहौ बन्द्यां कारा स्याद्बन्धनालये।
पुंसि भूम्न्यसवः प्राणाश्चैवं जीवोऽसुधारणा-
म् ११९ आयुर्ज्जीवितकालो ना जीवातु-
र्ज्जीवनौषधम् ॥ इति क्षत्रियवर्गः ॥

ऊरव्या ऊरुजा अर्य्या वैश्या भूमिस्पृशो
विशः। आजीवो जीविका वार्त्ता वृत्तिर्व्वर्त्तन-
जीवने १ स्त्रियां कृषिः पाशुपाल्यम्वाणि-
ज्यञ्चेति वृत्तयः। सेवाश्ववृत्तिरनृतं कृषिरु-
ञ्छशिलं त्वृतम् २

(बँधुवा के नाम) प्रग्रह १ उपग्रह २ बन्दी ३ बन्दि ४ (बन्दीखा-
ना का नाम) कारा १ (प्राण के नाम) असु १ प्राण २ (प्राणी वा
परानी के नाम) जीव १ असुधारण २ ॥ ११९ ॥ आयुर्व्बल वा
उमरि का नाम) आयुः १ (जिआने का नाम) जीवातु १ ॥ १२० ॥ इति क्षत्रियवर्गः ॥

(बनियां के नाम) ऊरव्य १ ऊरुज २ अर्य्य ३ वैश्य ४
भूमिस्पृक ५ विट् ६ (जीविका के नाम) आजीव १ जीविका २
वार्त्ता ३ वृत्ति ४ वर्त्तन ५ जीवन ६ ॥ १ ॥ (खेती का नाम) कृषि
१ (पशुओं के पालने का नाम) पाशुपाल्य १ (बनिई का ना-
म) वाणिज्य १ (ये कृषि पाशुपाल्य वाणिज्य तीनों बनियों
की वृत्तियां हैं) (पराई टहल का नाम) श्ववृत्ति १ (खेती का ना-
म) अनृत १ (बजार उठने पर के अन्न बीनने का नाम) उंछ १
(सीला का नाम) शिल १ (इन दोनों का नाम) ऋत १ ॥ २ ॥

द्वेया। चिताया चितयोर्यथासंख्यस्मृतामृते। स
त्यानृतम्वणिग्भावस्स्यादृणंपर्युदञ्चनम् ३
उद्धारोऽर्थप्रयोगस्तु कुसीदम्वृद्धिजीविका। या-
ञ्चयाप्तंयाचितकन्निमयादापमित्यकम् ४ उ-
त्तमर्णाधमर्णौ द्वौप्रयोक्तृग्राहकौ क्रमात्। कु-
शीदिको वार्द्धुषिको वृद्ध्याजीवश्च वार्द्धुषिः ५
क्षेत्राजीवः कर्षकश्च कृषिकश्च कृषीवलः। क्षे-
त्रम्व्रैहेयशालेयं व्रीहिशाल्युद्भवोचितम् ६
यव्यंयवक्यंषष्टिक्यं यवादिभवनंहियत्॥

(मांगने से जो मिले उस का नाम) मृत १ (बिना मांगी वस्तु का नाम) अमृत १ (बनिपई का नाम) सत्यानृत १ (उधार लेने का नाम) ऋण १ पर्युदञ्चन २॥३॥ उद्धार ३ (ब्याज के नाम) अर्थप्रयोग १ कुसीद २ कुशीद ३ वृद्धिजीविका ४ (मांगने से मिलने का नाम) याचितक १ (बदले पर मिली वस्तु का नाम) आपमित्यक १ ॥४॥ (महाजन का नाम) उत्तमर्ण १ (कर्जी का नाम) अधमर्ण १ (ब्याज से ही जीने वाले के नाम) कुसीदिक १ वृद्ध्याजीव २ वार्द्धुषि ३ वार्द्धुषिक ४॥ ५॥ (किसान का नाम) क्षेत्राजीव १ कर्षक २ कार्षक ३ कृषिक ४ कृषीवल ५ (व्रीहि होने के योग्य खेत का नाम) व्रैहेय १ (अनाज का नाम) शालेय १॥६॥ (यव होने वाले का नाम) यव्य १ (छोटे यव होने वाले का नाम) यवक्य १ (साठी होने वाले का नाम) षष्टिक्य १॥

तिल्यं तैलीनवन्माषोमाणुभङ्गाद्विरूपता ७
मौद्गीनकौद्रवीणादि शेषधान्योद्भवक्षमम्।
शाकक्षेत्रादिके शाकशाकटंशाकशाकिनम्
बीजाकृतन्तूप्तकृष्टेसीत्यकृष्टञ्चहल्यवत् ८ त्रिगु-
णाकृतन्तृतीयाकृतन्त्रिहल्यन्त्रिसीत्यमपितस्मि
न्। द्विगुणाकृतेतुसर्व्वम्पूर्व्वंशम्बाकृतमपीह ९
द्रोणाढकादिवापादौ द्रौणिकाढकिकादयः॥

(तिल होने वाले के नाम) तिल्य १ तैलीन २ (उरद होने वाले के नाम) माष्य १ माषीण २ (अलसी होने वाले के नाम) उम्य १ औमीन २ (अणु होने वाले के नाम) अणव्य १ आणवीन २ (भंग होने वाले के नाम) भंग्य १ भांगीन २॥७॥ (मूंग होने वाले का नाम) मौद्गीन १ (कोद्व होने वाले का नाम) कौद्रवीण १ (चना होने वाले का नाम) चाणकीन १ (गोहूं होने वाले का नाम) गोधूमीन १ (कराव होने वाले का नाम) कालापीन १ (कुरथी होने वाले का नाम) कौलत्थीन १ (काकुनि होने वाले का नाम) प्रैयंगवीन १ ऐसे ही और भी जानो) (शाक तरकारी होने वाले के नाम) शाकशाकट १ शाकशाकिन २ (उभिसने का नाम) बीजाकृत १ (जोते हुये खेत के नाम) सीत्य १ कृष्ट २ हल्य ३॥८॥ (तीन बांह के किये हुये का नाम) त्रिगुणाकृत १ तृतीयाकृत २ त्रिहल्य ३ त्रिसीत्य ४ (दो बांह किये हुये के नाम) द्विगुणाकृत १ द्वितीयाकृत २ द्विहल्य ३ द्विसीत्य ४ शम्बाकृत ५॥९॥ (खेत का नाम) वाप १ (जिसमें द्रोण भर बोया जाय उस खेत का नाम) द्रौणिक १ (आढक भर वाले का नाम) आढकिक १॥

खारीवापस्तु खारीक उत्तमर्णादयस्त्रिषु १० पुन्न-
पुंसकयोर्व्वप्रः केदारः क्षेत्रमस्य तु। कैदारकं स्या-
त्कैदार्य्यं क्षेत्रं कैदारिकं गणे ११ लोष्टानि ले-
ष्टवः पुंसि कोटिशो लोष्टभेदनः। प्राजनन्तोदन-
न्तोत्रं खनित्रमवदारणे १२ दात्रं लवित्रमाबन्धो
योत्रं योक्त्रमथो फलम्। निरीशं कुटकं फालः कृ-
षको लाङ्गलं हलम् १३ गोदारणञ्च सीरोऽथ श-
म्या स्त्री युगकीलकः। ईषा लाङ्गलदण्डः स्या-
त्सीता लाङ्गलपद्धतिः १४

(खारी भरवाले के नाम) खारीक १॥१०॥ (खेत के नाम) वप्र१ के-
दार २ क्षेत्र ३ (खेतों के समूह के नाम) कैदारक १ कैदार्य्य २ क्षेत्र ३
कैदारिक ४॥११॥ (ढेला के नाम) लोष्ट १ लेष्टु २ (मुगरी वा मुग-
दनि के नाम) कोटिश १ लोष्टभेदन २ (पैना वा चाबुक के नाम) प्रा-
जन १ तोदन २ तोत्र ३ (खन्ता वा कुदारी के नाम) खनित्र १ अवदा-
रण २॥१२॥ (हँसिया के नाम) दात्र १ लवित्र २ (ज्वडायल वा जो-
त के नाम) आबन्ध १ योत्र २ योक्त्र ३ (फार के नाम) फल १ निरीश २
निरीष ३ कुटक ४ फाल ५ कृषक ६ कृषिक ७ (किसी २ के मत से प्र-
थम के ५ कुदह वा खोदहरी के नाम हैं अन्त के ३ फार के) (हर के ना-
म) लांगल १ हल २॥१३॥ हाल ३ गोदारण ४ सीर ५ शीर ६
(सम्बल वा सैला के नाम) शम्या १ युगकीलक २ (हरस का ना-
म) ईषा १ (कूंड़ के नाम) सीता १ शीता २ लांगलपद्धति ३॥१४॥

पुंसि मेधिः खले दारु न्यस्तं यत्पशुबन्धने । आशु-व्रीहिः पाटलः स्याच्छितशूकयवौ समौ २५ तोक्मस्तु तत्र हरिते कलायस्तु सतीनकः । हरेणुरेणुकौ चास्मिन्कोरदूषस्तु कोद्रवः २६ मङ्गल्यको मसूरोऽथ मकुष्टकमयुष्ठकौ । वनमुद्गे सर्षपे तु द्वौ तन्तुभकदम्बकौ २७ सिद्धार्थस्त्वेष धवलो गोधूमः सुमनः समौ । स्याद्यावकस्तु कुल्माषश्चणको हरिमन्थकः २८ द्वौ तिले तिलपेजश्च तिलपिञ्जश्च निष्फले ॥

(जो मड़नी माड़ने में किसी २ देश में पैर के बीच में खूंटा गाड़ते हैं उस के नाम) मेधि १ खलेदारु २ (साठी के नाम) आशु १ व्रीहि २ पाटल ३ (यव के नाम) शितशूक १ यव २ ॥ २५ ॥ (हरे यव का नाम) तोक्म १ (क्षराव वा मटरा के नाम) कलाय १ सतीनक २ हरेणु ३ रेणुक ४ (कोदउ के नाम) कोरदूष १ कोद्रव २ ॥ २६ ॥ (मसुही के नाम) मंगल्यक १ मसूर २ मसुर ३ मसूरा ४ मसुरा ५ । (मोथी वा कुर मूंग के नाम) मकुष्टक १ मकुष्ठक २ मुकुष्ठक ३ मयुष्ठक ४ मपष्टक ५ मयष्ट ६ यपुष्टक ७ मयुष्ठ ८ वनमुद्ग ९ (सरसों के नाम) सर्षप १ तन्तुभ २ कदम्बक ३ ॥ २७ ॥ (उजली सरसों का नाम) सिद्धार्थ १ (गोहूं के नाम) गोधूम १ सुमन २ (कुरथी के नाम) यावक १ कुल्माष २ कुल्मान ३ (चना वा रहिला के नाम) चणक १ हरिमन्थक २ हरिमन्थन ३ ॥ २८ ॥ (बांझ तिल के नाम) तिलपेज १ तिलपिञ्ज २ ॥

क्षवः क्षुताभिजननो राजिका कृष्णिकाऽऽसुरी २९
स्त्रियौ कंगुप्रियंगू द्वे अतसी स्यादुमा क्षुमा । मातु-
लानी तु भङ्गायां व्रीहिभेदस्त्वणुः पुमान् ३० किं
शारुः सस्यशूकं स्यात्कणिशं सस्यमंजरी । धा-
न्यं व्रीहिः स्तम्बकरिः स्तम्बो गुच्छस्तृणादिनः
३१ नाडी नालञ्च काण्डोस्य पलालोस्त्री स नि-
ष्फलः । कडङ्गरो बुसं क्लीबे धान्यत्वचि तुषः पुमा-
न् ३२ शूकोस्त्री श्लक्ष्णतीक्ष्णाग्रे शमी शिम्बा
त्रिषूत्तरे । ऋद्धमावसितं धान्यम्पूतन्तु बहुलीकृ-
तम् ३३

(राई के नाम) क्षव १ क्षुताभिजनन २ राजिका ३ कृष्णिका ४ आ-
सुरी ५ ॥ २९ ॥ (काकुनि के नाम) कंगु १ प्रियंगु २ (अरसी के ना-
म) अतसी १ उमा २ क्षुमा ३ (पटुवा के भेद जिस के सन से भंगरा
नाम टाट बनता हो उस के नाम) मातुलानी १ भंगा २ (च्यनवाँ
ज्यठऊ साँवा का नाम) अणु १ ॥ ३० ॥ (सींकुर के नाम) किंशा-
रु १ सस्यशूक २ (बाली के नाम) कणिश १ सस्यमञ्जरी २ (सा-
मान्य धान्य के नाम) धान्य १ व्रीहि २ स्तम्बकरी ३ (गुच्छ के
नाम) स्तम्ब १ गुच्छ २ ॥ ३१ ॥ (नरई के नाम) नाड़ी १ नाल २ (पै-
रा का नाम) पलाल १ (भुसा के नाम) कडंगर १ बुस २ (भूसी का
नाम) तुष १ ॥ ३२ ॥ (सींकुर का नाम) शूक १ (छीमी के नाम) श-
मी १ शिम्बा २ (कुनाव के नाम) ऋद्ध १ आवसित २ (ओसाई हुई
साफराशि के नाम) पूत १ बहुलीकृत २ ॥ ३३ ॥

माषादयः शमीधान्ये शूकधान्ये यवादयः। शाल-
यः कलमाद्याश्च षष्टिकाद्याश्च पुंस्यमी २४ तृण
धान्यानि नीवाराः स्त्री गवेधुर्गवेधुका। अयोऽग्र-
म्मुसलो स्त्री स्यादुदूखलमुलूखलम् २५ प्र-
स्फोटनं शूर्प्पमस्त्री चालिनी तितउः पुमान्। स्यू-
तप्रसेवौ कराडोलपिटौ कटकिलिंजकौ २६ स-
मानौ रसवत्यान्तु पाकस्थानमहानसे। पौरोग-
वस्तदध्यक्षः सूपकारास्तु बल्लवाः २७

(मूंग, उर्द, राजमाष, कुरथी, चना, तिल, अरहर, आदि इन का ना-
म) शमीधान्य १ (यवादिक जिन में सींकुर होता है उन का नाम)
शूकधान्य १ (जड़हन का नाम) कलम १ (साठी का नाम) षष्टि-
क १ (सब धानों का नाम) शालि १ ॥ २४ ॥ (तिनी पसाढ़ी आ-
दि का नाम) नीवार १ (और इन्हीं को तृण धान्य कहते हैं) (स्य
कुं आ वा गड़वा के नाम) गवेधु १ गवेधुका २ (मूसर के नाम)
अयोऽग्र १ मुसल २ (उरवरी वा गाली के नाम) उदूखल १ उ-
लूखल २ ॥ २५ ॥ (सूप के नाम) प्रस्फोटन १ शूर्प्प २ (चलनी
के नाम) चालनी १ तितउ २ (थैली के नाम) स्यूत १ प्रसेव २ (
डथलवा वा छांटा के नाम) कराडोल १ पिट २ (किडिहिर वा च
टाई के नाम) कट १ किलिञ्जक २ ॥ २६ ॥ (रसोई के घर के ना-
म) रसवती १ पाकस्थान २ महानस ३ (रसोई के अधिकारी
का नाम) पौरोगव १ (रसोई बरदार के नाम) सूपकार १ ब-
ल्लव २ ॥ २७ ॥

आरालिका आन्धसिकाः सूदा औदनिका गुणाः।
आपूपिकः कान्दविको भक्ष्यकार इमे त्रिषु २८ अश्मन्तमुद्धानमधिश्रयणी चुल्लिरन्तिका। अङ्गारधानिकाङ्गारशकट्यपि हसन्त्यपि २९ हसन्यप्यथ न स्त्री स्यादङ्गारो लातमुल्मुकम्। क्लीवेऽम्बरीषम्भ्राष्ट्रो ना कन्दुर्वा स्वेदनी स्त्रियाम् ३० अलिंजरः स्यान्मणिकः कर्कर्यालुर्गलन्तिका। पिठरः स्थाल्युखा कुण्डं कलशस्तु त्रिषु द्वयोः ३१ घटः कुटनिपावः स्त्री शरावो वर्द्धमानकः। ऋजीषं पिष्टपचनं कंसोऽस्त्री पानभाजनम् ३२

आरालिक ३ आन्धसिक ४ सूद ५ औदनिक ६ गुण ७ (पुआ आदि बनाने वाले के नाम) आपूपिक १ कान्दविक २ भक्ष्यकार ३ ॥ २८॥ (चूल्हा के नाम) अश्मन्त १ उद्धान २ अधिश्रयणी ३ चुल्लि ४ अन्तिका ५ (अंगेठी के नाम) अंगारधानिका १ अंगारशकटी २ हसन्ती ३ ॥ २९॥ हसनी ४ (अंगार का नाम) अंगार १ ॥ (लुकाठ के नाम) अलात १ उल्मुक २ (खपरी के नाम) अम्बरीष १ भ्राष्ट्र २ (भट्ठी वा भार के नाम) कन्दु १ स्वेदनी २ ॥ ३० ॥ (मेटुका के नाम) अलञ्जर १ मणिक २ (करवा के नाम) कर्करी १ आलु २ गलन्तिका ३ (बटुआ के नाम) पिठर १ स्थाली २ उखा ३ उषा ४ कुण्ड ५ (घड़ा वा गगरी के नाम) कलश १ ॥ ३१ ॥ घट २ कुट ३ निपाव ४ कलशी ५ घटी ६ (कसवा वा सेर वा परई दिया के नाम) शराव १ सराव २ वर्द्धमान ३ (तावा के नाम) ऋजीष १ ऋचीष २ पिष्टपचन ३ (खोरा वा कटोरी के नाम) कंस १ पानभाजन २ ॥ ३२ ॥

कुतूः कृत्तेः स्नेहपात्रं सैवाल्पा कुतपः पुमान्। सर्व्वमावपनम्भाण्डं पात्रामत्रञ्च भाजनम् ३३
दर्व्विः कम्बिः खजाका च स्यात्तर्द्दूर्दारुहस्तकः। अस्त्री शाकं हरितकं शिग्रुरस्य तु नाडिका ३४
कलम्बश्च कडम्बश्च वेषवार उपस्करः। तिन्तिडीकञ्च चुक्रञ्च वृक्षाम्लमथ वेल्लजम् ३५ मरीचङ्कोलकं कृष्णमूषणं धर्म्मपत्तनम्। जीरको जरणो जाजी कणा कृष्णे तु जीरके ३६ सुषवी कारवी पृथ्वी पृथुः काला पकुञ्चिका। आर्द्रकं शृङ्गवेरं स्यादथ छत्रा वितुन्नकम् ३७

(कुप्पा का नाम) कुतू १ (कुप्पी का नाम) कुतुप १ (सब जितने वर्त्तन काहि आये हैं उन के नाम) आवपन १ भाण्ड २ पात्र ३ अमत्र ४ भाजन ५॥ ३३॥ (कर्छुलि के नाम) दर्व्वि १ दर्व्वी २ कम्बि ३ कम्बी ४ खजाका ५ (डौंवा के नाम) तर्द्दू १ दारुहस्तक २ (साग के नाम) शाक १ हरितक २ शिग्रु ३॥ ३४॥ (साग के डंड का के नाम) कलम्ब १ कडम्ब २ (धुंगार वा छौंकने वाली वस्तु के नाम) वेषवार १ उपस्कर २ (चूक के नाम) तिन्तिडीक १ चुक्र २ वृक्षाम्ल ३ (मिर्च के नाम) वेल्लज १॥ ३५॥ मरीच २ मरिच ३ कोलक ४ कृष्ण ५ ऊषण ६ धर्म्मपत्तन ७ (जीरा के नाम) जीरक १ जरण २ अजाजी ३ कणा ४॥ ३६॥ (काला जीरा के नाम) सुषवी १ कारवी २ पृथ्वी ३ पृथु ४ काला ५ उपकुंचिका ६ (अदरख के नाम) आर्द्रक १ शृंगवेर २ (धनियां के नाम) छत्रा १ वितुन्नक २॥ ३७॥

कुस्तुम्बरु च धान्याकमथ शुण्ठी महौषधम्।
स्त्रीनपुंसकयोर्विश्वन्नागरम्विश्वभेषजम्
३८ आरनालकसौवीरकुल्माषाभिषुतानि
च। अवन्तिसोमधान्याम्लकुञ्जलानिच कांजि-
के ३९ सहस्रवेधि जतुकम्बाह्लीकंहिंगु रामठ-
म्। तत्पत्रीकारवी पृथ्वीबाष्पिका कवरी पृथुः ४०
निशाख्या काञ्चनी पीता हरिद्रा वरवर्णिनी।
सामुद्रं यत्तु लवणमक्षीवम्वशिरञ्च तत् ४१ सैं-
धवोऽस्त्री शीतशिवम्माणिमन्थञ्च सिन्धुजे।
रौमकम्वसुकं पाक्यं विडञ्च कृतके द्वयम् ४२

कुस्तुम्बुरु ३ कुस्तुम्बरी ४ धान्याक ५ (सोंठि के नाम) शुंठी १ शु-
ण्ठि २ महौषध ३ विश्व ४ नागर ५ विश्वभेषज ६ विश्वा ७॥ ३८॥
(कांजी के नाम) आरनालक १ सौवीर २ कुल्माषाभिषुत ३ अव-
न्तिसोम ४ धान्याम्ल ५ कुञ्जल ६ कांजिक ७॥ ३९॥ (हींग केना-
म) सहस्रवेधि १ जतुक २ बाह्लीक ३ बाह्लिक ४ हिंगु ५ रामठ ६ (हीं-
ग के वृक्ष की पाती के नाम) कारवी १ पृथ्वी २ बाष्पिका ३ कव-
री ४ पृथु ५॥ ४०॥ (हरदी के नाम) निशा १ कांचनी २ पीता ३ हरि-
द्रा ४ वरवर्णिनी ५ (समुद्र फेन के नाम) अक्षीव १ अक्षिव २ वसि-
र ३ वशिर ४॥ ४१॥ (सैंधव लोन के नाम) सैन्धव १ शीतशिव
२ सितशिव ३ माणिमन्थ ४ सिन्धुज ५ (सांभरि लोन के नाम)
रौमक १ वसुक २ (खारी लोन के नाम) पाक्य १ विड २॥ ४२॥

सौवर्च्चलेक्षरुचके तिलकन्तत्र मेचके। मत्स्यण्डी फाणितं खण्डविकारः शर्क्करा सिता ॥ ४३ कूर्च्चिका क्षीरविकृतिस्स्याद्रसाला तु मार्ज्जिता। स्यात्तेमनन्तु निष्ठानन्त्रिलिङ्गा वासिता वधे: ४४। शूल्याकृतम्भटित्रं स्याच्छूल्यमुखन्तु पैठरम्। प्रणीतमुपसम्पन्नम्प्रयस्तं स्यात्सुसंस्कृतम् ४५ स्यात्पिच्छिलन्तु विजिलं सम्मृष्टं शोधितं समे। चिक्कणं मसृणं स्निग्धन्तुल्ये भावितवासिते ४६ आपक्वम्पौलिरभ्यूषो लाजाः पुंभूम्नि चाक्षताः॥

(सोंचर लोन के नाम) सौवर्च्चल १ अक्ष २ रुचक ३ (कारिया सोंचर का नाम) तिलक १ (राब के नाम) मत्स्यण्डी १ फाणित २ (मिश्री के नाम) खण्डविकार १ शर्क्करा २ सिता ३ ॥ ४३ ॥ (मूरनि के नाम) कूर्च्चिका १ क्षीरविकृति २ (सिखरनि के नाम) रसाला १ मार्ज्जिता २ (कढ़ी के नाम) तेमन १ निष्ठान २ ॥ ४४ ॥ (लोह की सराई में छेद के पकाये हुये मांस के नाम) शूल्याकृत १ भटित्र २ शूल्य ३ (बटुआ में पकाये हुये अन्नादि के नाम) उखय १ पैठर २ (रसिआउरि के नाम) प्रणीत १ उपसम्पन्न २ (घृत से बनी हुई वस्तु के नाम) प्रयस्त १ सुसंस्कृत २ ॥ ४५ ॥ (पनिहे व्यञ्जन के नाम) पिच्छिल १ विजिल २ (विचारे वा बीने अन्न के नाम) सम्मृष्ट १ शोधित २ (चिकने के नाम) चिक्कण १ मसृण २ स्निग्ध ३ (धुंगार दी हुई वा छौंकी हुई वस्तु के नाम) भावित १ वासित २ ॥ ४६ ॥ (ऊंबी वा मुरमुरी के नाम) आपक्व १ पौलि २ अभ्यूष ३ (लावा का नाम) लाजा १ (चाउर का नाम) अक्षत १ ॥

पृथुकस्स्याच्चिपिटको धाना भृष्टयवेस्त्रियः ४७
पूपोऽपूपः पिष्टकस्स्यात्करम्भो दधिसक्तवः॥ भि-
स्सा स्त्री भक्तमन्धोऽन्नमोदनोऽस्त्री सदीदिविः ४८
भिस्सटा दग्धिका सर्वरसाग्रे मण्डमस्त्रियाम्।
मासराचामनिस्रावा मण्डे भक्तसमुद्भवे ४९ यवा-
गूरुष्णिकाश्राणा विलेपी तरला च सा। म्रक्षणा-
भ्यंजने तैलं कृसरस्तु तिलौदनः। गव्यं त्रिषु गवां
सर्वं गोविड्गोमयमस्त्रियाम् ५० तत्तु शुष्कं करी-
षोऽस्त्री दुग्धं क्षीरं पयस्समम्। पयस्यमाज्यदध्या-
दि द्रप्सं दधि घनेतरत् ५१

(चिउरा के नाम) पृथुक १ चिपिटक २ (गुरधनियां का नाम) धाना १
॥ ४७॥ (पुआ के नाम) पूप १ अपूप २ पिष्टक ३ (दही से साने सतुआ
का नाम) करम्भ १ (भात के नाम) भिस्सा १ भक्त २ अन्ध ३ अन्न ४
ओदन ५ दीदिवि ६ ॥ ४८॥ (जरे भात के नाम) भिस्सटा १ दग्धिका
२ (पसावन वा माड़ का नाम) मण्ड १ (केवल भात के माड़ के ना-
म) मासर १ आचाम २ निस्राव ३ ॥ ४९ ॥ (पनिहे भात गोलायी के
नाम) यवागू १ उष्णिका २ श्राणा ३ विलेपी ४ तरला ५ (तेल के
नाम) म्रक्षण १ अभ्यञ्जन २ (तिल उसिसे भात वा खिचरी के ना-
म) कृसर १ (गोबर छोड़ गाई से उत्पन्न सर्व वस्तु का नाम) गव्य
१ (गाई के गोबर के नाम) गोविट् १ गोमय २ ॥ ५० ॥ (कण्डा का
नाम) करीष १ (दूध के नाम) दुग्ध १ क्षीर २ पयः ३ (दही घी-
आदि का नाम) पयस्य १ (पनरे दही का नाम) द्रप्स १ ॥ ५१ ॥

घृतमाज्यं हविः सर्पिर्नवनीतन्नवोद्धृतम्। तत्तु है-
यङ्गवीनं यद्ध्योगोदोहोद्भवघृतम् ५२ दण्डाह-
तङ्कालशेयमरिष्टमपि गोरसः। तक्रं ह्युदश्विन्मथि-
तम्पादाम्ब्वर्धाम्बुनिर्जलम् ५३ मण्डन्दधिभवम्म-
स्तु पीयूषोभिनवम्पयः। अशनाया बुभुक्षा क्षुद्ग्रास-
स्तु कवलः पुमान् ५४ सपीतिः स्त्री तुल्यपानं सग्धिः
स्त्री सहभोजनम्। उदन्या तु पिपासा तृट्तर्षो ज-
ग्धिस्तु भोजनम् ५५ जेमनं लेह आहारो निघासो
न्याद इत्यपि। सौहित्यन्तर्पणन्तृप्तिः फेला भुक्तस-
मुज्झितम् ५६

(घीके नाम) घृत १ आज्य २ हवि ३ सर्प्पिः ४ (नैनू के नाम) नवनीत १
नवोद्धृत २ (एक रात्रि के जमाये हुये दही से उत्पन्न घृत का नाम) हैयङ्ग-
वीन १॥ ५२॥ (माठा मात्र के नाम) दण्डाहत १ कालशेय २ अरिष्ट ३
गोरस ४ (इनके भेद) जिस में चौथाई पानी हो वह तक्र १ जिस मा-
ठा में आधा पानी हो वह उदश्वित १ जो निर्ज्जल हो वह मथित १
॥ ५३ ॥ (मैहर वा तोर का नाम) मस्तु १ (पेउस का नाम) पीयूष १
पेयूष २ (भूख के नाम) अशनाया १ बुभुक्षा २ क्षुत ३ क्षुधा ४ (कौर
के नाम) ग्रास १ कवल २॥ ५४॥ (एक संग के पीने के नाम) सपी-
ति १ तुल्यपान २ (एक संग भोजन के नाम) सग्धि १ सहभोजन २
(पियास के नाम) उदन्या १ पिपासा २ तृट ३ तर्ष ४ तृषा ५ (भोज-
न अर्थात खाने के नाम) जग्धि १ भोजन २॥ ५५॥ जेमन ३ जमन
४ लेह ५ लेप ६ आहार ७ निघास ८ विघस ९ न्याद १० (अघाने के
नाम) सौहित्य १ तर्पण २ तृप्ति ३ (खाके बचजाने का नाम) फेला १॥ ५६॥

कामंप्रकाममपर्य्याप्तनिकामेष्टंयथेप्सितम्।
गोपेगोपालगोसंख्यगोधुगाभीरवल्लवाः ५७
गोमहिष्यादिकम्पादबन्धनंद्वौगवीश्वरे। गो-
मान्गोमीगोकुलन्तुगोधनंस्याद्गवाम्व्रजे ५८
त्रिष्वाशितङ्गवीनंतद्गावोयत्राशिताःपुरा। उ-
क्षाभद्रोबलीवर्दऋषभोवृषभोवृषः ५९ अन-
ड्वान्सौरभेयोगौरुक्ष्णांसंहतिरौक्षकम्।गव्या
गोत्रागवांवत्सधेन्वोर्वात्सकधेनुके ६० वृषो
महान्महोक्षःस्याद्वृद्धोक्षस्तुजरद्गवः।उत्पन्न-
उक्षाजातोक्षःसद्योजातस्तुतर्णकः ६१

(चाह के नाम) काम १ प्रकाम २ पर्य्याप्त ३ निकाम ४ इष्ट ५ यथे-
प्सित ६ (अहीर के नाम) गोप १ गोपाल २ गोसंख्य ३ गोधुक ४
गोदुह ५ आभीर ६ अभीर ७ वल्लव ८॥ ५७॥ (गाय भैंस आदि
का नाम) पादबन्धन १ (गाय के मालिक के नाम) गोमान् १
गोमी २ (गायों के झुण्ड के नाम) गोकुल १ गोधन २॥ ५८॥
(पुराने खरिका वा गोंठ के नाम) आशित १ गवीन २ (बैल के ना-
म) उक्षा १ भद्र २ बलीवर्द ३ ऋषभ ४ वृषभ ५ वृष ६॥ ५९॥
अनड्वान् ७ सौरभेय ८ गौ ९ (बैलों के झुण्ड का नाम) औक्षक
१ (गायों के झुण्ड के नाम) गव्या १ गोत्रा २ (बछरुओं के झु-
ण्ड का नाम) वात्सक १ (धेनुओं का झुण्ड) धेनुक १॥ ६०॥
(बड़े बैल का नाम) महोक्ष १ (बूढ़े बैल के नाम) वृद्धोक्ष १ जरद्गव २
(कलोर का नाम) जातोक्ष १ (छोटे बछरा वा बछरू का नाम) तर्णक १॥ ६१॥

शाकृत्करिस्तु वत्सः स्याद्दम्यवत्सतरौ समौ। आर्षभ्यः षण्डतायोग्यः षण्डो गोपतिरिट्चरः ६२
स्कन्धदेशे त्वस्य वहः सास्ना तु गलकम्बलः।
स्यान्नस्तितस्तु नस्योतः प्रष्ठवाड्युगपार्श्वगः।
६३ युगादीनान्तु वोढारो युग्यप्रासङ्ग्यशाकटाः।
खनति तेन तद्वोढास्येदं हालिकसैरिकौ ६४
धूर्वहे धुर्य्यधौरेयधुरीणास्सधुरन्धराः। उभावेकधुरीणैकधुरावेकधुरावहे ६५ सतु सर्व्वधुरीणास्याद्यो वै सर्व्वधुरावहः। माहेयी सौरभेयी गौरुस्रामाता च शृङ्गिणी ६६

(बछुवा मात्र के नाम) शकृत्करि १ वत्स २ (नाटा के नाम) दम्य १ वत्सतर २ (बधिया करने लायक का नाम) आर्षभ्य १ (सांड के नाम) षण्ड १ गोवाड २ गोपति ३ इट्चर ४ ककुद्मान् ५ ॥ ६२ ॥ (कांध का नाम) वह १ (गलकंबरी के नाम) सास्ना १ गलकम्बल २ (नथुवा बैल के नाम) नस्तित १ नस्योत २ (कमगुरी वा घर्साटा में नहे हुये के नाम) प्रष्ठवाट् १ युगपार्श्वग २ ॥ ६३ ॥ (जुतनियां बैल का नाम) युग्य १ (लदनियां का नाम) प्रासंग्य १ (बैल का नाम) शाकट १ हर से जोतने वा हर में चले उस के नाम) हालिक १ सैरिक २ ॥ ६४ ॥ (धुरिहा बैल के नाम) धूर्व्वह १ धुर्य्य २ धौरेय ३ धुरीण ४ धुरन्धर ५ (एक धुर के वहने वाले के नाम) एकधुरीण १ एकधुर २ एकधुरावह ३ ॥ ६५ ॥ (जो सब भार ले चले उस का नाम) सर्व्वधुरीण १ (गाय के नाम) माहेयी १ सौरभेयी २ गौ ३ उस्रा ४ माता ५ शृंगिणी ६ ॥

अर्ज्जुन्यघ्न्या रोहिणी स्यादुत्तमा गोषु नैचिकी।
वर्णादिभेदात्संज्ञास्स्युश्शावलीधवलादयः
६७ द्विहायनी द्विवर्षा गौरेकाब्दा त्वेकहायनी।
चतुरब्दा चतुर्हायण्येवन्त्र्यब्दा त्रिहायणी ६८
वशा वन्ध्याऽवतोका तु स्रवद्गर्भाथ सन्धिनी।
आक्रान्ता वृषभेणाथ वेहद्गर्भोपघातिनी ६९
काल्योपसर्य्या प्रजने प्रष्ठौही बालगर्भिणी।
स्यादचण्डी तु सुकरा बहुसूतिः परेष्टुका ७० चिर-
प्रसूता वष्कयणी धेनुस्स्यान्नवसूतिका ॥

(अर्ज्जुनी १ अघ्न्या २ रोहिणी ३ (अच्छी गाय का नाम) नैचिकी १ (चित-कबुली के नाम) शावला १ शावली २ (उजरी गाय के नाम) धवली १ धवला २॥ ६७॥ (दो वर्ष की गाय का नाम) द्विवर्षा १ (एक वर्ष की गाय का नाम) एकहायनी १ (चार वर्ष वाली का नाम) चतुर्हायणी १ (तीन वर्ष वाली) त्रिहायणी १॥ ६८॥ (बाँझ के नाम) वशा १ वन्ध्या २ (जो अंडा गिर जाया करै उसके नाम) अवतोका १ वतोका २ स्रवद्गर्भा ३ (थिरानी वा वर्द्दती हुई का नाम) सन्धिनी १ (बैल के चढ़ने से अंडा गिर गई हो उस का नाम) वेहत १॥ ६९॥ (बरदुँ गाभिनी का नाम) उपसर्य्या १ (पहिला अर्त्थात् प्रथम की गाभिन का नाम) प्रष्ठौही १ (घुड़ी गाय के नाम) अचण्डी १ सुकरा २ (बहुत बेर बियानी के नाम) बहुसूति १ परेष्टुका २॥ ७०॥ (बकेनि गाय के नाम) चिरप्रसूता १ वष्कयणी २ वष्कयिणी ३ (शाकटायन के मत से जिसका बछुवा एक वर्ष का हो उस का नाम) (नई ब्यानी हुई के नाम) धेनु १ नवसूतिका २॥

सुव्रता सुखसन्दोह्या पीनोध्नी पीवरस्तनी ७१
द्रोणक्षीरा द्रोणदुग्धा धेनुष्या बन्धके स्थिता।
समांसमीना सा यैव प्रतिवर्षम्प्रसूयते ७२ ऊ-
धस्तु क्लीबमापीनं समौ शिवककीलकौ। नपुं-
सि दाम सन्दानम्पशुरज्जुस्तु दामिनी ७३ वैशा-
खमन्थमन्थानमन्थानो मन्थदण्डके। कुठ-
रो दण्डविष्कम्भो मन्थनी गर्गरी समे ७४ उष्ट्रे
क्रमेलकमयमहाङ्गाः करभः शिशुः। करभाः
स्युश्शृङ्खलका दारवैः पादबन्धनैः ७५

१(जो दुहने में दिक्क न करे उस के नाम) सुव्रता १ सुखसन्दोह्या २ (बड़े
थन वाली के नाम) पीनोध्नी १ पीवरस्तनी २॥७१॥ (द्रोण भर दूध
देने वाली के नाम) द्रोणक्षीरा १ द्रोणदुग्धा २ (गिरउं धरी हुई गा-
य का नाम) धेनुष्या १ (बरसायण के नाम) समांसमीना १॥७२॥
(अयन वा थन के नाम) ऊधः १ आपीन २ (खूंटा के नाम) शिवक १ की-
लक २ (पगहा के नाम) दाम १ (सन्दान २ (जेवड़ा यल के नाम) पशु-
रज्जु १ दामिनी २ (किसी के मत से खुरा के नाम हैं किसी के मत से।
सन्दना न्यैढा के नाम हैं॥७३॥ (खैलरि के नाम) वैशाख १ मन्थ
२ मन्थान ३ मन्थाः ४ मन्थदण्डक ५ (जिस खम्भा में खैलरि बांधी
जाती हो उस के नाम) कुठर १ दण्डविष्कम्भ २ (महेंड़ा वा महेंड़िया
के नाम) मन्थनी १ गर्गरी २ कलशी ३॥७४॥ (ऊंट के नाम) उष्ट्र १ क्र-
मेलक २ मय ३ महांग ४ (ऊंट के बच्चा का नाम) करभ १ (काठ की बेड़ी
में बंधे हुये बच्चा का नाम) शृंखलक १॥७५॥

अजा छागी शुभच्छागवस्तच्छगलकाअजे। मेढ्रो-
रभ्रोरणोर्णायुमेषवृष्णयएडके ७६ उष्ट्रोरभ्राः
जव्रन्देस्यादौष्ट्रकौरभ्रनाजकम्। चक्रीवन्तस्तुवा-
लेयाराभभागर्द्दभाःखराः ७७ वैदेहकःसार्थ-
वाहोनैगमोवणिजोवणिक्। पण्याजीवोह्यापणि-
कःक्रयविक्रयकश्चसः ७८ विक्रेतास्याद्विक्रयि-
कःक्रायिकःक्रयिकौसमौ। वाणिज्यन्तुवणि-
ज्यास्यान्मूल्यम्वस्नोप्यवक्रयः ७९ नीवीपरि-
पणोमूलधनंलाभोधिकम्फलम्। परिदानम्प-
रीवर्त्तोनैमेयनिमयावपि ८०

(छागी के नाम) अजा १ (छागी २ खसी वा बकड़ा के नाम) शुभ १ छाग २ वस्त ३ छगलक ४ अज ५ (भेड़ के नाम) मेढ़ १ उरभ्र २ उरण ३ ऊर्णायु ४ मेष ५ वृष्णि ६ एडक ७ अवि ८॥७६॥ (ऊंटों के समूह का नाम) औष्ट्रक १ (भेड़ों के समूह का नाम) औरभ्रक १ (बकड़ों के समूह का नाम) आजक १ (गदहों के नाम) चक्रीवान् १ वालेय २ रासभ ३ गर्द्दभ ४ खर ५॥७७॥ (बनिया के नाम) वैदेहक १ सार्थवाह २ नैगम ३ निगम ४ वणिज ५ वणिक ६ पण्याजीव ७ आपणिक ८ क्रयविक्रयक ९ ॥७८॥ (बेचने वाले के नाम) विक्रेता १ विक्रयिक २ (गाहक वा मोल लेने वाले के नाम) क्रायिक १ क्रयिक २ (बनियाई के नाम) वाणिज्य १ वणिज्य २ वणिज्या ३ (मोल के नाम) मूल्य १ वस्न २ अवक्रय ३॥७९॥ (मूर के नाम) नीवी १ नीवि २ परिपण ३ मूलधन ४ (नफा के नाम) लाभ १ (अदला बदली के नाम) परीदान १ परिवर्त्त २ नैमेय ३ निमय ४॥८०॥

पुमानुपनिधिर्न्यासः प्रतिदानन्तदर्पणम्। क्र-
येप्रसारितंक्रय्यंक्रेयंक्रेतव्यमात्रके ८१ विक्रेय-
म्पणितव्यञ्चपण्यंक्रय्यादयस्त्रिषु। क्लीबेसत्या-
पनंसत्यङ्कारंसत्याकृतिस्त्रियाम् ८२ विपणो वि-
क्रयस्संख्यास्संख्येये ह्यादशत्रिषु। विंशत्याद्या-
स्सदैकत्वेसर्वास्संख्येयसंख्ययोः ८३ संख्या-
र्थेद्विबहुत्वेस्तस्तासुचानवतेःस्त्रियः। पंक्तेःशत-
सहस्रादिक्रमाद्दशगुणोत्तरम् ८४

(धरोहरि के नाम) उपनिधि१ न्यास२ (धरो हो जिस की हो उसे दे-
ने का नाम) प्रतिदान१ (बयाना का नाम) क्रय्य१ (चाहे कहीं
धरी हो पर मोल लेते हों उस वस्तु का नाम) क्रय१ ॥ ८१ ॥ (विका-
ऊ वस्तु के नाम) विक्रेय१ पणितव्य२ पण्य३ (साई देने के ना-
म) सत्यापन१ सत्यङ्कार२ सत्याकृति३ ॥ ८२ ॥ (बेचने के नाम) वि-
पणा१ विक्रय२ संख्या अर्थात् गिनती के शब्द एक से लेके
१८ पर्य्यन्त संख्येयमें दिके हैं — जैसा - एकपट - दशस्त्रियां
आदि इससे एक विप्र यही होसक्ता न कि विप्र का एक विंशति
आदि पराई पर्य्यन्त संख्या सदा एक वचन होती हैं ॥ ८३ ॥
गिनती में एक वचन बहु वचन सब होते हैं। सो बीस से लेकर
९९ पर्य्यन्त स्त्री लिंग होते हैं - पंक्ति अर्थात् १० से सौ हज़ार
आदि दश गुणा अधिक संख्या बढ़ती हैं जैसा१ एक दश१०
शत१०० सहस्र१००० अयुत१०००० लक्ष१००००० प्रयुत
१०००००० कोटि१००००००० इत्यादि ॥ ८४ ॥

यौतवन्द्रुवयम्पाय्यमितिमानार्त्थकन्त्रयम्।मा
नन्तुलांगुलिप्रस्थैर्ग्गुंजाःपञ्चाद्यमाषकः ८५ ते
षोडशाक्षःकर्षोऽस्त्रीपलङ्कर्षचतुष्टयम्। सुव
र्णविस्तौहेम्नोऽक्षेकुरुविस्तस्तुतत्पले ८६ तु
लास्त्रियाम्पलशतम्भारस्स्याद्विंशतिस्तुलाः
आचितोदशभारास्स्युश्शाकटोभारआचितः ८७
कार्षापणःकार्षिकःस्यात्कार्षिकेताम्रकेपणः
अस्त्रियामाढकद्रोणौखारीवाहोनिकुञ्चकः ८८
कुडवःप्रस्थइत्याद्याःपरिमाणार्त्थकाःपृथक्।
पादस्तुरीयोभागस्स्यादंशभागौतुवण्टके ८९

(तौलके नाम) यौतव१ द्रुवय२ पाय्य३ तौल तीन ३ प्रकारकी हैं- तुला मान अंगुलमान प्रस्थमान ३ (घुंघुंची भरके नाम) माषक१॥ ८५॥ (१६ माषकका नाम) अक्ष१ कर्ष२ (४ कर्षका नाम) पल१ (८० घुंघुंची भरके नाम) सुवर्ण१ विस्त२ (पलका नाम) कुरुविस्त१॥ ८६॥ (१०० पलका नाम) तुला१ (२० तुलाका नाम) भार१ (१० भारका नाम) आचित१ (लढ़िहा भर भारका नाम) आचित१॥ ८७॥ (रुपैया का नाम) कार्षापण१ कार्षिक२ (पैसा का नाम) पण१ (यह तुला मान कहा गया) (अंगुल मान मनुष्य वर्गमें हस्तादिक कह चुके हैं) (चारसेर का नाम) आढक१ (आठ आढक का नाम) द्रोण१ (तीन द्रोण का नाम) खारी१ (सोलह द्रोण का नाम) वाह१ (मूठीभर का नाम) निकुंचक१॥ ८८॥ (पाव भरका नाम) कुडव१ (सेर भरका नाम) प्रस्थ१ (चौथाई का नाम) पाद१ (बांट के नाम) अंश१ भाग२ वंटक३॥ ८९॥

द्रव्यम्वित्तंस्वापतेयंरिक्थमृक्थन्धनम्वसु ।हिर-
गयन्द्रविणद्युम्नमर्त्थरैविभवाअपि ९० स्यात्को-
शश्चहिरगयञ्चहेमरूप्येकृताकृते। ताभ्यांयद-
न्यत्तत्कुप्यंरूप्यन्तद्द्वयमाहतम् ९१ गारुत्म-
तम्मारकतमश्मगर्भोहरिन्मणिः। शोणरत्नं
लोहितकःपद्मरागोऽथमौक्तिकम् ९२ मुक्ता-
ऽथविद्रुमःपुंसिप्रवालम्पुन्नपुंसकम्। रत्नम्मणि-
र्द्वयोरश्मजातौमुक्तादिकेपिच ९३ स्वर्णंसुव-
र्णंकनकंहिरगयंहेमहाटकम्। तपनीयंशा-
तकुम्भङ्गाङ्गेयम्भर्म्मकर्ब्बुरम् ९४

(धनके नाम) द्रव्य १ वित्त २ स्वापतेय ३ रिक्थ ४ ऋक्थ ५ धन ६
वसु ७ हिरगय ८ द्रविण ९ द्युम्न १० अर्त्थ ११ रै १२ विभव १३
॥ ९०॥ (सोने चांदी दोनों के नाम) हिरगय १ कोश २ (ताम्रा-
दि द्रव्य का नाम) कुप्य १ ॥ ९१॥ (नाम रूप के मेल का नाम)
रूप्य १ (हिरगय मणि के नाम) गारुत्मत १ मारकत २ अश्मग-
र्भ ३ हरिन्मणि ४ (माणिक के नाम) शोणरत्न १ लोहित-
क २ पद्मराग ३ (मोती के नाम) मौक्तिक १ ॥ ९२॥ मुक्ता २ (मूं-
गा के नाम) विद्रुम १ प्रवाल २ (पद्मरागादि और मोती आदि
रत्न मात्र के नाम) रत्न १ मणि २॥ ९३॥ (सोने के नाम) स्व-
र्ण १ सुवर्ण २ कनक ३ हिरगय ४ हेम ५ हाटक ६ तपनीय ७
शातकुम्भ ८ गांगेय ९ भर्म्म १० कर्ब्बुर ११ ॥ ९४॥

चामीकरं जातरूपं महारजत काञ्चने। रुक्मङ्कार्त्तस्वरं जाम्बूनदमष्टापदोऽस्त्रियाम् ९५ अलङ्कारसुवर्णां यच्छृङ्गीकनकमित्यदः। दुर्व्वर्णं रजतं रूप्यं खर्ज्जूरं श्वेतमित्यपि ९६ रीतिस्त्रियामारकूटो नस्त्रियामथताम्रकम्। शुल्वं म्लेच्छमुखं द्व्यष्ट वरिष्ठोदुम्बराणि च ९७ लोहोऽस्त्री शस्त्रकन्तीक्ष्णम्पिण्डं कालायसायसी। अश्मसारोऽथमण्डूरं सिंहाणमपि तन्मले ९८ सर्व्वञ्च तैजसं लोहं विकारस्त्वयसः कुशी। क्षारः काचोऽथ चपलो रसः सूतश्च पारदे ९९

(चामीकर १२ जातरूप १३ महारजत १४ काञ्चन १५ रुक्म १६ कार्त्तस्वर १७ जाम्बूनद १८ अष्टापद १९॥ ९५॥ (गहना रूपा सोने का नाम) शृंगी कनक १ (चांदी के नाम) दुर्व्वर्ण १ रजत २ रूप्य ३ खर्ज्जूर ४ श्वेत ५ तार ६ कलधौत ७॥ ९६॥ (पीतरि के नाम) रीति १ आरकूट २ (ताम के नाम) ताम्रक १ शुल्व २ म्लेच्छमुख ३ द्व्यष्ट ४ दिष्ट ५ वरिष्ठ ६ उदुम्बर ७ औदुम्बर ८॥ ९७॥ (लोह के नाम) लोह १ शस्त्रक २ तीक्ष्ण ३ पिण्ड ४ कालायस ५ अयः ६ अश्मसार ७ (सिंघानि के नाम) मण्डूर १ सिंहाण २॥ ९८॥ (चांदी सोना लोहादि सब का नाम) लोह १ (फाल का नाम) कुशी १ (कांच के नाम) क्षार १ कांच २ (पारा के नाम) चपल १ रस २ सूत ३ पारद ४॥ ९९॥

गवलम्माहिषंशृङ्गमभ्रकङ्गिरिजामले। स्रोतो-
ञ्जनन्तु सौवीरङ्कापोताञ्जनयामुने २०० तुत्थां
जनंशिखिग्रीववित्तुन्नकमयूरके। कर्परी दा-
र्विका क्वाथोद्भवन्तुत्थंरसांजनम् २०१ रसगर्भ-
न्तार्क्ष्यशैलङ्गन्धाश्मनि तुगन्धिकः। सौगन्धिक-
श्च चक्षुष्याकुलाल्यौ तु कुलत्थिका २०२ रीति-
पुष्पम्पुष्पकेतु पुष्पकं कुसुमाञ्जनम्। पिञ्जरम्पी-
तनन्तालमालञ्च हरितालके २०३ गैरेयमर्त्थ्यं
ङ्गिरिजमश्मजञ्च शिलाजतु। बोलगन्धरसप्रा-
णपिण्डगोपरसाः समाः २०४

(भैंस की सींग का नाम) गवल१ (अबरख के नाम) अभ्रक१ गि-
रिजामल२ गिरिज३ अमल४ (सुरमा के नाम) स्रोतोञ्जन
१ सौवीर२ कापोताञ्जन३ यामुन४ ॥२००॥ (तूतिया के ना-
म) तुत्थाञ्जन१ शिखिग्रीव२ वितुन्नक३ मयूरक४ कर्परी
५ (रसौत के नाम) रसाञ्जन१ ॥२०१॥ रसगर्भ२ तार्क्ष्यशै-
ल३ (गन्धक के नाम) गन्धाश्मा१ गन्धिक२ गन्धक३ सौगन्धि-
क४ (काले सुरमा के नाम) चक्षुष्या१ कुलाली२ कुलत्थिका
३ ॥२०२॥ (पीतरि को तपा के घिसने से जो आंजन बने उस के
नाम) रीतिपुष्प१ पुष्पकेतु२ पुष्पक३ कुसुमाञ्जन४ (हरि-
तार के नाम) पिञ्जर१ पीतन२ ताल३ आल४ हरितालक५ ॥२०३॥ (गेरू वा
शिलाजीत के नाम) गैरेय१ अर्त्थ्य२ गिरिज३ अश्मज४ शिलाजतु५ (गन्ध-
रस के नाम) बोल१ गन्धरस२ प्राण३ पिण्ड४ गोपरस५ ॥२०४॥

डिण्डीरोऽब्धिकफः फेनः सिन्दूरं नागसम्भवम्। नागसीसकयोगेष्ट वप्राणि त्रपुपिच्चटम् २०५ रङ्गवङ्गे अथ पिचुस्तूलोऽथ कमलोत्तरम्। स्यात्कुसुम्भं वह्निशिखं महारजनमित्यपि २०६ मेषकम्बल ऊर्णायुः शशोर्णं शशलोमनि। मधु क्षौद्रं माक्षिकादि मधूच्छिष्टन्तु सिक्थकम् २०७ मनःशिला मनोगुप्ता मनोह्वा नागजिह्विका। नैपाली कुनटी गोला यवक्षारो यवाग्रजः २०८ पाक्योऽथ सर्ज्जिकाक्षारः कापोतः सुखवर्चकः॥

(समुद्रफेनके नाम) डिण्डीर १ अब्धिकफ २ फेन ३ (सेंदुर के नाम) सिन्दूर १ नागसम्भव २ (सीस के नाम) नाग १ सीसक २ योगेष्ट ३ वप्र ४ (रांग के नाम) त्रपु १ पिच्चट २॥२०५॥ रंग ३ वंग ४ (रूई के नाम) पिचु १ तूल २ (कुसुम के नाम) कमलोत्तर १ कुसुम्भ २ वह्निशिख ३ महारजन ४॥२०६॥ (भेड़ा के ऊन से बने हुये कम्बर के नाम) मेषकम्बल १ ऊर्णायु २ (खरगोश के ऊन के कम्बर के नाम) शशोर्ण १ शशलोम २ (ममाखी का शहद के नाम) मधु १ क्षौद्र २ माक्षिक ३ (मोम के नाम) मधूच्छिष्ट १ सिक्थक २॥२०७॥ (मैनशिर के नाम) मनःशिला १ मनोगुप्ता २ मनोह्वा ३ नागजिह्विका ४ (नैपाली मैनशिल के नाम) नैपाली १ कुनटी २ गोला ३ किसी के मत से ये सब एक ही के नाम हैं॥ (यवाखार के नाम) यवक्षार १ यवाग्रज २॥२०८॥ पाक्य ३ (सज्जी के नाम) सर्ज्जिकाक्षार १ कापोत २ सुखवर्चक ३॥

सौवर्च्चलं स्याद्रुचकं त्वक्क्षीरी वंशरोचना ॥ १०९ ॥ शिग्रुजं श्वेतमरिचं मोरटं मूलमैक्षवम् । ग्रन्थिकं पिप्पलीमूलं चटिकाशिर इत्यपि ॥ ११० ॥ गोलोमी भूतकेशो ना पत्राङ्गं रक्तचन्दनम् । त्रिकटु त्र्यूषणं व्योषं त्रिफला तु फलत्रिकम् ॥ १११ ॥ इति वैश्यवर्गः ॥

शूद्राश्चावरवर्णाश्च वृषलाश्च जघन्यजाः । आचाण्डालात्तु सङ्कीर्णा अम्बष्ठकरणादयः ॥ १ ॥

(सोंचर के नाम) सौवर्च्चल १ रुचक २ (वंशलोचन के नाम) त्वक्क्षीरी १ वंशरोचना २ वंशलोचना ३ ॥ १०९ ॥ (उजली मिर्च्च सोभाञ्जन के नाम) शिग्रुज १ श्वेतमरिच २ (ऊंख की जर का नाम) मोरट १ (पिपरा मूरि के नाम) ग्रन्थिक १ पिप्पलीमूल २ चटिकाशिर ३ ॥ ११० ॥ (जटा मासी के नाम) गोलोमी १ भूतकेश २ ॥ (पतंग के नाम) पत्राङ्ग १ रक्तचन्दन २ (सोंठि पीपरि मिर्च्च इन तीनों के बटोर के नाम) त्रिकटु १ त्र्यूषण २ व्योष ३ (आंवरा हर्रा बहेरा के बटोर के नाम) त्रिफला १ फलत्रिक २ ॥ १११ ॥ इति वैश्यवर्गः ॥

(शूद्र के नाम) शूद्र १ अवरवर्ण २ वृषल ३ जघन्य ४ अंघ्रिज ५ (ब्राह्मणी में शूद्र से उत्पन्न हो उस का नाम) चाण्डाल १ (चण्डाल से लेकर अम्बष्ठ पर्य्यन्त का नाम) सङ्कीर्ण १ ॥ १ ॥

शूद्राविशोस्तु करणोऽम्बष्ठो वैश्याद्विजन्मनोः शूद्राक्षत्रिययोरुग्रो मागधः क्षत्रियाविशोः २ माहिष्योर्य्याक्षत्रिययोः क्षत्तार्य्याशूद्रयोस्सुतः। ब्राह्मण्यांक्षत्रियात्सूतस्तस्यांवैदेहको विशः ३ रथकारस्तु माहिष्यात्करण्यांयस्यसम्भवः। स्याच्चण्डालस्तुजनितो ब्राह्मण्यांवृषलेनयः ४ कारुश्शिल्पीसंहतैस्तैर्द्वयोःश्रेणिस्सजातिभिः। कुलकस्स्यात्कुलश्रेष्ठी मालाकारस्तु मालिकः ५

(शूद्रिनि में वैश्य से पैदा हुये का नाम) करण १ (बनिनि से ब्राह्मण से हो उस का नाम) अम्बष्ठ १ (शूद्रिनि में क्षत्रिय से हुये का नाम) उग्र १ (क्षत्रिणी में वैश्य से हुये का नाम) मागध १॥२॥ (बनिनि में क्षत्रिय से हुये का नाम) माहिष्य १ (क्षत्रिणी में शूद्र से हुये का नाम) क्षत्ता १ (ब्राह्मणी में क्षत्रिय से हुये का नाम) सूत १ (ब्राह्मणी में वैश्य से हुये का नाम) वैदेहक १॥ ३॥ (शूद्रिनि में वैश्य से पैदा हुई जो करणी है उस में बनिनि में क्षत्रिय से पैदा हुआ माहिष्य है उस्से पैदा हुये का नाम) रथकार १ (ब्राह्मणी में शूद्र से हुये का नाम) चण्डाल १ चाण्डाल २॥ ४॥ (बढ़ई वा चितेरे के नाम) कारु १ शिल्पी २ वा - बढ़ई कोरी नाऊ धोबी चमार इन के भी यही नाम हैं) कारु १ शिल्पी २ (शिल्पियों की पंक्ति का नाम) श्रेणि १ (शिल्पियों के कुल के प्रधान के नाम) कुलक १ कुलश्रेष्ठी २ (माली के नाम) मालाकार १ मालिक २॥ ५॥

कुम्भकारः कुलालः स्यात्पलगराडस्तु लेपकः। तन्तुवायः कुविन्दः स्यात्तुन्नवायस्तु सौचिकः ६ रङ्गाजीवश्चित्रकरः शस्त्रमार्जोऽसिधावकः। पादूकृच्चर्मकारः स्याद्व्योकारो लोहकारकः ७ नाडिन्धमः स्वर्णकारः कलादो रुक्मकारकः। स्याच्छाङ्खिकः काम्बविकः शौल्विकस्ताम्रकुट्टकः ८ तक्षा तु वर्द्धकिस्त्वष्टा रथकारस्तु काष्ठतट्। ग्रामाधीनो ग्रामतक्षः कौटतक्षोऽनधीनकः ९ क्षुरी मुण्डी दिवाकीर्त्तिर्नापितान्तावसायिनः। निर्णेजकः स्याद्रजकः शौण्डिको मण्डहारकः १०

(कुम्हार के नाम) कुम्भकार १ कुलाल २ (कमगर के नाम) पल-गराड १ लेपक २ (कोरी के नाम) तन्तुवाय १ तन्त्रवाय २ कुविन्द ३ (दरजी के नाम) तुन्नवाय १ सौचिक २ ॥ ६ ॥ (रंगसाज़ के नाम) रं-गाजीव १ चित्रकार २ (शिकिल्गी के नाम) शस्त्रमार्ज्ज १ असिधावक २ (चमार के नाम) पादूकृत १ चर्म्मकार २ (लोहार के नाम) व्योकार १ लौहकारक २ ॥ ७ ॥ (सोनार के नाम) नाडिन्धम १ स्वर्णकार २ क-लाद ३ रुक्मकारक ४ (चुरिहारे के नाम) शाङ्खिक १ काम्बविक २ (ठठेर के नाम) शौल्विक १ ताम्रकुट्टक २ ॥ ८ ॥ (बढ़ई के नाम) तक्षा १ वर्द्धकि २ त्वष्टा ३ रथकार ४ काष्ठतट् ५ (गांउके बढ़ई का नाम) ग्रामतक्ष १ (मनमाने स्वतन्त्र खुदमुख़्तियार बढ़ई का नाम) कौटतक्ष १ ॥ ९ ॥ (नाऊ के नाम) क्षुरी १ मुण्डी २ दिवाकीर्त्ति ३ नापित ४ अन्तावसायी ५ (धोबी के नाम) निर्णेजक १ रजक २ (कलवार के नाम) शौण्डिक १ मण्डहारक २ ॥ १० ॥

जाबालस्स्यादजाजीवो देवाजीवस्तु देवलः। स्या-
न्माया शाम्बरी मायाकारस्तु प्रतिहारकः २१ शै-
लालिनस्तु शैलूषा जायाजीवाः कृशाश्विनः। भर-
ता इत्यपि नटाश्चारणास्तु कुशीलवाः २२ मार्द-
ङ्गिका मौरजिकाः पाणिवादास्तु पाणिघाः। वेणु-
ध्मास्स्युर्वैणविका वीणावादास्तु वैणिकाः २३
जीवान्तकश्शाकुनिको द्वौ वागुरिकजालिकौ।
वैतंसिकः कौटिकश्च मांसिकश्च समन्त्रयम् २४
भृतको भृतिभुक्कर्म्मकरो वैतनिकोपि सः। वार्त्तावि-
हो वैवधिको भारवाहस्तु भारिकः २५

(गड़रिया के नाम) जाबाल १ अजाजीव २ (पराड़ा के नाम) देवा-
जीव १ देवल २ (इन्द्रजाल के नाम) माया १ शाम्बरी २ (इन्द्रजाली
के नाम) मायाकार १ प्रतिहारक २॥ २१॥ (नट के नाम) शैलाली १
शैलूष २ जायाजीव ३ कृशाश्वी ४ भरत ५ भारत ६ नट ७ (कथिक के
नाम) चारण १ कुशीलव २॥ २२॥ (मृदङ्ग के बजाने वाले के ना-
म) मार्दङ्गिक १ मौरजिक २ (ताड़ी देने वाले के नाम) पाणिवाद १ पा-
णिघ २ (बांसुरी बजाने वाले के नाम) वेणुध्मा १ वैणविक २ (बीन ब-
जाने वाले के नाम) वीणावाद १ वैणिक २॥ २३॥ (चिरीमार के नाम)
जीवान्तक १ शाकुनिक २ (व्याध के नाम) वागुरिक १ जालिक २ (चि-
कवा वा कसाई के नाम) वैतंसिक १ कौटिक २ मांसिक ३॥ २४॥
(मजूर के नाम) भृतक १ भृतिभुक २ कर्म्मकार ३ वैतनिक ४ (संदेशिहा
के नाम) वार्त्तावह १ वैवधिक २ (बोझिया मुटहा के नाम) भारवाह १ भारिक २॥ २५

विवर्णः पामरो नीचः प्राकृतश्च पृथग्जनः। निहीनोऽपसदो जाल्मः क्षुल्लकश्चेतरश्च सः २६ भृत्ये दासेरदासेयदासगोप्यकचेटकाः। नियोज्यकिङ्करप्रैष्यभुजिष्यपरिचारकाः २७ पराचितपरिस्कन्दपरजातपरैधिताः २८ मन्दस्तुन्दपरिमृजआलस्यः शीतकोऽलसोऽनुष्णः। दक्षे तु चतुरपेशलपटवः सूत्थान उष्णश्च २९ चण्डालप्लवमातङ्गदिवाकीर्तिजनङ्गमाः। निषादश्वपचावन्तेवासिचाण्डालपुक्कसाः। भेदाः किरातशबरपुलिन्दा म्लेच्छजातयः ३०

(नीच के नाम) विवर्ण १ पामर २ नीच ३ प्राकृत ४ पृथग्जन ५ निहीन ६ अपसद ७ अपशद ८ जाल्म ९ क्षुल्लक १० इतर ११॥ २६॥ (दास वा टहलुआ के नाम) भृत्य १ दासेर २ दासेय ३ दास ४ दाश ५ गोप्यक ६ चेटक ७ नियोज्य ८ किङ्कर ९ प्रैष्य १० प्रेष्य ११ भुजिष्य १२ परिचारक १३॥ २७॥ (जो दूसरे से पाला जाय उस के अर्थात् रहुआ के नाम) पराचित १ परिस्कन्द २ परिष्कन्द ३ परजात ४ परैधित ५ (मन्द वा सुस्त के नाम) मन्द १ तुन्दपरिमृज २ आलस्य ३ शीतक ४ अलस ५ अनुष्ण ६॥ २८॥ (चतुर के नाम) दक्ष १ चतुर २ पेशल ३ पटु ४ सूत्थान ५ उष्ण ६॥ २९॥ (चण्डाल के नाम) चण्डाल १ प्लव २ मातङ्ग ३ दिवाकीर्ति ४ जनङ्गम ५ जलङ्गम ६ निषाद ७ श्वपच ८ श्वपाक ९ अन्तेवासी १० चाण्डाल ११ पुक्कस १२ (म्लेच्छ जाति भेद जंगली गोमांस खाने वाले लोकबाह्य बोलने वालों के नाम) किरात १ शबर २ पुलिंद ३॥ ३०

व्याधो मृगवधाजीवो मृगयुर्लुब्धकोपिसः।
कौलेयकस्सारमेयः कुक्कुरो मृगदंशकः २१ शु
नको भषकः श्वा स्यादलर्कस्तु स योगितः। श्वा
विश्वकद्रुर्मृगया कुशलस्सरमा शुनी २२ विट्च
रस्सूकरो ग्राम्यो वर्करस्तरुणः पशुः। आच्छो
दनम्मृगव्यं स्यादाखेटो मृगया स्त्रियाम २३
दक्षिणारुस्तु लुब्धयोगाद्दक्षिणेर्म्मा कुरङ्गकः।
चौरैकागारिकस्तेनदस्युतस्करमोषकाः २४ प्रति
रोधिपरास्कन्दिपाटच्चरमलिम्लुचाः। चौरिका
स्तैन्यचौर्य्ये च स्तेयं लोप्त्रन्तु तद्धने २५

(व्याध के नाम) व्याध १ मृगवधाजीव २ मृगयु ३ लुब्धक ४ (कुक्कुर
के नाम) कौलेयक १ सारमेय २ कुक्कुर ३ कुक्कुर ४ मृगदंशक ५॥
॥२१॥ शुनक ६ भषक ७ श्वा ८ शुनि ९ श्वान १० कपिल ११ मराङ्ग-
ल १२ शुन १३ (सिरताये कूकुर का नाम) अलर्क १ (शिकारी कुत्ते
का नाम) विश्वकद्रु १ (कुतिया के नाम) सरमा १ शुनी २॥२२॥
(गांव के सोर का नाम) विट्चर १ (बकरा वा ज्वान पशुमात्र का
नाम) वर्कर १ (शिकार के नाम) आच्छोदन १ मृगव्य २ आखेट ३
मृगया ४॥२३॥ (जिस मृग के व्याधने दहिने अंग में मारा हो उसका
नाम) दक्षिणेर्म्मा १ (चोर के नाम) चोर १ चोर २ एकागारिक ३ स्ते
न ४ दस्यु ५ तस्कर ६ मोषक ७॥२४॥ प्रतिरोधि ८ परास्कन्दि ९
पाटच्चर १० पटच्चर ११ मलिम्लुच १२ (चोरी के नाम) चौरिका १ स्तै
न्य २ स्तेय ३ चौर्य्य ४ (चोरी के मालका नाम) लोप्त्र १ लोत्र २ लोन ३॥२५॥

वीतंसस्तूपकरणं बन्धने मृगपक्षिणाम्। उन्माथः कूटयन्त्रं स्याद्वागुरा मृगबन्धनी २६ शुल्ब-स्वराटकं स्त्रीतु रज्जु स्त्रिषु वटीगुणः। उद्घाटन घटीयन्त्रं सलिलोद्वाहनं प्रहेः २७ पुंसि वेमा वायदण्डः सूत्राणि नरितन्तवः। वाणिर्व्यूति-स्त्रियौ तुल्ये पुस्तं लेप्यादि कर्म्मणि २८ पा-ञ्चालिका पुत्रिका स्याद्वस्त्रदन्तादिभिः कृता। जतुत्रपुविकारे तु जातुषन्त्रापुषन्त्रिषु २९ पिटकः पेटकः पेटा मंजूषाथ विहङ्गिका। भारयष्टि-स्तदालम्बि शिक्यं काचोथ पादुका ३०

(पक्षी वा मृगों के बझाने की सामग्री जालादि का नाम) वीतंस१ (बाभर के नाम) उन्माथ१ कूटयन्त्र२ (जाल के नाम) वागुरा१ मृगबन्धनी२॥२६॥ (रस्सी के नाम) शुल्ब१ वराटक२ रज्जु३ वटी४ गुण५ (रहँट के नाम) उद्घाटन१ घटीयन्त्र२॥२७॥ (राछि के नाम) वेमा१ वेम२ वायदण्ड३ वापदण्ड४ (सूत के नाम) सूत्र१ तन्तु२ (बानी व्ययारी वा बीनने के नाम) वाणि१ व्यूति२ व्युति३ (मट्टी काष्ठ वस्त्र चर्म्म आदि से पोतने वा लिखने का नाम) पुस्त१॥२८॥ (गुड़िया गुड़वा के नाम) पुत्रिका१ पाञ्चालिका२ (लाह की वस्तु का नाम) जातुष१ (रांगा की वस्तु का नाम) त्रापुष१॥२९॥ (पिटारी वा प्यटार के नाम) पिटक१ पेटक२ पेटा३ मंजूषा४ (बहँगी वा काँवरि के नाम) विहंगिका१ भारयष्टि२ (सिकहर के नाम) शिक्य१ काच२ (पनही वा जूता का नाम) पादुका१॥३०॥

पादू रुपानत्स्त्रीसैवानुपदीनापदायता। नध्रीव-
ध्रीवरत्रा स्यादश्ववादेस्ताडनीकशा ३१ चाराडा-
लिकातुकराडोलवीराा चराडालवल्लकी। नारा-
चीस्यादेषरिाकाश्शारास्तुनिकषःकषः३२ व्र-
श्चनःपत्रपरशुरिषीकातूलिकासमे। तैजसावर्त्त-
नीमूषाभस्त्राचर्म्मप्रसेविका ३३ आस्फोटनीवे-
धनिकाकृपारााीकर्त्तरीसमे। वृक्षादनीवृक्षभे-
दीटंकःपाषाारादाररााः ३४ क्रकचोऽस्त्रीकरपत्र
माराचर्म्मप्रभेदिका। सूर्म्मीस्थूराााऽयःप्रतिमा।
शिल्पङ्कर्म्मकलादिकम ३५

पादू २ उपानत् ३ (जोडाकानाम) अनुपदीना १ (बेरीतिकेनाम) नध्री
२ वध्री २ वरत्रा ३ (जेरवन्दकानाम) कशा १॥३१॥ (किंगिरीकेनाम)
चाराडालिका १ कराडोलवीराा २ चराडालवल्लकी ३ (सोनारकी
कटियावा कांटा केनाम) नाराची १ एषरिाका २ (कसौटीकेना-
म) शारा १ निकष २ कष ३॥३२॥ (रेती के नाम) व्रश्चन १ पत्रपर-
शु २ (सलाईकेनाम) इषीका १ तूलिका २ (घरियाकेनाम) तैजसा-
वर्त्तनी १ मूषा २ मुषा ३ मूषी ४ मुषी ५ (खलायटकेनाम) भस्त्रा १ च-
र्म्मप्रसेविका २॥३३॥ (वरमीकेनाम) आस्फोटनी १ वेधनिका
२ (कतरनी केनाम) कृपाराी १ कर्त्तरी २ (वांकाकेनाम) वृक्षा-
दनी १ वृक्षभेदी २ (टांकी के नाम) टङ्क १ पाषाारादारारा २॥३४॥
(आरा केनाम) क्रकच १ करपत्र २ (रांपीके नाम) आरा १ चर्म्म-
प्रभेदिका २ (लोह की प्रतिमा का नाम) सूर्म्मी १ स्थूराा २ अयः
प्रतिमा ३ (गीत नृत्य अथवा आदिके कर्म्मकानाम) शिल्प १ ३५

प्रतिमानम्प्रतिबिम्बं प्रतिमा प्रतियातना प्रतिच्छाया। प्रतिकृतिरर्च्चा पुंसि प्रतिनिधिरुपमोपमानंस्यात् ३६ वाच्यलिङ्गास्समस्तुल्यस्सदृक्षस्सदृशस्सदृक्। साधारणस्समानश्चस्युरुत्तरपदेत्वमी ३७ निभसङ्काशनीकाशप्रतीकाशोपमादयः। कर्म्मण्यानुविधाभृत्याभृतयोभर्म्मवेतनम् ३८ भरण्यम्भरणम्मूल्यन्निर्व्वेशःपणाइत्यपि। सुराहलिप्रियाहालापरिस्रुद्वरुणात्मजा ३९ गन्धोत्तमाप्रसन्नेराकादम्बर्य्यःपरिस्रुता। मदिराकश्यमद्येचाप्यवदंशस्तुभक्षणम् ४०

१(प्रतिमा अर्थात् तसवीर के नाम) प्रतिमान१ प्रतिबिम्ब २ प्रतिमा ३ प्रतियातना४ प्रतिच्छाया ५ प्रतिकृति६ अर्च्चा७ प्रतिनिधि ८(मिसाल और जिसकी मिसाल दीजाय उस के नाम) उपमा१ उपमान२॥ ३६॥ (बराबर के नाम) सम१ तुल्य२ सदृक्ष ३ सदृश४ सदृक्५ साधारण ६ समान७॥ ३७॥ निभ ८ सङ्काश९ नीकाश१० प्रतीकाश११ उपमा १२ (मजूरी के नाम) कर्म्मण्या१ विधा २भृत्या ३ भृति ४ भर्म्म५ वेतन६ ॥ ३८॥ भरण्य७ भरण ८ मूल्य ९ निर्वेश१० पण११ (मदिरा अर्थात् दारू के नाम) सुरा१ हलिप्रिया२ हाला३ परिस्रुत्४ वरुणात्मजा५॥ ३९॥ गन्धोत्तमा६ प्रसन्ना७ इरा८ कादम्बरी९ परिस्रुता१० मदिरा ११ कश्य१२ मद्य १३ (भोजन के बीच में खट्टी चरपरी करू आदि वस्तु जिसके खालेने से अधिक खाया जाय उस के नाम) अवदंश १ ॥ ४०॥

शुराडापानम्मदस्थानम्मधुवारामधुक्रमाः। म-
ध्वासवो माधवकोमधुमाध्वीकमद्वयोः ४१
मैरेयमासवस्सीधुर्म्मेदकोजगलस्समौ। सन्धा-
नंस्यादभिषवःकिरावम्पुंसितुनग्नहूः ४२ का-
रोत्तरस्सुरामण्ड आपानम्पानगोष्ठिका। चष-
कोऽस्त्रीपानपात्रंसरकोप्यनुतर्षणम् ४३ धू-
र्त्तोऽक्षदेवीकितवोऽक्षधूर्त्तोद्यूतकृत्समाः।
स्युर्ल्लग्नकाःप्रतिभुवस्सभिकाद्यूतकारकाः४४

(मदिरा पीने के स्थान के नाम) शुराडापान१ मदस्थान२ शु-
राडा३ पान४ (मदिरा पीने के समय के नाम) मधुवार१ मधुक्रम
२ (महुआ से उत्पन्न मदिरा के नाम) मध्वासव१ माधवक२ म-
धु३ माध्वीक४ ॥४१॥ (गुड़ सीरा की मदिरा के नाम) मैरेय१
आसव२ सीधु३ शीधु४ (मदिरा कैल्क के नाम) मेदक१ जगल
२ (मदिरा करने के नाम) सन्धान१ अभिषव२ (सुराबीज वा
मत्तवा मतवाल नंगे होके पुकारने के नाम) किराव१ नग्नहू२
॥४२॥ (मदिरा फूल के नाम) कारोत्तर१ सुरामण्ड२ (दारू
पीने की सभा के नाम) आपान१ पानगोष्ठिका२ (दारू के बर्त्त-
न के नाम) चषक१ पानपात्र२ (मदिरा पीने के नाम) सरक१
अनुतर्षण२॥४३॥ (जुआरी के नाम) धूर्त्त१ अक्षदेवी२ कि-
तव३ अक्षधूर्त्त४ द्यूतकृत्५ (जामिन के नाम) लग्नक
१ प्रतिभू२ (फड़ बाज़ के नाम) सभिक१ द्यूतकारक
२॥४४॥

द्यूतोऽस्त्रियामक्षवती कैतवं पण इत्यपि। प-
णोऽक्षेषु ग्लहोऽक्षास्तु देवनाः पाशकाश्च ते ४५
परिणायस्तु शारीणां समन्तान्नयनेऽस्त्रियाम्।
अष्टापदं शारिफलं प्राणिद्यूतं समाह्वयः ४६
उक्ता भूरिप्रयोगत्वादेकस्मिन्येऽत्र यौगिकाः। ताद्ध-
र्म्यादन्यतो वृत्तावूह्या लिङ्गान्तरेऽपि ते ४७॥ इति
शूद्रवर्गः॥

इत्यमरसिंहस्य नामलिङ्गानुशासने॥
भूम्यादिकाण्डे द्वितीयस्साङ्ग एव समर्थितः॥

(जुआ के नाम) द्यूत १ अक्षवती २ कैतव ३ पण ४ (बाजी लगा-
ने के नाम) पण १ ग्लह २ (पांसा के नाम) अक्ष १ देवन २ पाशक ३
॥४५॥ (गोटों के इधर उधर धरने का नाम) परिणाय १ (बिसा
ति वा जिस कपड़े पर गोटें खेलते हैं उस के नाम) अष्टापद १ शा-
रिफल २ (जीवों के लड़ाने की बाजी का नाम) समाह्वय १॥४६॥
काव्य पुराणानुसार इस शूद्र वर्ग में कुम्भकार मालाका-
रादि शब्द पुल्लिंग ही बनाये हैं परउन के स्त्रीलिंग नपुं-
सक लिंग भी जानने चाहिये जैसे कुलाली-कुम्हारिनि-
मालाकारी-मालिनि इत्यादि॥४७॥ इति शूद्रवर्गः॥
इत्यमरकोषभाषाटीकायां द्वितीयः काण्डः॥२॥

श्रीगणेशाय नमः॥

# अथाऽमरकोषस्य

## तृतीयंकाण्डम्॥

विशेष्यनिघ्नैः सङ्कीर्णैर्नानार्थैरव्ययैरपि।
लिङ्गादिसंग्रहैर्वर्गाः सामान्ये वर्गसंश्रयाः॥१
स्त्रीदाराद्यैर्यद्विशेष्यं यादृशैः प्रस्तुतम्पदैः। गु-
णद्रव्यक्रियाशब्दास्तथा स्युस्तस्य भेदकाः॥२ सु-
कृती पुण्यवान्धन्यो महेच्छस्तु महाशयः। हृ-
दयालुः सुहृदयो महोत्साहो महोद्यमः॥३ प्रवी-
णे निपुणाभिज्ञविज्ञनिष्णातशिक्षिताः। वै-
ज्ञानिकः कृतमुखः कृती कुशल इत्यपि॥४

(भाग्यवान के नाम) सुकृती १ पुण्यवान् २ धन्य ३ (उदा-
रचित्त दयालु के नाम) महेच्छ १ महाशय २ (सूधे मनुष्य के
नाम) हृदयालु १ सुहृदय २ (बड़े युक्ती मनुष्य के नाम) महो
त्साह १ महोद्यम २॥३॥ (प्रवीण जनैया के नाम) प्रवीण १
निपुण २ अभिज्ञ ३ विज्ञ ४ निष्णात ५ शिक्षित ६ वैज्ञानिक
७ कृतमुख ८ कृती ९ कुशल १०॥४॥

द्यूतोऽस्त्रियामक्षवती कैतवम्पणइत्यपि। पणोऽक्षेषु ग्लहोक्षास्तु देवनाः पाशकाश्चते ४५ परिणायस्तु शारीणां समन्तान्नयनेऽस्त्रियाम्। अष्टापदं शारिफलम्प्राणिद्यूतं समाह्वयः ४६ उक्ता भूरि प्रयोगत्वादेकस्मिन्येऽत्र यौगिकाः। ताद्धर्म्यादन्यतो वृत्तावूह्या लिङ्गान्तरेऽपिते ४७॥ इति शूद्रवर्गः॥

इत्यमरसिंहस्य नामलिङ्गानुशासने॥
भूम्यादिकाण्डो द्वितीयस्साङ्ग एव समर्थितः॥

(जुआ के नाम) द्यूत १ अक्षवती २ कैतव ३ पण ४ (बाजी लगाने के नाम) पण १ ग्लह २ (पांसा के नाम) अक्ष १ देवन २ पाशक ३ ॥४५॥ (गोटों के इधर उधर धरने का नाम) परिणाय १ (बिसाति वा जिस कपड़े पर गोटें खेलते हैं उस के नाम) अष्टापद १ शारिफल २ (जीवों के लड़ाने की बाजी का नाम) समाह्वय १॥४६॥ काव्य पुराणानुसार इस शूद्र वर्ग में कुम्भकार माला कारादि शब्द पुल्लिंग ही बनाये हैं पर उन के स्त्रीलिंग नपुंसक लिंग भी जानने चाहिये जैसे कुलाली - कुम्हारिनि - मालाकारी - मालिनि इत्यादि ॥४७॥ इति शूद्रवर्गः॥

इत्यमर कोष भाषा टीकायां द्वितीयः काण्डः ॥ २॥

तत्परे प्रसितासक्ताविष्टार्थोद्युक्त उत्सुकः। प्रती-
ते प्रथितख्यातवित्तविज्ञातविश्रुताः ९ गुणैः
प्रतीतेतु कृतलक्षणाहतलक्षणौ। इभ्य आ-
ढ्यो धनी स्वामी त्वीश्वरः पतिरीशिता १० अधि-
भूर्नायको नेता प्रभुः परिवृढोऽधिपः। अधिकर्द्धि-
स्समृद्धस्स्यात्कुटुम्बव्यापृतस्तुयः ११ स्यादभ्या-
गारिकस्तस्मिन्नुपाधिश्च पुमानयम्। वराङ्ग-
रूपोपेतो यस्सिंहसंहननो हि सः १२ निर्व्वार्य्यः
कार्य्यकर्त्ता यस्सम्पन्नस्सत्त्वसम्पदा। अवाचि
मूकोऽथ मनोजवसः पितृसन्निभः १३

(लीन हुये के नाम) तत्पर १ प्रसित २ आसक्त ३ (अभीष्ट वस्तु के पाने में लगे हुये के नाम) इष्टार्थोद्युक्त १ उत्सुक २ (प्रसिद्ध के नाम) प्रतीत १ प्रथित २ ख्यात ३ वित्त ४ विज्ञात ५ विश्रुत ६ ॥ ९ ॥ (गुणसे प्रसिद्ध के नाम) कृतलक्षण १ आहत लक्षण २ आहितलक्षण ३ (धनी के नाम) इभ्य १ आढ्य २ धनी ३ (स्वामी वा मालिक के नाम) स्वामी १ ईश्वर २ पति ३ ईशिता ४ ॥ १० ॥ अधिभू ५ नायक ६ नेता ७ प्रभु ८ परिवृढ ९ अधिप १० (भरे पुरे के नाम) अधिकर्द्धि १ समृद्ध २ (परिवार के पालने में युक्त के नाम) कुटुम्बव्यापृत १ ॥ ११ ॥ अभ्यागारिक २ उपाधि ३ (अंग और रूपसे अतिश्रेष्ठ का नाम) सिंहसंहनन १ ॥ १२ ॥ (जो दुःख में भी खुशी के साथ कार्य्य किया करे उसका नाम) निर्व्वार्य्य १ (गूंगे के नाम) अवाक् १ मूक २ (जो पिता के समान समझा जावे उस के नाम) मनोजवस १ मनोजव २ पितृसन्निभ ३ ॥ १३ ॥

मत्कृत्याऽलङ्कृताङ्कन्यां यो ददाति स कूकुदः। लक्ष्मीवाँल्लक्ष्मणः श्रील श्रीमान्स्निग्धस्तु वत्सलः २४ स्याद्दयालुः कारुणिकः कृपालुः सूरतस्समाः। स्वतन्त्रोऽपावृतस्स्वैरी स्वच्छन्दो निरवग्रहः २५ परतन्त्रः पराधीनः परवान्नाथवानपि। अधीनो निघ्न आयत्तोऽस्वच्छन्दो गृह्यकोऽप्यमी २६ खलपूः स्याद्बहुकरो दीर्घसूत्रश्चिरक्रियः। जाल्मोऽसमीक्ष्यकारी स्यात्कुण्ठो मन्दः क्रियासु यः २७

(जो वरको आदर पूर्व्वक वस्त्र भूषण सहित कन्या देवे उसके नाम) कूकुद १ कुकुद २ (लक्ष्मीवान् के नाम) लक्ष्मीवान् १ लक्ष्मण २ श्रील ३ श्रीमान् ४ (स्नेही के नाम) स्निग्ध १ वत्सल २ ॥ ॥२४॥ (दयावान् के नाम) दयालु १ कारुणिक २ कृपालु ३ सूरत ४ सुरत ५ (स्वतन्त्र वा मनमाने के नाम) स्वतन्त्र १ अपावृत २ स्वैरी ३ स्वच्छन्द ४ निरवग्रह ५ ॥ २५ ॥ (पराधीन वा परवश के नाम) परतन्त्र १ पराधीन २ परवान् ३ नाथवान् ४ (आधीन मात्र के नाम) अधीन १ निघ्न २ आयत्त ३ अस्वच्छन्द ४ गृह्यक ५ (किसी २ के मत से ये नौ भी पराधीन ही के नाम हैं) ॥२६॥ (बहारने झारने वाले मनुष्य के नाम) खलपू १ बहुकर २ (अति सुस्त के नाम) दीर्घसूत्र १ चिरक्रिय २ (अविचारी के नाम) जाल्म १ असमीक्ष्यकारी २ (आलसी के नाम) कुण्ठ १ ॥ २७॥

कर्म्मक्षमोऽलङ्कर्म्मीणः क्रियावान्कर्म्मसूद्य-
तः। स कार्म्मः कर्म्मशीलो यः कर्म्मशूरस्तु कर्म्म-
ठः १८ भरण्यभुक्कर्म्मकरः कर्म्मकारस्तु तत्क्रि-
यः। अपस्नातो मृतस्नात आमिषाशी तु शौष्कु-
लः १९ बुभुक्षितस्स्यात्क्षुधितो जिघत्सुरशनायि-
तः। परान्नः परपिण्डादो भक्षको घस्मरोऽद्मरः २०
आद्यूनस्स्यादौदरिको विजिगीषाविवर्ज्जिते। उ-
भौ त्वात्मम्भरिः कुक्षिम्भरिस्स्वोदरपूरके २१

(कार्य्य करने लायक जीव के नाम) कर्म्मक्षम १ अलङ्कर्म्मीण २
(जो कर्म्म करने में लगा हो उस का नाम) क्रियावान् १ (जो नित्य ही
काम में लगा रहै उस के नाम) कार्म्म १ कर्म्मशील २ (प्रयत्न पू-
र्व्वक जो कर्म्म को समाप्त करै उस के नाम) कर्म्मशूर १ कर्म्मठ
२ ॥१८॥ (मजूर के नाम) भरण्यभुक् १ कर्म्मण्यभुक् २ कर्म्मकर ३
(बिना मजूरी पाये पर भी जो काम कर दे उस का नाम) कर्म्मका-
र १ (किसी के मरने पै स्नान किये हुये के नाम) अपस्नात १ मृ-
तस्नात २ (मछुरी मांस खाने वाले के नाम) आमिषाशी १ शौ-
ष्कुल २॥ १९॥ (भूखे के नाम) बुभुक्षित १ क्षुधित २ जिघत्सु
३ अशनायित ४ (जो पराये अन्न से ही जीता हो उस के नाम)
परान्न १ परपिण्डाद २ (खवैया के नाम) भक्षक १ घस्मर २
अद्मर ३॥ २०॥ (मर भुखा के नाम) आद्यून १ औदरिक २
(प्यटभरुआ वा पेटू के नाम) आत्मम्भरि १ कुक्षिम्भरि २
॥ २१॥

सर्व्वान्नीनस्तु सर्व्वान्नभोजी गृध्नुस्तु गर्द्धनः। लुब्धोऽभिलाषुकस्तृष्णक्समौ लोलुपलोलुभौ २२ सोन्मादस्तून्मदिष्णुस्स्यादविनीतस्समुद्धतः। मत्ते शौण्डोत्कटक्षीबाः कामुके कमितानुकः २३ कम्रः कामयिताऽभीकः कमनः कामनोऽभिकः। विधेयो विनयग्राही वचनेस्थित आश्रवः २४ वश्यः प्रणाय्यो निभृतविनीतप्रश्रिताः समाः। धृष्टे धृष्णग्वियातश्च प्रगल्भः प्रतिभान्विते २५

(जो सब वर्णों का अन्न खा लेता हो उसके अर्थात् परमहंसादि के नाम) सर्व्वान्नीन १ सर्व्वान्नभोजी २ (लोभी के नाम) गृध्नु १ गर्द्धन २ लुब्ध ३ अभिलाषुक ४ तृष्णक् ५ (अति लोभी के नाम) लोलुप १ लोलुभ २ ॥२२॥ (सिर्री के नाम) सोन्माद १ उन्मद २ उन्मदिष्णु ३ (अन्यायी के नाम) अविनीत १ समुद्धत २ (मतवारे के नाम) मत्त १ शौण्ड २ उत्कट ३ क्षीब ४ (कामी के नाम) कामुक १ कमिता २ अनुक ३ ॥२३॥ कम्र ४ कामयिता ५ अभीक ६ कमन ७ कामन ८ अभिक ९ (आज्ञाकार वा हुकमी के नाम) विधेय १ विनयग्राही २ वचनेस्थित ३ आश्रव ४ ॥२४॥ (वश वा काबू में परे हुये के नाम) वश्य १ प्रणाय्य २ (किसी २ मत से विधेयादि छवों वशगत ही के नाम हैं (नम्र वा मुलायम मनुष्य के नाम) निभृत १ विनीत २ प्रश्रित ३ (ढीठ के नाम) धृष्ट १ धृष्णक् २ धृष्णु ३ वियात ४ (अति ढीठ निर्भय के नाम) प्रगल्भ १ प्रतिभान्वित २ ॥२५॥

स्यादधृष्टे तु शालीनो विलक्षो विस्मयान्विते।
अधीरे कातरस्त्रस्ते भीरुभीरुकभीलुकाः २६ आशं
सुराशंसितरि गृहयालुर्ग्रहीतरि। श्रद्धालुः श्र
द्धया युक्ते पतयालुस्तु पातुके २७ लज्जाशीलो
ऽपत्रपिष्णुर्वन्दारुरभिवादके। शरारुर्घातुको
हिंस्रः स्याद्वर्द्धिष्णुस्तु वर्द्धनः २८ उत्पतिष्णुस्तू
त्पतिता लङ्करिष्णुस्तु मण्डनः। भूष्णुर्भविष्णु
र्भविता वर्त्तिष्णुर्वर्त्तनः समौ २९

(सुलज्ज के नाम) अधृष्ट १ शालीन २ (चकड़ाये हुये के नाम)
विलक्ष १ विस्मयान्वित २ (व्याकुल वा घबड़ाये हुये के नाम)
अधीर १ कातर २ (डराने हुये वा डरपोक के नाम) त्रस्त १ त्र स्नु
२ भीरु ३ भीत ४ भीरुक ५ भीलुक ६ ॥ २६ ॥ (कहवैया अर्थात्
न जो कुछ कहने पै हो उस के नाम) आशंसु १ आशंसिता २ ॥
(लेवैया वा लेने वाले के नाम) गृहयालु १ ग्रहीता २ गृहीता
३ (श्रद्धावान का नाम) श्रद्धालु १ (गिरवैया के नाम) पतया
लु १ पातुक २ ॥ २७ ॥ (लोक लज्जा शील के नाम) लज्जाशी
ल १ अपत्रपिष्णु २ (वन्दना करने वाले के नाम) वन्दारु १ अ
भिवादक २ (हत्यार वा मरवैया के नाम) शरारु १ घातुक २ हिंस्र
३ (बढ़ने वाले वा बढ़वैया के नाम) वर्द्धिष्णु १ वर्द्धन २ ॥ २८ ॥ उछल
ने वाले के नाम) उत्पतिष्णु १ उत्पतिता २ (गहनादि पहिरने की इच्छा
किये हुये के नाम) अलङ्करिष्णु १ मण्डन २ (होने की इच्छा किये हुये
के नाम) भूष्णु १ भविष्णु २ भविता ३ (बैठवैया के नाम) वर्त्तिष्णु १ वर्त्तन २ ॥ २९

निराकरिष्णुः क्षिप्नुस्स्यात्सान्द्रस्निग्धस्तु मेदुरः।
ज्ञाता तु विदुरो विन्दुर्विकासी तु विकस्वरः ३०
विसृत्वरो विसृमरः प्रसारी च विसारिणि । सहि
ष्णुस्सहनः क्षन्ता तितिक्षुः क्षमिता क्षमी ३१
क्रोधनोऽमर्षणः कोपी चण्डस्त्वत्यन्तकोपनः।
जागरूको जागरिता घूर्णितः प्रचलायितः ३२
स्वप्नक् शयालुर्निद्रालुर्निद्राणशयितौ समौ।
पराङ्मुखः पराचीनस्स्यादवाङप्यधोमुखः ३३

(निकरवैया के नाम) निराकरिष्णु १ क्षिप्नु २ (मेद्र या चिक्कणा का नाम) मेदुर १ (जनैया के नाम) ज्ञाता १ विदुर २ विन्दु ३ (विकसने वाले के नाम) विकासी १ विकाशी २ विकस्वर ३ ॥ ३०॥ (पसरने वाले के नाम) विसृत्वर १ विसृमर २ प्रसारी ३ विसारी ४ (गमखोर या सहने वाले के नाम) सहिष्णु १ सहन २ क्षन्ता ३ तितिक्षु ४ क्षमिता ५ क्षमी ६ ॥ ३१॥ (क्रोधी के नाम) क्रोधन १ अमर्षण २ कोपी ३ (अत्यन्त क्रोधी के नाम) चण्ड १ अत्यन्तकोपन २ (जगैया के नाम) जागरूक १ जागरिता २ (निद्रा से नेत्र घूमने वाले के नाम) घूर्णित १ प्रचलायित २ ॥ ३२॥ (बनाय चौंधाने हुये के नाम) स्वप्नक् १ शयालु २ निद्रालु ३ (सवैया के नाम) निद्राण १ शयित २ (विफरे हुये के नाम) पराङ्मुख १ पराचीन २ (नीचे मुख किये हुये मुंह करे बैना के नाम) अवाङ् १ अधोमुख २ ॥ ३३॥ ३३ ३३ ॥

देवानञ्चतिदेवद्र्य ङ्विष्वद्र्यङ्विष्वगञ्चति। यस्सहाञ्चतिसध्र्यङ्सतिर्य्यङ्यस्तिरोञ्चति ३४
वदोवदावदो वक्ता वागीशो वाक्पतिस्समौ।
वाचोयुक्तिपटुर्वाग्मी वावदूकोऽतिवक्तरि ३५
स्याज्जल्पाकस्तु वाचालो वाचाटो बहुगर्ह्यवाक्। दुर्म्मुखेमुखराबद्धमुखौ शक्लः प्रियम्वदे ३६
लोहलस्स्यादस्फुटवाग्गर्ह्यवादी तुकद्वदः॥ समौकुवादकुचरौस्यादसौम्यस्वरोऽस्वरः ३७

(देवों की पूजा करनेवाले का नाम) देवद्र्यङ् १ (चारों ओर के सेवनेवाले का नाम) विष्वद्र्यङ् १ (जो साथ चले वा पूजन करे उसका नाम) सध्र्यङ् १ (जो तिरछा चले उसका नाम) तिर्य्यङ् १॥ ३४॥ (वक्ता व बकैयां के नाम) वद १ वदावद २ वक्ता ३ (बृहस्पतिसदृश पण्डित के नाम) वागीश १ वाक्पति २ (नैयायिक के नाम) वाचोयुक्तिपटु १ वाग्मी २ (बहुत भाषने वाले के नाम) वावदूक १ अतिवक्ता २॥ ३५॥ (बहुत अवाच्य बोलने वाले के नाम) जल्पाक १ वाचाल २ वाचाट ३ बहुगर्ह्यवाक ४ (अप्रिय बोलने वाले के नाम) दुर्म्मुख १ मुखर २ अबद्धमुख ३ (प्रिय बोलने वाले के नाम) शक्ल १ प्रियंवद २॥ ३६॥ (जो साफ न बोलता हो उस के नाम) लोहल १ अस्फुटवाक् २ (खराब बोलने वाले के नाम) गर्ह्यवादी १ कद्वद २ (दोष कहने वाले के नाम) कुवाद १ कुचर २ (खराब बोलने वाले के नाम) असौम्यस्वर १ अस्वर २॥ ३७॥ ॥

खरणाश्शब्दनो नान्दीवादी नान्दीकरस्समौ।
जडोऽज्ञ एडमूकस्तु वक्तुं श्रोतुमशिक्षिते ३८ तू-
ष्णींशीलस्तु तूष्णीको नग्नोऽवासा दिगम्बरे।
निष्कासितोऽवकृष्टस्स्यादपध्वस्तस्तु धिक्कृतः
३९ आत्तगर्वोऽभिभूतस्स्याद्दापितस्साधितस्स-
मौ। प्रत्यादिष्टो निरस्तस्स्यात्प्रत्याख्यातो निरा-
कृतः ४० निकृतस्स्याद्विप्रकृतो विप्रलब्ध-
स्तु वञ्चितः। मनोहतः प्रतिहतः प्रतिबद्धो हत-
श्च सः ४१

(शब्द करने वाले के नाम) खरणा १ शब्दन (आशीर्वाद के साथ स्तु-
ति करने वाले के नाम) नान्दीवादी १ नान्दीकर २ (महामूढ़ के ना-
म) जड़ १ अज्ञ २ (जो गूंगा बहिर दोनों हो उसका नाम) एडमूक
१ (अनेड मूक भी नाम इसी का है ॥ ३८ ॥ (चुप रहने वाले के ना-
म) तूष्णींशील १ तूष्णीक २ (नंगे के नाम) नग्न १ अवासाः २ दि-
गम्बर ३ (निकारे हुये के नाम) निष्कासित १ अवकृष्ट २ निष्का-
सित ३ (धिक्कारे हुये के नाम) अपध्वस्त १ धिक्कृत २ ॥ ३९ ॥ (अह-
ङ्कार टूटे हुये वा हर इत्न के नाम) आत्तगर्व १ आत्तगन्ध २ अभिभू-
त ३ अभिहत ४ (द्रव्यादि पाके सधे हुये के नाम) दापित १ दायित २
साधित ३ (अविचारित कहने से निरादर किये हुये के नाम) प्रत्यादि-
ष्ट १ निरस्त २ प्रत्याख्यात ३ निराकृत ४ ॥ ४० ॥ (निकरुआ के ना-
म) निकृत १ विप्रकृत २ (छले गये के नाम) विप्रलब्ध १ वञ्चित २ (दि-
ल टूटे वा मन टूटे के नाम) मनोहत १ प्रतिहत २ प्रतिबद्ध ३ हत ४ ॥ ४१ ॥

अधिक्षिप्तः प्रतिक्षिप्तो बद्धे कीलितसंयतौ। आप-
न्न आपत्प्राप्तः स्यात्कान्दिशीको भयद्रुतः ४२ आ-
क्षारितः क्षारितोऽभिशस्ते सङ्कसुकोऽस्थिरे। व्यस-
नार्त्तोपरक्तौ द्वौ विहस्तव्याकुलौ समौ ४३ विक्ल-
वो विह्वलः स्यात्तु विवशोऽरिष्टदुष्टधीः। कश्यः क-
शार्हे सन्नद्धे त्वाततायी वधोद्यते ४४ द्वेष्ये त्वक्षिग-
तो वध्यः शीर्षच्छेद्य इमौ समौ। विष्यो विषेण यो
वध्यो मुसल्यो मुसलेन यः ४५

(निन्दा किये गये के नाम) अधिक्षिप्त १ प्रतिक्षिप्त २ (बंधुआ के ना-
म) बद्ध १ कीलित २ संयत ३ (विपत्ति में परे हुये के नाम) आपन्न
१ आपत्प्राप्त २ (जो भयभीत हो के कहने लगे कहां जाऊं क्या क-
रूं उस के नाम) कान्दिशीक १ भयद्रुत २॥४२॥ (छिनारा चोरी
आदि लगे हुये के नाम) आक्षारित १ क्षारित २ अभिशस्त ३ (च-
ल स्वभाव वाले के नाम) सङ्कसुक १ अस्थिर २ (कष्टित के नाम)
व्यसनार्त्त १ उपरक्त २ (शोकादि से कुछ न कर सकने वाले के ना-
म) विहस्त १ व्याकुल २॥४३॥ (शोकादि से गात्र भंग प्राप्त हुये
के नाम) विक्लव १ विह्वल २ (जो मरही चाहता है उस के नाम) विव-
श १ अरिष्टदुष्टधी २ (बेत्रादि से मारे जाने के योग्य के नाम) कश्य
१ कशार्ह २ (हतन योग्य का नाम) आततायी १॥४४॥ (बैर करने
लायक के नाम) द्वेष्य १ अक्षिगत २ (मूड़ काटने योग्य के नाम) वध्य
१ शीर्षच्छेद्य २ (माहुर देने के योग्य का नाम) विष्य १ (मूसर से मार-
ने के योग्य का नाम) मुसल्य १॥४५॥

शिशिवदानो कृष्णकर्म्मा चपलश्चिकुरस्समौ।
दोषैकदृक् पुरोभागी निकृतस्त्वनृजुश्शठः ४६
कर्णेजपस्सूचकस्यात्पिशुनो दुर्ज्जनः खलः।
नृशंसो घातुकः क्रूरः पापो धूर्त्तस्तु वञ्चकः ४७
अज्ञे मूढयथाजातमूर्खवैधेयबालिशाः। कद-
र्य्ये कृपणक्षुद्रकिम्पचानमितम्पचाः ४८ नि-
स्स्वस्तु दुर्व्विधो दीनो दरिद्रो दुर्गतोपिसः। वनीय-
को याचनको मार्ग्गणो याचकार्त्थिनौ ४९

(पुरायात्मा के नाम) शिशिवदान १ अकृष्णकर्म्मा २ (बिना दोष बिचारे ही मारणादि में तत्पर होनेवाले के नाम) चपल १ चिकुर २ (केवल पर दोष ही देखनेवाले के नाम) दोषैकदृक् १ पुरोभागी २ (कुटिल हृदय के नाम) निकृत १ अनृजु २ शठ ३॥ ४६॥ (चुगु-ल के नाम) कर्णेजप १ सूचक २ पिशुन ३ (दुष्ट के नाम) दुर्ज्जन १ खल २ (स्वामी के मत से पांच चुगुलही के नाम हैं) (पराया अनभ-ल ताकने वाले के नाम) नृशंस १ घातुक २ क्रूर ३ पाप ४ (छली के नाम) धूर्त्त १ वञ्चक २॥ ४७॥ (मूर्ख के नाम) अज्ञ १ मूढ २ मुग्ध ३ यथाजात ४ मूर्ख ५ वैधेय ६ बालिश ७ (कृपण के नाम) कदर्य्य १ कृपण २ क्षुद्र ३ किम्पचान ४ मितम्पच ५॥ ४८॥ (द-रिद्र के नाम) निस्स्व १ दुर्व्विध २ कुस्स्य ३ दीन ४ दरिद्र ५ दुर्ग्ग-त ६ (याचक अर्त्थात् मँगैया के नाम) वनीयक १ याच-नक २ मार्ग्गण ३ याचक ४ अर्त्थी ५ सनीयक ६ ॥ ४९॥
॥ ४९ ॥

अहङ्कारवानहंयुः शुभंयुस्तुशुभान्वितः। दि-
व्योपपादुका देवान्नृगवाद्या जरायुजाः ५० स्वेद-
जाः कृमिदंशाद्याः पक्षिसर्पादयोऽण्डजाः ॥ इति
शरीरवर्गः ॥

उद्भिदस्तरुगुल्माद्या उद्भिदुद्भिज्जमुद्भिदम् ॥
५१ सुन्दरं रुचिरं चारु सुषमं साधु शोभनम्। का-
न्तम्मनोरमं रुच्यम्मनोज्ञम्मञ्जुमञ्जुलम् ५२ तदा
सेचनकन्तृप्तेर्नास्त्यन्तो यस्य दर्शनात। अभीष्टेऽ-
भीप्सितं हृद्यन्दयितम्वल्लभम्प्रियम् ५३ निकृ-
ष्टप्रतिकृष्टार्व्वरेफयाप्यावमाधमाः ॥

(अहङ्कारी के नाम) अहङ्कारवान् १ अहंयु २ (शुभयुक्त के नाम) शुभं-
यु १ शुभान्वित २ (देवता का नाम) दिव्योपपादुक २ (मनुष्य पशु आदि का
नाम) जरायुज १॥ ५०॥ (कीट डांस आदि का नाम) स्वेदज १ (पक्षी स-
र्पादि का नाम) अण्डज १ ॥ इति शरीरवर्गः ॥

(वृक्ष वल्ली घास आदि का नाम) उद्भिद १ उद्भिज्ज २ उद्भिद ३
॥ ५१॥ (सुन्दर के नाम) सुन्दर १ रुचिर २ चारु ३ सुषम ४ साधु ५ शो-
भन ६ कान्त ७ मनोरम ८ मनोहर ९ रुच्य १० मनोज्ञ ११ मञ्जु १२
मञ्जुल १३ रम्य १४ सौम्य १५ भद्रक १६ रामणीयक १७ ॥ ५२ ॥
(जिसके देखने में अति सुन्दरता के कारण नेत्र तृप्त हों उस सुन्दर
का नाम) सेचनक १ (प्यारे के नाम) अभीष्ट १ अभीप्सित २ हृ-
द्य ३ दयित ४ वल्लभ ५ प्रिय ६ ॥ ५३॥ (खराब के नाम) निकृष्ट
१ प्रतिकृष्ट २ अर्व्वा ३ रेफ ४ याप्य ५ अवम ६ अधम ७ ॥

कुपूयकुत्सितावद्यखेटगर्ह्याणकास्समाः ५४
मलीमसन्तु मलिनङ्कच्चरम्मलदूषितम्। पू-
तम्पवित्रम्मेध्यञ्च वीध्रन्तु विमलार्त्थकम्।
५५ निर्णिक्तं शोधितम्मृष्टन्निश्शोध्यमनव
स्करम्। असारम्फल्गु शून्यन्तु वशिकन्तुच्छ
रिक्तके ५६ क्लीबे प्रधानं प्रमुखप्रवेकानुत्तमो
त्तमाः। मुख्यवर्य्यवरेण्याश्च प्रबर्होनवरार्ध्य
वत् ५७ परार्ध्याग्रप्राग्रहरप्राग्र्याग्र्याग्रीयमग्रियम्
श्रेयाञ्छ्रेष्ठः पुष्कलस्स्यात्सत्तमश्चातिशोभने ५८

कुपूय ८ कपूय ९ कुत्सित १० अवद्य ११ खेट १२ गर्ह्य १३ अणक १४ आणक १५॥ ५४॥ (मैल वस्तु के नाम) मलीमस १ मलिन २ कच्चर ३ मलदूषित ४ (पवित्र वा साफ़ के नाम) पूत १ पवित्र २ मेध्य ३ (स्वभाव ही से विमल के नाम) वीध्र १ विमलार्त्थक २॥ ५५॥ (मलरहित पदार्त्थ के नाम) निर्णिक्त १ शोधित २ मृष्ट ३ निश्शोध्य ४ अनवस्कर ५ (निर्ब्बल के नाम) असार १ फल्गु २ (खाली के नाम) शून्य १ वशिक २ तुच्छ ३ रिक्तक ४॥ ५६॥ (उत्तम प्रधान वा अच्छे के नाम) प्रधान १ प्रमुख २ प्रवेक ३ अनुत्तम ४ उत्तम ५ मुख्य ६ वर्य्य ७ वरेण्य ८ प्रबर्ह ९ अनवरार्ध्य १० ॥ ५७॥ परार्ध्य ११ अग्र १२ प्राग्रहर १३ प्राग्र्य १४ अग्र्य १५ अग्रीय १६ अग्रिय १७ (अति सुन्दर के नाम) श्रेयान् १ श्रेष्ठ २ पुष्कल ३ सत्तम ४ अतिशोभन ५॥ ५८॥ ५८॥ ५८॥

स्युरुत्तरपदे व्याघ्रपुङ्गवर्षभकुंजराः । सिंहशा-
र्दूलनागाद्याः पुंसि श्रेष्ठार्थगोचराः ५९ अप्राग्र्यं
द्वयहीने द्वे अप्रधानोपसर्ज्जने । विशङ्कटम्पृ-
थु बृहद्विशालम्पृथुलम्महत् ६० वड्रोरुविपुल-
म्पीनपीव्नी तु स्थूलपीवरे । स्तोकाल्पक्षुल्लकाः
स्सूक्ष्मं श्लक्ष्णन्दभ्रं कृशन्तनु ६१ स्त्रियाम्मा-
त्रा त्रुटिः पुंसि लवलेशकणाणवः । अत्यल्पेऽल्पि-
ष्ठमल्पीयः कनीयोऽणीय इत्यपि ६२ प्रभूतम्प्रचु-
रम्प्राज्यमदभ्रम्बहुलम्बहु ॥

श्रेष्ठता जताने के निमित्त शब्द के आगे ये शब्द आते हैं - व्याघ्र १
पुंगव २ ऋषभ ३ कुंजर ४ सिंह ५ शार्दूल ६ नागादि यथा पुरुषव्या-
घ्र १ पुरुषपुंगव १ पुरुषर्षभ १ मनुष्यकुञ्जर १ नृपसिंह १ नृपशा-
र्दूल आदि ॥ ५९ ॥ (अप्रधान के नाम) अप्रधान १ उपसर्ज्जन २ अ-
प्राग्र्य ३ (फैले हुये के नाम) विशङ्कट १ पृथु २ बृहत् ३ विशाल ४
पृथुल ५ महत् ६ ॥ ६० ॥ वड्र ७ उरु ८ विपुल ९ (मोटे के नाम) पी-
न १ पीव २ पीना ३ स्थूल ४ पीवर ५ (थोड़े के नाम) स्तोक १ अल्प
२ क्षुल्लक ३ (सूक्ष्म वा महीन के नाम) सूक्ष्म १ श्लक्ष्ण २ दभ्र ३ कृश
३ तनु ४ ॥ ६१ ॥ मात्रा ५ त्रुटि ६ लव ७ लेश ८ कण ९ अणु १० कि-
सी २ के मत से स्तोकादि अणु पर्य्यन्त सूक्ष्म ही के नाम हैं (बहु-
त ही थोड़े के नाम) अल्पिष्ठ १ अल्पीयः २ कनीयः ३ अणी-
यः ४ ॥ ६२ ॥ (बहुत के नाम) प्रभूत १ प्रचुर २ प्राज्य ३ अदभ्र ४
बहुल ५ बहु ६

पुरुहूः पुरुभूयिष्ठं स्फारम्भूयश्च भूरि च। परश्शता-
द्यास्तेयेषाम्परा संख्या शतादिकात् ६३ ग-
णनीये तु गणेयं संख्याते गणितमथ समं सर्व्व-
म्। विश्वमशेषं कृत्स्नं समस्तनिखिलाखिलानि
निश्शेषम् ६४ समग्रं सकलम्पूर्णमखण्डं स्या
दनूनके ६५ घनन्निरन्तरं सान्द्रम्पेलवं विरल-
न्तनु। समीपे निकटासन्नसन्निकृष्टसनीडवत् ६६
सदेशाभ्याससविधसमर्य्यादसवेशवत्। उपक-
ण्ठान्तिकाभ्यर्णाभ्यग्रा अप्यभितो व्ययम् ६७

पुरुहू ७ पुरुहु ८ पुरु ९ भूयिष्ठ १० स्फार ११ स्फिर १२ भूयः १३
भूरि १४ (जिनकी संख्या सौ वा सहस्र से परे हो उन के नाम) प-
रश्शत १ परस्सहस्र २ ॥ ६३ ॥ (गिनने योग्य के नाम) गणनी-
य १ गणेय २ (गिने हुये के नाम) संख्यात १ गणित २ (सबके
नाम) सम १ सर्व्व २ विश्व ३ अशेष ४ कृत्स्न ५ समस्त ६ नि-
खिल ७ अखिल ८ निश्शेष ९ ॥ ६४ ॥ समग्र १० सकल ११
पूर्ण १२ पूर्व्व १३ अखण्ड १४ अनूनक १५ ॥ ६५ ॥ (गझिन के
नाम) घन १ निरन्तर २ सान्द्र ३ (विरले के नाम) पेलव १ विर-
ल २ तनु ३ (समीप या लगे वा नज़दीक के नाम) समीप १ नि-
कट २ आसन्न ३ सन्निकृष्ट ४ सनीड़ ५ ॥ ६६ ॥ सदेश ६ ।
अभ्यास ७ सविध ८ समर्य्याद ९ सवेश १० उपकण्ठ ११
अन्तिक १२ अभ्यर्ण १३ अभ्यग्र १४ अभितः १५ ॥ ६७ ॥
॥ ६७ ॥

संसक्तेत्वव्यवहितमपदान्तरमित्यपि। नेदिष्ठ-
मन्तिकतमं स्याद्दूरं विप्रकृष्टकम् ६८ दवीय-
श्च दविष्ठञ्च सुदूरन्दीर्घमायतम्। वर्त्तुलन्नि-
स्तलम्वृत्तम्बन्धुरन्तून्नतानतम् ६९ उच्चप्रांशू-
न्नतोदग्रोच्छ्रितास्तुङ्गेऽथ वामने। न्यङ्नीचखर्व-
र्व्व ह्रस्वास्स्युरवाग्रेऽवनतानतम् ७० अराल-
म्वृजिनं जिह्ममूर्म्मिमत्कुञ्चितन्नतम्। आविद्धं
कुटिलम्भुग्नम्वेल्लितम्वक्रमित्यपि ७१ ऋजा-
वजिह्मप्रगुणौ व्यस्तेत्वप्रगुणाकुलौ। शाश्वत-
स्तु ध्रुवो नित्यसदातनसनातनाः ७२

१(लपटे वा मिले हुये के नाम) संसक्त १ अव्यवहित २ अपदान्तर ३ अप-
दान्तर ४ (अति निकट के नाम) नेदिष्ठ १ अन्तिकतम २ (दूरि के नाम) दूर १
विप्रकृष्ट २॥ ६८॥ (अत्यन्त दूरि के नाम) दवीयः १ दविष्ठ २ सुदूर ३ (लम्बे
के नाम) दीर्घ १ आयत २ (गोले के नाम) वर्त्तुल १ निस्तल २ वृत्त ३ (जो
प्रथम ऊंचा हो फिर किसी उपाधि से नत होजाय उसके नाम) बन्धुर १ बन्धू
र २॥ ६९॥ (ऊंचे के नाम) उच्च १ प्रांशु २ उन्नत ३ उदग्र ४ उच्छ्रित ५
तुंग ६ (छोटे के नाम) वामन १ न्यक् २ नीच ३ खर्व्व ४ ह्रस्व ५ (औंधे
मुंह के नाम) अवाग्र १ अवनत २ आनत ३॥ ७०॥ (टेढ़े के नाम) अराल १
वृजिन २ जिह्म ३ ऊर्म्मिमत् ४ कुंचित ५ नत ६ आविद्ध ७ कुटिल ८ भुग्न ९
वेल्लित १० वक्र ११॥ ७१॥ (सीधे के नाम) ऋजु १ अजिह्म २ प्रगुण ३
(अकुलाने के नाम) व्यस्त १ अप्रगुण २ आकुल ३ (नित्य के नाम) शा-
श्वत १ ध्रुव २ नित्य ३ सदातन ४ सनातन ५॥ ७२॥

स्थास्नुस्स्थिरतरस्स्थेयानेकरूपतयातुयः। कालव्यापी सकूटस्थस्स्थावरोजङ्गमेतरः ७३ चरिष्णुजङ्गमचरत्त्रसमिङ्गं चराचरम्। चलनङ्कम्पनङ्कम्प्रञ्चलंलोलञ्चलाचलम् ७४ चञ्चलन्तरलञ्चैवपारिप्लवपरिप्लवे। अतिरिक्तस्समधिकोदृढसन्धिस्तुसंहतः ७५ कर्कशङ्कठिनंक्रूरंकठोरन्निष्ठुरन्दृढम्। जठरम्मूर्त्तिमन्मूर्त्तंप्रवृद्धंप्रौढमेधितम् ७६ पुराणेप्रतनप्रत्नपुरातनचिरंतनाः। प्रत्यग्रोऽभिनवोनव्योनवीनोनूतनोनवः ७७

(अतिस्थिरकेनाम) स्थास्नु १ स्थिरतर २ स्थेयान् ३ (कपटीकानाम) कूटस्थ १ (वृक्षादिकेनाम) स्थावर १ जंगमेतर २॥ ७३॥ (जीवचलनेवालेकेनाम) चरिष्णु १ जंगम २ चर ३ त्रस ४ इंग ५ चराचर ६ (कँपैया या काँपनेवालेकेनाम) चलन १ कम्पन २ कम्प्र ३ (चंचलकेनाम) चल १ लोल २ चलाचल ३॥ ७४॥ चंचल ४ तरल ५ पारिप्लव ६ परिप्लव ७ (अधिककेनाम) अतिरिक्त १ समधिक २ (पोढ़े मिलापीकेनाम) दृढसन्धि १ संहत २॥ ७५॥ (कठिनकेनाम) कर्कश १ कक्खट २ खक्खट ३ कठिन ४ क्रूर ५ कठोर ६ निष्ठुर ७ दृढ ८ जठर ९ मूर्त्तिमत् १० मूर्त्त ११ (बढ़ेहुयेकेनाम) प्रवृद्ध १ प्रौढ २ एधित ३॥ ७६॥ (पुरानेकेनाम) पुराण १ प्रतन २ प्रत्न ३ पुरातन ४ चिरन्तन ५ (नयेकेनाम) प्रत्यग्र १ अभिनव २ नव्य ३ नवीन ४ नूतन ५ नव ६॥ ७७॥

नूत्नञ्च सुकुमारन्तु कोमलम्मृदुलम्मृदु । अ-
न्वगन्वक्षमनुगेऽनुपदंक्लीबमव्ययम् ७८ प्रत्य-
क्षंस्यादैन्द्रियकमप्रत्यक्षमतीन्द्रियम् । एकता-
नोऽनन्यवृत्तिरेकाग्रैकायनावपि ७९ अप्येक-
सर्ग एकाग्र्यो प्येकायनगतोपिसः । पुंस्यादिः
पूर्व्वपौरस्त्यप्रथमाद्या अथास्त्रियाम् ८० अन्तो
जघन्यञ्चरममन्त्यपाश्चात्यपश्चिमाः । मोघ-
न्निरर्त्थकंस्पष्टंस्फुटम्प्रव्यक्तमुल्बणम् ८१ सा-
धारणन्तु सामान्यमेकाकीत्वेकएककः । भिन्ना-
र्त्थका अन्यतरएकस्त्वोन्येतरावपि ८२

नूतन ७ (सुकुमार के नाम) सुकुमार १ कोमल २ मृदुल ३ मृदु ४ (पी-
छे के नाम) अन्वक् १ अन्वक्ष २ अनुग ३ अनुपद ४ ॥ ७८ ॥ (जाहिर
जो आंखों के सामने देख परै उस के नाम) प्रत्यक्ष १ ऐन्द्रियक २
(जो न देख परै उस के नाम) अप्रत्यक्ष १ अतीन्द्रिय २ (एकाग्र के ना-
म) एकतान १ अनन्यवृत्ति २ एकाग्र ३ एकायन ४ ॥ ७९ ॥ एकस-
र्ग ५ एकाग्र्य ६ एकायनगत ७ (पहिले के नाम) आदि १ पूर्व्व २
पौरस्त्य ३ प्रथम ४ आद्य ५ ॥ ८० ॥ (अन्त वा पिछले के नाम) अन्त
१ जघन्य २ चरम ३ अन्त्य ४ पाश्चात्य ५ पश्चिम ६ (व्यर्त्थ के ना-
म) मोघ १ निरर्त्थक २ (स्पष्ट साफ के नाम) स्पष्ट १ स्फुट २ प्रव्यक्त ३
उल्बण ४ ॥ ८१ ॥ (सामान्य के नाम) साधारण १ सामान्य २ (जिसका
कोई सहायक न हो उस अकेले के नाम) एकाकी १ एक २ एकक ३ (अ-
न्य दूसरे के नाम) भिन्न १ अन्यतर २ एक ३ त्व ४ अन्य ५ इतर ६ ॥ ८२ ॥

उच्चावचन्नैकभेदमुच्चण्डमविलम्बितम् । अरुन्तुदन्तु मर्म्मस्पृगबाधन्तु निरर्गलम् ८३ प्रसव्यम्प्रतिकूलं स्यादपसव्यमपष्टु च । वामं शरीरं सव्यं स्यादपसव्यन्तु दक्षिणम् ८४ सङ्कटन्ना तु सम्बाधः कलिलङ्गहनं समे । सङ्कीर्णे संकुलाकीर्णे मुण्डितम्परिवापितम् ८५ ग्रन्थितं सन्दितन्दृब्धम्विसृतम्विस्तृतन्ततम् । अन्तर्गतं विस्मृतं स्यात्प्राप्तप्रणिहिते समे ८६ वेल्लितम्प्रेङ्खिताधूत चलिताकम्पिताधुते ॥

(बहुत प्रकार के नाम) उच्चावच १ नैकभेद २ (शीघ्र के नाम) उच्चण्ड १ अविलम्बित २ अविलम्बन ३ (सुकुमार स्थान में मारने के नाम) अरुन्तुद १ मर्म्मस्पृक् २ (जिस के कोई बाधा न हो उसके नाम) अबाध १ निरर्गल २ ॥ ८३ ॥ (विपरीत उलटे के नाम) प्रसव्य १ प्रतिकूल २ अपसव्य ३ अपष्टु ४ (बायें अंग का नाम) सव्य १ (दहिने का नाम) अपसव्य १ ॥ ८४ ॥ (सकसे के नाम) सङ्कट १ सम्बाध २ (जो बड़े ही दुःख से प्राप्त होने के योग्य हो उस के नाम) कलिल १ गहन २ (नाना जाति के लोगों के एकत्र बैठने की गचापची के नाम) सङ्कीर्ण १ संकुल २ आकीर्ण ३ (मुँड़ुआ के नाम) मुण्डित १ परिवापित २ ॥ ८५ ॥ (गुहे हुये वा गठलाये हुये के नाम) ग्रन्थित १ सन्दित २ दृब्ध ३ (पसरे वा फैले हुये के नाम) विसृत १ विस्तृत २ तत ३ (भूले हुये के नाम) अन्तर्गत १ विस्मृत २ (पाये हुये के नाम) प्राप्त १ प्रणिहित २ ॥ ८६ ॥ (थोड़ा कांपते हुये के नाम) वेल्लित १ प्रेङ्खित २ आधूत ३ चलित ४ आकंपित ५ धुत ६ ॥

नुत्तनुन्नास्तनिष्ठ्यूताविद्धक्षिप्तेरिताः समाः ८७ परिक्षिप्तन्तु निवृतं मुषितं मुषितार्थकम्। प्रवृद्धप्रसृते न्यस्तनिसृष्टे गुणिताहते ८८ निदिग्धोपचिते गूढगुप्ते गुण्ठितरूषिते। द्रुतावदीर्णे उद्गूर्णोद्यते काचितशिक्यिते ८९ घ्राणघ्राते दिग्धलिप्ते समुदक्तोद्धृते समे। वेष्टितं स्याद्वलयितं संवीतं रुद्धमावृतम् ९० रुग्णं भुग्नेऽथ निशितक्ष्णुतशातानि तेजिते॥

(प्रेरित पठाये हुये के नाम) नुत्त१ नुन्न२ अस्त३ निष्ठ्यूत४ आविद्ध५ क्षिप्त६ ईरित७॥८७॥ (घेरे हुये के नाम) परिक्षिप्त१ निवृत२ (चोराये हु-ये के नाम) मुषित१ मुषित२ (पसरने के नाम) प्रवृद्ध१ प्रसृत२ (धरे हु-ये के नाम) न्यस्त१ निसृष्ट२ (गुणा हुये के नाम) गुणित१ आहत२॥८८॥(बढ़े हुये के नाम) निदिग्ध१ उपचित२ (लुके हुये के नाम गू-ढ१ गुप्त२ (धूरि लगे हुये के नाम) गुण्ठित१ गुण्ठित२ रूषित३ (प-सीले के नाम) द्रुत१ अवदीर्ण२ (उठाये हुये शस्त्रादि के नाम उद्गूर्ण१ उद्यत२ (सिकहर पर धरी हुई वस्तु का नाम) काचित१ शिक्यित२॥८९॥ (सूंघे हुये के नाम) घ्राण१ घ्रात२ (लीपे हुये के नाम) दिग्ध१ लिप्त२ (कूपादि में निकारे हुये जलादि का नाम) समुदक्त१ उ-द्धृत२ (नदी आदि में रूंधे वा घेरे हुये के नाम) वेष्टित१ वलयित२ सं-वीत३ रुद्ध४ आवृत५॥९०॥ (टूटे हुये के नाम) रुग्ण१ भुग्न२ (बढ़ि-याये वा पजैटे हुये के नाम) निशित१ निशात२ क्ष्णुत३ शात४ तेजित५॥

स्याद्विनाशोन्मुखम्पक्वं ह्रीणह्रीतौ तु लज्जिते
९१ वृत्ते तु वृत्तव्यावृत्तौ संयोजित उपाहितः। प्रा
प्यं गम्यं समासाद्यं स्यन्नं रीणं स्नुतं स्नुतम् ९२
संगूढः स्यात्संकलितोऽवगीतः ख्यातगर्हि-
णाः। विविधः स्याद्बहुविधो नानारूपः पृथग्वि-
धः ९३ अवरीणो धिक्कृतश्चाप्यवध्वस्तोऽव-
चूर्णितः। अनायासकृतं फाण्टं स्वनितं ध्वनि-
तं समे ९४ बद्धे सन्दानितं मूतमुद्दितं सन्दितं सितम्।
निष्पक्वे क्वथितं पाके क्षीराज्यहविषां शृतम् ९५

(पके हुये मरने वा काटने के योग्य के नाम) विनाशोन्मुख १ पक्क २
(लजाने हुये के नाम) ह्रीण १ ह्रीन २ ह्रीत ३ लज्जित ४॥ ९१॥ (वरण
किये हुये के नाम) वृत्त १ वृत २ व्यावृत्त ३ आवृत्त ४ (मिलाये हुये के नाम)
संयोजित १ संयोगित २ उपाहित ३ (पाने के योग्य के नाम) प्राप्य १ ग
म्य २ समासाद्य ३ (बहते हुये के नाम) स्यन्न १ रीण २ स्नुत ३ स्नुत ४॥
॥ ९२॥ (जोड़े हुये अङ्कादि के नाम। संगूढ १ सङ्कलित २ (निन्दित के
नाम) अवगीत १ ख्यातगर्हण २ (विविध प्रकार के नाम) विविध १
बहुविध २ नानारूप ३ पृथग्विध ४॥ ९३॥ (धिक्कारे हुये के नाम)
अवरीण १ धिक्कृत २ (बनाय चून कर डाले हुये के नाम) अवध्वस्त
१ अपध्वस्त २ अवचूर्णित ३ (फल का क्वाथ नाम) फाण्ट १ (बाजते हुये
के नाम) स्वनित १ ध्वनित २॥ ९४॥ बंधे हुये के नाम बद्ध १ सन्दानि-
त २ मूत ३ मूर्ण ४ उद्दित ५ उद्दित ६ सन्दित ७ सित ८ (चुरे पके हुये काढ़ा आ-
दि के नाम) निष्पक्व १ क्वथित २ (पके हुये घृत दुग्धादि का नाम) शृत १॥ ९५॥

निर्व्वाणो मुनिवह्न्यादौ निर्व्वातस्तु गतेऽनिले। पक्वं परिणते गूनं हन्ने मीढन्तु मूत्रिते ९६ पुष्टं तु पुषितं सोढे क्षान्तमुद्वान्तमुद्गतं। दान्तस्तु दमिते शान्तः शमिते प्रार्थितेऽर्दितः ९७ ज्ञप्तस्तु ज्ञपिते छन्नश्छादिते पूजितेऽञ्चितः। पूर्णस्तु पूरिते क्लिष्टः क्लिशितेऽवसिते सितः ९८ प्रुष्टप्लुष्टोषिता दग्धे तष्टत्वष्टौ तनूकृते। वेधितच्छिद्रितौ विद्धे विन्नवित्तौ विचारिते ९९

(मुनि अग्नि आदि के मुक्त होने का नाम) निर्वाण १ (जब पवन न चलता हो उस समय का नाम) निर्वात २ (पाके हुये के नाम) पक्व १ परिणत २ (हगे हुये के नाम) गून १ हन्न २ (मूते हुये के नाम) मीढ १ मूत्रित २॥ ९६॥ (पोढ़े के नाम) पुष्ट १ पुषित २ (सहे हुये के नाम) सोढ १ क्षान्त २ (डाके हुये अन्नादि के नाम) उद्वान्त १ उद्वान २ उद्वान्त ३ उद्गत ४ (इन्द्रियादि जीते हुये के नाम) दान्त १ दमित २ (मिट जाने के नाम) शान्त १ शमित २ (मांगे हुये के नाम) प्रार्थित १ अर्दित २ (जाने हुये के नाम) ज्ञप्त १ ज्ञपित्त २ (छाये के नाम) छन्न १ छादित २ (पूजा किये गये के नाम) पूजित १ अञ्चित २ अर्च्चित २ (पूरे के नाम) पूर्ण १ पूरित २ (क्लेशित के नाम) क्लिष्ट १ क्लिशित २ (समाप्त के नाम) अवसित १ सित २॥ ९८॥ (जरे हुये के नाम) प्रुष्ट १ प्लुष्ट २ उषित ३ दग्ध ४ (सूक्ष्म किये गये के नाम) तष्ट १ त्वष्ट २ तनूकृत ३ (छेदे हुये के नाम) वेधित १ छिद्रित २ विद्ध ३ (विचारे हुये के नाम) विन्न १ वित्त २ विचारित ३॥ ९९॥

निष्प्रभे विगतारोकौ विलीने विद्रुतद्रुतौ । सिद्धे
निर्वृत्तनिष्पन्नौ दारिते भिन्नभेदितौ १०० ऊतं स्यूत
मुतञ्चेति त्रितयन्तन्तुसन्तते १०१ स्यादर्हिते नम
स्यितनमसितमपचायितार्चितापचितम् ।
वरिवसिते वरिवस्यितमुपासितञ्चोपचरितञ्च ।
सन्तापितसन्तप्तौ भूपितभूपायितौ च दूनश्च १०२
हृष्टे मत्तस्तृप्तः प्रह्लन्नः प्रमुदितः प्रीतः । छिन्नं छा
तं लूनं कृत्तन्दातन्दितं छितं वृक्णम् १०३ स्र
स्तं ध्वस्तं भ्रष्टं स्कन्नम्पन्नं च्युतङ्गलितम् । लब्धं
प्राप्तं विन्नं भावितमासादितञ्च भूतञ्च १०४

(तेजरहित के नाम) निष्प्रभ १ विगत २ अरोक ३ (दग्धिले हुये घृतादि के नाम) विलीन १ विद्रुत २ द्रुत ३ (सिद्ध के नाम) सिद्ध १ निर्वृत्त २ निष्पन्न ३ (चीरे हुये के नाम) दारित १ भिन्न २ भेदित ३ ॥ १०० ॥ (बीने हुये वस्त्रादि के नाम) ऊत १ स्यूत २ उत ३ (पूजित के नाम) अर्हित १ नमस्यित २ नमसित ३ अपचायित ४ अर्चित ५ अपचित ६ ॥ १०१ ॥ (सेवा किये गये के नाम) वरिवसित १ वरिवस्यित २ उपासित ३ उपचरित ४ (तपाये हुये के नाम) सन्तापित १ सन्तप्त २ भूपित ३ भूपायित ४ दून ५ ॥ १०२ ॥ (हर्षित के नाम) हृष्ट १ मत्त २ तृप्त ३ प्रह्लन्न ४ प्रमुदित ५ प्रीत ६ (काटे हुये के नाम) छिन्न १ छात २ लून ३ कृत्त ४ दात ५ दित ६ छित ७ वृक्ण ८ ॥ १०३ ॥ (चुये हुये के नाम) स्रस्त १ ध्वस्त २ भ्रष्ट ३ स्कन्न ४ पन्न ५ च्युत ६ गलित ७ (पाये हुये के नाम) लब्ध १ प्राप्त २ विन्न ३ भावित ४ आसादित ५ भूत ६ ॥ १०४ ॥

अन्वेषितङ्गवेषितमन्विष्टम्मार्गितम्मृगितम्। आर्द्रं
सार्द्रं क्लिन्नं तिमितं स्तिमितं समुन्नमुत्तञ्च २०५ त्रात-
न्त्राणं रक्षितमवितङ्गोपायितञ्च गुप्तञ्च। अवगणि-
तमवमतावज्ञातेऽवमानितञ्च परिभूते २०६ त्यक्तं ही-
नं विधुतं समुज्झितन्धूतमुत्सृष्टे। उक्तम्भाषितमु-
दितं जल्पितमाख्यातमभिहितं लपितम् २०७ बुद्ध-
म्बुधितम्मनितम्विदितम्प्रतिपन्नमवसितावगते।
उरीकृतमुररीकृतमङ्गीकृतमाश्रुतम्प्रतिज्ञातम् २०८
सङ्गीर्णविदितसंश्रुतसमाहितोपश्रुतोपगतम्। ई-
लितशस्तपणायितपनायितप्रणुतपणितपनितानि २०९

(ढूंढे हुये के नाम) अन्वेषित १ गवेषित २ अन्विष्ट ३ मार्गित ४ मृगि-
त ५ (भीजे हुये के नाम) आर्द्र १ सार्द्र २ क्लिन्न ३ तिमित ४ स्तिमित ५ स-
मुन्न ६ उत्त ७॥ २०५॥ (रखवाये गये के नाम) त्रात १ त्राण २ रक्षित ३
अवित ४ गोपायित ५ गुप्त ६ (अपमान किये गये के नाम) अवगणि-
त १ अवमत २ अवज्ञात ३ अवमानित ४ परिभूत ५॥ २०६॥ (त्यागे हु-
ये के नाम) त्यक्त १ हीन २ विधुत ३ समुज्झित ४ धूत ५ उत्सृष्ट ६ (क-
हे हुये के नाम) उक्त १ भाषित २ उदित ३ जल्पित ४ आख्यात ५ अ-
भिहित ६ लपित ७॥ २०७॥ (जाने गये के नाम) बुद्ध १ बुधित २ मनि-
त ३ विदित ४ प्रतिपन्न ५ अवसित ६ अवगत ७ (अंगीकार किये गये
के नाम) उरीकृत १ ऊरीकृत २ उररीकृत ३ अंगीकृत ४ आश्रुत ५ प्रति-
ज्ञात ६॥ २०८॥ संगीर्ण ७ विदित ८ संश्रुत ९ समाहित १० उपश्रुत ११
प्रतिश्रुत १२ उपगत १३ (स्तुति किये गये के नाम) ईलित १ शस्त २ प-
णायित ३ पनायित ४ प्रणुत ५ पणित ६ पनित ७॥ २०९॥

अपिगीर्णं वर्णितं अभिष्टुतेडितानि संस्तुतार्थानि ।
भक्षित चर्वित लीढ प्रत्यवसित गिलित खादित
प्सातम् ११० अभ्यवहृतान्न जग्ध ग्रस्त ग्लस्ता
शित भुक्ते । क्षेपिष्ठ क्षोदिष्ठ प्रेष्ठ वरिष्ठ स्थविष्ठ बं
हिष्ठाः १११ क्षिप्र क्षुद्राभीप्सित पृथु पीवर बहुल
प्रकर्षार्थाः । साधिष्ठ द्राघिष्ठ स्फेष्ठ गरिष्ठ ह्रसिष्ठ
वृन्दिष्ठाः । बाढ व्यायत बहु गुरु वामन वृन्दारका
तिशये ११२ ॥ इति विशेष्य निघ्न वर्गः ॥

गीर्ण ८ वर्णित ९ अभिष्टुत १० ईडित ११ स्तुत १२ (स्तुति किये गये के ना
म) भक्षित १ चर्वित २ लीढ ३ लिप्त ४ प्रत्यवसित ५ गिलित ६ खा
दित ७ प्सात ८ ॥ ११० ॥ अभ्यवहृत ९ अन्न १० जग्ध ११ ग्रस्त १२ ग्ल
स्त १३ अशित १४ भुक्त १५ (अति शय करके खाने के पदार्थ का
नाम) क्षेपिष्ठ १ (अति शय क्षुद्र का नाम) क्षोदिष्ठ १ (अति शय
अभीप्सित का नाम) प्रेष्ठ १ (अति शय पृथु का नाम) वरिष्ठ १
(अतिशय स्थूल का नाम) स्थविष्ठ १ (अति शय बहुल का ना
म) बंहिष्ठ १ ॥ १११ ॥ (अति शय बाढ का नाम) साधिष्ठ १ (अति
शय दीर्घ का नाम) द्राघिष्ठ १ (अति शय स्थिर का नाम) स्फेष्ठ १
(अति शय गुरु का नाम) गरिष्ठ १ (अतिशय ह्रस्व का नाम) ह्र
सिष्ठ १ (अतिशय वृन्दारक का नाम) वृन्दिष्ठ १ ॥ ११२ ॥ ॥

॥ इति विशेष्य निघ्न वर्गः ॥

प्रकृतिप्रत्ययार्थाद्यैः साङ्गोपाङ्गोऽभिचङ्गस्तु न रोचते। कार्म्मां क्रियातत्सातत्ये गन्ध्ये स्युरपस्कराः १ आकल्या सङ्गवचने पारायणतुरायणे। यदृच्छा स्वैरिता हेतुशून्यास्था विलक्षणम्। २ शमथस्तु शमश्शान्तिर्हान्तिस्तु दमथो दमः। अवदानं कर्म्मवृत्तं काम्यदानं प्रवारणम्। ३ वशक्रिया संवननं मूलकर्म्मतु कार्म्मणम्। विधूननं विधुवनं तर्पणं प्रीणनावनम्। ४ पर्य्याप्तिः स्यात्परित्राणं हस्तधारणमित्यपि॥

इस सङ्कीर्ण वर्ग में प्रकृति प्रत्ययादि से लिङ्ग का निर्णय करना चाहिये (अपरपदों के निरन्तर चलने का नाम) अपस्कर १॥ ॥१॥ (सो कल्य के वचन का नाम) पारायण १ (श्यामंश वचन का नाम) तुरायण १ (स्वतन्त्रता के नाम) यदृच्छा १ स्वैरिता २ (बिना कार की स्थिति का नाम) विलक्षण १॥२॥ (शान्ति के नाम) शमथ १ शम २ शान्ति ३ (इन्द्रियों के रोकने का नाम) दान्ति १ दमथ २ दम ३ (अच्छे कर्म के नाम) अवदान १ कर्म्मवृत्त २ (वा) मनाकरके दान देने के नाम) काम्यदान १ प्रवारण २॥३॥ (वशीकरण के नाम) वशक्रिया १ संवनन २ संवदन ३ (औषधों की जड़ आदि से उच्चाटन के नाम) मूलकर्म्म १ कार्म्मण २ (कांपने के नाम) विधूनन १ विधुवन २ विधुना ३ (अघाने के नाम) तर्पण १ प्रीणन २ अवन ३॥४॥ (कोई किसी को मारता हो रोकने के अर्थ उसके हाथ पकड़ लेने के नाम) पर्य्याप्ति १ परित्राण २ हस्तधारण ३ इत्यादि॥

सेवनं सीवनं स्यूतिर्विदरः स्फुटनम्भिदा ५ आक्रोशनमभीषङ्गः संवेदो वेदनाननना। सम्मूर्छनम्भिव्याप्तिर्याञ्चाभिक्षार्त्थनार्द्दना ६ वर्द्धनं छेदने ऽथद्वे आनन्दनसभाजने। आप्रच्छन्नमथाम्नायस्सम्प्रदायः क्षये क्षिया ७ ग्रहग्राहौ वशः कान्तौ रक्षणस्त्राणे रणः क्वणे। व्याधोवधे पचा पाके हवो हूतौ वरो वृतौ ८ ओषः प्लोषेनयो नाये ज्यानिर्जीर्णौ भ्रमो भ्रमी॥

(सीने के नाम) सेवन १ सीवन २ स्यूति ३ (फूटने के नाम) विदर १ स्फुटन २ स्फोटन ३ भिदा ४॥ ५॥ (गरियाने के नाम) आक्रोशन १ अभीषंग २ अभिषंग ३ (अनुभव ज्ञान के नाम) संवेद १ वेदना २ वेदन ३ (सब ओर से व्याप्ति के नाम) सम्मूर्छन १ अभिव्याप्ति २ (भीख के नाम) याञ्चा १ भिक्षा २ अर्त्थना ३ अर्द्दना ४॥ ६॥ (काटने के नाम) वर्द्धन १ छेदन २ (कुशल प्रश्न पूंछने से उत्पन्न आनन्द के नाम) आनन्दन १ सभाजन २ (गुरू के उत्तम परम्परा उपदेश करने के नाम) आम्नाय १ सम्प्रदाय २ (क्षय होने के नाम) क्षय १ क्षिया २॥ ७॥ (लेने के नाम) ग्रह १ ग्राह २ (इच्छा के नाम) वश १ कान्ति २ (रक्षा के नाम) रक्षण १ रक्षा २ त्राण ३ (शब्द करने के नाम) रण १ क्वण २ (छेदने के नाम) व्यध १ वेध २ (अन्नादि पकाने के नाम) पाच १ पक २ (बुलाने के नाम) हव १ हूति २ (वरदान के नाम) वर १ वृति २॥ ८॥ (जारने के नाम) ओष १ प्लोष २ ओष ३ (न्याय वा नीति के नाम) नय १ नाय २ (जीर्णता के नाम) ज्यानि १ जीर्णि २ (भ्रम के नाम) भ्रम १ भ्रमि २॥

स्फातिर्वृद्धौ प्रथा ख्यातौ स्पृष्टिः पृक्तौ स्नवः स्रवे
९ एधा समृद्धौ स्फुरणे स्फुरणा प्रमितौ प्रमा। प्रसू-
तिः प्रसवे श्च्योते प्राघारः क्लमथः क्लमे १० उत्क-
र्षोऽतिशये सन्धिः श्लेषे विषय आश्रये। क्षिपा-
या क्षेपणा गीर्णिर्गिरौ गुरणमुद्यमे ११ उन्नाय उ-
न्नये श्राय श्रयणे जयने जयः। निगादो निग-
दे मादो मद उद्वेग उद्भ्रमे १२

(बढ़ती के नाम) स्फाति १ वृद्धि २ (प्रसिद्धता के नाम) प्रथा १ ख्याति २ (छूने के नाम) स्पृष्टि १ पृक्ति २ (जहां से झरना आदि बहै उस स्थान के नाम) स्नव १ स्रव २॥ ९॥ (विधान के नाम) एधा १ वेधा २ समृद्धि ३ (फरकने के नाम) स्फुरण १ स्फुरणा २ स्फुलन ३ स्फोरणा ४ (यथार्थ ज्ञान के नाम) प्रमिति १ प्रमा २ (जन्म होने के नाम) प्रसूति १ प्रसव २ (घृतादि के चूने वा टपकने के नाम) श्च्योत १ प्राघार २ (ग्लानि के नाम) क्लमथ १ क्लम २॥ १०॥ (प्रकर्ष के नाम) उत्कर्ष १ अतिशय २ (मिलाप वा जोड़ने के नाम) सन्धि १ श्लेष २ (प्रयोजन के नाम) विषय १ आश्रय २ आशय ३ (अड़उव के नाम) क्षिपा १ क्षेपणा २ (लीलने के नाम) गीर्णि १ गिरि २ (उद्यम के नाम) गुरण १ उद्यम २॥ ११॥ (ऊंचे ले जाने और वितर्कण करने के नाम) उन्नाय १ उन्नय २ (सेवा के नाम) श्राय १ श्रयण २ (जीत के नाम) जयन १ जय २ (कहने के नाम) निगाद १ निगद २ (हर्ष के नाम) माद १ मद २ (कांपने के नाम) उद्वेग १ उद्भ्रम २॥ १२॥

विमर्द्दनम्परिमलोऽभ्युपपत्तिरनुग्रहः। निग्रह-
स्तद्विरुद्धस्स्यादभियोगस्त्वभिग्रहः २३ मुष्टि
बन्धस्तु संग्राहो डिम्बे डमरविप्लवौ। बन्धनम्प्र-
सितिश्चारस्स्पर्शस्स्प्रष्टोपतप्तरि २४ निकारो
विप्रकारस्स्यादाकारस्त्विङ्ग इङ्गितम्। परिणा
मो विकारो द्वे समे विकृतिविक्रिये २५ अपहार-
स्त्वपचयस्समाहारस्समुच्चयः। प्रत्याहारउपा
दानम्विहारस्तु परिक्रमः २६

(मींजने वा लगाने के नाम) विमर्द्दन१परिमल२ (अंगीकार के ना-
म) अभ्युपपत्ति१अनुग्रह२ (न मानने के नाम) निग्रह१ (खई में गोह
राने के नाम) अभियोग१ अभिग्रह२॥ २३॥ (मूंठी बांधने के नाम)
मुष्टिबन्ध१संग्राह२ (मनुष्यों के लूटने का नाम) डिम्ब१डमर२
विप्लव३ (बांधने के नाम) बन्धन१प्रसिति२चार३ (जरनि वा जरे
हुये के नाम) स्पर्श१स्पष्टा२ स्प्रष्टा३ स्पर्ष्टा४उपतप्ता५॥२४॥
(अपकार के नाम) निकार१विप्रकार२ (अभिप्राय के अनुरूप चे-
ष्टा के नाम) आकार१इंग२इंगित३ (प्रकृति के बदल जाने के नाम)
परिणाम१विकार२ (जैसे करवका विकार घार्क वा मिट्टी का विकार
घड़ा (बिरुद्ध करने के नाम) विकृति१विक्रिया२ (ये भी किसी२ के म-
त के विकार ही के नाम हैं)॥२५॥ (अपहरण का नाम) अपहार
१अपचय२ (बटोरने के नाम) समाहार१समुच्चय२ (इन्द्रियों के
खींचने के नाम) प्रत्याहार१ उपादान२ (टहलने में पैदर चलने के
नाम) विहार१ परिक्रम२॥२६॥

अभिहारोऽभिग्रहणन्निर्हारोऽभ्यवकर्षणम् ।
अनुहारोऽनुकारस्स्यादर्थस्यापगमे व्ययः १७ प्र-
वाहस्तु प्रवृत्तिस्स्यात्प्रवहो गमनम्बहिः । विया-
मो वियमो यामो यमस्संयामसंयमौ १८ हिंसा-
कर्म्माभिचारस्स्याज्जागर्य्याजागराद्वयोः । विघ्नो-
न्तरायः प्रत्यूहस्स्यादुपघ्नोऽन्तिकाश्रये १९ निर्वे-
शउपभोगस्स्यात्परिसर्प्पः परिक्रिया । विधुरन्तु
प्रविश्लेषोऽभिप्रायश्छन्द आशयः २०

(चोरी करने के नाम) अभिहार १ अभ्याहार २ अभिग्रहण ३ (यु-
क्ति पूर्व्वक शस्त्रादि निकासने के नाम) निर्हार १ अभ्यवकर्षण २
(विडम्बना वा नकल करने के नाम) अनुहार १ अनुकार २ (खर्च्च
का नाम) व्यय १॥ १७॥ (जलादि के निरन्तर बहने के नाम) प्रवाह
१ प्रवृत्ति २ (बाहर जाने का नाम) प्रवह १ (संयम के नाम) वियाम १ वि-
यम २ याम ३ यम ४ संयाम ५ संयम ६॥ १८॥ (जार वा मार डारने के
नाम) हिंसा कर्म्म १ अभिचार २ (जागने के नाम) जागर्या १
जागरा २ जागर ३ (विघ्न के नाम) विघ्न १ अन्तराय २ प्रत्यूह ३ (स-
मीप के आश्रय के नाम) उपघ्न १ अन्तिकाश्रय २॥ १९॥ (उपभो-
ग के नाम) निर्वेश १ उपभोग २ (परिवार के घेरने के नाम) परि-
सर्प्प १ परिक्रिया २ (अत्यन्त वियोग के नाम) विधुर १ प्रवि-
श्लेष २ (अभिप्राय मन की बात का नाम) अभिप्राय १ छ-
न्द २ आशय ३॥ २०॥

संक्षेपणं समसनं पर्य्यवस्था विरोधनम् । परि
सर्य्या परीसारस्स्यादास्या त्वासना स्थितिः २१
विस्तारो विग्रहो व्यासस्स च शब्दस्य विस्तरः ॥
सम्वाहनम्मर्द्दनं स्याद्विनाशस्स्याददर्शनम् २२
संस्तवस्स्यात्परिचयः प्रसरस्तु विसर्प्पणम् । नीवा
कस्तु प्रयामस्स्यात् सन्निधिस्सन्निकर्षणम् २३ ल
वोऽभिलावो लवने निष्पावः पवने पवः । प्रस्ताव
स्स्यादवसरस्त्रसरस्सूत्रवेष्टनम् २४

(संक्षेप के नाम) संक्षेपण १ समसन २ (विरोध के नाम) पर्य्यवस्था १ विरोधन २ (सब ओर पसरने के नाम) परिसर्य्या १ परीसार २ परिसार ३ (आसन के नाम) आस्या १ आसना २ स्थिति ३ ॥ २१ ॥ (विस्तार के नाम) विस्तार १ विग्रह २ व्यास ३ (शब्द के विस्तार का नाम) विस्तर १ (पैर आदि मींजने दबोटने के नाम) संवाहन १ मर्द्दन २ (न देख परे हुये के नाम) विनाश १ अदर्शन २ ॥ २२ ॥ (बटोर के नाम) संस्तव १ परिचय २ (घाव आदि फैल जाने के नाम) प्रसर १ विसर्प्पण २ (धन धान्यादि के बटोरने के नाम) नीवाक १ प्रयाम २ (परोस के नाम) सन्निधि १ सन्निध २ सन्निकर्षण ३ ॥ २३ ॥ (अन्नादि काटने के नाम) लव १ अभिलाव २ लवन ३ (अन्नादि के पछोरने वसाने आदि के नाम) निष्पाव १ पवन २ पव ३ (अवसर के नाम) प्रस्ताव १ अवसर २ (कोरी के पाई पसारने के नाम) त्रसर १ तसर २ सूत्रवेष्टन ३ ॥ २४ ॥ २५ ॥
॥ २५ ॥

प्रजनस्स्यादुपसरः प्रश्रयप्रणयौसमौ। धीशक्ति-
र्निष्क्रमोऽस्त्री तु संक्रमो दुर्ग्गसञ्चरः २५ प्रत्युत्क्र
मः प्रयोगार्त्थः प्रक्रमस्स्यादुपक्रमः। स्यादभ्या-
दानमुद्घात आरम्भस्संभ्रमस्त्वरा २६ प्रतिबन्धः
प्रतिष्टम्भोऽवनायस्तु निपातनम्। उपलम्भस्त्वनु
भवस्समालम्भो विलेपनम् २७ विप्रलम्भो विप्र
योगो विलम्भस्त्वति सर्ज्जनम्। विश्रावस्तु प्रति
रव्यातिरवेक्षा प्रतिजागरः २८

१(पहिले पहिल गाभिन होने के नाम) प्रजन १ उपसर २ (प्रेम के ना
म) प्रश्रय १ प्रणाय २ प्रसर ३ (बुद्धि की शक्ति के नाम) धीशक्ति १
निष्क्रम २ (खोह आदि कठिन स्थान में जाने की गली के वा उसमें
जाने के नाम) संक्रम १ दुर्ग्गसञ्चर २ ॥ २५ ॥ (युद्ध के अर्त्थ नेयारी
करने के नाम) प्रत्युत्क्रम १ प्रत्युत्क्रांति २ प्रयोग ३ (प्रथम के आ-
रम्भ के नाम) प्रक्रम १ उपक्रम २ (आरम्भ मात्र के नाम) अभ्यादा
न १ उद्घात २ आरम्भ ३ (किसी २ के मत मे ये पांचों एकही के नाम हैं
(वेग के नाम) सम्भ्रम १ त्वरा २ ॥ २६ ॥ (कार्य्य रुक जाने के नाम)
प्रतिबन्ध १ प्रतिष्टम्भ २ (गिरने के नाम) अवनाय १ निपातन २ नि-
पातन ३ (साक्षात् करने के नाम) उपलम्भ १ अनुभव २ (चन्दना-
दि लेप करने के नाम) समालम्भ १ विलेपन २ ॥ २७ ॥ (स्नेहादि छो
डने के नाम) विप्रलम्भ १ विप्रयोग २ (अतिदान के नाम) विलम्भ १
अतिसर्ज्जन २ (अति प्रसिद्ध के नाम) विश्राव १ प्रतिरव्याति २ प्रवि रव्या
ति ३ (वस्तुओं के अच्छे प्रकार देखने के नाम) अवेक्षा १ प्रतिजागर २ ॥ २८ ॥

निपाठ निपठौ पाठे तेमस्तेमौ समुन्दने। आदीनवास्रवौ क्लेशे मेलके सङ्गसङ्गमौ २९ संवीक्षणं विचयनं मार्गणं मृगणा मृगः। परिरम्भः परिष्वङ्गः संश्लेष उपगूहनम् ३० निर्वर्णनन्तु निध्यानं दर्शनालोकनेक्षणम्। प्रत्याख्यानं निरसनं प्रत्यादेशो निराकृतिः ३१ उपशायो विशायश्च पर्य्यायशयनार्थकौ। अर्त्तनञ्च ऋतीया च हृणीया च घृणार्थकाः ३२ स्याद्व्यत्यासो विपर्य्यासो व्यत्ययश्च विपर्य्यये। पर्य्ययोऽतिक्रमस्तस्मिन्नतिपात उपात्ययः ३३

(पढ़ने के नाम) निपाठ १ निपठ २ पाठ ३ (ढ़घिलने के नाम) तेम १ स्तेम २ समुन्दन ३ (क्लेश के नाम) आदीनव १ आस्रव २ क्लेश ३ आस्रव ४ (मेल के नाम) मेलक १ संग २ संगम ३॥ २९॥ (अच्छे प्रकार ढूंढ़ने वा देखने के नाम) संवीक्षण १ अन्वीक्षण २ अन्वेक्षण ३ गवेक्षण ४ विचयन ५ मार्गण ६ मृगण ७ मृग ८ (प्रेम पूर्वक लपटाने के नाम) परिरम्भ १ परीरम्भ २ परिष्वंग ३ संश्लेष ४ उपगूहन ५॥ ३०॥ (देखने के नाम) निर्वर्णन १ निध्यान २ दर्शन ३ आलोकन ४ ईक्षण ५ (निराकरण के नाम) प्रत्याख्यान १ निरसन २ प्रत्यादेश ३ निराकृति ४॥ ३१॥ (सोने वाले के नाम) उपशाय १ विशाय २ (करुणा वा घिनाने के नाम) अर्त्तन १ ऋतीया २ हृणीया ३ हृणिया ४ हृणीया ५ घृणा ६ (किसी २ के मत में जुगुप्सा के नाम हैं॥ ३२॥ (व्यतिक्रम-उलटा पलटने के नाम) व्यत्यास १ विपर्य्यास २ व्यत्यय ३ विपर्य्यय ४ विपर्य्यय ५ (किञ्चित उलटा पलट के नाम) पर्य्यय १ अतिक्रम २ अतिपात ३ उपात्यय ४॥ ३३

प्रेष्यगांयत्समाहूयतत्रस्यात्प्रतिशासनम् । संसं
स्ताः वः क्रतुषुयास्तुतिभूमिर्द्विजन्मनाम् ३४
निधाय तक्ष्यते यत्र काष्ठे काष्ठं स उद्घनः । स्तम्ब
घ्नस्तुस्तम्बघनस्तम्बोयेननिहन्यते ३५ आ
विधोविध्यतेयेनतत्रविष्वक्समेनिघः । उत्कार
श्चनिकारस्य द्वौधान्योत्क्षेपणार्थकौ ३६ निगा
रोद्गारविस्रावोद्ग्राहास्तुगरणादिषु ३७ आरत्य
वरतिविरतयउपरामेऽथास्त्रियान्तु निष्ठेवः । नि
ष्ठ्यूतिर्निष्ठेवनन्निष्ठीवनमित्यभिन्नानि ३८ ज
वनेजूतिस्सातिस्त्ववसानेस्यादथज्वरेजूर्त्तिः । उ
दजस्तुपशुप्रेरणामकरणिरित्याद्यथशापे ३९

(टहलू आदि के पढ़ाने के नाम) प्रतिशासन १ (यज्ञमें ब्राह्मणोंकी स्तु
ति के स्थान का नाम) संस्ताव १ ॥ ३४ ॥ (वहटन वा ठीहा का नाम) उद्
घन १ (खन्ना वा गदेला के नाम) स्तम्बघ्न १ स्तम्बघन २ ॥ ३५ ॥ (बर
मा का नाम) आविध १ (बराबर जमे हुये वृक्षों का नाम) निघ १ (अन्ना
दि के निकारने के नाम) उत्कार १ निकार २ ॥ ३६ ॥ (खाने के नाम) नि
गार १ (डाकने का नाम) उद्गार १ (छींकने का नाम) विस्राव १ (डकारने
का नाम) उद्ग्राह १ ॥ ३७ ॥ (निवृत्ति के नाम) आरति १ अवरति २ विरति ३
उपराम ४ उपसम ५ (थूंकने के नाम) निष्ठेव १ निष्ठ्यूति २ निष्ठेवन ३ निष्ठी-
वन ४ ॥ ३८ ॥ (वेग के नाम) जवन १ जूति २ (अन्त के नाम) साति १ अवसान २
(जरवा बोरवार के नाम) ज्वर १ जूर्त्ति (पशुओं के खेदने ललकारने का नाम)
उदज १ (शाप के नाम) अकरणि १ अजीवनि २ अजननि ३ ववग्राह ४ निग्राह ५ ॥ ३

गोत्रान्तेभ्यस्तस्य वृन्दमित्यौपगवकादिकम्।
आपूपिकं शाष्कुलिकमेवमाद्यमचेतसाम् ४०
माणवानान्तु माणव्यं सहायानां सहायता।
हल्या हलानां ब्राह्मण्यवाडव्ये तु द्विजन्मना-
म् ४१ द्वे पर्शुकानां पृष्ठानां पार्श्वं पृष्ठ्यमनु-
क्रमात्। खलानां खलिनी खल्याऽप्यथ मानुष्य
कं नृणाम् ४२ ग्रामता जनता धूम्या पाश्या ग-
ल्या पृथक् पृथक्। अपि साहस्रकारीषवार्म्म-
णाथर्वणादिकम् ४३॥ इति मनुष्यवर्गः॥

(समीप जिसके गावैं हों तिसके झुंड का नाम) औपगवक १ (पूओं के समूह का नाम) आपूपिक १ (खस्ताकी पूड़ियों के समूह का नाम) शाष्कुलिक १ (मनुष्यों के समूह का नाम) माणव्य १॥ ४०॥ (लड़कों के वृन्द का नाम) माणव्य १ (मित्रों के वृन्द का नाम) सहायता १ (हलों के समूह का नाम) हल्या १ (ब्राह्मणों के समूह के नाम) ब्राह्मण्य १ वाडव्य २॥ ४१॥ (पशुलियों के समूह का नाम) पार्श्व १ (पीठ के समूह का नाम) पृष्ठ्य १ (खलों के समूह का नाम) खलिनी १ खल्या २ (मनुष्यों के समूह का नाम) मानुष्यक १॥ ४२॥ (ग्राम वा गावों के समूह का नाम) ग्रामता १ (जनों के समूह का नाम) जनता १ (धूम्रों के समूह का नाम) धूम्या १ (पाश फांसी के समूह का नाम) पाश्या १ (गल) बड़ी काश तिसके समूह का नाम) गल्या १ (सहस्र के समूह का नाम) साहस्र १ (कण्डी के समूह का नाम) कारीष १ (वर्म्म वा कवच के समूह का नाम) वार्म्मण १॥ ४३॥ इसी प्रकार और भी जानो॥ इति मनुष्यवर्गः॥

नानार्थाः केऽपि कान्तादि वर्गेष्वेवात्र कीर्त्तिताः। भूरिप्रयोगा ये येषु पर्य्यायेष्वपि तेषु ते १ आकाशे त्रिदिवे नाको लोकस्तु भुवने जने। पद्ये यशसि च श्लोकः शरे खड्गे च सायकः २ जम्बुको क्रोष्टुवरुणौ पृथुको चिपटार्भकौ। आलोको दर्शने द्योतो भेरीपटहमानकौ ३ उत्सङ्ग-चिन्हयोरङ्कः कलङ्कोऽङ्कापवादयोः। तक्षको नागवर्द्धक्योरर्कः स्फटिकसूर्य्ययोः ४ मारुते वेधसि ब्रध्ने पुंसि कः कं शिरोऽम्बुनोः। स्यात्पुलाकस्तुच्छधान्ये संक्षेपे भक्तसिक्थके ५

अब जे अनेकार्त्थ वाचक शब्द हैं वांह्न प्रथम कह चुके होंवा हे न कहे होंपर अब अनेकार्त्थ के कारण इस में कांतादि की रीति से कहे जायँगे॥ १॥ (आकाश और स्वर्ग का नाम) नाक१ (स्वर्गादि और जनों का नाम) लोक१ (अनुष्टुप श्लोकादि और कीर्त्ति का नाम) श्लोक१ (तीर और तरवार का नाम) सायक१॥ २॥ (शृगाल और वरुण का नाम) जम्बुक१ (च्यूरा और लड़के का नाम) पृथुक१ (प्रकाश और दर्शन का नाम) आलोक१ (तुरही और पटह का नाम) आनक१॥ ३॥ (कोरा और चिन्ह का नाम) अङ्क१ (पाप। दुःख और चिन्ह का नाम) कलङ्क१ (तक्षक सर्प्प और बढ़ई। का नाम) तक्षक१ (स्फटिक मणि और सूर्य्य का नाम) अर्क१॥ ४॥ (बायु ब्रह्मा सूर्य्य शिर पानी सुखद्रुन का नाम) क१ (फरहा और भात के घूरा का नाम) पुलाक१॥ ५॥

उलूके कारिरणः पुच्छमूलोपान्ते च पेचकः। कमण्डलौ च करकस्सुगते च विनायकः ६ किष्कुर्हस्ते वितस्तौ च शूककीटे च वृश्चिकः। प्रतिकूले प्रतीकस्त्रिष्वेकदेशे तु पुंस्ययम् ७ स्याद्भूतिकन्तु भूनिम्बे कत्तृणे भूस्तृणेपि च। ज्योत्स्निकायाञ्च घोषे च कोशातक्यथ कट्फले ८ सिते च खदिरे सोमवल्कस्स्यादथ सिह्लके। तिलकल्के च पिण्याको बाह्लीकं रामठेपि च ९ महेन्द्रगुग्गुलूलूकव्यालग्राहिषु कौशिकः। रुक्तापशङ्कास्वातङ्कस्स्वल्पेपि क्षुल्लकस्त्रिषु १०

(खूसट और हाथी की पूंछ के जड़ के लगे के मांस का जिस्से उसको गुदा झंप जाती है उसका नाम) पेचक २ (करवा बर्से हुये पाथर और अनार का नाम) करक २ (बुद्ध गणेश गरुड़ का नाम) विनायक ३ ॥ ६ ॥ (हाथ बीता प्रकोष्ट इनका नाम) किष्कु (बीछ और आठवें राशि का नाम) वृश्चिक २ (प्रतिकूल वा बिगड़े हुये और अङ्ग का नाम) प्रतीक २ ॥ ७ ॥ (पाताल नीव के फरा कुकुरमुत्ता का नाम) भूतिक ३ (ज्योत्स्निका परवर घोषलहच्चिचड़ा वा तोरई का नाम) कोशातकी २ ॥ ८ ॥ (कटफल कैफरा और बुधिया खैर का नाम) सोमवल्क २ (सिल्हक लोबान तिलकल्क तिल्ली की खरी का नाम) पिण्याक २ (रामठ हींग काबुल देश काबुली घोड़ा इनका नाम) बाह्लीक २ ॥ ९ ॥ (इन्द्र गूगुर उल्लू सर्प्प पकरने वाले विश्वामित्र न्यौरा इनका नाम) कौशिक २ (रोग ताप शङ्का इनका नाम) आतङ्क २ (स्वल्प नीच लहुरा इनका नाम) क्षुल्लक २ ॥ १० ॥

जैवातृकः शशाङ्केपि खुरेप्यश्वस्य वर्त्तकः। व्या-
घ्रेपि पुण्डरीको ना यवान्यामपि दीपकः ११ शा-
लावृकाः कपिक्रोष्टुश्वानः स्वर्णेपि गैरिकम्। पी-
डार्थेपि व्यलीकं स्यादलीकन्त्वप्रियेऽनृते १२ शी-
लान्वयावनूके द्वे शल्के शकलवल्कले। साष्टश-
ते सुवर्णानां हेम्न्युरोभूषणे पले १३ दीनारेपि च
निष्कोऽस्त्री कल्कोऽस्त्री शमलैनसोः। दम्भेप्यथ
पिनाकोऽस्त्री शूलशङ्करधन्वनोः १४ धेनुका तु-
करेण्वां च मेघजाले च कालिका। कारिका यात-
नावृत्त्योः कर्णिका कर्णभूषणे १५

(चन्द्रमा. दीर्घायु, कृश इन का नाम) जैवातृक१ (घोड़े के खुर औ-
र बतख का नाम) वर्त्तक१ (बाघ अग्नि दिग्गज उज्वल कमल का नाम)
पुण्डरीक१ (अजवाइनि मोर की चोटी प्रकाश इन का नाम) दीपक
१॥११॥ (बानर शृगाल कुकुर इन का नाम) शालावृक१ (गेरू औ-
र सोने का नाम) गैरिक१ (अप्रिय कार्य्य पीड़ा इन का नाम) व्यलीक
१ (अप्रिय और झूंठ का नाम) अलीक१॥१२॥ (स्वभाव और वं-
श का नाम) अनूक१ (खण्ड और बकला का नाम) शल्क१ (१०८
कर्ष सुवर्ण। सोने मात्र छाती के भूषण असरफी इन का नाम) नि-
ष्क१॥१३॥ (शमल॥ विष्ठा एनः च। पाप हाथी दांत, घृत तैलादि
का शेष दम्भ हर्ष इन का नाम) कल्क१ (शूल और महादेव के धन्वा
का नाम) पिनाक१॥१४॥ (हथिनी और नई ब्याई हुई गाय का ना-
म) धेनुका१ (मेघवृन्द और देवी का नाम) कालिका१ (नरक यातना
वृत्ति विवरण श्लोक और करने वाली का नाम) कारिका१ कर्णि१॥१५॥

करिहस्ते गुलौ पद्मबीजकोश्यां त्रिषूत्तरे। वृ-
न्दारकौ रूपिमुख्यावेके मुख्यान्यकेवलाः २६
स्याद्दाम्भिकः कौक्कुटिको यश्चादूरेरितेक्षणः।
लालाटिकः प्रभोर्भालदर्शी कार्याक्षमश्च यः २७

भूभृन्नितम्बवलयचक्रेषु कटकोऽस्त्रियाम्।
सूच्यग्रे क्षुद्रशत्रौ च रोमहर्षे च कण्टकः १ पाको
पक्तिशिशू मध्यरत्ने नेतरि नायकः। पर्य्यङ्कः स्या-
त्परिकरे स्याद्व्याघ्रेऽपि च लुब्धकः अस्याद्व्याघ्रेऽम
पि लुब्धक इति पाठः॥ पेटकस्त्रिषु वृन्देऽपि गुरौ
देश्ये च देशिकः। खेटकौ ग्रामफलकौ धीवरेऽपि
च जालिकः ३

हाथी की सूंड़ का आगू कमल का बीच इन का नाम ) कर्णिका १
( देवता मनोज्ञ और श्रेष्ठ का नाम ) वृन्दारक १ ( मुख्य अन्य केवल का
नाम ) एक १॥ २६॥ २६॥ ( मायावी का नाम ) दाम्भिक १ ( जो दूर ही से
देखे उस का नाम ) कौक्कुटिक १ मुंह देखा और जो मालिक का
कार्य्य न कर सके उस का नाम ) लालाटिक १॥ २७॥

राजा, सूतर, कङ्गरा चक्र, इन का नाम ) कटक १ ( सुई की नो-
क छोटा शत्रु रोवां कटि आना इन का नाम ) कण्टक १॥ १॥
( पकाना बालक, रत्न मध्य, फौज का मालिक स्वामी इन का नाम )
नायक १ ( पलंग का नाम ) पर्य्यङ्क १ ( लोभी और बाघ का नाम
लुब्धक १॥ २॥ ( वृन्द और गुरू का नाम ) पेटक १ ( देश में उत्प-
न्न का नाम ) देशिक १ ( ग्राम और फलक का नाम ) खेटक १॥ ३॥

पुष्परेणौ च किञ्जल्कः शुल्कोऽस्त्री स्त्रीधनेऽपि च। स्यात्कल्लोलेऽप्युत्कलिका वाहीके भाववृन्दयोः ४ करिण्यामपि गणिका दारकौ बालभेदकौ। अन्धेऽप्यनेडमूकः स्याट्टङ्को दर्प्पोऽश्मदारणे ५ इति पञ्चरूपकाः॥ इति कान्तवर्गः॥

मयूखस्त्विट्करज्वालास्वलिबाणौ शिलीमुखौ। शङ्खे निधौ ललाटास्थ्नि कम्बौ नस्त्रीन्द्रियेऽपि खम् १८ घृणिज्वाले अपि शिखे इति खान्ताः॥ शैलवृक्षौ नगावगौ। आशुगौ वायुविशिखौ शरार्कविहगाः खगाः १९

(फूल की धूरि का नाम) किञ्जल्क १ (स्त्री के अर्थ देने के धन का नाम) शुल्क १ (कल्लोल का नाम) उत्कलिका १ (भाव और समूह का नाम) वाहीक १॥ ४॥ (हथिनी का नाम) गणिका १ (लड़कों का नाम) दारक १ (बहिर गूंगा अंधे का नाम) अनेडमूक १ (अहङ्कार दारण करने वाले और टांकी का नाम) टङ्क १॥ ५॥ इति कान्त वर्गः॥

(त्विट व शोभा किरण ज्वाला का नाम) मयूख १ (भ्रमर और बाण का नाम) शिलीमुख १ (निधि भेद और शंख का नाम) कम्बु १ (शून्य और इन्द्रिय का नाम) ख १॥ १८॥ (किरण, ज्वाला, चोटी इन का नाम) शिखा १॥ इति खान्ताः॥ (पर्व्वत और वृक्ष के नाम) नग १ अग १ (वायु और बाण का नाम) आशुग १ (बाण, सूर्यादि ग्रह, पक्षी इन का नाम) खग १॥ १९॥

पतङ्गौ पक्षिसूर्य्यौ च पूगः क्रमुकवृन्दयोः। पशवो-
ऽपि मृगा वेगः प्रवाहजवयोरपि २० परागः कौसुमे
रेणौ स्नानीयादौ रजस्यपि। गजेऽपि नागमातङ्गाव-
पाङ्गस्तिलकेऽपि च २१ सर्गः स्वभावनिर्म्मोक्षनि-
श्चयाध्यायसृष्टिषु। योगः सन्नहनोपायध्यान-
सङ्गतियुक्तिषु २२ भोगः सुखे स्त्र्यादिभृतावहे-
श्च फणकाययोः। चातके हरिणे पुंसि सारङ्गः शब-
ले त्रिषु २३ कपौ च प्लवगः शापे त्वभिषङ्गः पराभवे
यानाद्यङ्गे युगः पुंसि युगं युग्मे कृतादिषु २४ स्व-
र्गेषुपशुवाग्वज्रदिङ्नेत्रघृणिभूजले ॥

(पाँखी, सूर्य्य, पक्षी इन का नाम) पतंग २ (सुपारी और समूह का नाम)
पूग १ (हरिण मृगशिरा ढूंढ़ना इन का नाम) मृग १ (प्रवाह और ज़ोर
से चलने का नाम) वेग १॥ २०॥ (फूल की धूरि, गन्ध चूर्ण, ग्रहण, धू-
रि इन का नाम) पराग १ (हाथी के नाम) नाग १ मातंग २ (तिलक, ने-
त्रान्त, अंगहीन इन का नाम) अपांग १॥ २१॥ (स्वभाव, निर्म्मोक्ष, त्या-
ग, निश्चय, अध्याय सृष्टि इन का नाम) सर्ग १ (शस्त्र बांधना उपाय ध्या-
न संगति युक्ति इन का नाम) योग १॥ २२॥ (वेश्या हाथी घोड़ा आदि
के पोषण करने का नाम) सुख १ (सर्प्प के फण और देह का नाम) भो-
ग १ चातक, हरिण, कबुले रंग का नाम) सारंग १॥ २३॥ (वानर मे-
ढ़ु का, सारथि का नाम) प्लवग १ (शाप और अनादर का नाम) अभि-
षंग १ (जुआ, द्वय, सत्य युगादि का नाम) युग २॥ २४॥ (स्वर्ग, बा-
ण, गाय, बैल, वाणी, वज्र, दिशा, नेत्र, किरण, भूमि, जल इन का नाम) गो १

लक्ष्य हस्त्या स्त्रियाम्पुंसि गौर्ल्लिङ्गं चिह्न शेफ-
सोः २५ शृङ्गं प्राधान्य सान्वोश्च वराङ्गं मूर्द्ध गु-
ह्ययोः। भगं श्रीकाम माहात्म्य वीर्य्य यत्नार्क की-
र्तिषु २६॥ इति गान्ताः॥ परिघः परिघातेऽस्त्रेऽघोघो
वृन्देऽम्भसां रये। मूल्ये पूजा विधावर्घोऽहो दुःखव्यस-
नेष्वघम् २७ त्रिष्विष्टेऽल्पे लघुः॥ इति घान्ताः॥
काचाः शिक्य मृद्भेदहग्रुजः॥ विपर्य्यासे विस्तरे च
प्रपञ्चः पावके शुचिः २८ मास्यमात्ये चाप्युपधे पुं-
सि मेध्ये सिते त्रिषु। अभिष्वङ्गे स्पृहायाञ्च गभ-
स्तौ च रुचिः स्त्रियाम् २९॥ इति चान्ताः॥

(चिन्ह और शिश्न इन्द्रिय का नाम) लिंग १॥ २५॥ (प्रभुता और
कंगूरा का नाम) शृंग १ (मस्तक और योनि का नाम) वरांग १
(श्री, इच्छा, ऐश्वर्य्य, माहात्म्य, यत्न, सूर्य्य, कीर्ति, योनि इन का नाम)
भग १॥ २६॥ इति गान्ताः॥ (हनन और अस्त्र का नाम) परिघ १ (समू-
ह और जल के वेग का नाम) ओघ १ (मोल और पूजा में जल देने का
नाम) अर्घ १ (पाप, दुःख, शिकार, जुआँ आदि खेलने का नाम) अ-
घ १॥ २७॥ (हस्व और अल्प का नाम) लघु १॥ इति घान्ताः॥
(सिकहर, कांच, नेत्र रोग इन का नाम) काच १ (विपरीत विस्त-
र उतरना इन का नाम) प्रपञ्च १ अग्नि, आषाढ़, मन्त्री, शु-
द्धचित्त, पवित्र, उज्ज्वल, श्रृंगारादि करना इन का नाम) शुचि १
(वाञ्छा और किरण का नाम) रुचि १॥ २८॥ २९॥ इति चान्ताः॥

अमले भल्लुकेऽप्यच्छो गुच्छः स्तबकहारयोः।
परिधानाञ्चले कच्छो जलप्रान्ते त्रिलिङ्गकः ॥
इति छपकान्ताः ॥ केकिताक्ष्यावहिभुजौ
दन्तविप्राण्डजा द्विजाः । अजा विष्णुहरच्छा-
गा गोष्ठाध्वनिवहा व्रजाः ३० धर्मराजौ जिनय
मौ कुञ्जो दन्ते पि न स्त्रियाम् । वलजे क्षेत्रपूर्द्वारे
वलजा वल्गुदर्शना ३१ समे क्ष्मांशे रणेऽप्याजिः
प्रजा स्यात्सन्ततौ जने । अब्जौ शङ्खशशाङ्कौ च
स्वके नित्ये निजं त्रिषु ३२ ॥ इति जान्ताः ॥
पुंस्यात्मनि प्रवीणे च क्षेत्रज्ञो वाच्यलिङ्गकः ॥

(अमल स्फटिक भल्लुक इन का नाम) अच्छ २ (पल्लव और हार का नाम) गुच्छ २ (पहिरने आंचर नितम्ब, कांछा इन का नाम) कच्छ २ ॥ इति छान्ताः ॥ (मोर और गरुड का नाम) अहिभुक् १ (दांत, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, पक्षी इन का नाम) द्विज १ (विष्णु, महादेव, बकरी, काम, ब्रह्मा, रघु राज के पुत्र इन का नाम) अज १ (गोठ, गली, समूह इन का नाम) व्रज १ ॥ ३० ॥ (बुद्ध यमराज युधिष्ठिर इन का नाम) धर्मराज १ (हाथी दांत, मकान बन इन का नाम) कुञ्ज १ (खेत पुर द्वार इन का नाम) वलज १ (श्रेष्ठ स्त्री का नाम) वलजा ॥ ३१ ॥ (सम भूमि भाग और संग्राम का नाम) आजि १ (सन्तति व कन्या पुत्र और रैयत का नाम) प्रजा १ (शंख, चन्द्रमा, धन्वन्तरि, कमल का नाम) अब्ज २ (अपने और नित्य का नाम) निज १ ॥ ३२ ॥ इति जान्ताः ॥
(पुरुष प्रवीण इन का नाम) क्षेत्रज्ञ १ ॥

संज्ञास्याच्चेतनानाम हस्ताद्यैश्चार्थसूचना ३३ ॥ इति ञान्ताः ॥ काके भगण्डौ करटौ गजगण्डकटी कटौ । शिपिविष्टस्तु खलतौ दुश्चर्म्मणि महेश्वरे ३४ देवशिल्पिन्यपि त्वष्टा दिष्टं दैवेपि न द्वयोः । रसे कटुः कट्वकार्य्ये त्रिषु मत्सरतीक्ष्णयोः ॥ रिष्टं क्षेमाशुभाभावेष्वरिष्टे तु शुभाशुभे ३५ मायानिश्चलयन्त्रेषु कैतवानृतराशिषु । अयोघने शैलशृङ्गे सीराङ्गे कूटमस्त्रियाम् ३६ सूक्ष्मैलायांत्रुटिस्त्रीस्यात्कालेऽल्पे संशयेपिसा ॥

(बुद्धि नाम हस्तादि से अर्थ बताना गायत्री सूर्य्य की स्त्री इन का नाम) संज्ञा २ ॥ ३३ ॥ इति ञान्ताः ॥ (काक हाथी का गाल कुंभस्थल निन्द्यजीव भकार शब्दादि आठ इन का नाम) करट २ (हाथी का गण्ड स्थल करि होंव सुर्खी समय इन का नाम) कट २ (खौरा नष्ट चर्म्म महादेव का नाम) शिपिविष्ट २ ॥ ३४ ॥ (विश्वकर्म्मा सूर्य्य और बढ़ई का नाम) त्वष्टा २ (भाग्य और काल का नाम) दिष्ट २ (रस अकार्य्य अहङ्कार तीक्ष्ण इन का नाम) कटु २ (क्षेम अशुभ शुभ इन का नाम) रिष्ट २ (शुभ अशुभ सौरी का गृह माठा लहिरा मरसा का चिन्ह इन का नाम) अरिष्ट २ ॥ ३५ ॥ माया निश्चल यन्त्र कपट झूंठ राशि धन पर्व्वत कँगूरा कुठ इन का नाम) कूट २ ॥ ३६ ॥ (छोटी इलायची काल अक्षर का रहिजाना अल्प संशय इन का नाम) त्रुटि २ ॥

आत्युत्कर्षाश्रयः कोट्यो मूले लग्न कचे जटा ३७
व्युष्टिः फले समृद्धौ च दृष्टिर्ज्ञानेऽक्ष्णि दर्शने ।
इष्टिर्यागेच्छयोस्सृष्टन्निश्चिते बहुनि त्रिषु ३८
कष्टे तु कृच्छ्र गहने दक्षाऽमन्दागदेष्वपि । पटुर्द्वौ
वाच्यलिङ्गौ च ॥ इति टान्ताः ॥ नीलकण्ठः शिवेऽ
पि च ३९ पुंसि कोष्ठोऽन्तर्जठरं कुसूलोऽन्तर्गृहं तथा
निष्ठा निष्पत्तिनाशान्ताः काष्ठोत्कर्षे स्थितौ दिशि
४० त्रिषु ज्येष्ठोऽतिशस्तेऽपि कनिष्ठोऽतियुवाल्प-
योः ॥ इति ठान्ताः ॥

(अति वा धन्वा कीनोक प्रकर्षला अथिवा कोरा करोरि इनका नाम) कोटि १ (जर और लपटाने वारों का नाम) जटा १ ॥ ३७ ॥ (फल और सम्पदा का नाम) व्युष्टि १ (ज्ञान और देखने का नाम) दृष्टि १ (यज्ञ इच्छा संग्रह श्लोक इन का नाम) इष्टि १ (निश्चित बहुत सुन्न इन का नाम) सृष्ट १ ॥ ३८ ॥ (दुःख गहन दुराधिगम स्थान का नाम) कष्ट १ (दक्ष, तीक्ष्ण, रोगहीन का नाम) पटु १ ॥ इति टान्ताः ॥ (शिव और मयूर का नाम) नीलकण्ठ १ ॥ ३९ ॥ (अन्तर्जठर पेट का भीतर जिसे कोठा कहते (कुसूल) (अन्न रखने का स्थान) इसे भी कोठा कहते (अन्तर्गृह) कोठ उत्कर्ष स्थित और दिशा का नाम) काष्ठा १ ॥ ४० ॥ (अत्युत्तम, अति वृद्ध, बड़ा भाई, वैशाख के उ-त्तर का मास इन का नाम) ज्येष्ठ १ (बाल और छोट भाई का नाम) कनिष्ठ १ ॥ इति ठान्ताः ॥

दण्डोऽस्त्री लगुडेऽपि स्याद्गुडो गोलेक्षुपाकयोः ५१
सर्प्पमांसात्पश्वोर्व्याडो गोभूवाचस्त्विडा इलाः।
क्ष्वेडा वंशशलाकापि नाडी नालेऽपि षट्क्षणे ५२
काण्डोऽस्त्री दण्डबाणार्व्ववर्गावसरवारिषु।
स्याद्भाण्डमश्वाभरणेऽमत्रे मूलवणिग्धने ५३
इति डान्ताः॥ भृशप्रतिज्ञयोर्बाढं प्रगाढं भृश-
कृच्छ्रयोः। शक्तस्थूलौ त्रिषु दृढौ व्यूढौ विन्यस्तसं-
हतौ ५४ ॥ इति ढान्ताः॥ भ्रूणोऽर्भके स्त्रैणगर्भे
बाणो बलिसुते शरे॥

(दम, डांड देना, दण्डा, ख़म, सेना, अश्व खेलरि, अभिमान, ग्रह और सूर्य्य के पारिपार्श्विक का नाम) दण्ड १ (गुण्डा और गुर का नाम) गुड १ ॥ ५१ ॥ (सर्प और मांसाद पशु व्याघ्र का नाम) व्याड १ (गाय पृथ्वी बाणी बुध की स्त्री इन का नाम) इडा (इकार लकार की एकता से इला भी इन्हीं का नाम है (बांस की शलाका और क्रम से विष का नाम) क्ष्वेडा १ क्ष्वेड २ (नली और नाड़ी का नाम) नाडी १ ॥ ५२ ॥ (दण्ड, बाण, अर्व्वा, खराब परिच्छेद अवसर इन का नाम) काण्ड १ (घोड़ा, गहना मूर भांड़ा भंड़िया इन का नाम) भाण्ड १ ॥ ५३ ॥ इति डान्ताः ॥ अत्यर्थ प्रतिज्ञा और पोढ़ का नाम बाढ़ १ (भृश और दुःख का नाम) प्रगाढ़ १ (समर्थ और मोटे का नाम, दृढ १ (विन्यस्त संहत और पृथुल का नाम व्यूढ १ ॥ इति ढान्ताः ॥ ५४ ॥ (बालक और स्त्री के गर्भ का नाम) भ्रूण १ (बाणा सुर और तीर का नाम) बाण १ ॥

कणोऽतिसूक्ष्मे धान्यांशे संहते प्रमथे गणः ४५
पणो द्यूतादिषूत्सृष्टे भृतौ मूल्ये धनेपि च। मौर्व्यां द्र-
व्याश्रिते सत्त्व शौर्य्य सन्ध्यादिके गुणः ४६ नि-
र्व्यापारस्थितौ कालविशेषोत्सवयोः क्षणः। व-
र्णो द्विजादौ शुक्लादौ स्तुतौ वर्णन्तु वाऽक्षरे ४७ अ-
रुणो भास्करेपि स्याद्वर्णभेदेपि च त्रिषु। स्थाणु-
र्ना ध्रुवः शङ्कुः? द्रोणः काकेप्याजौ रवे रणः ४८ ग्रा-
मणीर्नापिते पुंसि श्रेष्ठे ग्रामादिके त्रिषु। ऊर्णा
मेषादिलोम्नि स्यादावर्त्ते चान्तरा भ्रुवोः ४९

(कन और सूक्ष्म वस्तु के अंश का नाम) कण १ (समूह और रुद्र के अनुचरों का नाम) गण २॥४५॥ (जुआ की बाजी मजूरी मूल्य दाम चाव का किराणी धन का नाम) पण १ (मौर्व्वी) धन्वा की रस्सी रस गन्धादि सत्व रज तम शूरता चातुर्य्य सन्धि विग्रहादि इन्द्रिय रस्सी और [illegible] होने का नाम गुण १॥४६॥ (निर्व्यापारस्थिति चुप रहना कालविशेष १० पल और उत्सव का नाम) क्षण १ (ब्राह्मणादि ४ शुक्लपीतादि रंग और अक्षर का नाम) वर्ण १ ॥४७॥ (रवि सूर्य्य सारथि लाल रंग गुन का नाम) अरुण १ (महादेव खम्भा और वृक्ष पर्वतादि का नाम) स्थाणु १ (काक द्रोणाचार्य्य और परिमाण विशेष का नाम) द्रोण १ (संग्राम और शब्द का नाम) रण १॥४८॥ (नाऊ और मुख्य ग्रामाधिप का नाम) ग्रामणी १ (भेड़ छाग उष्ट्रादि के रोवाँ और भौंहों के बीच का नाम) ऊर्णा १ ॥४९॥

हरिणी स्यान्मृगी हेमप्रतिमा हरिता च या। त्रिषु
पाण्डौ च हरिणः स्थूणा स्तम्भेपि वेश्मनः ५०
तृष्णे स्पृहापिपासे द्वे जुगुप्साकरुणे घृणे। वणि-
क्पथे च विपणिः सुराप्रत्यक्च वारुणी ५१ करेणु-
रिभ्यां स्त्री नेभे द्रविणं तु बलं धनम्। शरणं गृहर-
क्षित्रोः श्रीपर्णं कमलेपि च ५२ विषाभिमरलोहे-
षु तीक्ष्णं क्लीवे खरे त्रिषु। प्रमाणं हेतुमर्यादाशा-
स्त्रेयत्ताप्रमातृषु ५३ करणं साधकतमं क्षेत्रगा-
त्रेन्द्रियेष्वपि॥

(मृगी सुवर्ण की प्रतिमा हरी वस्तु वृक्ष भेद इनका नाम) हरिणी २
(मृग और पाण्डुर वर्ण का नाम) हरिणः २ (थून्ही और लोहे की
प्रतिमा का नाम) स्थूणा २॥ ५०॥ (वांछा और पियास का नाम)
तृष्णा २ (जुगुप्सा निन्दा और करुणा का नाम) घृणा २ (बा-
ज़ार की गली और दूकानों का नाम) विपणि २ (मदिरा और
पश्चिम की दिशा का नाम) वारुणी २॥ ५१॥ (हाथी हथिनी का
नाम) करेणु २ (बल और धन का नाम) द्रविण २ (गृह रक्षा करनेवा-
ले वध और रक्षा करने का नाम) शरण २ (कमल और अग्निमन्थ
का नाम) श्रीपर्ण २॥ ५२॥ (विषयुक्त, पैन, लोह इन का नाम) ती-
क्ष्ण २ (हेतु मर्य्यादा शास्त्र परिच्छेद ज्ञाता इन का नाम) प्रमाण २
॥ ५३॥ (जिस्से क्रिया कीजाय खेत देह, इन्द्रिय, कारण, कायस्थ
व्रत बन्ध नाचने गाने शब्द में वैश्य से उत्पन्न और वानर का नाम)
करण २॥

प्राणायुत्पादे संसरणमसंबाधचमूगतौ ५४ घण्टापथेथ वान्तान्ने समुद्गिरणमुन्नये। अतस्त्रिषुविषाणं स्यात्पशुशृङ्गेभदन्तयोः ५५ प्रवणंक्रमनिम्नोर्व्यांप्रह्वेनातुचतुष्पथे। संकीर्णौनिचिताशुद्धौ निरिणं शून्यमूषरम् ५६ सेतौ च वरणो वेणी नदीभेदे कचोच्चये॥ इतिणान्ताः॥ देवसूर्यौ विवस्वन्तौ सरस्वन्तौ नदार्णवौ। पक्षितार्क्ष्यौ गरुत्मन्तौ शकुन्तौ भासपक्षिणौ ५७ अग्न्युत्पातौ धूमकेतू जीमूतौ मेघपर्वतौ। हस्तौ तु पाणिनक्षत्रे मरुतौ पवनामरौ ५८

(प्राण्युत्पाद जीवों के जन्म बिना रोक सैन्य के गमन और घण्टापथ सड़क का नाम) संसरण १॥ ५४॥ (डांके हुये अन्न उन्नय जल पात्रादि के ऊपर ले जाने और उखार डारने का नाम) उद्गिरण १ (पशुओं के सींग और हाथी दांत के नाम) विषाण १ विषाणी १॥ ५५॥ (क्रम से उतार पृथ्वी प्रह्व नम्र चतुष्पथ चौरहा वा चौक का नाम) प्रवण १ (निचित व्याप्त अशुद्ध सङ्कुल वर्णसंकर और सकसे का नाम) सङ्कीर्ण १ (शून्य और ऊसर का नाम) इरिण १॥ ५६॥ (सेतु पुल्ह का नाम) वरण १ (स्त्रियों की चोटी और एक नदी का नाम) वेणी १॥ इतिणान्ताः॥ (देव और सूर्य का नाम) विवस्वान् १ (पक्षी और गरुड़ का नाम) गरुत्मान् १ (शूद्र और पक्षिमात्र का नाम) शकुन्त १॥ ५७॥ (अग्नि और धूममयी तारा का नाम) धूमकेतु १ (मेघ और पर्वत का नाम) जीमूत १ (हाथ और तेरहें नक्षत्र का नाम) हस्त १ (वायु और देवता का नाम) मरुत् १॥ ५८॥

यन्ता हस्तिपके सूते भर्त्ता धातरि पोष्टरि। यान-
पात्रे शिशौ पोतः प्रेतः प्राण्यन्तरे मृते ५९ ग्रह-
भेदे ध्वजे केतुः पार्थिवे तनये सुतः। स्थपतिः
कारुभेदेऽपि भूभृद्भूमिधरे नृपे ६० मूर्द्धाभिषि-
क्तो भूपेऽपि ऋतुः स्त्री कुसुमेऽपि च। विष्णावप्य
जिताव्यक्तौ सूतस्त्वष्टरि सारथौ ६१ व्यक्तः प्रा-
ज्ञेऽपि दृष्टान्तावुभौ शास्त्रनिदर्शने। क्षत्ता स्या-
त्सारथौ द्वास्थे क्षत्रियायां च शूद्रजे ६२

(हथिवाल और बहल लढ़ी आदि के हांकने वाले का नाम) यन्ता १ (धारण करने वाले और पोषण करने वाले और स्वामी का नाम) भर्त्ता १ (बहित्र लड़का और नाव का नाम) पोत १ (परेत और मृतक का नाम) प्रेत १ ॥ ५९ ॥ (पता का और नवयें ग्रह का नाम) केतु १ (राजा और पुत्र का नाम) सुत १ (थवई और कंचुकी का नाम) स्थपति १ (भूमिधर पर्व्वत और राजा का नाम) भूभृत् १ ॥ ६० ॥ (राजा और क्षत्रियमात्र का नाम) मूर्द्धाभिषिक्त १ (स्त्री के मास मास पर भग से रुधिर बहने और वसन्तादि समय का नाम) ऋतु १ (विष्णु और महादेव के नाम) अजित १ अव्यक्त १ (सारथि बढ़ई ब्राह्मणी में क्षत्रिय से उत्पन्न हुये और पौराणिक परिडत का नाम) सूत १ ॥ ६१ ॥ (पण्डित और स्फुट का नाम) व्यक्त १ (तर्क्कादि शास्त्र और उदाहरण का नाम) दृष्टान्त १ (सारथि द्वारपालक और क्षत्रियाणी में शूद्र से उत्पन्न हुये का नाम) क्षत्ता १ ॥ ६२ ॥

वृत्तान्तस्स्यात्प्रकरणो प्रकारे कार्त्स्न्यं वार्त्तयोः।
आनर्त्तस्समरेनृत्य स्थाननीवृद्विशेषयोः ६३ कृ
तान्तोयमसिद्धान्तदैवाकुशलकर्म्मसु। श्लेष्मा
दिरसरक्तादि महाभूतानितद्गुणाः ६४ इन्द्रिया
णयश्मविकृतिश्शब्दयोनिश्चधातवः। कक्षा
न्तरेपिशुद्धान्तोनृपस्स्यात्सर्व्वगोचरे ६५ कास्नू
सामर्थ्ययोश्शक्तिर्म्मूर्त्तिः काठिन्यकाययोः।
विस्तारवल्ल्योर्व्रततिर्व्वसती रात्रिवेश्मनोः
६६ क्षयार्च्चयोरपचितिस्सातिर्दानावसानयोः।
आर्त्तिः पीडाधनुष्कोट्योर्ज्जातिस्सामान्यजन्मनोः ६७

प्रकरण- प्रकार- साकल्य- और वार्त्ताका नाम) वृत्तान्त १ ( समर नाचका स्थान नीवृद्वि शेष द्वारका पुरी का नाम) आनर्त्त १ ॥ ६३ ॥ ( यम राज सिद्धान्त भाग्य और पाप का नाम) कृतान्त १ ( श्लेष्मपित्ता-दि रक्त- वसा महाभूत पृथिवी वायु आदि ५ तिनके गुण- गन्ध- स्प-र्शादि ॥ ६४ ॥ ( नेत्रादि इन्द्रिय अश्म विकृति मैनशिर गेरू आदि श-ब्दोंके जन्मस्थान - भूसत्तायाम् गम्लृ- गतौ इत्यादि का नाम) धातु १ ( राज धानी और राजाओंके जनाने का नाम) शुद्धान्त १ ॥ ६५ ( कास्नू वा बलकी वा सांग और बलका नाम) शक्ति १ ( कठिन ता और काम का नाम) मूर्त्ति १ ( विस्तार और वल्लीका नाम व्रतति १ ( रात्रि और गृह का नाम) वसति १ ॥ ६६ ॥ ( क्षय और पूजाका नाम) अपचिति १ ( दान और अन्त का नाम) साति १ ( पीड़ा अरु धन्वा की कोटि का नाम) आर्त्ति १ ( सामान्य जात और जन्म का नाम) जाति १ ॥ ६७ ॥

अचारस्यन्दयोरीतिरीतिर्डिम्बप्रवासयोः। उदये-
ऽधिगमे प्राप्तिस्त्रेता त्वग्नित्रये युगे ६८ वीणा-
भेदेपि महती भूतिर्भस्मनि सम्पदि। नदीन-
गर्य्योर्नागानाम्भोगवत्यथ सङ्गरे ६९ सङ्गे
सभायां समितिः क्षयवासावपि क्षिती। रवेर-
र्च्चिश्च शस्त्रञ्च वह्निज्वाला च हेतयः ७० जगती
जगति च्छन्दोविशेषेपि क्षितावपि। पंक्तिश्छ-
न्दोपि दशमं स्यात्प्रभावेपि चायतिः ७१

(लोकाचार और स्यन्द प्रस्रवण का नाम) रीति १ (डिम्ब ७ प्रकार का है यथा-अति दृष्टि-अनावृष्टि-टीड़ी-मूषक-सुवा-अपनी-फ़ौज-पराई फ़ौज और प्रवास का नाम) ईति १ (उत्पत्ति लाभ और पहुंचने का नाम) प्राप्ति १ (अग्नित्रय) दक्षिणा-गार्हपत्य-आहवनीय (और दूसरे युग का नाम) त्रेता २॥ ६८॥ (नारद की वीणा-और महत्त्व करके युक्त भार्य्यादि का नाम) महती १ (भस्म और अणिमा महिमादि आठ ऐश्वर्य्यों का नाम) भूति १ (सर्प्पों की नदी और नगरी का नाम) भोगवती १॥ ६९॥ सङ्गर २ (संग्राम और सभा का नाम) समिति १ (निवास-क्षय और पृथ्वी का नाम) क्षिति १ (सूर्य्य प्रभा शस्त्र और अग्नि का नाम) हेति १॥ ७०॥ (लोक पृथ्वी छन्दोविशेष व द्वादशाक्षर पद वृत्त और जनों का नाम) जगती १ (दश अक्षर के चरण का छन्द और पांति का नाम) पंक्ति १ (अन्तर काल और प्रभाव का नाम) आयति १॥ ७१॥

पत्तिर्गतौ च मूले तु पक्षतिः पक्षभेदयोः। प्रकृतिर्योनिलिङ्गे च कैशिक्याद्याश्च वृत्तयः ७२ सिकतास्स्युर्वालुकापि वेदे श्रवसि च श्रुतिः। वनिताजनितात्यर्थानुरागायाश्च योषिति ७३ गुप्तिः क्षितिव्युदासेपि धृतिर्धारणधैर्ययोः। बृहती क्षुद्रवार्त्ताकी छन्दोभेदे महत्यपि ७४ वासिता स्त्री करिण्योश्च वार्त्ता वृत्तौ जनश्रुतौ। वार्त्तम्फल्ग्वन्यरोगे च त्रिष्वप्सु च घृतामृते ७५

(बाल और सैन्य का नाम) पत्ति२ (पारव परव ना और परीवा का नाम) पक्षति२ (भवलिंग प्रधान तत्त्व मंत्री आदि और स्वभाव का नाम) प्रकृति२ (कौशिकी जीविका और सूत्रों के अर्थ विवरण का नाम) वृत्ति२ ॥७२॥ (बारू और सिटकि हा देश का नाम) सिकता२ (वेदकान और सुनने का नाम) श्रुति२ (अति अनुरागयुक्त स्त्री और स्त्री मात्र का भी नाम) वनिता२ ॥७३॥ (क्षितिव्युदास- भूविवर- रक्षा और बन्दीखाना का नाम) गुप्ति२ (धारणा और धैर्य्य का नाम) धृति२ (भटकैया बनभांटा भांटा और नव अक्षर के चरण के छन्द का नाम) बृहती२ ॥७४॥ (स्त्री और हथिनी का नाम) वासिता२ (और पक्षियों के शब्द का नाम) वासित२ (जीविका और बतकही का नाम) वार्ता२ (लघु रोगरहित और असार का नाम) वार्त्त२ (पानी घी सुधा यज्ञशेष का नाम) अमृत२ (यज्ञ शेष को छोड़ इन्हीं सबों का नाम) घृत२॥ ७५॥

कलधौतं रूप्य हेम्नोर्न्निमित्तं हेतु लक्ष्मणोः ।
श्रुतं शास्त्रावधृत योर्य्युग पर्य्याप्तयोः कृतम् ७६
अत्याहितम्महाभीतिः कर्म्मजीवानपेक्षिच ।
युक्ते क्ष्मादावृते भूतम्प्राणयतीते समेत्रिषु ७७
वृत्तम्पद्ये चरित्रे त्रिष्वतीते दृढ़ निस्तले । महद्
राज्यञ्चावगीतं जन्ये स्यान्गर्हिते त्रिषु ७८ श्वे-
तं रूप्येऽपि रजतं हेम्नि रूप्ये सिते त्रिषु । त्रिष्विती
जगदिङ्गे ऽपि रक्तं नील्यादिरागिच ७९ अवदा-
तस्सिते पीते शुद्धे वद्धार्ज्जुनौ सितौ । युक्तेऽति सं-
स्कृते मर्षिण्यभिनीतोऽथ संस्कृतम् ८०

(चांदी सोना का नाम) कलधौत १ (हेतु और चिह्न का नाम) नि-
मित्त १ (शास्त्र और सुने हुये का नाम) श्रुत १ (सत्य युग के पर्य्याप्ति
अलमर्त्थ का नाम) कृत १ ॥ ७६ ॥ (महा भय का नाम) अत्याहित
१ (न्याय पृथ्वी जलादि ५ सत्य बीते समय का नाम) भूत १ ॥ ७७ ॥
(पद्य श्लोक चरित्र अतीत भूत काल दृढ़ गोल इन का नाम)
वृत्त १ (राज्य और बृहत् का नाम) महत् १ (निन्दित जनों के अप-
वाद का नाम) अवगीत १ ॥ ७८ ॥ (रूपया उज्ज्वल और द्वीप वि-
शेष का नाम) श्वेत १ (सोना चांदी और उज्ज्वल का नाम) रजत १
(जंगम और भुवन का नाम) जगत् १ (नीलादि के रंग और रुधिर का
नाम) रक्त १ ॥ ७९ ॥ (सित पीत निर्म्मल का नाम) अवदात १ (बद्ध और
अर्जुन शुक्लक अति प्रशस्त और असहनशील का नाम) अभिनीत १ (बनाये
हुये पदार्त्थ और शास्त्र के लक्षण करके युक्त का नाम) संस्कृत १ ॥ ८० ॥

कृत्रिमेलक्षणोपेतेऽप्यनन्तोनवधावपि।ख्या-
तेहृष्टेप्रतीतोभिजातस्तुकुलजेबुधे ८१ विवि-
क्तौपूतविजनौमूर्च्छितौमूढसोच्छ्रयौ।द्वौचा-
म्लपरुषौशुक्तौशितौधवलमेचकौ ८२ सत्ये
साधौविद्यमानेप्रशस्तेऽभ्यर्हितेचसत्।पुरस्कृ-
तःपूजितेरात्यभियुक्तेऽग्रतःकृते ८३ निवाता-
वाश्रयावातौशस्त्राभेद्यञ्चवर्म्मयत्।जातो-
न्नद्धप्रवृद्धास्स्युरुच्छ्रिताउत्थितास्त्वमी ८४
वृद्धिमत्प्रोद्यतोत्पन्नाःआदृतौसादरार्चितौ।
इतितान्ताः॥अर्थोभिधेयरैवस्तुप्रयोजननिवृत्तिषु ८५

(अनवधि जिस की मर्य्यादा नहो विष्णु और शेष का नाम) अनन्त१
(प्रसिद्ध और हर्षित का नाम) प्रतीत१ (कुलीन और पंडित का ना-
म) अभिजात१॥८१॥ (पवित्र और विजन एकान्त का नाम) विवि-
क्त१ (मोहित और बढ़ती को प्राप्त हुये का नाम) मूर्च्छित१ (आमि-
ल और निठुर का नाम) शुक्त१ (धवल शुक्ल मेचक कृष्ण वर्ण
का नाम) शिति१॥८२॥ (सत्य साधु विद्यमान प्रशस्त अभ्य-
र्हित का नाम) सत्१ (पूजित शत्रु सेपीडित और आगे किये हुये
का नाम) पुरस्कृत१॥८३॥ (निवास वायुरहित और जिस कव-
च में शस्त्र सेन कटे उन का नाम) निवात१ (उत्पन्न दृप्त और वृद्ध
का नाम) उच्छ्रित१॥८४॥ (वृद्धिमान् प्रोद्यत उत्पन्न इन का ना-
म) उत्थित१ (आदर किये हुये और पूजित का नाम) आदृत१ (इतिता-
न्ताः (वाच्य धन वस्तु प्रयोजन निवर्त्तन और विषय का नाम) अर्थशब्द

निपानागमयोस्तीर्थमृषिजुष्टेजलेगुरौ। समर्थस्त्रिषु शक्तिस्थे सम्बद्धार्थेहितेपिच ८६ दशमीस्थौ क्षीणरागवृद्धौ वीथीपदव्यपि। आस्थानीयत्न-योरास्थाप्रस्थोऽस्त्री सानुमानयोः ८७ शास्त्रद्र-विणयोर्ग्रन्थःसंस्थाधारेस्थितौमृतौ॥ इति था-न्ताः॥ अभिप्राय वशौ छन्दावब्दौजीमूतवत्सरौ। अपवादौतुनिन्दाज्ञेदायादौसुतबान्धवौ ८८ पादारश्म्यंघ्रितुर्य्यांशाश्चन्द्राग्न्यर्कास्तमोनुदः। निर्व्वादोजनवादेपिशादोजम्बालशाष्पयोः ८९

(कूपादि जलाशय वोद्ध रहित शास्त्र गुरु और अयोध्या काशी आदि का नाम) तीर्त्थ १ (शक्ति में टिके हुये सम्बन्धार्त्थ और हित का नाम) समर्त्थ १॥ ८६॥ (रस रहित और अति वृद्ध का नाम) दशमीस्थ १ (मार्ग और पंक्ति का नाम) वीथी १ (आस्थानी सभा और यत्न का नाम) आस्था १ (कंगूरा और पसर का नाम) प्रस्थ १॥ ८७॥ (शास्त्र और द्रव्य का नाम) ग्रन्थ १ (आधार स्थिति और मरण का नाम) संस्था १॥ इति थान्ताः॥ (अभिप्राय और अधीन का नाम) छन्द १ (मेघ और वर्ष का नाम) अब्द १ (निन्दा और आज्ञा का नाम) अपवाद १ (सुत और भाई बन्धु का नाम) दायाद १॥ ८८॥ (किरण चरण और चौथाई का नाम) पाद १ (चन्द्रमा अग्नि और सूर्य्य का नाम) तमोनुद १ (लोकापवाद और निश्चित वाद का नाम) निर्वाद १ (जम्बाल वोदा और वाल तृण का नाम) शाद १ ॥ ८९ ॥

आरावेरुदितेत्रातर्य्याक्रन्दोदारुणेरणे। स्या-
त्प्रसादोऽनुरागेऽपि सूदस्याद्व्यंजनेपिच ९०
गोष्ठाध्यक्षेपिगोविन्दोहर्षेप्यामोदवन्मदः। प्रा-
धान्येराजलिङ्गेचवृषाङ्गेककुदोऽस्त्रियाम् ९१
स्त्रीसम्विज्ज्ञानसम्भाषाक्रियाकाराजिनामसु।
धर्म्मेरहस्युपनिषत्स्यादृतौवत्सरेशरत् ९२ प-
दम्व्यवसितत्राणस्थानलक्ष्मांघ्रिवस्तुषु। गो-
ष्पदंसेवितेमानेप्रतिष्ठाकृत्यमास्पदम् ९३ त्रि-
ष्विष्टमधुरौस्वादूमृदूचातीक्ष्णकोमलौ॥

(आरव कष्ट पुनः शब्द रक्षक और दारुण युद्ध का नाम) आक्रन्द १ (अनुग्रह प्रसन्नता और काव्य के गुण का नाम) प्रसाद १ (व्यञ्जन और रसोई करनेवाले का नाम) सूद २॥ ९०॥ (गोष्ठाध्यक्ष गोपालादि वृहस्पति और श्रीकृष्ण चन्द्र का नाम) गोविन्द १ (हर्ष और अतिनिर्हारि गन्ध का नाम) आमोद २ (हर्ष गर्व्व गज मद और कन्दर्प्प का नाम) मद २ (प्रधान राजचिन्ह और बैल के कांधे का नाम) ककुद १ ॥ ९१॥ (ज्ञान सम्भाषण कर्म्म नियम युद्ध और नाम का नाम) संवित् १ (धर्म्म एकान्त और वेदान्त का नाम) उपनिषद् १ (क्वार कार्त्तिक के समय और वर्ष का नाम) शरत् १॥ ९२॥ (व्यवसिति व्यवसाय रक्षा स्थान चिह्न चरण चिन्ह चरण वस्तु इन का नाम) पद १ (गायों के स्थान और उन के खुर मात्र की लम्बाई चौड़ाई का नाम) गोष्पद १ (सेवित स्थान और करने का नाम) आस्पद १॥ ९३॥ (इ-ष्ट और मधुर का नाम) स्वादु १ (को[illegible]ल और कोमल का [illegible]) मृदु १॥

मूढाल्पापटुनिर्भाग्या मन्दास्स्युर्द्वौ तु शारदौ ९४
प्रत्यग्राप्रतिभौ विद्वत्सुप्रगल्भौ विशारदौ ॥ इति
दान्ताः ॥ व्यामो वटश्च न्यग्रोधावुत्सेधः कायव-
न्नतिः ९५ पर्य्याहारश्च मार्गश्च विवधौ वीवधौ
च तौ । परिधिर्य्यज्ञियतरोश्शाखायामुपसूर्य्य-
के ९६ बन्धकं व्यसनं चेतःपीडाधिष्ठानमाधयः ।
स्युस्समर्त्थननीवाकनियमाश्च समाधयः ९७ दो-
षोत्पादेनुबन्धस्स्यात्प्रकृत्यादिविनश्वरे । मुख्या-
नुयायिनि शिशौ प्रकृतस्यानुवर्त्तने ९८

( मूर्ख अल्प अप्रवीण और भाग्यहीन इन का नाम ) मन्द १ ॥ ९४ ॥
( नव्यग्र अभिनव और अप्रतिभ इत्यादि का नाम ) शारद १ ( पंडित
और ढीठ का नाम ) विशारद १ ॥ इति दान्ताः ॥ दोनों हाथों के फैला-
ने से बने हुये कुण्डल और बरगद का नाम ) न्यग्रोध २ ( देह और ऊं-
चाई का नाम ) उत्सेध १ ॥ ९५ ॥ ( पर्य्याहार ध्यानादि और मार्ग के
नाम ) विवध १ वीवध २ ( यज्ञिय तरु पलाशादि शाखा सूर्य्य के
चारों ओर जो कभी २ घेरा बन जाता है गोल रवेत्तादि के घेरे का
नाम ) परिधि २ ॥ ९६ ॥ ( बन्धक गिरवीं वस्तु व्यसन आपत्ति चेतः
पीड़ा मानसी व्यथा और अधिष्ठान का नाम ) आधि २ ( समर्त्थन नी-
[illegible] मौन और नियम इन का नाम ) समाधि २ ॥ ९७ ॥ ( दोष के उत्पा-
[illegible] जिन [illegible] देश में जो इत्संज्ञा औ-
र [illegible] वाला [illegible] वच्चू लघु अ-
[illegible] ॥ ९८ ॥

विधुर्विष्णौ चन्द्रमसि परिच्छेदे बिलेऽवधिः । वि-
धिर्विधाने दैवेपि प्रणिधिः प्रार्थने चरे १९९ बुध-
वृद्धौ पण्डितेऽपि स्कन्धस्समुदयेपि च । देशे नद वि-
शेषेऽब्धौ सिन्धुर्ना सरिति स्त्रियाम् २०० विधा वि-
धौ प्रकारे च साधू रम्येपि च त्रिषु । बधूर्जाया स्नुषा
स्त्री च सुधा लेपोऽमृतं स्नुही २०१ सन्धा प्रतिज्ञा म-
र्यादा श्रद्धा सम्प्रत्ययस्स्पृहा । मधु मद्ये पुष्परसे
क्षौद्रेप्यन्धन्तमस्यपि २०२

(विष्णु चन्द्रमा कपूर और राक्षस का नाम) विधु २ (परिच्छेद म-
र्य्यादा बिल और समय का नाम) अवधि ३ (विधान भाग्य और ब्र-
ह्मा का नाम) विधि ३ (प्रार्थना और चलने वाले का नाम) प्रणिधि
२ ॥ १९९ ॥ (पण्डित बूढ़ और चौथे ग्रह का नाम) बुध १ (पण्डित और
बूढ़ का नाम) वृद्ध १ (समुदय समूह कारड राजा और कांधे का
नाम) स्कन्ध १ (सिन्धु देश समुद्र और अटक नदी का नाम) सिन्धु
१ ॥ २०० ॥ (विधान प्रकार और बढ़ाई का नाम) विधा २ (सज्जन
और रम्य का नाम) साधु २ (स्त्री और पतोहू का नाम) बधू १ (लीप-
ने की वस्तु धरोहर की वस्तु बिजुली अमृत सर्प्प के भोजन अँवरा
और स्नुही सेहुंड़ा का नाम) सुधा १ ॥ २०१ ॥ (प्रतिज्ञा अंगीकार
और मर्य्यादा का नाम) सन्धा १ (सम्प्रत्यय आदर और स्पृहा
आकांक्षा का नाम) श्रद्धा १ (मद्य पुष्प रस शहद चैत्र और महु-
आ का नाम) मधु १ (अन्धे और अँधेरे का नाम) अन्ध १
॥ २०२ ॥

अतस्त्रिषु समुन्नद्धौ पण्डितम्मन्यगर्व्वितौ। ब्रह्म-
बन्धुरधिक्षेपे निर्द्देशोऽथावलम्बितः २०३ अविदू-
रोप्यवष्टब्धः प्रसिद्धौ ख्यातभूषितौ॥ इति धान्ताः
॥ सूर्य्यवह्नी चित्रभानू भानूरश्मिदिवाकरौ २०४ भूता-
त्मानौ धातृदेहौ मूर्खनीचौ पृथग्जनौ। ग्रावाणौ
शैलपाषाणौ पत्रिणौ शरपक्षिणौ २०५ तरुशै-
लौ शिखरिणौ शिखिनौ वह्निबर्हिणौ। प्रतिय-
त्नावुभौ लिप्सोपग्रहावथ सादिनौ २०६ द्वौ सार-
थिहयारोहौ वाजिनोऽश्वेषुपक्षिणः। कुलेप्यभि-
जनो जन्मभूम्यामप्यथ हायनाः २०७

(पण्डितम्मन्य मूर्ख और अहङ्कारी का नाम) समुन्नद्ध १ (अधि-
क्षेप निन्दा प्रयोग और ब्राह्मण का नाम) ब्रह्मबन्धु १ (अवल-
म्बित आश्रित (अविदूर सन्निहित का नाम) अवष्टब्ध १ (ख्यात
और भूषित का नाम) प्रसिद्ध १॥ इति धान्ताः॥ (सूर्य्य और अग्नि का
नाम) चित्रभानु १ (किरण और सूर्य्य का नाम) भानु १॥ २०३॥
॥ २०४॥ (धाता और देह का नाम) भूतात्मा १ (मूर्ख और नीच का
नाम) पृथग्जन १ (पर्वत और पत्थर का नाम) ग्रावा १ (बाण बाज
रथ और काराड का नाम) पत्री १॥ २०५॥ (वृक्ष और पर्वत का नाम)
शिखरी १ (अग्नि और मोर का नाम) शिखी १ (बांछा और अनुकू-
ल का नाम) प्रतियत्न १॥ २०६॥ (सारथि और सवार का नाम )
सादी १ (अश्व बाण और पक्षी का नाम) वाजी १ (कुल और जन्म-
भूमि का नाम) अभिजन १॥ २०७॥

वार्षिर्व्रीहिभेदाश्च चन्द्राग्न्यर्का विरोचनाः।
क्लेशेऽपि वृजिनो विश्वकर्मार्कसुरशिल्पिनोः
१०८ आत्मा यत्नो धृतिर्बुद्धिः स्वभावो ब्रह्मव-
र्म च। शक्रो घातुकमत्तेभो वर्षुकाब्दो घना-
घनः १०९ घनो मेघे मूर्त्तिगुणे त्रिषु मूर्त्ते निरन्तरे।
अभिमानोऽर्थादिदर्पे ज्ञाने प्रणयहिंसयोः ११०
इनः सूर्य्ये प्रभौ राजा मृगाङ्के क्षत्रिये नृपे। वाहि-
न्यौ नर्त्तकीदूत्यौ स्रवन्त्यामपि वाहिनी १११
ह्लादिन्यौ वज्रतडितौ वन्दायामपि कामिनी॥

(वर्षकिरण और व्रीहिभेद साठी धान का नाम) हायन १ (चन्द्रमा अग्नि सूर्य्य और प्रह्लाद पुत्र का नाम) विरोचन १ (क्लेश और पाप का नाम) वृजिन १ (सूर्य और देवों के बढ़ई का नाम) विश्वकर्म्मा १ ॥ १०८ ॥ (यत्न धृति बुद्धि स्वभाव ब्रह्म देह और चित्त का नाम) आत्मा १ (इन्द्र घात करने वाले मत वाले हाथी और बरसने वाले बादर का नाम) घनाघन १ ॥ १०९ ॥ (मेघ मूर्त्ति गुण कठिनता कठिन (निरंतर) गझिन और लोह पीटने के हथौरा का नाम) घन १ (द्रव्य पशु कुल गुणादि करके अहङ्कार, ज्ञान, प्रणय और हिंसा का नाम) अभिमान १ ॥ ११० ॥ (सूर्य, राजा और स्वामी का नाम) इन १ (चन्द्रमा, क्षत्रिय, नृप, यक्ष, इन्द्र इन का नाम) राजा १ (नर्त्तकी और दूती का नाम) वाहिनी १ (स्रवन्ती नदी और सेना का नाम) वाहिनी ११ (वज्र और बिजुली का नाम) ह्लादिनी १ (वांदा और स्त्री मात्र का नाम) कामिनी १ ॥

त्वक्देहयोरपि तनुः सूनाऽधोजिह्विकापि च ११२ क्रतुविस्तारयोरस्त्री वितानं त्रिषु तुच्छके। मन्दे ऽथ केतनं कृत्ये केतावुपनिमन्त्रणे ११३ वेदस्तत्त्वन्तपो ब्रह्म ब्रह्मा विप्रः प्रजापतिः। उत्साहने च हिंसायां सूचने चापि गन्धनम् ११४ आतञ्चनम्प्रतीवापजवनाप्यायनार्थकम्। व्यञ्जनं लाञ्छनं श्मश्रुनिष्ठानावयवेष्वपि ११५ स्यात्कौलीनं लोकवादे युद्धे पश्वहिपक्षिणाम्। स्यादुद्यानन्निःसरणे वनभेदे प्रयोजने ११६ अवकाशे स्थितौ स्थानं क्रीडादावपि देवनम्॥

(खाल और देह का नाम) तनु २ (अधो जिह्विका, गल कगिठका, पुनी वधस्थान और हिंसा का नाम) सूना ३ ॥११२॥ (यज्ञ, विस्तार, तुच्छ, घन्य और मन्द का नाम) वितान २ (कार्य, पताका, उपनिमंत्रण का नाम) केतु ३ ॥११३॥ (वेद, चैतन्य और तपस्या का नाम) ब्रह्म २ (विप्र और प्रजापति का नाम) ब्रह्मा २ (उत्साहन, हिंसा और सूचन करने का नाम) गन्धन २॥११४॥ (प्रतीवाप जावन जवन वेग और आप्यायन प्रीणन का नाम) आतञ्चन २ (चिह्न, डाढ़ी मोछ, निशान जेमन और अंग का नाम) व्यञ्जन २॥११५॥ (लोकापवाद, पशु सर्प और पक्षियों के युद्ध और कुलीनता का नाम) कौलीन २ (निकरने, उपवन और प्रयोजन का नाम) उद्यान २॥११६॥ (अवकाश और स्थिति का नाम) स्थान २ (क्रीडा, व्यवहार, विजिगीषादि और जुम्भा का नाम) देवन २॥

उत्थानम्पौरुषे तन्त्रे सन्निविष्टोद्गमेऽपि च ११७
व्युत्थानम्प्रतिरोधे च विरोधाचरणेऽपि च। मा-
रणे मृतसंस्कारे गतौ द्रव्येऽर्त्थदापने ११८ नि-
र्वर्त्तनोपकरणानुव्रज्यासु च साधनम्। निर्य्या-
तनं वैरशुद्धौ दाने न्यासार्पणेऽपि च ११९ व्यस-
नं विपदि भ्रंशे दोषे कामजकोपजे। पक्ष्माक्षि-
लोम्नि किञ्जल्के तन्त्वाद्यंशेऽप्यणीयसि १२०
तिथिभेदे क्षणे पर्व्व वर्त्म नेत्रच्छदे ध्वनि। अका-
र्य्यगुह्ये कौपीनं मैथुनं सङ्गतौ रते १२१

(पौरुष [illegible]) कुटुम्बकृत्य और उठनेका नाम) उत्थान१॥११७॥(प्रति-
रोध, अनादर और विरोधाचरण, पारा आदि मारणा और मृतक, अग्नि-
दग्ध, गमन, द्रव्य, द्रव्यादि देना इन का नाम) व्युत्थान १॥ ११८॥ (नि-
वर्त्तन प्रयोजनसिद्ध करने उपकरण परिकर उपाय और अनुव्रज्या
अनुगम का नाम) साधन१ (वैर, शोधन दान और धरोहरि देने का
नाम) निर्य्यातन १॥ ११९॥ (विपत्ति भ्रंश, नाश वा पतन, कामज
दोष और कोपज दोष का नाम) व्यसन१ (पलक वा वरौनी, केसर
और छोटे से छोटे सूत्र के अंश का नाम) पक्ष्म १॥ १२०॥ (शुक्ल-
पक्ष की अष्टमी, कृष्ण की १४, अमावास्या, पूर्णमासी, संक्रान्ति
और उत्सव का नाम( पर्व्व १ ( नेत्रच्छद पलक वा वरौनी और
मार्ग का नाम) वर्त्म १( अकार्य्य और गुह्य का नाम) कौपीन१
(संगति और सुरत व स्त्री पुरुष के व्यवहार का नाम) मै-
थुन १॥ १२१॥

प्रधानम्परमात्माधीः प्रज्ञानम्बुद्धिचिह्नयोः।
प्रसूनम्पुष्पफलयोर्निधनङ्कुलनाशयोः १२२
क्रन्दने रोदनाह्वाने वर्ष्म देहप्रमाणयोः। गृह-
देहत्विट्प्रभावाधामान्यथचतुष्पथे १२३ सन्नि-
वेशेचसंस्थाने लक्ष्मचिन्हप्रधानयोः। आच्छा-
दनेसम्पिधानमपवारणमित्युभे १२४ आरा-
धनेसाधनंस्यादवाप्तौतोषणेपिच। अधिष्ठान-
ञ्चक्रपुरप्रभावाध्यासनेष्वपि १२५ रत्नंस्वजा-
तिश्रेष्ठेपिवनेसलिलकानने। तलिनम्विरलं
स्तोकेवाच्यलिङ्गन्तथोत्तरे १२६

(परमात्मा, बुद्धि, महा मात्र, प्रकृति और प्रज्ञा का नाम) प्रधान १ (बु-
द्धि और चिन्ह का नाम) प्रज्ञान १ (पुष्प और फल का नाम) प्रसून
१ (कुल और नाश का नाम) निधन १॥ १२२॥ (रोदन और रवह-
वाने का नाम) क्रन्दन १ (देह और प्रमाण का नाम) वर्ष्म १ (गृह-
देह, तृषा, और प्रभाव का नाम) धाम १ (चौक सन्निवेश और रम-
रण का नाम) संस्थान १ (चिन्ह और प्रधान का नाम) लक्ष्म १ (ढ-
कना और वस्त्रादि से ढकने का नाम) आच्छादन १ ॥ १२३॥
॥ १२४॥ (साधन, प्राप्ति और तोषण का नाम) आराधन १ (चक्र
ग्राम, प्रभाव, और आक्रमण का नाम) अधिष्ठान १॥ १२५॥
(मणि और अपनी २ जाति के श्रेष्ठ का नाम) रत्न १ (पानी
और जंगल का नाम) वन १ (विरल और अल्प का नाम) तलि-
न १॥ १२६॥

समानास्सत्समेकेस्युः पिशुनौखलसूचकौ ।
हीनन्यूनावूनगर्ह्यौ वेगिशूरौतरस्विनौ १२७ अ
भिपन्नोपराद्धोऽभिग्रस्तव्यापन्नतावपि ॥ इति
नान्ताः ॥ कलापोभूषणेबर्हेतूणीरेसंहतावपि
पि १२८ परिच्छदेपरीवापःपर्य्युप्तौसलिलस्थि
स्थितौ । गोधुग्गोष्ठपतीगोपौहरविष्णूवृषा
कपी १२९ वाष्पमूष्माश्रुकशिपुत्वन्नमाच्छाद
नन्द्वयम् । तल्पंशय्याट्टदारेषुस्तम्बेपिविटपोऽ
स्त्रियाम् १३० प्राज्ञरूपस्वरूपाभिरूपाबुधमनो
ज्ञयोः ॥ भेस्त्रलिङ्गा अभीकूर्मौ वीणाभेदश्चकच्छपी १३१

(पण्डित, सम और सत्का नाम) समान १ (खल और चुगुल का नाम) पिशुन १ (ऊन अल्प, और निन्द्य के नाम) हीन १ न्यून २ (जल्द बाज औ र शूर वीर का नाम) तरस्वी १ ॥ १२७ ॥ (अपराधी, अभिग्रस्त शत्रु से दबाये हुये और महा दुःखी का नाम) अभिपन्न १ ॥ इति नान्ताः ॥ (भूषण, मयूर पक्ष, तूणीर तरकस, समुदाय और काञ्ची का नाम) कलाप १ ॥ १२८ ॥ (परिच्छद वा छाना, बोना और जल के आधार का नाम) परीवाप १ (गायों के दुहने वालों और गोठ के स्वामी का नाम) गोप १ (महादेव और विष्णु का नाम) वृषाकपि १ ॥ १२९ ॥ (बाफ और आंसू का नाम) वाष्प १ (अन्न और वस्त्र का नाम) कशिपु १ (शय्या अ टारी और स्त्री का नाम) तल्प १ (स्तम्ब तृणादि गुच्छ, विस्तार, शाखा पल्लव और वृक्ष का नाम) विटप १ ॥ १३० ॥ (बुध और सुन्दर के नाम) प्राज्ञरूप १ स्वरूप २ अभिरूप ३ (कछुई और सारस्वती वीणा का नाम) कच्छपी १ ॥ १३१

कुतपो मृगरोमोत्थपटे चाह्नोऽष्टमेंऽशके ॥ इति पान्ताः ॥ रवर्णोपुंसि रेफस्स्यात्कुत्सिते वाच्यलिङ्गकः ॥ इति फान्ताः ॥ अन्तराभवसत्त्वेऽश्वेगन्धर्व्वो दिव्यगायने १३२ कम्बुर्न्नावलये शंखे द्विजिह्वौ सर्प्पसूचकौ । पूर्व्वोन्यलिङ्गः प्रागाह पुंस्वहुत्वेपि पूर्व्वजान १३३ ॥ इति बान्ताः ॥ कुम्भो घटेभमूर्द्धांशौ डिम्भो तु शिशु बालिशौ । स्तम्भोस्थूणाजडीभावौ शम्भू ब्रह्मत्रिलोचनौ १३४ कुक्षिभ्रूणार्भका गर्भा विस्त्रम्भः प्रणयेपि च ॥

(मृगरोम से बने हुये वस्त्र और दिन के अठये भाग का नाम) कुतप१ ॥ इति पान्ताः ॥ (रकार और कुत्सित का नाम) रेफ२ (इति फान्ताः ॥ (जिस्से कि बकार वकार की सवर्णता है इस्से बान्त वान्त दोनों लिखे जाते हैं (प्राणी, अश्व, दिव्य गाने वाले विश्वावसु तुम्बुर आदि और गवैया मात्र का नाम) गन्धर्व्व २ ॥ १३२ ॥ (कङ्कण, शंख, हाथी, सियार और ग्रीवा का नाम) कम्बु २ (सर्प्प और चुगुल का नाम) द्विजिह्व १ (पूरुव और पुरनियों का नाम) पूर्व्व २ ॥ १३३ ॥ (घड़ा और हाथी के मस्तक के अंश, वेश्यापति, कुम्भकर्ण के पुत्र और राशिभेद का नाम) कुम्भ १ (बालक और मूर्ख का नाम) डिम्भ २ (खम्भा और जड़ता का नाम) स्तम्भ २ (ब्रह्मा और शिव का नाम) शम्भु २ ॥ १३४ ॥ (कोषि, गर्भस्थ जन्तु और बालक का नाम) गर्भ २ (शृंगार की प्रार्थना और विश्वास का नाम) विस्त्रम्भ २ वा विश्रम्भ २

स्यादीर्ष्यान्दुन्दुभिःपुंसिस्यादक्षेदुन्दुभिस्त्रियाम् २३५ स्यान्महारजनेक्लीवं कुसुम्भङ्करकेपुमान्। क्षत्रियेपिचनाभिर्नासुरभिर्गविचस्त्रियाम् २३६ सभासंसदिसभ्येचविस्वध्यक्षेपिवल्लभः॥ इतिभान्ताः॥ किरणोप्रग्रहौरश्मीकपिभेकौप्लवङ्गमौ २३७ इच्छामनोभवौकामौशौर्य्येद्योगौपराक्रमौ। धर्म्माःपुण्ययमन्यायस्वभावाचारसोमपाः २३८ उपायपूर्व्वआरम्भउपधाचाप्युपक्रमः। वणिक्पथःपुरम्वेदोनिगमोनागरोवणिक् २३९ ॥

(नुरुही और जुआं का नाम) दुन्दुभि २॥२३५॥ (बेर के फूल और करवा का नाम) कुसुम्भ २ (ढोंढी, नाहू, मुख्य राजा और क्षत्रिय विशेष का नाम) नाभि २ (वसन्त और गाय का नाम) सुरभि २॥२३६॥ (कचहरी और उसमें बैठने वालों का नाम) सभा २ (अध्यक्ष, प्यारे और कुलीन घोड़े का नाम) वल्लभ २॥ इति भान्ताः॥ (प्रग्रह) पगहा, और किरण का नाम) रश्मि २ (बानर और मेढ़ु का का नाम) प्लवंगम २॥ २३७॥ (इच्छा और कन्दर्प्प का नाम) काम २ शौर्य्य सामर्त्थ्य, और यत्न का नाम) पराक्रम २ (पुण्य, यमराज, न्याय, स्वभाव, आचार और देव का नाम) धर्म्म २॥ २३८॥ (उपाय पूर्व्व आरम्भ और मन्त्री आदि के स्वभाव के परखने का नाम) उपक्रम २ (वणिक्पथ वाणिज्य, नगर और वेद का नाम) निगम २ (नागर और बनियां का नाम) नैगम २॥२३९॥

नौगमौ द्वौ बले रामो नीले चारुसिते त्रिषु। ग्रामो शब्दादिपूर्व्वो वृन्देऽपि ग्रामः क्रान्तौ च विक्रमः २५० स्तोमस्तोत्रेऽध्वरे वृन्दे जिह्मस्तु कुटिलेऽलसे। उष्णोऽपि घर्म्मः प्रस्वेदे हावालंकारे भ्रान्तौ च विभ्रमः॥ २५१ गुल्मा रुक्स्तम्बसेनाश्च जामिः स्वसृ कुलस्त्रियोः। क्षिति क्षान्त्योः क्षमा युक्ते क्षमं शक्ते हिते त्रिषु २५२ त्रिषु श्यामौ हरित्कृष्णौ श्यामा स्याच्छारिवा निशा। ललामम्पुच्छपुंड्राश्वभूषाप्राधान्यकेतषु २५३ सूक्ष्ममध्यात्ममप्याद्ये प्रधाने प्रथमस्त्रिषु॥

(बलदेव नील चारु श्वेत जमदग्नि पुत्र और श्री दशरथात्मजजी का नाम) राम २ (वृन्द और गांउ का नाम) ग्राम २ (विक्रमता और पराक्रम का नाम) विक्रम २॥ २५०॥ (स्तोत्र यज्ञ और वृन्द का नाम) स्तोम २ (टेढ़े और अलसहा का नाम) जिह्म (गर्म्म और पसीना का नाम) धर्म्म २ (चेष्टालंकार हाव भ्रान्ति और शोभा का नाम) विभ्रम २॥ २५१॥ (पिलही रोग स्तम्ब कुश गुच्छादि सोना और सैन्य रक्षा का नाम) गुल्म २ (भगिनी और कुल बधू का नाम) जामि २ (पृथ्वी और सहनशीलता का नाम) क्षमा २ (युक्त योग्य शक्त और हित का नाम) क्षम २॥ २५२॥ (हरे और कृष्ण का नाम) श्याम २ (शारिवा शतावरी और रात्रि का नाम) श्यामा २ (पूंछ-पुण्ड्र अश्वादिकों के लिलार के चिह्न, घोड़ा, घोड़े के भूषण प्रधान और ध्वजा का नाम) ललाम २॥ २५३॥ (अध्यात्म और स्थूल का नाम) सूक्ष्म २ (आद्य और प्रधान का नाम) प्रथम॥ २॥

वामौ वल्गु प्रतीपौ द्वावधमौ न्यूनकुत्सितौ २४४
जीर्णञ्च परिभुक्तञ्च यातयाममिदन्द्वयम् ॥
इति मान्ताः ॥ तुरङ्ग गरुडौ तार्क्ष्यौ निलयाप-
चयौ क्षयौ । श्वशुर्यौ देवरश्यालौ भ्रातृव्यौ
भ्रातृजद्विषौ २४५ पर्जन्यौ रसदब्देन्द्रौ स्या-
दर्यः स्वामिवैश्ययोः । तिष्यः पुष्ये कलियुगे
पर्यायोऽवसरे क्रमे २४६ प्रत्ययोऽधीनशपथ-
ज्ञानविश्वासहेतुषु । रन्ध्रे शब्देऽथानुशयो दी-
र्घद्वेषानुतापयोः २४७ स्थूलोच्चयस्त्वसाक-
ल्येनागानां मध्यमे गतौ । समया शपथाचारका-
लसिद्धान्तसम्विदः २४८

(शोभा, उलटा, टेढ़ा और महादेव का नाम) वाम २ (न्यून और खराब का नाम) अधम २ ॥ २४४ ॥ (जीर्ण और खाके बहा देने का नाम) यातयाम ॥ इतिमान्ताः ॥ (घोड़े और गरुड़ का नाम) तार्क्ष्य २ (गरह, अपचय कमती और कल्पान्त का नाम) क्षय २ (देवर और सारे का नाम) श्वशुर्य २ (भतीजे और शत्रु का नाम) भ्रातृव्य २ ॥ २४५ ॥ (शब्दित मेघ और इन्द्र का नाम) पर्जन्य २ (स्वामी और वैश्य का नाम) अर्य २ (पुष्य नक्षत्र और कलियुग का नाम) तिष्य २ (अवसर और क्रम का नाम) पर्याय २ ॥ २४६ ॥ (अधीन, शपथ, ज्ञान विश्वास हेतु, छिद्र और शब्द का नाम) प्रत्यय २ (बहुत दिन के विगार और पछिताने का नाम) अनुशय २ ॥ २४७ ॥ (असाकल्य कम और हाथियों की मध्यम चाल का नाम) स्थूलोच्चय २ (समय-सौगन्ध खाने, आचार, काल, सिद्धान्त और अच्छी भाषा का नाम) समय २ ॥ २४८ ॥

व्यसनान्यशुभन्दैवन्विपदित्यनयास्त्रयः। अत्य-
योऽतिक्रमे कृच्छ्रे दोषे दण्डेऽप्यथापदि २४९ यु-
द्धायत्योस्संपरायः पूज्यस्तु श्वशुरेपि च। पश्चाद-
वस्थायिबलं समवायश्च सन्नयौ २५० सङ्घाते
सन्निवेशेच संस्त्यायः प्रणयास्त्वमी। विस्र-
म्भयाच्ञाप्रेमाणो विरोधेपि समुच्छ्रयः २५१ वि-
षयोयस्ययो ज्ञातस्तत्र शब्दादिकेष्वपि। निर्या-
सेपि कषायोस्त्री सभायाञ्च प्रतिश्रयः २५२ प्रा-
योभूम्न्यन्तगमने मन्युर्दैन्ये क्रतौ क्रुधि। रहस्यो-
पस्थयोर्गुह्यं सत्यं शपथतथ्ययोः २५३

(व्यसन जुआं आदि अशुभ भाग्य और विपत्ति का नाम) अनय २(अ-
तिक्रम, कष्ट, दोष, दण्ड और नाश का नाम) अत्यय १ (आपदा युद्धयुद्ध
और आयति उत्तर काल का नाम) सम्पराय १ (पूजा योग्य और श्व-
शुर का नाम) पूज्य २ (सेना के पीछे आने वाले सैन्य और समूह का ना-
म) सन्नय २ ॥ २५० ॥ (सन्निवेश, संघात और विस्तृति का ना-
म) संस्त्याय १ (विश्वास याच्ञा और प्रेम का नाम) प्रणय १ (विरो-
ध और उन्नत का नाम) समुच्छ्रय १॥ २५१॥ (जिस मछली आदि
करके जो जलादि सेवा किया गया है उस का वह विषय है शब्द रूप
रस गन्ध स्पर्श का भी विषय नाम है (काढ़ा और विलेपनादि का ना-
म) कषाय १ (सभा, आश्रय और अभ्युपगम का नाम) प्रतिश्रय १॥
॥ २५२॥ (बहुताई, मरण के निमित्त अन्न छोड़ने मृत्यु और पाप का
नाम) प्राय १ (दीनता, यज्ञ, कोप, शोक और महादेव का नाम) मन्यु १ (गो-
प्य और उपस्थ का नाम) गुह्य १ (सोगंध खाने और सच का नाम) सत्य १॥ २५३॥

वीर्य्यम्बले प्रभावे च द्रव्यम्भव्ये गुणाश्रये । धि-
ष्ण्यं स्थाने गृहे भेऽग्नौ भाग्यङ्कर्म्मशुभाशुभम् १५४
कशेरुहेम्नोर्गाङ्गेयं विशल्या दन्तिकापि च । वृषाकपायी श्रीगौर्य्योरभिख्या नामशोभयोः १५५
आरम्भो निष्कृतिः शिक्षा पूजनं संप्रधारणम् । उपायः कर्म चेष्टा च चिकित्सा च नव क्रियाः १५६
छाया सूर्य्यप्रिया कान्तिः प्रतिबिम्बमनातपः । कक्ष्या प्रकोष्ठे हर्म्यादेः काञ्च्याम्मध्येभबन्धने १५७
कृत्या क्रियादेवतयोस्त्रिषु भेद्ये धनादिभिः । जन्यं स्याज्जनवादेऽपि जघन्योऽन्त्येऽधमेऽपि च १५८

(बल और प्रभाव का नाम) वीर्य्य २ (भव्य सत्त्व गुणाश्रय पृथिवी गन्धादि और धन का नाम) द्रव्य ५ (स्थान और गृह का नाम) धिष्ण्य २ (नक्षत्र अग्नि और पूर्वजन्म के शुभाशुभ कर्म्म का नाम) भाग्य २ ॥ १५४ ॥ (कशेरुका व कशेरु और सुवर्ण का नाम) गांगेय २ (दंतिया, अग्निशिखा और गुरुच इनका नाम) विशल्या २ (लक्ष्मी और पार्व्वती का नाम) वृषाकपायी २ (नाम और शोभा का नाम) अभिख्या २ ॥ १५५ ॥ (आरम्भ, निष्कृति, प्रायश्चित्त, शिक्षा, पूजन, सम्प्रधारण, उपाय, कर्म्म, चेष्टा और चिकित्सा इन सब का नाम) क्रिया २ ॥ १५६ ॥ (सूर्य्य की स्त्री कान्ति, परछाईं और जहां घाम न हो इन का नाम) छाया २ (हर्म्यादि के प्रकोष्ठ, अंत गृह, मेखला, मध्येभ बन्धन वरवाव वेरेति का नाम) कक्ष्या २ ॥ १५७ ॥ (क्रिया और तामसी देवता का नाम) कृत्या २ (निन्दितवाद, युद्ध और संग्राम का नाम) जन्य २ (अन्त्य, अधम और लिंग इन्द्रिय का नाम) जघन्य २ ॥ १५८ ॥

गर्ह्यौ हीनौ च वक्तव्यौ कल्यौ सज्ज निरामयौ। आ-
त्मवाननपेतोर्थादर्थ्यौ पुण्यन्तु चार्व्वपि २५९
रूप्यं प्रशस्त रूपेपि वदान्यो वल्गुवागपि। न्या-
य्येपि मध्यं सौम्यन्तु सुन्दरे सोमदैवते २६०॥ इति
यान्ताः॥ निवहावसरौ वारौ संस्तरौ प्रस्तराध्वरौ।
गुरू गीष्पति पित्राद्यौ द्वापरौ युगसंशयौ २६१ प्र-
कारौ भेदसादृश्ये आकाराविङ्गिताकृती। किं-
शारुस्सस्यशूके षु मरू धन्वधराधरौ २६२

(गर्ह्य निन्द्य, अहीन और कहने के योग्य का नाम) वक्तव्य २ (सज्ज सामर्थ्ययुक्त और राग रहित का नाम) कल्य २ (आत्मवान् धीमान् और जो अर्थ से अपगत न हो उन का नाम) अर्थ्य २ (सुन्दर, सुकृत धर्म और पावन का नाम) पुण्य २॥ २५९॥ (प्रशस्त चांदी सुवर्ण और चांदी मात्र का नाम) रूप्य २ (उत्तम बोलने वाले और दाता का नाम) वदान्य २ (उचित और अवलग्न का नाम) मध्य २ (सुन्दर, बुध और सोम है दैवत जिसके उन का नाम) सौम्य २॥ २६०॥ इति यान्ताः॥ (निवह वृन्द, अवसर और सूर्य्यादि दिन का नाम) वार २ (प्रस्तर कुश की मूठी वा कुश शय्या और अध्वर यज्ञ इन का नाम) संस्तर २ (बृहस्पति, पिता और वेद शास्त्र के पढ़ाने वाले का नाम) गुरु २ (तीसरे युग और संशय का नाम) द्वापर २॥ २६१॥ (भेद और सादृश्य का नाम) प्रकार २ (चेष्टित और आकृति का नाम) आकार २ (सस्य शूक अन्न की बाली के सींकुर और बाण का नाम) किंशारु २ (धन्वा निर्जल देश और पर्वत का नाम) मरु २ ॥२६२॥

अद्रयो द्रुमशैलार्काः स्त्रीस्तनाब्दौ पयोधरौ। ध्वा-
न्तारिदानवा वृत्रा बलिहस्तांशवः कराः १९३
प्रदरा भंगनारीरुग्बाणा अस्राः कचा अपि। अ-
जातशृङ्गो गौः काल्येऽप्यश्मश्रुर्ना च तूबरौ १९४
स्वर्णेऽपि राः परिकरः पर्य्यङ्कपरिवारयोः। मुक्ताशु-
द्धौ च तारः स्याच्छारो वायौ स तु त्रिषु १९५ कर्बु-
रेऽथ प्रतिज्ञाजिसंविदापत्सु सङ्गरः। वेदभेदे
गुप्तवादे मन्त्रो मित्रो रवावपि १९६ मखेषु यू-
पखण्डेऽपि स्वरुर्गुह्येऽप्यवस्करः॥

(वृक्ष, पर्व्वत और सूर्य्य का नाम) अद्रि १ (कुच और बादल का नाम) प-
योधर १ (ध्वान्त अँधेर शत्रु, दानव, वृत्रासुर भेंट, हाथ किरण इन का
नाम) कर १॥ १९३॥ (भांग, स्त्री के रोग जिस में हाथ पैर जरा करते हैं
और बाण का नाम) प्रदर १ (बार और कोने का नाम) अस्र १ (जि-
स बैल के समय पर भी शृंग न जमे हों और जिस पुरुष के ज्वानी में
भी दाढ़ी मोंछ न निकले हों उन का नाम) तूबर १॥ १९४॥ (स्वर्ण
और द्रव्य मात्र का नाम) रै १ (पर्य्यङ्क और परिवार का नाम) परि-
कर १ (मुक्तादि के छेदने के यंत्र तरस्य शुद्ध मुक्ता चांदी और ऊंचे स्वर
से बोलने का नाम) तार १ (कबरे रंग और वायु का नाम) शार १॥ १९५॥
(प्रतिज्ञा, युद्ध, संवित् क्रियाकार और आपदा का नाम) संगर १ (वेद भेद
एकान्त की सलाह और देवादि के साधने का नाम) मंत्र १ (हितू और सू-
र्य्य का नाम) मित्र १॥ १९६॥ (यज्ञ बाण और यज्ञ स्तम्भ के काटने में जो प्र-
थम खण्ड होता इन का नाम) स्वरु १ (गुह्य वज्र स्थल और पाद का नाम) अवस्कर १

आडम्बरस्तूर्य्यरवे गजेन्द्राणाञ्च गर्जिते २६७
अभिहारोऽभियोगे च चौर्ये सन्नहनेपि च । स्या-
ज्जङ्गमे परीवारः खड्गकोशे परिच्छदे २६८ विष्ट-
रो विटपी दर्भमुष्टिः पीठाद्यमासनम् । द्वारिद्वा
स्स्थे प्रतीहारः प्रतीहार्य्यप्यनन्तरे २६९ विपुले-
न कुले विष्णौ बभ्रुर्नापिङ्गले त्रिषु । सारो बले-
स्थिरांशे च न्याय्ये क्लीबं वरे त्रिषु २७० दुरोदरो-
द्यूतकारे पणे द्यूते दुरोदरम् । महारण्ये दुर्गप-
थे कान्तारम्पुन्नपुंसकम् २७१ मत्सरोन्यशुभ-
द्वेषे तद्वत्कृपणयोस्त्रिषु ॥

(बाजा और हाथियों के गर्जने का नाम) आडम्बर १ ॥ २६७ ॥ (अभिग्र-
हण-चोरी और कवचादि के धारण करने का नाम) अभिहार १ (जंग-
म, परिजन, खड्ग, कोश, मियान और परिच्छद उपकरण का नाम)
परिवार १ ॥ २६८ ॥ (विटपी वृक्ष दर्भमुष्टि २५ कुशों की मूठी, पी-
ढ़ा आदि काष्ठ के आसन का नाम) विष्टर १ (द्वार और द्वारपालक
का नाम) प्रतीहार १ (गृह के भीतर के रहने वाली लौंडी आदि का ना-
म) प्रतीहारी १ ॥ २६९ ॥ (बड़े न्योरा, विष्णु और पिंगल का नाम)
बभ्रु १ (बल, सायर, न्याय्य और श्रेष्ठ का नाम) सार १ ॥ २७० ॥ (जुआरी
बाजी और जुआ का नाम) दुरोदर १ (महावन, बिल दुर्गम मार्ग औ-
र कचनार ऊंरव का नाम) कान्तार १ ॥ २७१ ॥ (डाह करने, जल-
ने वाला और कृपण का नाम) मत्सर १ ॥

देवाद्वृते वरः श्रेष्ठे त्रिषु क्लीवं मनाक्प्रिये २७२
वंशांकुरे करीरोऽस्त्री तरुभेदे घटे च ना। ना च मू-
र्छने हस्तसूत्रे प्रतिसरोऽस्त्रियाम् २७३ यमानि-
लेन्द्रचन्द्रार्कविष्णुसिंहांशुवाजिषु। शुका-
हिकपिभेकेषु हरिर्ना कपिले त्रिषु २७४ शर्क-
रा कर्परांशेऽपि यात्रा स्याद्यापने गतौ। इरा भूवा-
क्सुराऽप्सु स्यात्तन्द्री निद्राप्रमीलयोः २७५ धा-
त्री स्यादुपमाताऽपि क्षितिरप्यामलक्यपि। क्षुद्रा
व्यङ्गा नटी वेश्या सरघा कण्टकारिका २७६

(देवता से वांछा करने, श्रेष्ठ, थोड़े प्रिय, दमाद और कुंकुम का नाम) वर २॥ २७२॥ (करिल - करील वृक्ष और करवा का नाम) करीर २ (सेना के पश्चाद्भाग, कंगन और घाव के शुद्ध होने का नाम) प्रतिसर २॥ २७३॥ (यमराज, पवन, इन्द्र, चन्द्र, सूर्य, विष्णु, सिंह, किरण, घोड़ा, सुआ, सर्प, वानर, मेंढ़का और हरे रंग का नाम) हरि २॥ २७४॥ (कर्परांश - सिटकी, खांड़, पत्थर और सिटकि है देश का नाम) शर्करा २ (यापन, चलने और देवता के उत्सव का नाम) यात्रा २ (पृथ्वी, वाणी, मदिरा और जल का नाम) इरा २ (निद्रा और श्रम से मुरझाने का नाम) तन्द्री २॥ २७५॥ (दूध पिलानेवाली, पृथ्वी, आंवरा और माता का नाम) धात्री २ (हीनांगी, नाचनेवाली, पतुरिया, मधुमाखी, भटकटैया और बाधिनि का नाम) क्षुद्रा २ ॥ २७६ ॥

त्रिषु क्रूरेऽधमेऽल्पेपि क्षुद्रम्मात्रापरिच्छदे।
अल्पे च परिमाणे सा मात्रं कार्त्स्न्येऽवधारणे
२७७ आलेख्याश्चर्य्ययोश्चित्रङ्कलत्रं श्रोणि-
भार्य्ययोः। योग्यभाजनयोःपात्रम्पत्रम्वाहनप-
क्षयोः २७८ निदेशग्रन्थयोश्शास्त्रंशस्त्रमायु-
धलोहयोः। स्याज्जटांशुकयोर्नेत्रं क्षेत्रं पत्नी-
शरीरयोः २७९ मुखाग्रे क्रोडहलयोर्गोत्रङ्गोत्र-
न्तुनाम्नि च। सत्रमाच्छादने यज्ञे सदादाने व-
नेपि च २८०

(क्रूर, अधम, अल्प, दरिद्र, कृपण, निकृष्ट और निर्लज्ज का नाम) क्षुद्र १ (परिच्छद अल्प परिमाण का नाम) मात्रा १ (सम्पूर्ण और अवधारण का नाम) मात्र १॥ २७७॥ (चित्र सारी और आ-श्चर्य्य का नाम) चित्र १ (कटि हाड़ और स्त्री का नाम) कलत्र १ (दाना-दि देने के योग्य और वर्त्तमान का नाम) पात्र १ (सवारी परवना प-त्ता और चिट्ठी का नाम) पत्र १॥ २७८॥ (आज्ञा और ग्रन्थ का ना-म) शास्त्र १ (आयुध और लोह का नाम) शस्त्र १ (वृक्ष की जर न-यनसुख व नयनूवस्त्र और आँखि का नाम) नेत्र १ (स्त्री शरीर खेत और सिद्ध स्थान नैमिषारण्यादि का नाम) क्षेत्र १॥ २७९॥ (सूकर और हर के मुखाग्र का नाम) पोत्र १ (नाम पर्व्वत कु-ल का नाम) गोत्र १ (यज्ञ, वस्त्र, नित्य दान, बन और छल का ना-म) सत्र १॥ २८०॥

अजिरम्विषये काये प्यम्बरं व्योम्नि वाससि ।
चक्रं राष्ट्रे प्यक्षरन्तु मोक्षे पि क्षीरमप्सु च २८१ ॥
स्वर्णे पि भूरिचन्द्रौ द्वौ द्वारमात्रे पि गोपुरम् । गु-
हादम्भौ गह्वरं हे रहो ऽन्तिकमुपह्वरे २८२ पुरो-
धिकमुपर्य्यग्राण्यगारे नगरे पुरम् । मन्दिरं
चाथ राष्ट्रो ऽस्त्री विषये स्यादुपद्रवे २८३ दरो-
ऽस्त्रियां भये श्वभ्रे वज्रो ऽस्त्री हीरके पवौ । त-
न्त्रम्प्रधाने सिद्धान्ते सूत्रवाये परिच्छदे २८४
ओषीरं श्चामरे दण्डे प्यौशीरं शयनासने ॥

(विषय - रूप रस गन्ध स्पर्श शब्द, देह, मेढ़ का, चोतना, आत्मा और वायु का नाम) अजिर २ (आकाश और वस्त्र का नाम) अम्बर २ (उपद्रव, सैन्य, पहिया, अस्त्र विशेष और चाक का नाम) चक्र २ (वर्ण और मोक्ष का नाम) अक्षर २ (दुग्ध और पानी का नाम) क्षीर २ ॥ २८१ (स्वर्ण, विष्णु, हर और ब्रह्मा का नाम) भूरि २ (सुवर्ण, चन्द्रमा, कपूर और जल का नाम) चन्द्र २ (पूर्व्व के द्वार और द्वार मात्र का नाम) गो-पुर २ (गुहा, दम्भ, निकुञ्ज और बन का नाम) गह्वर २ (निर्ज्जन स्थान और समीप का नाम) उपह्वर २ ॥ २८२ ॥ (पुर, अधिक और ऊपर का नाम) अग्र २ (गृह और नगर के नाम) पुर २ मन्दिर २ (देश और उपद्रव का नाम) राष्ट्र २ ॥ २८३ ॥ (भय और प्रवल गड्ढा का नाम) दर २ (हीरा और इन्द्र के भिदुर का नाम) वज्र २ (प्रधान, सिद्धान्त, को-री, परिच्छद शास्त्र और कुटुम्ब कृत्य का नाम) तन्त्र २ ॥ २८४ ॥ (चमर की डांडी, खसखस की टट्टी आदि, शयन और आसन का नाम) औशीर २ ॥

पुष्करङ्करिहस्ताग्रे वाद्यभाण्डमुखे जले। व्यो
म्नि खड्गफले पद्मे तीर्थौषधिविशेषयोः १८५
अन्तरमवकाशावधिपरिधानान्तर्द्धिभेदता द-
र्थ्ये। छिद्रात्मीयविना बहिरवसरमध्येन्तरात्म
नि च १८६ मुस्तेपि पिठरं राजकशेरुण्यपि ना
गरं। शार्वरं त्वन्धतमसे घातुके भेद्यलिङ्गकम्
१८७ गौरोरुणे सिते पीते व्रणकार्यप्यरुष्करः।
जठरः कठिनेपि स्यादधस्तादपि चाधरः १८८ अ-
नाकुलेपि चैकाग्रो व्यग्रो व्यासक्त आकुले॥

(हाथी की सूंड़ि के आगे, बाजा के बर्तन के मुख, जल, आकाश, खड्ग के मध्य, कमल, तीर्थ, विशेष और कूट औषधि का नाम) पुष्कर १॥१८५॥ (अवकाश, अवधि, वस्त्र, अन्तर्द्धि अवधारण, भेद, जिसके अर्थ, छेद, आत्मीय, बिना बाहर, अवसर, मध्य, अन्तरात्मा और सादृश्य का नाम) अन्तर १॥१८६॥ (मोथा और मथानी का नाम) पिठर १ (राजकसेरू, नागर मोथा, सोंठी, पण्डित और नगर में उत्पन्न हुये मनुष्य का नाम) नागर १ (गाढ़ अन्धकार और अन्य जीव के मारने वाले का नाम) शार्वर २॥१८७॥ (अरुण, सित, पीत, उजले सरसों व-न्दना और कमल की धूलि का नाम) गौर १ (घाव करने वाले औ-र भिलावा का नाम) अरुष्कर १ (कठिन पेट और वृद्ध का ना-म) जठर २ (नीचे, ऊंचे, ओंठ और हीन का नाम) अधर १॥१८८॥ (स्वस्थ और एक तान का नाम) एकाग्र १ (व्यासक्त द्विविधा वाले और आकुल का नाम) व्यग्र १॥

उपर्य्युदीच्यश्रेष्ठेष्वप्युत्तरस्स्यादनुत्तरः १८९
एषान्विपर्य्यये श्रेष्ठे दूरानात्मोत्तमाः पराः॥
स्वादुप्रियौ तु मधुरौ क्रूरौ कठिननिर्दयौ १९०
उदारो दातृमहतोरितरस्त्वन्यनीचयोः। म-
न्दस्वच्छन्दयोस्स्वैरश्शुभ्रमुद्दीप्तशुक्लयोः
१९१॥ इतिरान्ताः॥ चूडाकिरीटङ्केशाश्च सं-
यता मौलयस्त्रयः। द्रुमप्रभेद मातङ्ग-काण्ड-
पुष्पाणि पीलवः १९२ कृतान्तानेहसोः का-
लश्चतुर्थेपि युगे कलिः। स्यात्कुरङ्गेपि कम-
लः प्रावारेपि च कम्बलः १९३

(उपरि, उत्तर दिशा और श्रेष्ठ का नाम) उत्तर १ (इन सबों के उलटे अर्थ और श्रेष्ठ का नाम) अनुत्तर १॥ १८९॥ (दूर, अनात्मा अपने से अन्य, उत्तम और शत्रु का नाम) पर १ (स्वादु और प्रिय का नाम) मधुर १ (कठिन और निर्दय का नाम) क्रूर १॥ १९०॥ (दाता, महत्व और दक्षिण का नाम) उदार १ (अन्य और नीच का नाम) इतर १ (मन्द और स्वाधीन का नाम) स्वैर १ (प्रदीप्त और शुक्ल का नाम) शुभ्र १॥ १९१॥ इति रान्ताः॥ (शिखा, किरीट, बांधे हुये बार और मुराड का नाम) मौलि १ (पीलु वृक्ष, हाथी, काराड बाण और फूल का नाम) पीलु १॥ १९२॥ (कृतान्त यमराज, अनेहाः समय, मृत्यु और कृष्ण वर्ण का नाम) काल १ (चौथे युग, कलह, कली और शूर का नाम) कलि १ (कुरंग मृग, जल, पद्म, ताम्र का नाम) कमल १ (कम्बर, गलकम्बरी, सर्प्प कमरा अर्थात् स्वरमकरा जीव का नाम) कम्बल १॥ १९३॥

करो प्रहारयोः पुंसि बलिः प्राण्यङ्गजे स्त्रियाम्।
स्थौल्यसामर्थ्यसैन्येषु बलंना काकसीरिणोः॥
२९४ वातूलः पुंसि वात्यायामपि वातासहे त्रिषु।
भेद्यलिङ्गः शठे व्यालः पुंसि श्वापदसर्पयोः॥२९५
मलोऽस्त्री पापविट्किट्टान्यस्त्री शूलं रुगायुधम्।
शङ्कावपि द्वयोः कीलः पालिः स्त्र्यश्र्यङ्कपङ्क्तिषु॥
२९६ कलाशिल्पे कालभेदेप्याली सख्यावलीअपि। अब्ध्यम्बुविकृतौ वेला कालमर्यादयोरपि
२९७ बहुलाः कृत्तिकागावो बहुलोऽग्नौ शितौ त्रिषु।
लीला विलासक्रिययोरुपला शर्करापि च २९८

(भेंट व नज़र उपहार पूजा की सामग्री, प्राणी के पीब और खाल के सिकुरने का नाम) बलि १ (मोटाई, सामर्थ्य, सैन्य, कौआ और बलभद्र का नाम) बल १॥ २९४॥ (वायु के समूह और वायु के सहने वाले के नाम) वातूल १ वातुल २ (घातक, पशु, सर्प और सिंह का नाम) व्याल १॥ २९५॥ (पाप, विष्ठा, कीट व मैल का नाम) मल १ (शूल रोग और आयुध का नाम) शूल १ (लोहा आदि के दराड़ और ज्वाला के नाम) कील १ कीला २ (आड़, व कोना, चिह्न और पाँति के नाम) पालि १ पाली ३॥ २९६॥ (शिल्पादि की निपुणता और ३० काष्ठा का नाम) कला १ (सखी और पंक्ति का नाम) आली १ (समुद्र की लहरी, तीर, किनारा, काल और मर्यादा का नाम) वेला १॥ २९७॥ (कृत्तिका, गाय, अग्नि और काले का नाम) बहुल २१ (विलास, खेलना और क्रिया का नाम) लीला १ (पत्थर और मिट्टी के क्रम से ये नाम) उपल १ उपली २॥ २९८॥

पुंगोरिणि ते प्रासितकीलालस्मूलमाद्ये शिफाभयोः।
जालं समूह आनायगवाक्षक्षारकेष्वपि १९९॥
शीलं स्वभावे सद्वृत्ते सस्ये हेतुकृते फलम्। छदि-
र्नेत्ररुजोः क्लीवं समूहे पटलं न ना २०० अधस्स्व
रूपयोरस्त्री तलं स्याच्चामिषे पलम्। श्रोर्व्वानले
पि पातालं चैलं वस्त्रेऽधमे त्रिषु २०१ कुकूलं पुंसि
कुभिः कीरो श्वभ्रे नानु तुषानले। निर्णीते केव-
लमिति त्रिलिङ्गन्त्वेककृत्स्नयोः २०२ पर्य्या-
प्तिक्षेमपुण्येषु कुशलं शिक्षिते त्रिषु। प्रवाल-
मंकुरेप्यस्त्री त्रिषु स्थूलं जड़ेपि च २०३

(रुधिर और पानी का नाम) कीलाल २ (प्रथम शिफा जड़ और १९ वें न-
क्षत्र का नाम) मूल २ (समूह मछली मृगादि फांसने वाले पाश सूता-
दि निर्म्मित रस्सी, समूह, झरोखा, खारी पानी कली और दम्भ का नाम)
जाल २॥ १९९॥ (स्वभाव और अच्छे वृत्त का नाम) शील २ (फल
और लाभ का नाम) फल २ (छान छप्पर, नेत्र रोग और समूह का ना-
म) पटल २॥ २००॥ (नीचे और स्वरूप का नाम) तल २ (तराजू के सा-
ठवें भाग और मांस का नाम) पल २ (और्व्वानल बड़वानल और
नाग लोक का नाम) पाताल २ (वस्त्र और अधम का नाम) चैल २॥ २०१॥
(चोकर की आग, गड्ढा, भूसी और अग्नि का नाम) कुकूल २ (निश्चित, सब और
सम्पूर्णता का नाम) केवल २॥ २०२॥ (पर्य्याप्ति, सामर्थ्य, क्षेम, पुण्य
और शिक्षित का नाम) कुशल २ (अंकुर, हीरा, दराड, मूंगा और नये पल्ल-
व का नाम) प्रवाल २ (जड़, मोटे और निर्बुद्धि का नाम) स्थूल २॥ २०३॥

करालो दन्तुरे तुङ्गे चारौ दक्षे च पेशलः । मूर्खेऽर्भकेऽपि बालः स्याल्लोलश्चलसतृष्णयोः २०४

॥ इति लान्ताः ॥ दवदावौ वनारण्यवह्नी जन्महरौ भवौ । मन्त्री सहायः सचिवौ पतिशाखिनराधवाः २०५ अवयः शैलमेषार्का आज्ञाह्वानाध्वरा हवाः । भावस्सत्तास्वभावाभिप्रायचेष्टात्मजन्मसु २०६ स्यादुत्पादे फले पुष्पे प्रसवो गर्भमोचने । अविश्वासेऽपह्नवेऽपि निकारावपि निह्नवः २०७ उत्सेकामर्षयोरिच्छाप्रसरे मह उत्सवः ॥

(दन्तुर-उन्नत दांत वाले, ऊंचे और भयानक का नाम) कराल १ (चार और दक्ष का नाम) पेशल १ (मूर्ख, लड़का, घोड़े हाथी की पूंछ, सुगन्ध वाला और बार का नाम) वाल १ (चलायमान और आकांक्षा युक्त का नाम) लोल १ ॥ २०४ ॥ इति लान्ताः ॥ (वन और वन के अग्नि का नाम) दव १ दाव २ (जन्म, महादेव, क्षेम और संसार का नाम) भव १ (सहायक और मल्लाही का नाम) मन्त्री १ (पति, वैर और नर का नाम) धव २ ॥ ॥ २०५ ॥ (पर्व्वत, भेड़ा, सूर्य्य का नाम) अवि २ (आज्ञा, आह्वान, पुकारना और यज्ञ का नाम) हव १ (सत्ता होना, स्वभाव, अभिप्राय, चेष्टा, आत्मा, जन्म, लीला, पदार्त्थ, ऐश्वर्य्य, पण्डित और जन्तु का नाम) भाव १ ॥ २०६ ॥ (उत्पाद उत्पत्ति, फल, पुष्प और गर्भ मोचन प्राणी की उत्पत्ति के समय का नाम) प्रसव १ (अविश्वास, अपलाप और निकृति शठता का नाम) निह्नव १ ॥ २०७ ॥ (उत्सेक उद्धति, कोप इच्छा प्रसर वेग और महः आनन्द समय का नाम) उत्सव १ ॥

अनुभावःप्रभावेच सताञ्च मति निश्चये २०८
स्याज्जन्महेतुः प्रभवः स्थानञ्चाद्योपलब्धये । शू-
द्रायांविप्रतनये शस्त्रे पारशवोमतः २०९ ध्रुवो
भभेदे क्लीबन्तु निश्चिते शाश्वते त्रिषु । स्वो ज्ञाता-
वात्मनि स्वन्त्रिष्वात्मीये स्वोऽस्त्रियान्धने २१०
स्त्रीकटीवस्त्रबन्धेपि नीवीपरिपणेपि च । शिवा
गौरीफेरवयोर्द्वन्द्वङ्कलहयुग्मयोः २११ द्रव्या-
सुव्यवसायेषु सत्त्वमस्त्री तु जन्तुषु । क्लीबन्न-
पुंसकं षण्ढे वाच्यलिङ्गमविक्रमे २१२ ॥
इति वान्ताः ॥

(प्रभाव और पण्डितों के ज्ञान के निश्चय का नाम) अनुभाव १॥ २०८॥ (जन्म के कारण (पिता) के प्रथम ज्ञान के स्थान और जन्म मूल का नाम) प्रभव १ (शूद्रा में ब्राह्मण से उत्पन्न पुत्र और फरसा का नाम) पारशव १॥ २०९॥ (नक्षत्र भेद, निश्चित, नित्य, शंकु, महादेव, विष्णु, बरगद और उत्तानपाद के पुत्र का नाम) ध्रुव १ (ज्ञाति आत्मा, आत्मीय अपने और धन का नाम) स्व १॥ २१०॥ (स्त्री कटी वस्त्र बन्ध की गांठ, परिपण अर्थात् गजपुत्रादि के बन्धक और मूलधन का नाम) नीवी १ (गौरी पार्वती फेरव शृगाल का नाम) शिवा १ (कलह और युग्म का नाम) द्वन्द्व १॥ २११॥ (द्रव्य वस्तु, प्राण, व्यवसाय [illegible] और जन्तु का नाम) सत्त्व १ (षण्ढ नपुंसक और निर्बल का नाम) क्लीब १ (जिसमें पुंकार स्त्रीकार की सब रीति है उसको और पराक्रमहीन को वाच्यलिङ्ग कहते हैं ॥ इति वान्ताः ॥ २१२ ॥

द्वौविशौवैश्यमनुजौ द्वौचराभिसरौस्पशौ । द्वौरा-
शीपुंजमेषाद्यौ द्वौवंशौ कुलमस्करौ २१३ रहःप्र-
काशौवीकाशौ निर्वेशौ भृतिभोगयोः । कृता-
न्तेपुंसि कीनाशः क्षुद्रकर्षकयोस्त्रिषु २१४ पदे
लक्ष्ये निमित्तेऽपदेशः स्यात्कुशमम्बुच । दशाव-
स्थानेकविधाप्याशातृष्णापिचायता २१५ वशा
स्त्रीकरिणीच स्यात् दृग्ज्ञाने ज्ञातरित्रिषु । स्यात्क-
र्कशः साहसिकः कठोरामसृणावपि २१६ प्रका-
शोतिप्रसिद्धेपि शिशावज्ञेचबालिशः । कोशोस्त्री
कुड्मले खड्गपिधानेर्थौघदिव्ययोः २१७ इति शान्ताः

(वैश्य और मनुष्य मात्र का नाम) विट् २ (चर गूढ़ पुरुष, अभिसर समर
का नाम) स्पश २ (पुञ्ज और मेषादि का नाम) राशि २ (कुल और मस्कर
बांस का नाम) वंश २॥ २१३॥ (विजन और प्रकाश के नाम) वीकाश २
विकाश २ (भृति मंजूरी भोग और मूर्च्छन का नाम) निर्वेश २ (यमरा-
ज और छोटे किसान का नाम) कीनाश २॥ २१४॥ (पद ओठर लक्ष्य
और निमित्त का नाम) अपदेश २ (दर्भ पानी और श्री रामचन्द्रजी के
पुत्र का नाम) कुश २ (अवस्था और छीरा का नाम) दशा २ (बड़ी आसरा
और दिशा का नाम) आशा २॥ २१५॥ (स्त्री और हथिनी का नाम) व-
शा २ (ज्ञान दर्शन और नेत्र का नाम) दृक् २ (साहसि कविवेक रहित क-
ठोर और अमसृण दुस्स्पर्श का नाम) कर्कश २॥ २१६॥ (अति प्रसि-
द्ध और घाम का नाम) प्रकाश २ (लड़का और अज्ञानी का नाम) बालि-
श २ (कमल के मुकुल खड्ग पिधान मियान वा परतला अर्थौघ ध-
न समूह और शपथ भेद के नाम) कोश २ कोष ३॥ इति शान्ताः॥ २१७॥

सुरमत्स्यावनिमिषौ पुरुषावात्ममानवौ। काक-
मत्स्यात्खगौ ध्वांक्षौ कक्षौ तु तृणवीरुधौ २१८
अभीषुः प्रग्रहे रश्मौ प्रैषः प्रेषणमर्दने। पक्षः सहा-
ये प्युष्णीषः शिरोवेष्टकिरीटयोः २१९ शुक्र-
ले मूषिके श्रेष्ठे सुकृते वृषभे वृषः। द्यूते ऽक्षे सारि-
फलके प्याकर्षोथाक्षमिन्द्रिये २२० ना द्यूताङ्गे
कर्षचक्रे व्यवहारे कलिद्रुमे। कर्षूर्वार्त्ता करीषा-
ग्निः कर्षूः कुल्याभिधायिनी २२१ पुम्भावे तत्क्रि-
यायाञ्च पौरुषं विषमप्सु च। उपादाने प्यामिषं स्या-
दपराधे पि किल्बिषम् २२२

(देवता और मछली का नाम) अनिमिष २ (आत्मा और मनुष्य का नाम) पुरुष २ (कौवा और मत्स्यात् खग बगुला का नाम) ध्वाङ्क्ष २ (शुष्क तृण करवीर बन लता काछा का नाम) कक्ष २॥ २१८॥ (प्रग्रह पगहा और रश्मि किरण का नाम) अभीषु २ (प्रेषण पवाना और मर्हन का नाम) प्रैष २ (सहाय और मासाई का नाम) पक्ष २ (शिरोवेष्ट पगड़ी आदि और मुकुट का नाम) उष्णीष २॥२१९॥ (शुक्रल पेल्हर मूस श्रेष्ठ सुकृत और बैल का नाम) वृष २ (जुआ पांशा और सारिफल १ चोपरि जिस पर खेलते हैं इन का नाम) आकर्ष २ (इन्द्रिय और तुतिया का नाम) अक्ष २॥ २२०॥ (द्यूतांग पांशा कर्ष मान भेद पहिया व्यवहार कलिद्रुम बहेरा जीविका करीषाग्नि करसी की अग्नि और छोटी नदी का नाम) कर्षू २॥ २२१॥ (पुरुष के भाव और तिस के कर्म का नाम) पौरुष २ (माहुर और पानी का नाम) विष २ (मांस उपादान उत्कोच अर्थात् उत्पत्ति का नाम) आमिष २ (पाप और रोग का नाम) किल्बिष २॥ २२२॥

स्याद्धृष्टेलोकधात्वंशेवत्सरेवर्षमस्त्रियाम्। प्रेक्षानृत्येक्षणाज्ञ्योर्भिक्षासेवार्थनाभृतिः २२३
त्विद्भाषोभापिति निषुपरेन्यत्स्त्रस्रत्वयेनिकृष्टयोः।
प्रत्यक्षेऽधिकृतेध्यक्षोरूक्षस्त्वप्रेमस्याचिक्कणे
२२४॥ इति षान्ताः॥ रविश्वेतच्छदौहंसौसूर्य्यवह्नीविभावसू। वत्सौतर्णकवर्षौद्वौसारङ्गश्चदिवौकसः २२५ शृङ्गारादौविषेवीर्य्येगुणेरागेद्रवेरसः। पुंस्युत्तंसावतंसौद्वौकर्णपूरेचशेखरे २२६

(वृष्टि लोक धात्वंश भारतादि खण्ड और वत्सर का नाम) वर्ष १ (नृत्य देखने और प्रतिज्ञा का नाम) प्रेक्षा १ (सेवा अर्थना याञ्चा भृति मंजूरी का नाम) भिक्षा १॥२२३॥ (शोभा कान्ति वाणी और रुचि का नाम) त्विट् १ (कातर्य्य सब और निकृष्ट और परशुराम का नाम) न्यक्ष १ (प्रत्यक्ष और अधिकृत नियुक्त का नाम) अध्यक्ष १ (स्नेह भाव और रूक्ष का नाम) रूक्ष १॥ २२४॥ इति षान्ताः॥ (सूर्य्य और श्वेत च्छद उजले पङ्ख वाले ब्रह्मा के वाहनादि का नाम) हंस १ (सूर्य्य और अग्नि का नाम) विभावसु १ (तर्णक बछवा और वर्ष का नाम) वत्स १ (चातक और देवताओं का नाम) दिवौकाः १॥ २२५॥ (शृंगार वीर करुणादि ९ विधि विष। तेज गुण स्वादु आमिल आदि राग और द्रव का नाम) रस १ (कर्णपूर करनफूल शेखर शिरो भूषण के नाम) उत्तंस १ अवतंस २॥ २२६॥

देवभेदेऽनले रश्मौ वसू रत्ने धने वसु। विष्णौ च वे-
धास्स्त्री त्वाशीर्हिताशंसाहिदंष्ट्रयोः २२७ ला-
लसे प्रार्थनौत्सुक्ये हिंसा चौर्यादिकर्म्मच।
प्रसूरश्वापि भूद्यावौ रोदस्यौ रोदसी चते २२८ ज्वा-
लाभासौ नपुंस्यर्च्चिर्ज्योतिर्भद्योतदृष्टिषु।
पापापराधयोरागः खगबाल्यादिनोर्वयः २२९
तेजःपुरीषयोर्वर्च्चो महश्चोत्सवतेजसोः। रजोगु-
णे च स्त्रीपुष्पे राहौ ध्वान्ते गुणे तमः २३० छन्दः
पद्येऽभिलाषे च तपः कृच्छ्रादिकर्म्म च॥

(देव भेद धन और अग्नि का नाम) वसु १ (ब्रह्मा और विष्णु का नाम)
वेधाः १ (हिताशंसा हित कहने और सर्प की दाढ़ का नाम) आशीः
१॥ २२७॥ (प्रार्थना और उत्सुकता का नाम) लालसा १ (चोरी
मारने और बध करने का नाम) हिंसा १ (घोड़ी और माता का नाम)
प्रसू १ (स्वर्ग और पृथ्वी के साझे में वा अलग अलग नाम) रोद-
स्यौ १ रोदसी २ (अलग २) रोदः १ - रोदसी २॥ २२८॥ (ज्वाला
और दीप्ति का नाम) अर्च्चि १ (नक्षत्र प्रकाश और दृष्टि का ना-
म) ज्योतिः १ (पाप और अपराध का नाम) आगः १ (पक्षी बाल्य
यौवनादि अवस्था का नाम) वयः १॥ २२९॥ (तेज विष्ठा और
बुध का नाम) वर्च्च १ (उत्सव और तेज का नाम) महः १ (गुण और स्त्री पुष्प
का नाम) रजः १ (राहु अंधेर और गुण का नाम) तमः १॥ २३०॥ (पद्य और इच्छा
का नाम) छन्दः १ (कृच्छ्र सांतपनादि व्रत और चान्द्रायणादि पृथ्वी
से ऊपर छठवें लोक और धर्म्म का नाम) तपः १॥

सहो बलं सहा मार्गो नभः खं श्रावणो नभाः २३१
श्रोकस्सद्माश्रय श्रोकाः पयः क्षीरम्पयोम्बु च।
श्रोजो दीप्तौ बले स्रोत इन्द्रिये निम्नगारये २३२
तेजः प्रभावे दीप्तौ च बले शुक्रेप्यतस्त्रिषु। विद्वा-
न्विदंश्च वीभत्सो हिंस्रोप्यतिशये त्वमी २३३
वृद्धप्रशस्ययोर्ज्यायान्कनीयांस्तु युवाल्पयोः
वरीयांस्तूरुवरयोस्साधीयान्साधुबाढयोः २३४
॥ इति सान्ताः ॥ दलेपि बर्हं निर्बन्धोपरागार्का-
दयो ग्रहाः ॥

(बल का नाम) सहः १ (अगहन का नाम) सहाः १ (आकाश का नाम) नभः १ (श्रावण का नाम) नभाः १॥ २३१॥ (गृह का नाम) श्रोकः १ (आश्रय का नाम) श्रोकाः १ (दुग्ध श्रौर पानीय का नाम) पयः १ (दीप्ति श्रौर बल का नाम) श्रोजः १ (इन्द्रिय श्रौर नदी के वेग का नाम) स्रोतः १॥ २३२॥ (प्रभाव दीप्ति बल श्रौर काम का नाम) तेजः १ (विदन् ज्ञाता श्रौर श्रात्मज्ञानी का नाम) विद्वान् १ (क्रूर श्रौर रस भेद का नाम) वीभत्स १॥ २३३॥ (अतिशयार्थ शब्दों के नाम) (अतिशय करके वृद्ध वा स्तुति करने के योग्य का नाम) ज्यायान् १ (अतिशय करके ज्वान वा अल्प का नाम) कनीयान् १ (अतिशय करके महान् वा श्रेष्ठ का नाम) वरीयान् १ (अतिशय करके साधु बाढ के नाम) साधीयान् १ साधीय २॥ २३४॥ इति सान्ताः॥ (पत्र श्रौर गुच्छा का नाम) बर्ह १ (निर्बन्ध आग्रह ग्रहण श्रौर सूर्यादि का नाम) ग्रह १॥

हार्य्योरोहे क्वाथरसे निर्व्यूहो नागदन्तके २३५ तुलासूत्रेऽश्वादिरश्मौ प्रग्राहः प्रग्रहोऽपि च। पत्नीपरिजनादानमूलशापाः परिग्रहाः २३६ दारेषु च गृहाः श्रोण्यामप्यारोहो वरस्त्रियाः। व्यूहो वृन्देऽप्यहिर्वृत्रेऽप्यग्नीन्द्वर्कास्तमोपहाः २३७ परिच्छदे नृपार्हेऽर्थे परिबर्हो॥ इति हान्ताः॥ अव्ययवर्गे॥ आङीषदर्थेऽभिव्याप्तौ सीमार्थे धातुयोगजे २३८

(द्वार मस्तक काढ़ा के रस नाग दन्त गृहादि की भीति के दोनों कीलों का नाम) निर्व्यूह ५॥२३५॥ (तुला सूत्र जिस को पकर के तराजू की वस्तु तौलते हैं उस का और घोड़ा बैल आदि के बांधने के पगहा के नाम) प्रग्राह २ प्रग्रह २ (स्त्री परिवार अंगीकार मूल शाप और राहुग्रस्त सूर्य्य का नाम) परिग्रह ५॥२३६॥ (स्त्री और मन्दिर का नाम) गृह २ (श्रेष्ठ स्त्री की कमर आरोहण और राजा गेरना का नाम) आरोह २ (सैन्य के विन्यास और समूह का नाम) व्यूह २ (सर्प और वृत्रासुर का नाम) अहि २ (अग्नि चन्द्रमा और सूर्य का नाम) तमोपह ३ (परिच्छद और राजा के योग्य वस्तु का नाम) परिबर्ह २ ॥२३७॥ इति हान्ताः॥ अब इस के ऊपर अव्ययों का वर्णन करते हैं जो कि तीनों लिंग सातों विभक्ति और एक वचन द्विवचन बहुवचन में समान बने रहते और उन में कुछ विकार नहीं होता (ईषत् अल्पार्थ अभिव्याप्ति सीमार्थ और धातु के योगार्थ में (आङ्) अव्यय होता है ॥२३८॥

आङीषदर्थेऽभिव्याप्तौ सीमार्थे धातुयोगजे। आ प्रगृह्यः स्मृतौ वाक्येऽप्यास्तु स्यात्कोपपीडयोः।
पापकुत्सेषदर्थे कु धिङ्निर्भर्त्सननिन्दयोः २३९
चान्वाचयसमाहारेतरेतरसमुच्चये। स्वस्त्याशीः
क्षेमपुण्यादौ प्रकर्षे लंघनेऽप्यति २४० स्वित्प्रश्ने
च वितर्के च तु स्याद्भेदेऽवधारणे। सकृत्सहैकवा-
रेऽप्याराद्दूरसमीपयोः २४१ प्रतीच्यां चरमे प-
श्चादुताप्यर्थविकल्पयोः। पुनःसहार्थयोः शश्व-
त्साक्षात्प्रत्यक्षतुल्ययोः २४२ खेदानुकम्पा
सन्तोषविस्मयामन्त्रणे बत। हन्त हर्षेऽनुकम्पायां
वाक्यारम्भविषादयोः २४३

(स्मरण वाक्यपूर्ण में) आ १ (कोप और पीड़ा में) आः १ (पाप निन्दा और थोड़े अर्थ में) कु १ (अपकार शब्द कह २ के धिक्कारने और निन्दा में) धिक् १॥ २३९॥ (अन्वाचय समाहार इतरेतर और समुच्चय में च १ (आशीर्वाद कल्याण पुण्य और मंगल में) स्वस्ति १ (प्रकर्ष और लंघन में) अति १॥ २४०॥ (प्रश्न करने और वितर्क में) स्वित् १ (भेद और अवधारण में) तु १ (साथ और एक बार करने में) सकृत् १ (दूर और समीप में) आरात् १॥ २४१॥ (पश्चिम दिशा और अन्त में) पश्चात् १ (समुच्चय और विकल्प में) उत १ (बारम्बार और साथ में) शश्वत् १ (प्रत्यक्ष और तुल्य में) साक्षात् १ (२४२॥ (खेद दया सन्तोष विस्मय किसी को चिता के अपने सन्मुख करने में) बत १ (हर्ष दया वाक्य के आरम्भ और विषाद में) हन्त १॥ २४३॥

प्रति प्रतिनिधौ वीप्सालक्षणादौ प्रयोगतः । इति हे-
तुप्रकरणप्रकाशादिसमाप्तिषु २४४ प्राच्याम्पुर-
स्तात्प्रथमे पुरार्त्थेऽग्रत इत्यपि । यावत्तावच्च सा-
कल्येऽवधौ मानेऽवधारणे २४५ मङ्गलानन्तरा-
रम्भप्रश्नकार्त्स्न्येष्वथो अथ । वृथा निरर्त्थका-
विध्योर्न्नानाऽनेकोभयार्त्थयोः २४६ नु पृच्छा-
याम्विकल्पे च पश्चात्सादृश्ययोरनु । प्रश्नाव-
धारणानुज्ञानुनयामन्त्रणे ननु २४७ गर्हास-
मुच्चयप्रश्नशङ्कासम्भावनास्वपि । उपमाया-
म्विकल्पे वा सामि त्वर्द्धे जुगुप्सिते २४८

(जो मुख्य के सदृश हो उस प्रतिनिधि और वीप्सा बार म्बार कहने में) प्रति १ (हेतु प्रकार प्रकाश सब मार्त्थ और समाप्ति में) इति २॥ २४४॥ (प्राची पूर्व्व दिशा प्रथम पुरार्त्थ पुराने वृत्त अग्रतः आगे के अर्त्थ में) पुरस्तात २ (साकल्य सम्पूर्णता अवधि मर्य्यादा प्रमाण अवधारण में) यावत् १ तावत् २॥ २४५॥ (मंगल अनन्तर आरम्भ प्रश्न और सम्पूर्णता में) अथो १ अथ २ (निरर्त्थक और अविधि में) वृथा २ (अनेकार्त्थ और उभयार्त्थ में) नाना १॥२४६॥ (पृच्छा पूंछना और विकल्पार्त्थ में) नु १ (पीछे और बराबरी में) अनु १ (प्रश्न अवधारण अनुज्ञा अनुनय आमन्त्रण में) ननु १॥ २४७॥ (गर्हा निन्दा समुच्चय प्रश्न शङ्का और सम्भावना में) अपि १ (उपमा और विकल्प में) वा १ (आधे और निन्दित में) सामि १॥ २४८॥

अमा सह समीपे च कम्वारिणि च मूर्द्धनि ॥ इ-
वेत्थमर्थयोरेवन्नूनन्तर्केऽर्थनिश्चये २४९ ॥
तूष्णीमर्थे सुखे जोषङ्किम्पृच्छायां जुगुप्सने । ना-
म प्राकाश्यसम्भाव्यक्रोधोपगमकुत्सने २५० अ-
लम्भूषणपर्य्याप्तिशक्तिवारणवाचकम् । हु-
म्वितर्के परिप्रश्ने समयान्तिकमध्ययोः २५१
पुनरप्रथमे भेदे निर्निश्चयनिषेधयोः । स्यात्प्र-
बन्धे चिरातीते निकटागामिके पुरा २५२ ऊर्य्युं-
री चोररी च विस्तारेऽङ्गीकृतौ त्रयम् । स्वर्गे परे च
लोके स्वर्वार्त्तासम्भाव्ययोः किल २५३

(साथ और समीप में) अमा १ (पानी और शिर में) कम् २ (तुल्य ऐसा औ-
र प्रकार में) एव २ (तर्कना और अर्थ के निश्चय में) नूनम् १ ॥ २४९ ॥
(तूष्णीमर्त्थ चुप रहने और सुख में) जोषम् १ (पृच्छा पूंछने और नि-
न्दा करने में) किम् १ (प्राकाश्य प्रसिद्धि सम्भाव्य किसी प्रकार के
अर्थ क्रोध उपगम अच्छे वेष को अंगीकार करने कुत्सन निन्दा क-
रने में) नाम १ ॥ २५० ॥ (भूषण अलङ्कार पर्य्याप्ति परिपूर्णता शक्ति
वारण रोंकने में) अलम् १ (वितर्क और परिप्रश्न में) हुम् १ (अन्तिक
समीप और मध्य में) समया १ ॥ २५१ ॥ (अप्रथम प्रथम के अभाव और
भेद में) पुनर् १ (निश्चय और निषेध में) निर् १ (प्रबन्ध चिर बहुत काल अ-
तीत गत समय निकट आगामिक आनेवाला समय इन अर्थों में) पुरा १
(विस्तार और अंगीकार करने में) ॥ २५२ ॥ ऊरी १ उरी २ उररी ३ (स्वर्ग और
परलोक में) स्वर् १ (वार्त्ता और सम्भावना करने के योग्य में) किल १ ॥ २५३ ॥

निषेधवाक्यालङ्कारजिज्ञासानुनये खलु। समी-
पोभयतश्शीघ्रसाकल्याभिमुखेऽभितः २५४
नामप्राकाश्ययोःप्रादुर्मिथोन्योन्यंरहस्यपि॥
तिरोन्तर्द्धौतिर्य्यगर्थेहाविषादशुगर्त्तिषु २५५॥
अहहेत्यद्भुतेखेदे हिहेतावधारणे॥ इतिनाना-
र्थवर्गः॥

चिरायचिररात्रायचिरस्याद्याश्चिरार्थकाः।
मुहुःपुनःपुनश्शश्वदभीक्ष्णमसकृत्समाः १स्रा-
ग्झटित्यंजसाह्नायद्राङ्मंक्षुसपदिद्रुते। बलव-
त्सुष्ठुकिमुतस्वत्यतीवचनिर्भरे २

(निषेध वाक्य भूषण जिज्ञासा जानने की इच्छा और अनुनय में) खलु १। समीप उभयतः दूनों ओर शीघ्र साकल्य सब और अभिमुख में) अभितः १॥२५४॥ (नाम और प्रकाश होने में) प्रादुः १ (अन्यो-न्य आपस और निर्जन स्थान में) मिथः १ (अन्तर्द्धान और तिरछा अ-र्थ में) तिरः १ (विषाद भोजन पीड़ा में) हा १॥२५५॥ (अद्भुत औरखेद में) अहह १ हेतु और अवधारण निश्चय में) हि १॥इतिनानार्थवर्गः॥

दीर्घ काल वाचक अव्ययों के नाम) चिराय १ चिररात्राय २ चिरस्य ३ चिरेण ४ चिरात् ५ चिरम् ६ (बारम्बार वाचक अव्ययों के नाम) मुहुः १ पुनःपुनः २ शश्वत् ३ अभीक्ष्णम् ४ असकृत् ५॥१॥ (शीघ्रता वाचक के नाम) स्राक् १ झटिति २ अंजसा ३ अह्नाय ४ द्राक् ५ मंक्षु ६ सपदि ७ निर्भर ८ (अति प्राय के नाम) बलवत् १ सुष्ठु २ किमुत ३ सु ४ अति ५ अतीव ६॥२॥

पृथग्विनान्तरेणर्तेहिरुङ्नानाच वर्ज्जने। यत्तद्यतस्ततो हेतावसाकल्येतु चिच्चन ३ कदाचिज्जातु सार्द्धन्तु साकं सत्रा समं सह। आनुकूल्यार्त्थकम्प्राध्वम्व्यर्त्थकेतुवृथामुधा ४ आहोउताहो किमुत विकल्पेकिङ्किमूतच। तुह्यिचस्मह्वैपादपूरणे पूजने स्वति ५ दिवाह्नीत्यथदोषाचनक्तञ्चरजनाविति। तिर्य्यगर्त्थे साचितिरोप्यथसम्बोधनार्त्थकाः ६ स्युः प्याट्पाडङ्गहेहैभोस्समयानिकषाहिरुक्। अतर्किते तु सहसास्यात्पुरः पुरतोग्रतः ७

(वर्ज्जने वालों के नाम) पृथक् १ विना २ अन्तरेण ३ ऋते ४ हिरुक् ५ नाना ६ (कारण वाचकों के नाम) यत् १ तत् २ यतः ३ ततः ४ (अपूर्णता वाचकों के नाम) चित् १ चन २॥३॥ (किसी काल में) कदाचित् १ जातु २ (साथ वाचकों के नाम) साकम् १ सार्द्धम् २ सत्रा ३ समम् ४ सह ५ (अनुकूलता में) प्राध्वम् १ (व्यर्थ के नाम) वृथा १ मुधा २॥४॥ (विकल्पार्त्थकों के नाम) आहो १ उताहो २ किमुत ३ किम् ४ किमु ५ उत ६ (श्लोक की पाद पूर्ण बताने वालों के नाम) तु १ हि २ च ३ स्म ४ ह ५ वै ६ (पूजा करने में) सु १ अति २॥५॥ (दिन के अर्त्थ में) दिवा १ (रात्रि के अर्त्थ में) दोषा १ नक्तम् २ (तिर्य्यक् टेढ़े के अर्त्थ में) साचि १ तिरः २॥६॥ (सम्बोधनार्त्थ ये हैं) प्याट् १ पाट् २ अङ्ग ३ हे ४ है ५ भोः ६ (समीप वाचक अव्ययों के नाम) समया १ निकषा २ हिरुक् ३ (अकस्मात् के अर्त्थ में) सहसा १ (आगे के अर्त्थ में) पुरः १ पुरतः २ अग्रतः ३॥७॥

स्वाहा देवहविर्दाने श्रौषट् वौषट् वषट् स्वधा । कि-
ञ्चिदीषन्मनागल्पे प्रेत्यामुत्र भवान्तरे ८ वद्वा
यथा तथैवैवं साम्येऽहो ही च विस्मये । मौने तु तू-
ष्णीं तूष्णीकं सद्यः सपदि तत्क्षणे ९ दिष्ट्या स-
मुपजोषं चेत्यानन्देऽथान्तरेऽन्तरा । अन्तरेण च
मध्ये स्युः प्रसह्य तु हठार्थकम् १० युक्ते द्वे साम्प्र-
तं स्थाने भीक्ष्णं शश्वदनारते । अभावे नह्यनो
नापि मास्म मालं च वारणे ११ पक्षान्तरे चेद्यदि च
तत्त्वे त्वद्धाञ्जसा द्वयम् । प्राकाश्ये प्रादुराविःस्या-
दोमेवं परमं मते १२

(देवताओं के हव्य देने के उपयोगी) स्वाहा १ श्रौषट् २ वौषट् ३ वषट् ४
(पितरों के कव्य देने का उपयोगी) स्वधा १ (अल्प के वाचक) किञ्चित् १
ईषत् २ मनाक् ३ (जन्मान्तर वाचक) प्रेत्य १ अमुत्र २ ॥ ८ ॥ (समता
वाचक) वत् १ वा २ यथा ३ तथा ४ एव ५ एवं ६ (विस्मय वाचक)
अहो १ ही २ (मौनार्थक) तूष्णीम् १ तूष्णीकम् २ (तत्काल वाचक)
सद्यः १ सपदि २ ॥ ९ ॥ (आनन्द वाचक) दिष्ट्या १ समुपजोषम् २
(मध्य वाचक) अन्तरे १ अन्तरा २ अन्तरेण ३ (हठार्थक) प्रस-
ह्य १ ॥ १० ॥ (युक्त में) साम्प्रतम् १ स्थाने २ (अजस्र निरन्तर वाचक)
अभीक्ष्णम् १ शश्वत् २ (अभाव वा प्रतिषेध वाचक) नहि १ अ २
नो ३ न ४ (वारण रोकने में) मास्म १ मा २ अलम् ३ ॥ ११ ॥ (पक्षा-
न्तर में) चेत् १ यदि २ (तत्त्वार्थाव्यय) अद्धा १ अंजसा २ (स्पष्टता में)
प्रादुः १ आविः २ (अंगीकार करने में) ओम् १ एवम् २ परमम् ३ ॥ १२ ॥

समन्ततस्तु परितस्सर्व्वतो विष्वगित्यपि। अकामानुमतौ काममसूयोपगमस्तु च २३ ननु च स्याद्विरोधोक्तौ कच्चित्कामप्रवेदने। निष्षमं दुष्षमं गर्ह्ये यथास्वं तु यथायथम् २४ मृषा मिथ्या च वितथे यथार्थं तु यथातथम्। स्युरेवं तु पुनर्वै वेत्यवधारणवाचकाः २५ प्रागतीतार्थकं नूनमवश्यं निश्चये द्वयम्। संवद्वर्षेऽवरे त्वर्वागामेवं स्वयमात्मना २६ अल्पे नीचैर्महत्युच्चैः प्रायो भूम्न्यद्रुते शनैः। सना नित्ये बहिर्बाह्ये स्मातीतेऽस्तमदर्शने २७

(सर्व्वतः सब ओर के अर्त्थ में) समन्ततः १ परितः २ सर्व्वतः ३ विष्वक् ४ (बिना इच्छा की सलाह में) कामम् १ (निन्दा पूर्व्वक अंगीकार करने में) अस्तु १ ॥ २३ ॥ (विरोधक साथ कहने में) ननु १ (कुछ पूछने में वा इच्छा करके कहने में) कच्चित् १ (निन्दा के विषय में) निष्षमम् १ दुष्षमम् २ (यथा योग्यता में) यथास्वम् १ यथायथम् २ ॥ २४ ॥ (झूंठ कहने में) मृषा १ मिथ्या २ (सत्य के अर्त्थ में) यथार्त्थ १ यथातथम् २ (निश्चयार्त्थक अव्यय) एवम् १ नु २ पुनः ३ वै ४ वा ५ ॥ २५ ॥ (अतीतार्त्थ के भूत कालार्त्थ के) प्राक् १ (निश्चय में) नूनम् १ अवश्यम् २ (वर्ष वाचक) सम्वत् १ (अवर पीछे के अर्त्थ में) अर्व्वाक् १ (अंगीकार में) आम् १ एवम् २ (अपने अर्त्थ में) स्वयम् १ ॥ २६ ॥ (अल्प के अर्त्थ में) नीचैः १ (महति ऊंचाई में) उच्चैः १ (बहुताई में) प्रायः १ (अद्रुते धीरे २ जाने में) शनैः १ (नित्य के अर्त्थ में) सना १ (बाहर के में) बहिः १ (गत काल में) स्म १ (न देखने पड़ने में) अस्तम् १ ॥ २७ ॥

अस्तिसत्त्वेरुषोक्तावुऊंप्रश्नेऽनुनयेत्वयि। हूंत-
र्केस्यादुषारात्रेरवसानेनमोनतौ १८ पुनरर्थेऽङ्गनि-
न्दायांदुष्ठुसुष्ठुप्रशंसने। सायंसायेप्रगेप्रातः
प्रभातेनिकषान्तिके १९ परुत्परार्यैषमोऽब्देपू-
र्वेपूर्वतरेयति। अद्यात्राह्न्यथपूर्वेऽह्नीत्यादौ
पूर्वोत्तरापरात् २० तथाधरान्यान्यतरेतरात्पू-
र्वेद्युरादयः। उभयेद्युश्चोभयद्युःपरेत्वह्निपरेद्य-
वि २१ ह्योगतेनागतेह्निश्वःपरश्वस्तुपरेहनि॥
तदातदानींयुगपदेकदासर्वदासदा २२

(होने के अर्थ में) अस्ति १ (कोप में कहने में) उ १ (प्रश्न में) ऊम् १ (अनुनये समझाने में) अयि १ (तर्क करने में) हुम् १ (रात्रि के अन्त में) उषा १ (प्रणाम में) नमः ॥१८॥ (फिर के अर्थ में) अङ्ग १ (निन्दा में) दुष्ठु १ (प्रशंसा में) सुष्ठु १ (संध्या काल में) सायम् १ (प्रभात काल में) प्रगे १ प्रातः २ (समीपार्थ में) निकषा १ ॥१९॥ (पूर्व गत वर्ष परु का नाम) परुत् १ (उससे पूर्व का नाम) परारि १ (वर्त्तमान वर्ष आसों का नाम) ऐषमः १ (आज इस अर्थ में) अद्य १ (पूर्व गत दिन में) पूर्वेद्युः १ (अगले या दिन में) उत्तरेद्युः १ (उससे आगे वाले में) अपरेद्युः १ ॥२०॥ (पीछे वाले में) अधरेद्युः १ (और दिन में) अन्येद्युः १ (अन्यन्तर दिन में) अन्यतरेद्युः १ (इतर दिन में) इतरेद्युः १ (उभय दोनों दिन के अर्थ में) उभयेद्युः १ उभयद्युः २ (परदिन में) परेद्यवि १ ॥२१॥ (गत दिन में) ह्यः १ (आने वाले में) श्वः १ (परसों का नाम) परश्वः १ (तिस काल ऐसे अर्थ में) तदा १ तदानीं २ (एक समय ऐसे अर्थ में) युगपत् १ एकदा २ (सब दिन ऐसे अर्थ में) सर्वदा १ सदा २ ॥२२॥

एतर्हि सम्प्रतीदानीमधुना साम्प्रतन्तथा। दिग्देश कालेपूर्व्वादौ प्रागुदक्प्रत्यगादयः २३॥ इत्यव्ययवर्गः॥

सलिङ्गशास्त्रैस्सन्नादि कृत्तद्धित समासजैः।
अनुक्तैस्संग्रहेलिङ्गं संकीर्णवदिहोन्नयेत् १
लिङ्गशेष विधिर्व्यापीविशेषैर्य्यद्यबाधितः।
स्त्रियामीदूद्विरामै कास्वरौ निप्राणिनामच २
नाम विद्युन्निशावल्लीवीणा दिग्भूनदीह्रियाम्।
अदन्तैर्द्विगुरेकार्थोनसपात्रयुगादिभिः ३

(अभी या अब वहीं ऐसे कालोंके कालमें) एतर्हि १ सम्प्रति २ इदानीम् ३ अधुना ४ साम्प्रतम् ५ (पूर्व्वादि दिशा देश कालमें क्रमसे ये होते हैं पूर्व्वमें) प्राक् १ (उत्तरमें) उदक् १ पश्चिममें प्रत्यक् १॥ २३॥ इत्यव्ययवर्गः॥

सन्नादि कृदन्त तद्धित समास से बने हुये शब्दों करके जो कि पाणिनि आदिकों करके कहे हुये लिंगानुशासन सहित हैं बहुधा उन्हीं करके यह संग्रह किया जाता है संकीर्ण वर्गके समान लिंग जानना चाहिये॥ १॥ जो प्रथम कथित और यहां कहे हुओं का विशेषविधि बाधित न हो तो सन्नादि कथित से शेष लिंग विधि अपने विषय में व्यापी हो सक्ता है स्त्रियम् इससे लेकर सती शब्द पर्य्यन्त स्त्री लिंग होंगे ईन्ऊन्त ईकारान्त ऊकारान्त भग सहित प्राणियों के नाम स्त्री लिंग होंगे॥ २॥ विद्युत् आदि ह्री पर्य्यन्त नाम स्त्री लिंग हैं यथा (विद्युत्) बिजुली रात्रि (वल्ली) बेवरि - वीणा - दिशा (भू) पृथ्वी - नदी (ह्री) लज्जा और अदन्त शब्दों करके जो द्विगु समास है वह स्त्री लिंग है परपात्र युगादिक स्त्री लिंग न होंगे ३

तल्लन्वृन्दे येनिकट्यञावैरमैथुनिकादिवुन ॥
स्त्रीभावादावनिक्तिणवुल्णचणकुचक्यप्युजिञड्-
निशः ४ उणादिषु निर्दिष्टाश्च ङ्याबूङन्त स्वलं
स्थिरम्। तत्क्रीडायां प्रहरणं चेन्मौष्टापाल्ल
वाणादिकं ५ घञोऽस्सा क्रिया ऽयाञ्चेदाण्ड
पातादिफाल्गुनी। श्येनम्पाता च मृगया तैल
म्पाता स्वधेति दिक् ६ स्त्रीऽस्यात्काचिन्मृणा-
ल्यादिर्विवक्षाऽपचये यदि। लङ्का शेफालिका
टीका धातकी पञ्जिकाढकी ७

(तल् प्रत्यय स्त्री लिंग है और वृन्द समूह अर्थ दुनिकट्यञ ये प्रत्यय स्त्री
लिंग हैं वैर मैथुनिकादि में वुन् प्रत्यय स्त्री लिंग है स्त्री त्व से भावपत्र-
न्त क्तिन णवुल् णच वानुच क्यप युच् वुञ अङ् निश ॥४॥ (जो उणा-
दि में नि क है (आबन्त) आबन्त ऊङन्त चन्त और स्थिर हैं वे स्त्री-
लिंग हैं जो वे मुष्ट्यादि में क्रीड़ा के अर्थ प्रहार करते तिस अर्थ में ण
प्रत्यय स्त्री लिंग में हो (मुष्टि से प्रहार हो तो (मौष्टा) पल्ल वों से हो तो
पाल्लवा ॥५॥ (वह दण्ड पातादि क्रिया घञन्त में हो तो घञ प्रत्यय
हो) फाल्गुनी दाण्ड पाता यह उदाहरण है) इसी प्रकार (श्येन)
बाज का पात हो जिस में मृगया हो उस का नाम) श्येनम्पाता १ (जिस
स्वधा क्रिया में तिल पात हो उस का) तैलम्पाता १॥ ६॥ (जो अपचय अ-
ल्पत्व की इच्छा करै तो मृणाली आदि स्त्री लिंग हो - यथा अल्प मृणा-
ल का नाम) मृणाली १ (आबन्त शब्द का नाम) लङ्का १ (निर्गुण्डी का नाम
शेफालिका १ (विषम पद की व्याख्या का नाम) टीका १ (धाय फूल का नाम)
धातकी १ (निरवशेष पद की व्याख्या का नाम) पञ्जिका १ (अरहर का नाम) आढकी नाम

सिध्रकामारिकाहिक्काप्राचिकोल्कापिपीलिका। तिन्दुकीकरिगाकाभङ्गिस्सुरङ्गासूचिमाढयः ८ पिच्छावितराडाकाकिरायभूरिणिप्रशारगीदुरगीदरत। सातिःकन्थातथाऽसन्दीनाभीराजसभापिच ९ झल्लरीचर्चरीपारीहोरालट्वाचसिध्मला। लाक्षालिक्षाचगराडूषागृध्रसीचमसीमसी १०॥ इतिस्त्रीलिङ्गसंग्रहः॥

(सिध्र का नाम) सिध्रका१ (मैना का नाम) सारिका१ (हुच की का नाम) हिक्का१ (बन की साल्ही का नाम) प्राचिका१ (धड़ा कारवारने का नाम) उल्का१ (च्यूंटी का नाम) पिपीलिका१ (तेंदू का नाम) तिन्दुकी१ (परिमारा का नाम) करिगाका१ (टेढ़ाई का नाम) भंगि (सुरंग का नाम) सुरंग१ (सुई का नाम) सूचि१ (पत्ता की नस का नाम) माढि१॥ ८॥ (सेमर की गादि का नाम) पिच्छा१ (बाजा का नाम) वितराडा१ (कौड़ी का नाम) काकिरगी१ (चूर्णिका का नाम) चूर्णि१ (प्रान के वस्त्र का नाम) प्रशारगी१ (कन्तुहो का नाम) दुरगी१ (म्लेच्छ जाति का नाम) दरत१ (दान का नाम) साति१ (कथरी का नाम) कन्था१ (आसनी का नाम) आसन्दी१ (ढोढ़ी का नाम) नाभि१ (राजा की सभा का नाम) राजसभा१॥ ९॥ (हुडुक का नाम) झल्लरी१ (तारी बजाने का नाम) चर्चरी१ (हाथी के पाद बांधने की रस्सी का नाम) पारी१ (लग्न के आधे का नाम) होरा१ (गौरैया का नाम) लट्वा१ (भूरे मांस का नाम) सिध्मला१ (लाख का नाम) लाक्षा१ (जुवां के अराडा का नाम) लिक्षा१ (हाथ की अंगुरी का नाम) गराडूषा१ (गठिया बाई का नाम) गृध्रसी१ (घराँ का पात्र का नाम) चमसी१ (काजर का नाम) मसी१॥ १०॥ इतिस्त्रीलिंगसंग्रहः॥

पुंस्त्वे सभेदानुचराः सपर्य्यायाः सुरासुराः । स्वर्गयागाद्रिमेघाब्धिद्रुकालासिशरारयः २१ करगण्डोष्ठदोर्दन्तकण्ठकेशनखस्तनाः । अह्नाह्नान्ताः स्वेडभेदा रात्रान्ताः प्राक् संख्यकाः २२ श्रीवेष्टाद्याश्च निर्य्यासा असन्नन्ता अबाधिताः । कशेरुजतुवस्तूनि हित्वा तुरुविरामकाः २३ कषणभमरोपान्ता यद्यदन्ता असौ अथ । पथनयसटोपान्ता गोत्राख्याश्चरणाह्वयाः २४

अब पत द्रुह पर्य्यन्त पुल्लिंग शब्द कहेंगे - सुर और असुर अपने भेद अनुचर और पर्य्यायों के संग पुल्लिंग हैं स्वर्ग यज्ञ पर्व्वत बादर समुद्र वृक्ष काल खड्ग बाण शत्रु ॥ २१ ॥ कर गाल ओष्ठ भुज दांत कण्ठ बार नहं स्तन और अह्न अह ये जिस के अन्त में हों वे सब पुल्लिंग जानों विष भेद (रात्रान्त) जिन के अन्त में रात्र शब्द हो वे पुल्लिंग हैं परन्तु उन के आदि में संख्या वाचक शब्द न हों ॥ २२ ॥ श्री वेष्टादि निर्य्यास प्रभृति पुल्लिंग हैं (सरल का नाम) श्रीवेष्ट १ और अस् अन् जिन के अन्त में हों वे भी हैं - कशेरु - जतु - वस्तु - छोड़ के रु शब्द के अन्त तक पुल्लिंग हैं (कशेरुआ का नाम) - कशेरु १ (लाख का नाम) जतु १ ॥ २३ ॥ क - ष - ण - भ - म - र - जिन शब्दों के उपान्त्य वर्ण हों और वे अकारान्त हों तो पुल्लिंग होंगे प - थ - न - य - स - ट - ये जिन के उपान्त्य वर्ण हों और अबाधित हों तो पुल्लिंग होंगे गोत्राख्य ऋषि संज्ञक चरणाह्वय चरण अर्थात् वेद शाखा की आह्वसंज्ञा जिन की होवे वे भी पुल्लिंग हैं ॥ २४ ॥

नाम्न्यकर्त्तरि भावे च घञजञ्जप्-नङ्-ण-घाथुचः।
ल्युः कर्त्तरीमनिज्भावे को घोः किः प्रादितोऽन्यतः १५ द्वन्द्वेऽश्ववडवावश्ववडवा न समाहृते।
कान्तः सूर्येन्दुपर्य्यायपूर्वोऽयःपूर्वकोऽपि च १६
वटकश्चानुवाकश्च रल्लकश्च कुडङ्गकः ॥
पुङ्खो न्यूङ्खः समुद्गश्च विटपट्टधटाः खटाः १७

(नाम अकर्त्ता और भाव मात्र में विहित घञ् अच् अप् नङ्-ण-घ अथु-च् ये प्रत्यय पुल्लिंग होते हैं कर्त्ता में ल्यु प्रत्यय-भाव में इमनिच् और क प्रत्यय और जा घुसंज्ञक धातु हैं उन से कि प्रत्यय आता है। दाप-दैप को छोड़ दारूप धारूप धातु की संज्ञा होती है और प्रादि उपसर्गों से अन्यत्र भी कि प्रत्यय होता है इन प्रत्ययों करके युक्त शब्द पुल्लिंग ही होते ॥ १५॥ समाहार को छोड़ द्वन्द्व समासान्त पद पुल्लिंग जानो यथा-(अश्व वडवौ) घोड़ा घोड़ी द्वन्द्व समास में अश्ववडवाः अश्ववडवान् अश्ववडवैः इत्यादि पुल्लिंग बहु वचनान्त शब्द होते हैं सूर्य्य चन्द्र के पर्य्याय और अयः लोह शब्द के पर्य्याय पूर्व रहने पै कान्त शब्द पुल्लिंग होते हैं ॥ १६॥ (अब कान्तादि शब्द कहते हैं) वरा का नाम) वटक १ (वेदांग का नाम) अनुवाक १ (कम्बल का नाम) रल्लक १ (वृक्ष वल्ली के गहन का नाम) कुडंगक १ (वाण की फोंक का नाम) पुंख १ (नाम वेद के ओंकार का नाम) न्यूङ्ख १ (सम्पुट का नाम) समुद्ग १ (धूर्त्त का नाम) विट १ (पटरा का नाम) पट्ट १ (तराजू का नाम) धट १ (अंधक कुंओं का नाम) खट १ ॥ १७॥

कोट्टार घट्ट हट्टाश्च पिराड गोराड पिचराडवत्। गडुः कराड्डोल्लगुडो वराडश्च किरणो घुणाः॥२८॥ हतिस्सीमन्त हरितो रोमन्थोद्गीथ बुद्बुदाः। कासमर्दोर्ब्बुदः कुन्दः फेनस्तूपौ सपूपकौ॥२९॥ आतपःक्षत्रियेनाभिः कुणपः क्षुरकेरदाः॥

ये सब पुल्लिंग हैं (कोट का नाम) कोट्ट १ (कुआं वा रहंट का नाम) आरघट्ट १ (किसी २ के मत से भट्ट ग्राम इस न्याय करके टकारान्त शब्दों के भीतर कोट्टार यह रकारान्त शब्द जो नागर कूप छोटी नलैया और फांट का बाची है और घट्ट - घाट का नाम प्रसिद्ध है भट्ट ग्राम न्याय जैसे भाटों का गांव भट्ट ग्राम कहाता है पर उस में और जाति भी क्या नहीं बसते ऐसे ही टकारान्तों में कोट्टार यह रकारान्त शब्द घुस परा (हाट बजार का नाम) हट्ट १ (पौंड़ आदि का नाम) पिराड १ (ढोल्ही का नाम) गोराड १ (पेट का नाम) पिचराड १ (गलगराड का नाम) गडु १ (प्यदारी का नाम) कराड १ (लाठी का नाम) लगुड १ (मुंह की पीरा का नाम) वराड १ (घाव के चिह्न और घेदा का नाम) किरण १ (घुन का नाम) घुण १॥२८॥ (मसक का नाम) हति १ (केश वेश वा सिरवन्त का नाम) सीवन्त १ (हरे रंग और दिशा का नाम) हरित १ (पगुराने का नाम) रोमन्थ १ (साम वेद का नाम) उद्गीथ १ (बुल्ला का नाम) बुद्बुद १ (रूस का नाम) कासमर्द १ (दश करोर का नाम) अर्ब्बुद १ (विष्णु का नाम) कुन्द १ (फेना का नाम) फेन १ (बरा आदि का नाम) स्तूप १ (पुआ का नाम) पूप १ यूप भी इसे पढ़ते॥२९॥ (घाम का नाम) आतप १ (क्षत्रियवाची नाभि १ (मुर्दा का नाम) कुणप १ (छूरा का नाम) क्षुर १ (व्यवहार पदार्थ का नाम) केरद १॥

पूरस्सुरभ्र चुक्रश्च गोल हिंगुलपुद्गलाः २० वेताल भल्लमल्लाश्च पुरोडाशोपि पट्टिशः। कुल्माषोरभसश्चैव सकटाहः पतद्गृहः २१ ॥ इतिपुल्लिङ्गशेषः॥ द्विहीनेन्यच्च खारण्यपर्णाश्वभ्रहिमोदकम्। शीतोष्णमांसरुधिरमुखाक्षिद्रविणं बलम् २२

(पानी की धारा का नाम) पूर १ (बाण का नाम) सुरभ्र १ (अमलवेत का नाम) चुक्र १ (गोला का नाम) गोल १ (ईंगुर का नाम) हिंगुल १ (देह का नाम) पुद्गल १॥ २०॥ (भूत का नाम) वेताल १ (अस्त्र का नाम) भल्ल १ (बाहुं जोटी करने वाले कुश्ती बाज का नाम) मल्ल १ (जाउरि का नाम) पुरोडाश १ (पटा के नाम) पट्टिश १ पट्टिस २ (कांजी का नाम) कुल्माष १ (हर्ष का नाम) रभस १ (कराह का नाम) कटाह १ (पीकदान का नाम) पतद्गृह १ ये सब पुल्लिंग हैं ॥२१॥ इति पुल्लिंगशेषः॥ अब नपुंसकलिंग - खादि २६ शब्दों करके कहते हैं (अन्य का नाम) अन्यत् १ (इन्द्रिय और आकाश का नाम) ख १ (बन का नाम) अरण्य १ (पत्ता का नाम) पर्ण १ पाताल और गड़हा का नाम) श्वभ्र १ (पाला का नाम) हिम १ (पानी का नाम) उदक १ (जूड़े का नाम) शीत १ (गर्म्म का नाम) उष्ण १ (मासु का नाम) मांस १ (रक्त का नाम) रुधिर १ (मुंह का नाम) मुख १ (नेत्र का नाम) अक्षि १ (धन का नाम) द्रविण १ (शक्ति और सैन्य का नाम) बल १॥ २२॥ ॥

फलहेमशुल्वलोहसुखदुःखशुभाशुभम्।
जलपुष्पाणि लवणं व्यंजनान्यनुलेपनम् २३
कोट्याः शतादिसङ्ख्यान्या वा लक्षा नियु-
तञ्च तत्। द्व्यच्कमसिसुसन्नन्तं यदनान्तम
कर्त्तरि २४ त्रान्तं सलोपधं शिष्टं रात्रं प्राक्सं
ख्ययान्वितम्। पात्राद्यदन्तैरेकार्थो द्विगुर्ल
क्ष्यानुसारतः २५

(फर का नाम) फल १ (सोने का नाम) हेम १ (ताम्र का नाम) शुल्व १ (लोह का नाम) लोह १ (सुख का नाम) सुख १ (दुःख का नाम) दुःख १ (कल्याण का नाम) शुभ १ (अकल्याण का नाम) अशुभ १ (कुई कमलादि का नाम) जलपुष्प १ (जेमन का नाम) व्यञ्जन १ (कुंकुम आदि का नाम) अनुलेपन १॥ २३॥ ये नपुंसक लिंग हैं (कोटि) करोरि का छोड़ अन्य शतादि संख्या नपुंसक लिंग हैं लक्ष शब्द नपुंसक लिंग विकल्प से होगा किन्तु स्त्री लिंग भी होगा (तिस लक्ष ही का नाम) नियुत १ असन्त इसन्त उसन्त अन्नन्त जो द्व्यच् अर्थात् द्विस्वर हैं वे और अकर्त्तृ कर्त्ता में अन्यत्र जो अनन्त अर्थात् जिसके अन्त में अन यह है वे सब नपुंसक होते॥ २४॥ जिनके अन्त में त्र होवे और जिन में अन्त के स्वर के पूर्व स और ल होवे वे नपुंसक लिंग हैं और जो प्रथम कहने से शिष्ट बाकी रहे वे और जो प्रथम कहने से शि० बाकी रहे और जो प्रथम कहने से अबाधित रात्रादि होवे नपुंसक हैं अ० संख्या पूर्व रात्र शब्द नपुंसक है और अदन्त पात्रादि शब्दों करके जो एकार्थ द्विगुसमास है वह भी नपुंसक ही है॥ २५॥

द्वन्द्वैकत्वाव्ययीभावौपथस्सङ्ख्याव्यया-
त्परः । षष्ठ्याश्छाया बहूनां स्याद्विच्छायं सं-
हतौ सभा २६ शालार्थाऽपि परा राजा मनुष्या-
र्थादराजकात् । दासीसभन्नृपसभं रक्षस्सभ-
मिमा दिशः २७ उपज्ञोपक्रमान्तश्च तदादित्वप्र-
काशने । कोपज्ञकोपक्रमादि कन्थोशीनर-
नामसु २८

द्वन्द्व समास का एकत्व और अव्ययीभाव समास और संख्या और अ-व्यय से पर पथ शब्द नपुंसक है समास में षष्ठी विभक्त्यन्त से परे ब-हुतों की छाया हो तो नपुंसक हो जैसे (विच्छायम् विजो पक्षी हैं तिनकी छाया का नाम है) और (संहति) समूह विषय में षष्ठी वि-भक्त्यन्त से परे सभा शब्द स्त्री और नपुंसक दोनों लिङ्ग होता है ॥ २६ ॥ राजा शब्द के पर्याय से वर्जित शालार्थ ग [illegible] सभा शब्द राजा और अमनुष्य अर्थात् राक्षसादि षष्ठ्यन्त शब्द से परे नपुंसक लिंग होता है जैसे (दासियों की सभा का नाम) दासीस-भम् १ (नृप की सभा का नाम) नृपसभम् १ (रक्षस की सभा का नाम) रक्षस्सभम् १ ॥ २७ ॥ (उपज्ञ उपक्रम के आदित्व प्र-काश होने में उपज्ञान्त और उपक्रमान्त समास नपुंसक हो-ता है (क ब्रह्मा तिन की उपज्ञा प्रजा का नाम) कोपज्ञम् १ (और उन्हीं के उपक्रम लोक का नाम) कोपक्रमम् १ उ-शीनर नाम के मध्य में षष्ठ्यन्त से परे कन्था शब्द नपुंसक होता है ॥ २८ ॥

भावे नणकचिदभ्योन्ये समूहे भान्न कर्म्मणोः। अदन्त प्रत्ययाः पुण्यसुदिनाभ्यान्न्ह्नः परः २९ क्रियाव्ययानाम्भेदकान्येकत्वेप्युक्थ तोटके। चोचम्पिच्छं गृहस्थूणन्तिरीटम्मर्म्मयोजनम् ३० राजसूयम्वाजपेयङ्गद्यपद्ये कृतौ कवेः॥ मा णिक्यभाष्यसिन्दूरचीरचीवरपिंजरम् ३१

न ण कचित् प्रत्ययों से अन्य जो अदन्त तव्यक्त आदि धातु प्रत्यय भाव में विहित हैं वे भी नपुंसक ही हैं और पुण्य सुदिन से परे अह्न शब्द नपुंसक हैं॥ २९॥ क्रिया और अव्ययों के भेद विशेषण और नपुंसक लिंग के एक वचन होते हैं (साम वेद का नाम) उक्थ १ (जिस वृत्त में तीसरा छठा नववां और बारहवां गुरु होता अन्य ८ लघु और सब १२ अक्षर का चरण होता है उस का नाम) तोटक १ (जूंठ फला वा नाल वा केला के फल का नाम) चोच १ (गुच्छे का नाम) पिच्छ १ (घर की थून्ही का नाम) गृहस्थूण १ (वेष्टन वा शिरोभूषण का नाम) तिरीट १ (जोड़ का नाम) मर्म्म १ (चार कोश का नाम) योजन १॥ ३०॥ (राजा सोम यज्ञौषधि जिस में पीवे उस का नाम) राजसूय १ (वाज पैष्टी मदिरा जिस में पी जावे उस का नाम) वाजपेय १ (जो कवि की कृति श्लोक बद्ध न हो उस का नाम) गद्य १ (जिस कृति में श्लोक ही सब हों उस का नाम) पद्य १ (मणिपूर नगर में उत्पन्न हुये मणि का नाम) माणिक्य १ (सूत्रानुसारी वाक्यों करके जहां सूत्रों का अर्त्थ कहा जावे और अपने पद भी वर्णन किये जायं उस का नाम) भाष्य १ (सेंदुर का नाम) सिन्दूर १ (चिथरा कपड़ा का नाम) चीर १ (मुनि के वस्त्र का नाम) चीवर १ (पिंजरा के नाम) पिञ्जर १ पञ्जर २॥ ३१

**लोकायतं हरितालं विदलं स्थालं वाल्हिकम् ॥ इति नपुंसकसंग्रहः ॥ पुन्नपुंसकयोः शेषोर्द्धर्चपिण्याककण्टकाः ३२ मोदकस्तण्डकष्टङ्कः शाटकः कर्पटोऽर्बुदः। पातकोद्योगचरकतमालामलकानडः ३३ कुष्ठं मुण्डं शीधु बुस्तं क्ष्वेडितं क्षेमकुट्टिमम् ॥**

(चार्वाक शास्त्र का नाम) लोकायत१ (हरतार का नाम) हरिताल१ (बांस के दुपल्ला का नाम) विदल१ (थार का नाम) स्थाल१ (कुङ्कुमादि का नाम) वाल्हिक१ वाह्लीक२ वाह्लव३ (इति नपुंसक संग्रहः) अब यहां से शब्द पर्यन्त पुल्लिंग नपुंसक लिंग शब्द कहते हैं (कहे से अन्य का नाम) शेष१ (आधी ऋचा का नाम) अर्द्धर्च१ (तिल की पिंडी का नाम) पिण्याक१ (रोम हर्ष रोवां कठियाय आने और कांटा छोटे शत्रु का नाम) कण्टक१ ॥ ३२ ॥ (लड्डू का नाम) मोदक१ (खडेरचा फेना और उपना पादि का नाम) तण्डुल१ (टांकी का नाम) टङ्क१ (साड़ी का नाम) शाटक१ (कपड़ा का नाम) कर्पट१ (दश किरोरि का नाम) अर्बुद१ (ब्रह्म हत्यादि का नाम) पातक१ (उत्साह का नाम) उद्योग१ (वैद्य विद्या के एक ग्रन्थ का नाम) चरक१ (तमाकू वा देव वृक्ष विशेष का नाम) तमाल१ (अंवरा के फल का नाम) आमलक१ (नरई वा गड़हा का नाम) नड१ ॥ ३३ (कोढ़ का नाम) कुष्ठ१ (मूड़ का नाम) मुण्ड१ (मदिरा का नाम) शीधु१ (आम शष्कुली आदि बनाते हुये का कट हूर के ओंधरा का नाम) बुस्त१ (बल्ही पुस्त और स्वस्त भी पाठ है) (वीर के गर्जने का नाम) क्ष्वेडित१ (कुशल का नाम) क्षेम१ (पक्की गच वा भीति का नाम) कुट्टिम१ ॥

सङ्गमं संयतं मानस्त्वर्मग्राम्बलाव्ययताराडवम् ३४ कवियक्क ण्डकर्प्पासस्पारावारंयुगन्धरम्। यूपस्त्रग्रीवपात्रीवे यूषश्चमसचिक्कसौ ३५ अर्द्धर्चादे घृतादीनाम्पुंस्त्वाद्यम्बैदिकन्ध्रुवम्। तन्नोक्तमिह लोकेऽपितच्चेदस्त्यस्तुशेषवत् ३६ इतिनपुंसकसंग्रहवर्गः॥ स्त्रीपुंसयोरपत्यान्ताद्विचतुःषट्पदोरगाः॥ जातिभेदाःपुमाख्याश्च स्त्रीयोगेस्सहमल्लकः ३७

(संयोग का नाम) संयम १ (तौल भेद का नाम) मान १ (खोरवी के रोग का नाम) अर्म्म १ (गली रथ्या वा सांवरे रंग का नाम) ग्राम्बल १ (स्वरादि के निपातित करने से जो बनते हैं उन का नाम) अव्यय १ (नाचने का नाम) ताराडव १॥ ३४॥ (तो बड़ा का नाम) कवियं १ (जिमीकन्द का नाम) कन्द १ (कपास वा वस्त्र का नाम) कर्प्पास १ (समुद्र और नदी के इस पार उस पार का नाम) पारावार १ (सकोरा का नाम) युगन्धर १ (यज्ञ के खम्भा का नाम) यूप १ (झरोखा का नाम) प्रग्रीव १ (यज्ञ पात्र का नाम) पात्रीव १ (जूस का नाम) यूष १ (सकयोगी और पात्र का नाम) चमस १ (यज्ञ पात्र का नाम) चिक्कस १॥ ३५॥ (अर्द्धर्चादि) इस पुंनपुंसक के अधिकार में घृतादिक का पुल्लिंगत्व पाणिन्यादि ने कहा है सो निश्चय वेद में प्रसिद्ध है इससे यहां नहीं कहागया यदि वह लोक में प्रसिद्ध हो तो शेषवत अर्थात् शिष्टप्रयोगानुसार जानो॥ ३६॥ इति नपुंसक संग्रह वर्गः॥ अपत्यप्रत्ययान्त शब्द और द्वि चतुः षट (उरग) सर्प्पवाची जाति भेद शब्द स्त्री पुल्लिंग दोनों में होते हैं १ मल्लकादि को स्त्री पुल्लिंग दोनों जानो (बेला के नाम) मल्लक १ मल्लिका २॥ ३७॥

ऊर्मिर्वराटकस्स्वातिर्वर्णो कोभारटलिर्मनुः मूषा स्रुपाटीकर्कन्धुर्यष्टिश्शाटी कटी कुटी ३८॥ इति स्त्रीपुंसशेषसंग्रहवर्गः॥ स्त्रीनपुंसकयो र्भावक्रिययोः ष्यञ् क्वचिच्च वुञ्। औचित्यमौचिती मैत्री मैत्र्यं वुञ्प्रागुदाहृतः ३९ षष्ठ्यन्तप्राकपदास्सेनाछायाशालासुरानिशा। स्याद्वा नृसेनं श्वनिशं गोशाल मितरेचदिक ४०

(लहरी का नाम) ऊर्मि १ (कौड़ी का नाम) वराट १ वराटिका २ (पन्द्रह वें नक्षत्र का नाम) स्वाति १ (चन्दन का नाम) वर्णक १ (भौंर वा वृक्ष का नाम) भारटलि १ (स्वायम्भुवादि का नाम) मनु १ (सोना गलाने की का नाम) मूषा १ (तौल भेद का नाम) स्रुपाटी १ (बेरि वृक्ष का नाम) कर्कन्धु १ (लाठी का नाम) यष्टि २ (शारी कपड़ा का नाम) शाटी १ (कमर का नाम) कटी २ (कुटी का नाम) कुटी १॥ ३८॥ ये सब शब्द स्त्री लिंग पुल्लिंग दोनों हैं॥ इति स्त्री पुंस शेष संग्रह वर्गः॥ भाव और कर्म में वर्त्तमान ष्यञ् और वुञ् प्रत्यय कहीं २ स्त्री नपुंसक लिंग होते हैं (ष्यञ् प्रत्ययान्त के उदाहरण योग्य के) औचित्य १ औचिती २ (मिताई के नाम) मैत्र्य १ मैत्री २ और वुञ् प्रत्यय के तो प्रथम कह आये हैं॥ ३९॥ तत्पुरुष समास में षष्ठी विभक्त्यन्त पूर्वक सेनादि शब्द स्त्री नपुंसक लिंग होते जैसे (मनुष्यों की सेना का नाम) नृसेन २ नृसेना २ (कुक्करों करके युक्त निशा का नाम) श्वनिश १ श्वनिशा २ (गायों की भरिया का नाम) गोशाल १ गोशाला २ — इसी प्रकार और भी जानो॥ ४०॥

आवन्नन्तोत्तरपदो द्विगुश्चापुंसि नश्च लुप्। त्रिखट्वं त्रिखट्वी चत्रितक्षञ्चत्रितक्ष्यपि ४१
इति स्त्रीनपुंसकशेषः॥ त्रिषु पात्री पुटी वाटी पेटी कुवलदाडिमौ॥ इति त्रिलिङ्गशेषसङ्ग्रहवर्गः॥
परं लिङ्गं स्वप्रधाने द्वन्द्वे तत्पुरुषेऽपि तत् ४२ अर्थान्ताः प्राद्यलंप्राप्तापन्नपूर्व्वाः परोपगाः। तद्धितार्थो द्विगुस्सङ्ख्या सर्व्वनाम तदन्तकाः ४३

आवन्तोत्तर पद और अन्नन्तोत्तर पद युक्त द्विगु समास पुल्लिंग नहीं किन्तु स्त्री नपुंसक लिंग होते हैं अन्नन्तोत्तर पद के अन्त में जो नकार है तिसका लुप् लोप होता है (तीन खटिया जब एकत्र धरी जायँ उन के नाम) त्रिखट्वम् १ त्रिखट्वी २ (तीन बढ़इयों के बटोर के नाम) त्रितक्षम् १ त्रितक्षी २॥४१॥ इति स्त्री नपुंसक शेषः॥ पात्रादि दाडिमान्त शब्द तीनों लिंग हैं (यथा बर्त्तन के नाम) पात्री १ पात्रः २ पात्रम् ३ (पुरी के नाम) पुटी १ पुटः २ पुटम् ३ (गली के नाम) वाटी १ वाटः २ वाटम् ३ (पेटी के नाम) पेटी १ पेटः २ पेटम् ३ (बैरि के फल के नाम) कुवलः १ कुवलम् २ कुवली ३ (अनार के नाम) दाडिमः १ दाडिमी २ दाडिमम् ३ (इति त्रिलिंग शेष वर्गः॥ स्वप्रधान उभय पद प्रधान और इतरेतर योग और तत्पुरुष में पर - आगे ही के पद का लिंग होता है ॥४२॥ अर्थान्त शब्द - परोपग अर्थात् पर गामी होते वाच्यलिंग हैं प्राद्यलम्प्राप्तापन्न पूर्व्व शब्द पर विशेष्य को प्राप्त होते हैं तद्धितार्थ द्विगु वाच्य लिंग है और संख्या शब्द - सर्व्व नाम और तदन्त ये पर लिंग होते हैं ॥४३॥

बहुव्रीहिरदिङ्नाम्नां गुणे यन्न तदुदाहृतम्॥ गु-
णद्रव्यक्रियायोगोपाधिभिः परगामिनः ४४
कृतः कर्तर्यसंज्ञायां कृत्याः कर्तरि कर्मणि।
अणाद्यन्तास्तेन रक्ताद्यर्थे नानार्थभेदकाः
४५ षट्संज्ञकास्त्रिषु समा युष्मदस्मत्तिङ-
व्ययम्॥ परं विरोधे शेषन्तु ज्ञेयं शिष्टप्रयो-
गतः ४६॥ इति लिङ्गादिसंग्रहवर्गः॥

अदिङ्-नामों में बहुव्रीहि अन्य लिंग को भजता और गुणयोग द्रव्य-योग क्रियायोग से जो उपाधि विशेषण हैं वे धर्म्म के ही गुण को भजते हैं ॥४४॥ असंज्ञा में कर्त्ता के अर्त्थ में कृत्प्रत्यय परोपगामी होते कर्म्म और कर्त्ता में वर्त्तमान कृत्य प्रत्यय परगामी होते तिस करके रंगे हुये इत्यादि अर्त्थ में अणादि तद्धित प्रत्ययान्त नानार्त्थभेदक अनेकार्त्थ विशेषण भूत विशिष्ट के कारण से वाच्य लिंग होते हैं ॥४५॥ षट्संज्ञा कषान्त नान्त संख्या और कति शब्द तीनों लिंगों में सम रूप और नित्य ही बहुवचनान्त होते हैं - युष्मद् अस्मद् शब्द तिङन्त पद और अव्यय ये भी तीनों लिंगों में समान बने रहते हैं विरोध अर्त्थात् विप्रतिषेध में पर लिंगानुशासन प्रवर्त्तित होता है इस ग्रन्थ में जो नाम कहने से शेष बाकी रह गये हैं वे शिष्ट महामहा कवि भाष्यकारादिकों के प्रयोगों से ज्ञेय जानने के योग्य हैं॥ इति लिंगादि संग्रह वर्गः॥

इत्यमरसिंहकृतौ नामलिङ्गानुशासने। सामान्यकाण्डस्तृतीयस्साङ्ग एव समर्थितः ४७

॥इति अमरसिंह की कृति नामलिंग शास्त्र में सामान्यनाम तृतीय काण्ड अंग संहित समर्थित निरूपित हुआ अर्थात् कहागया॥ मंगलमस्तु॥

बुध नवलकिशोरस्याज्ञया भूमिदेवशम्भुगुणागणावाई भाषया योग्य टीकाम्। व्यकृत सुकृत राशे र्गामरे सुख्य कोशे मलिन मति सुखाप्त्यै शम्भुदत्ताभिधानः॥ १॥

नकेनापि सता कार्य्ये सते च भाषया मया॥ टीकाक्षम्यन्तु मेऽनार्य्यमासरेऽतो विचक्षणाः २

कुरामाङ्कशशाङ्का १९३१ ब्दे दशम्यामाश्विनेऽसिते॥ मृगाङ्केऽमरकोषस्य टीकापूर्तिमियादियम्॥ ३॥

श्रीसरस्वत्यैनमः

॥इतिश्रीसभाषानुवाद अमरकोषस्समाप्तः॥शुभम्॥

| नाम किताब | नाम किताब | नाम किताब | नाम किताब |
|---|---|---|---|
| रामायण तुलसी कृ- | रामगीतावली | उपदेशचन्द्रिका | वैद्यक भाषा |
| त सातोकाण्ड | श्री अनुरागरस | मंगलविनोद | निघण्टु |
| १-बालकाण्ड | सौदागरलीला | विजयचन्द्रिका | अमरविनोद |
| २-अयोध्याकाण्ड | रासलीला | सिद्धान्त संग्रह | वैद्यजीवन |
| ३-आरण्यकाण्ड | भुवनेश भूषण | रामविनय शतक | औषधिसंग्रहकल्पव- |
| ४-किष्किन्धाकाण्ड | | विजयमुक्तावली | अमृतसागर बड़ा |
| ५-सुन्दरकाण्ड | नाटक | अनेकार्थ | तथा छोटा |
| ६-लंकाकाण्ड | प्रबोधचन्द्रोदय | छन्दोर्णव पिंगल | वैद्यमनोत्सव |
| ७-उत्तरकाण्ड | रामाभिषेक | [illegible] | [illegible] |
| रामायण शब्दार्थकोष | आनन्दरघुनन्दन | सतसई मूल व सटीक | इलाजुलगुर्बा |
| रामायण का इतिहास | भ्रमजाल नाटक | सभाविलास | |
| रामायण मानसरी- | हनूमन्नाटक | युगलविलास | किस्सा वगैरह |
| रामायण कवितावली | वेदान्त | तुलसीशब्दार्थप्रकाश | नानार्थनौसंग्रहावली |
| रामायण गीतावली स | | भजनावली | ब्रह्मसार |
| विनयपत्रिका बा॰ मो॰ | योगवाशिष्ठ | प्रेमरत्न | शिवसिंह सरोज |
| विनयपत्रिका वा॰ शि॰ | आनन्दामृतवर्षिणी | चित्रचन्द्रिका | भक्तमाल |
| सुखसागर छापा टैप | सांख्यतत्वकौमुदी | बारहमासा व॰ प्र॰ ह॰ | इन्द्रसभा |
| तथा छापा पत्थल | केनोपनिषद | मनोहरलहरी | विक्रमविलास |
| लिंगपुराण | ईशावास्यउपनिषद | गंगालहरी | बैताल पच्चीसी |
| विष्णुपुराण | पारसभाग | यमुनालहरी | सिंहासन बत्तीसी |
| गरुड़पुराण प्रेतकल्प | बीजक कबीरदास | पीयूषलहरी | पद्मावती खण्ड |
| ब्रह्मोत्तरखण्ड | | जगद्विनोद | शुकबहत्तरी |
| बाराहपुराण | काव्य | शृंगारबत्तीसी | बकावली सुमन |
| भविष्योत्तरपुराण | सूरसागर | नवीनसंग्रह | चहार दरवेश |
| स्कन्दपुराण | रामसागर | पद्मावत | किस्सा हातमताई |
| वाल्मीकीयरामायण | विश्रामसागर | | अपूर्व कथा |
| अद्भुत रामायण | प्रेमसागर | राग | किस्सा गुलसनोवर |
| शुक्रनीति | ब्रजविलास बड़ा | रागप्रकाश | सहस्र रजनीचरित्र |
| सुदामाचरित्र | तथा छोटा | लावनी | राबिन्सन का इतिहास |
| [illegible] चन्द्रोदय | कविप्रिया | कानून सितार नागरी | सीताहरण |

| नाम किताब | नाम किताब | नाम किताब | नाम किताब |
|---|---|---|---|
| सती विलास | स्वयम्बोध | दुर्गापाठ सटीक | कौ पुस्तकें |
| क़िस्सा मर्द औरत | ज्ञानचालीसी | विष्णुभागवत | संस्कार |
| सांगीत प्रह्लाद | दोहावली | कथा यमद्वितीया | ऋजुपाठ ३ भाग |
| दास्तान अमीर हमज़ा | बालाबोध | अपराधभञ्जन स्तोत्र | तथा २ भा० व ३ भा |
| | विद्यार्थी की प्रथम- | कायस्थकुलभास्कर | बालदर्पण |
| **गुल[illegible]** | पुस्तक | तुलसीतत्वभास्कर | **नागरी कैथी** |
| [illegible] की कथा | किताब जंत्री | कायस्थधर्मनिरूपण | |
| ज्ञानमाला | [illegible]कामधेनु | तथा छोटा | वर्णमाला कैथी १ |
| गोपीचन्द भरथरी | [illegible] | [illegible]पुरासभा | तथा २ भाग |
| कथा श्रीगंगाजी | पटवारियों की पु० ५ | **ज्योतिष** | तथा कैथी फ़ार- |
| अवधयात्रा | भाग | | सी नागरी |
| भरथरी [illegible] | **ज्योतिषभाषा** | मुहूर्तगणपति | |
| दानलीला बनमाली- | | मुहूर्त चक्रदीपिका | हरूफ़ मुफ़रदात |
| दोहावली रत्नावली | जातकचन्द्रिका | मुहूर्तचिन्तामणि स० | अक्षरारम्भ |
| गोवर्धनमाहात्म्य | जातकालंकार | मुहूर्तदीपक | वर्णप्रकाशिका १ |
| श्रीगोपालसहस्रनाम | रमैया भरण | बृहज्जातक सटीक | तथा २ भाग |
| कथा सत्यनारायण | ज्ञानस्वरोदय | जातकालंकार | सूर्यपुर की कहानी |
| हनुमान बहुक | रमलसार | जातकाभरण | धर्मसिंह का वृत्तान्त |
| जनक पचीसी | रमलनवरत्न | होरामकरन्द | शिक्षावली |
| हरिहर मथुरा निर्गु- | इन्द्रजाल | मुहूर्तमार्तण्ड स० | शिशुबोध |
| ण पदावली | **संस्कृत की पुस्तकें** | **संस्कृत उर्दू टीका** | पत्रहितैषिणी |
| बनयात्रा | | | पत्रदीपिका |
| कायस्थ वर्णनिर्णय | लघुकौमुदी | मनुस्मृति | विद्याचक्र |
| विहार वृन्दावन | सिद्धान्तचन्द्रिका | विष्णुहारीत | विद्यांकुर |
| समरविहार वृन्दावन | भाषातत्वप्रकाश | महिम्नस्तोत्र | पदार्थविद्यासार |
| कल्पकाव्य | पञ्चमहायज्ञ | प्रतार्क | पदार्थज्ञान विरूप |
| लक्ष्मीसरस्वती सम्वाद | निर्णयसिन्धु | याज्ञवल्क्यस्मृति | भोजप्रबन्धसार |
| | संग्रहशिरोमणि | मार्कण्डेयपुराण | राजनीति |
| **[illegible]** | भगवद्गीता पञ्चरत्न | **सरिश्ते तालीम** | भाषा लघुव्या[illegible] |
| अक्षरावली | दुर्गापाठ मूल | | इत्यादि |